शिवानी का कहानी साहित्य

SIVANI KA KAHANI SAHITYA

Thesis submitted to
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE & TECHNOLOGY
for the degree of
Doctor of Philosophy

By
Fatima Jeem. M

Supervising Teacher
Prof (Dr) S. Shajahan

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
COCHIN 682 022
1997

CERTIFICATE

This is to certify that this **THESIS** is a bonafide record of work carried out by **FATIMA JEEM. M** under my supervision for Ph.D and no part of this work has hitherto been submitted for a Degree in any University.

PROF. (DR.) S. SHAJAHAN
(Supervising Teacher)

Department of Hindi
Cochin University of
Science & Technology
Kochi - 682 022

Dated 30th August, 1997

DECLARATION

I declare that the present thesis entitled **"Sivani Ka Kahani Sahitya"** is a record of bonafide research carried out by me under the supervision of Prof. (Dr.) S. Shajahan, Professor, Department of Hindi, Cochin University of Science & Technology. I further declare that no part of this work has hitherto been submitted for a Degree in any University.

Kochi - 682 022

FATIMA JEEM. M

Dated : 30th August, 1997

प्राक्कथन

"शिवानी का कहानी साहित्य" शीर्षक प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शिवानी की कहानियों का अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास मैं ने किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विभाजन पाँच अध्यायों में हुआ है।

पहला अध्याय है "कहानीकार शिवानी - एक परिचय"। इस अध्याय में कहानीकार शिवानी की रचनाओं का परिचय देते हुए उनकी रचनाओंऔर कहानी संकलनों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध प्रबन्ध का दूसरे अध्याय का शीर्षक है "शिवानी का कथ्य और कथ्यात्मक विश्लेषण"। प्रस्तुत अध्याय को हम ने दो भागों में विभक्त किया है। प्रथम भाग में शिवानी की कहानियों के कथ्य को विषय के अनुसार विभाजित करके हमने प्रस्तुत किया है। दूसरे भाग में कथ्य के विश्लेषण को लक्षीकृत किया गया है

तीसरे अध्याय का शीर्षक है "स्त्री पात्रों की मानसिकता"। इस अध्याय में शिवानी की कहानियों के स्त्री पात्रों के चरित्र के आधार पर उनकी मानसिकता को आंका गया है।

चौथा अध्याय है "पुरुष पात्रों की मानसिकता"। इस अध्याय में चरित्र के अनुसार पुरुष पात्रों का विभाजन करके उनके चरित्र-चित्रण और मानसिकता पर विचार किया गया है।

पाँचवें अध्याय का शीर्षक है "संरचना के आयाम" । इस अध्याय में शिवानी की कहानियों की भाषा-शैली और शैल्पिक प्रयोग पर विचार किया गया है ।

उपसंहार में शिवानी की कहानियों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के प्रो. आदरणीय गुरुवर डॉ. एस. शाहजहाँ के निर्देशन में संपन्न हुआ है । आदि से अंत तक मुझे उनसे प्रेरणा एवं दृष्टि मिली है । मैं उनके प्रति आभार प्रकट करना चाहती हूँ । विभाग के अध्यक्ष प्रो. डा. एम. ईश्वरी के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ । विभाग की पुस्तकालय की अध्यक्षा श्रीमती तंपुरान के प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ । इस शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में जिन गुरुजनों, बन्धुजनों और मित्रों से मुझे प्रेरणा एवं सहायता मिली है, उन सब के प्रति मैं आभारी हूँ ।

फातिमा जीम.

हिन्दी विभाग,
कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय,
कोचिन - 682022.

तारीख 30, अगस्त 1997.

विषयसूची

पृष्ठ संख्या

अध्याय - 1 | 1 - 16

कहानीकार शिवानी - एक परिचय

जीवन की झाँकी - व्यक्तित्व की झलक - शिवानी का कृतित्व - उपन्यास - संस्मरण - निबन्ध - रिपोर्ताज - अध्ययन का परिप्रेक्ष्य ।

अध्याय - 2 | 17 - 109

शिवानी का कथ्य और कथ्यात्मक विश्लेषण

नारी समस्या - दाँपत्य संबंधों का विघटन - प्रेम की सफलता और असफलता - वेश्या जीवन और सेक्स - अन्धविश्वास - रूढ़ियाँ और पाखंड - व्यक्तिनिष्ठता की विशिष्टता - अन्य - शिवानी की कथ्यात्मकता का विश्लेषण ।

अध्याय - 3 | 110 - 196

स्त्री पात्रों की मानसिकता

पीड़ित नारी पात्र - भोली-भाली नारियाँ - शिक्षित नारियाँ और उनकी अहंवादिता - पारिवारिक बंधनों को तोड़नेवाली नारियाँ - नारी और अवैध संबंध - नारी का वारांगना का स्वरूप - निम्न मनोवृत्तिवाले स्त्री पात्र - अन्य स्त्री पात्र ।

पृष्ठ संख्या

अध्याय - 4 197 - 244

पुरुष पात्रों की मानसिकता

पुरुषों की कायरता और असंतुलित मनोवृत्ति - स्नेहवान पुरुष: पति - प्रेमी - रूप-सौंदर्य की ओर आसक्ति रखनेवाले पुरुष - दांपत्य संबंध में पराजित होनेवाले पुरुष - अनैतिक संबंध रखनेवाले पुरुष - पुरानी पीढ़ी के पुरुष पात्र - अन्य पुरुष ।

अध्याय - 5 245 - 280

संरचना के आयाम

शैलीपक्ष - वर्णनात्मक शैली - विवरणात्मक शैली - आत्मपरक शैली - स्मृतिपरक शैली - भाषा और आलंकारिकता - मानवीकरण - चित्रात्मकता - मुहावरे और कहावतें - सूक्तियाँ - शैल्पिक विशेषताएँ ।

उपसंहार 281 - 287

सहायक ग्रंथ सूची

अध्याय - 1

कहानीकार शिवानी - एक परिचय

हिन्दी साहित्य की विकासोन्मुख यात्रा में नारी पात्र और उनकी समस्याओं से जुड़ी स्थितियों की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है । परन्तु जहाँ तक महिला लेखिकाओं की बात है यह कहना पड़ता है कि लेखन के क्षेत्र में उनका योगदान वांछनीय रूप में परिलक्षित नहीं होता । महिला लेखिकाओं ने नारी की समस्याओं को उभारकर रखने का प्रयास अवश्य किया है । इन गिनी-चुनी लेखिकाओं में शिवानी का नाम कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण बना हुआ है । स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य की एक सशक्त लेखिका के रूप में उनका व्यक्तित्व उभरता है । उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज, निबन्ध आदि क्षेत्र में शिवानी का योगदान उल्लेखनीय रहा है ।

जीवन की झाँकी

शिवानी का जन्म राजकोट (सौराष्ट्र) के एक संभ्रान्त परिवार में 17 अक्तूबर 1923 को हुआ था । शिवानी की माँ लीलावती पाण्डे बहुत पढ़ी-लिखी और गुजरात की महान विदुषी थीं । शिवानी के पिता श्री अश्विनिकुमार पाण्डे राजकोट के राजकुमार कॉलेज में प्रोफसर थे और वे अंग्रेज़ी के बड़े विद्वान थे । राजकोट के पश्चात् शिवानी के पिता जूनागढ़, मैसूर, माणविदर, रामपुर, जसदन, ओरछा, दतिया आदि राजघरानों में राजकुमारों के पारिवारिक विद्या-गुरू रहे । रामपुर में उनकी नियुक्ति गृहमंत्री के पद पर भी हुई थी । वे आधुनिक विचारों के पोषक थे । सीलोन की यात्रा में उन्हें "कारबंकल" हुआ और शीघ्र ही उसकी मृत्यु हुई ।

शिवानी के नाना डॉ. हरदत्त पन्त लखनऊ के तत्कालीन ख्याति प्राप्त सिविल सर्जन थे । नाना की ही भाँति नानी भी लखनऊ के सामाजिक जीवन में बहुचर्चित महिला थी । कुमाऊँ समाज की दागबेल उन्होंने डाली थी । शिवानी के पितामह बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में धर्मोपदेशक थे और कट्टर सनातनी थे । वे संस्कृत के धुरन्धर विद्वान और एक दबंग वकील भी थे । शिवानी के दादाजी संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे, साथ ही तंत्र साधना पर भी उनका असाधारण अधिकार था । शिवानी और उनके भाई-बहन भी अधिक शिक्षित थे । उनके बड़े भाई त्रिभुवन की शिक्षा अंग्रेज़ गवर्नेस मिस ममफर्ड की देख-रेख में हुई थी । बड़ी बहन जयन्ती आश्रम की वार्डन थी । शिवानी की शिक्षा दीक्षा भी वहीं हुई थी । शिवानी के छोटे भाई राजा भी एक सफल पत्रकार रहे । इस प्रकार शिवानी के घर परिवार में पठन-पाठन का वातावरण था और शिवानी का जन्म भी इस विद्यान्यास परिवार के वातावरण में हुआ था ।

शिवानी का बचपन रियासती वातावरण के कारण बड़े ही ऐशो आराम में बीता । शिवानी बचपन में अपनी बहिन के साथ मिसेज़ स्मिथ से पढ़ने उनके बंगले पर जाया करती थी । शिवानी को सुबह सिकन्दर मिर्जा घुड़सवारी सिखाने आते थे । शिवानी को खेलों के प्रति कभी रुचि नहीं रही । बचपन से ही उन्हें पढ़ने का अत्यन्त उत्साह था । अपने अन्य भाई-बहिनों के साथ बारह वर्ष की अवस्था में शिवानी को भी शांतिनिकेतन में विधिवत् विद्याभ्यास के लिए भेजा गया । इतनी छोटी उम्र में भी शिवानी साहित्यिक अभिरुचि और प्रतिभा से संपन्न थी । शांतिनिकेतन में आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जैसे शीर्षस्थ सहृदय विद्वानों से उन्होंने हिन्दी भाषा एवं साहित्य की शिक्षा प्राप्त की । सुप्रसिद्ध सिने कलाकार बलराज सहनी की भी छात्रा रही। सत्यजित रे जैसे निर्देशक उनके सहपाठी रहे । शांतिनिकेतन में ही उन्होंने

रवीन्द्र और हिन्दुस्तानी संगीत भी विधिवत् सीखा । शिवानी नृत्य का भी अध्ययन करती थी । शिवानी की नृत्य शिक्षक शान्तिदा तथा मृणालिनी साराबाई थीं । इन्होंने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के साहचर्य में भी शांतिनिकेतन में शिक्षा प्राप्त की फलस्वरूप इनकी कहानियों और उपन्यासों में बंगला कथा तथा शैली की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है ।

शिवानी जब बी.ए. में थी उनका विवाह तय कर दिया गया । पति श्रीयुत पंत एक उच्च पदाधिकारी और बड़े अच्छे जादूगर भी थे । शिवानी के दो पुत्रियाँ और एक पुत्र हैं । एक पुत्री मृणाल पाण्डे आधुनिक काल की उभरती हुई लेखिका है । इनके पति हवाई के ईस्ट-वेस्ट सेंटर में है ।

शिवानी जब बारह वर्ष की थी उनकी पहली कहानी "सिन्दूरी" बंगला पत्रिका "नटखट" में छपी । शिवानी जब नवीं दसवीं कक्षा में थी तभी "विश्वभारती" पत्रिकाओं में छोटी-छोटी घरेलू बातें लिखती थीं और शांतिनिकेतन से निकलनेवाली हस्तलिखित पत्रिका में उनकी रचनाएँ नियमित रूप से छपती थीं । 1951 में धर्मयुग में पहली हिन्दी कहानी "जमीन्दार की मृत्यु" छपी थी । शिवानी प्रेमचन्द, टैगोर और गोर्की को अधिक पसन्द करती थीं । आज के लिखनेवालों में उन्हें मन्नू भण्डारी, मंजुल भगत, बिन्दू सिन्हा अच्छी लगती है । इस्मत चुगताई शुरू से ही उन्हें प्रिय रही । लखनऊ के आकाशवाणी से प्रसारित होनेवाले कार्यक्रमों में भी वे भाग लेती थीं । इसके साथ ही प्राय: हैदराबाद के तेलुगु लेखिका सम्मेलन में अध्यक्षता के लिए आमन्त्रित होती रहती थीं । देश के अन्य क्षेत्रों में भी उन्हें पर्याप्त सम्मान मिला है ।

व्यक्तित्व की झलक

शिवानी की अनेक रचनाओं को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। राज्य सरकार ने उनके (संस्मरण) "वातायन" को "रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार" से सम्मानित किया है। उन्हें 11000 रू. के पुनमचंद भुतोडिया पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। अपनी साहित्यिक सेवाओं के लिए उन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री की उपाधि से भी सम्मानित किया है।

शिवानी की लेखन-क्षमता एवं लोकप्रियता का रहस्य उनका बहुभाषाज्ञान है। उन्हें बचपन से ही कतिपय भाषाएँ सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुजराती, बंगला, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाएँ वे पढ़ती भी हैं, उन्हें लिखती भी हैं और बोलना भी जानती हैं। उनकी कथाओं का वैविध्यपूर्ण होने के पीछे उनका बहुभाषाज्ञान शायद काम करता था। उन्होंने अपनी इस भाषा बहुज्ञता को अपनी सफलता का रहस्य बतलाते हुए लिखा है - "मैं ने बंगला के अनेक सुहावने, मुहावरों से अपनी कहानियों को संवारा है। गुजराती की पाणेतर, बुन्देलखण्ड की कँकरेजी, कुमायूँ की मक्खीबेल तथा सोलह पाटों का लहराता लहँगा, बंगाल के लालपाड की गरद, सबकी विभिन्न छटाओं से अपने पाठकों को मोहने की चेष्टा मैं ने की है।"[1]

शिवानी की प्रशंसा करते हुए आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है -"गौरा, शांतिनिकेतन की छोटी-सी मुन्नी, मेरी परम प्रिय बहिन और छात्रा। बचपन में ही बडी सूक्ष्म बुद्धि की थी, उसकी दृष्टि

---

1. शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान - कु. शशिबाला पंजाबी - पृ. 5

बड़ी पैनी थी ।........... मेरे परम पारखी मित्र और गौरा के दूसरे अध्यापक पं. निताई विनोद रस्तोगी कहा करते थे कि यह लड़की अवसर मिलने पर बहुत प्रतिभाशालिनी सिद्ध होगी । वे गौरा की भाषा और प्रकाशन भंगिमा को तभी बहुत दाद देते थे ।"[1]

शिवानी की असाधारण सफलता का रहस्य उनकी बहुभाषा-विज्ञता और बहुज्ञता है । वे जीवन में बहुत घूमी फिरी । भारत के विभिन्न क्षेत्रों को उन्होंने खुली आँखों से देखा । सूक्ष्म दृष्टि से देखने की क्षमता उनमें विद्यमान है । भाषा पर अच्छा अधिकार रहने के कारण अपने हृदयगत भावों को वे ज्यों का त्यों प्रकट कर सकती हैं । बचपन से ही पढ़ने-लिखने के अलावा उनका ध्यान किसी और बात की तरफ नहीं गया । हिन्दी जगत में शिवानी ने अपना एक विशेष स्थान बना लिया है ।

शिवानी का कृतित्व

ऐसे लेखक बहुत कम होते हैं जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व के बीच सामंजस्य बना रहता है । शिवानी का कृतित्व और व्यक्तित्व दोनों एक सीमा तक आपसी सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करते दिखाई पड़ते हैं । शिवानी ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी कलम चलाई है । जैसे, उपन्यास, कहानी, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज, बाल साहित्य, यात्रा विवरण आदि । उनके कृतित्व का पूर्ण रूप अभिव्यक्त करने के लिए इन सभी विधाओं पर प्रकाश डालना है ।

---

1. शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान - कु. शशिबाला पंजाबी - पृ. 5

उपन्यास

शिवानी स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की जानी मानी महिला लेखिका रही हैं । अपने उपन्यासों के कथ्य एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य के कारण वे अभिजात्य वर्ग के पाठकों में विशेष लोकप्रिय हैं । उनके उपन्यासों में शरच्चन्द्रीय भावुकता और प्रेमचन्दीय यथार्थवादिता का गंगाजमुनी समन्वय प्रबुद्ध पाठकों को एक साथ समुपलब्ध हो जाता है । उनके उपन्यास भोगे हुए यथार्थ और झेले हुए सुख-दुःख के ब्योरेवार सच्चे दस्तावेज़ हैं और उनके उपन्यासों में आधुनिकता का जो ओप है, वह नयी पीढ़ी को विशेष रूप से अपनी ओर आकर्षित करता है ।

"चौदह फेरे" उपन्यास से शिवानी की औपन्यासिक यात्रा आरंभ हुई और उनकी इसी प्रथम रचना ने उन्हें हिन्दी की बहुप्रिय लेखिका बना दिया । "चौदह फेरे" उपन्यास की कथा का मूल विषय है - "विवाह" । इस उपन्यास का प्रमुख पात्र कर्नल और उसकी पत्नी और पुत्री अहल्या के चरित्रों के माध्यम से युगीन संस्कारों और समाज के परिवर्तित मूल्यों को व्याख्यायित करने का सफल प्रयत्न किया गया है । इस उपन्यास की कथा की मूल संवेदना ग्रामीण-संस्कृति एवं नगरीय संस्कृति के अंतर को स्पष्ट करना है । "मायापुरी" में विलासमय, फैशनेबल, अधिकार-संपन्न संसार को अपने आक्रमण का लक्ष्य बनाते हुए लेखिका ने मुख्य चरित्र शोभा को केन्द्र में स्थापित किया है । इस उपन्यास के द्वारा शिवानी सामन्तवादी और पूँजीवादी लोगों की जीवन पद्धति और आचरण पर आक्रमण करने में आंशिक रूप से सफल हुई हैं । "कृष्णकली" उपन्यास में लेखिका ने मध्यवर्गीय पात्रों की जीवनी को प्रस्तुत किया है और साथ ही वेश्या-जीवन को भी एक खण्ड में निरूपित

किया है । मनुष्य की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक मान्यताओं का अतिक्रमण करती हुई "कृष्णकली" की कथा समूची मानवता की कथा हो गई है । इस उपन्यास की अन्य समस्या है "वेश्याजीवन" । वह उपन्यास में आदि से लेकर अन्त तक प्रतिफलित हुई है । "भैरवी" की कथावस्तु यह सिद्ध करती है कि मनुष्य विधि के हाथों का खिलौना मात्र है । वह जो कुछ भी करता है, उसमें वह स्वतंत्र नहीं है । "श्मशान चंपा" पर्वतीय प्रदेश के उच्चकुलीन समाज के विघटन की कहानी है । यह प्रतीकात्मक उपन्यास है । आज के समाज की बदलती हुई मान्यताओं में दो पीढ़ियों का संघर्ष इसमें उजागार होता है । "सुरंगमा" यथार्थवादी उपन्यास है जिसमें पात्रों का, समाज का, राजनीति का यथार्थ चित्रण हुआ है । समाज की कुप्रथा, अवैध संतान को न स्वीकारने की विडम्बना आदि को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है । इसमें हिन्दू धर्म की अपेक्षा ईसाई धर्म के गुणों का विशेष आलेखन किया गया है । "कैंजा" के माध्यम से लेखिका ने रूप सौंदर्य पर आसक्त प्रेम एवं प्रेम की मूक यौन भावना को हृदय में संजोकर रखनेवाली प्रेमिका का मनोवैज्ञानिक चित्र प्रस्तुत किया है । "विषकन्या" संसार से अभिशप्त होकर मुंह छिपायी एक अनोखी युवती की रोचक कहानी है । केवल यह एक रोचक कहानी है, जिसका अन्त तथा मध्य कलात्मक एवं प्रभावशाली है ।

"रतिविलाप" में विवाह और वैधव्य का अभिशाप सहती नारी की अनोखी दर्दभरी कहानी है । साथ ही एक वय: प्राप्त विवेकशील सत्पुरुष को किस प्रकार कामिनी अपनी नन्हीं तर्जनी पर नचा सकती है और किस प्रकार एक वय: प्राप्त सत्पुरुष को भी नारी अपने देहाकर्षण से पथभ्रष्ट एवं विचलित कर सकती है यह भी दिखाया गया है । "माणिक" में लेखिका ने एक खास प्रकार की मानवीय वृत्ति को केन्द्र में रखा है, फिर यह सिद्ध

किया है कि संयम के नाम पर दबायी जाती यौवन भावना से बचना असंभव नहीं तो मुश्किल अवश्य है । जब यह उभरती है तब मनुष्य किसी भी संग या सहारे को तीव्र आवश्यकता महसूस करता है । इस उपन्यास का ताना-बाना मनोवैज्ञानिक है । "रथ्या" नामक लघु उपन्यास का उद्देश्य नारी तथा पुरुष के चरित्रगत रहस्यों का उद्घाटन करना है । "गैंडा" उपन्यास के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिवानी की दृष्टि यौन-शिथिलता, अनैतिक संबंध, रूपाकर्षण की मदान्धता, छल और पारस्परिक ईर्ष्या आदि भावों की अभिव्यक्ति की ओर रही है । "किशुनली का ढांट" में सत्य घटना को ही कल्पना के द्वारा नया रूप दिया गया है । अवैध संतान की समस्या को लेकर यह कहानी चलती है । "विवर्त" शिवानी का एक लघु श्रेष्ठ उपन्यास है, जिसमें एक स्त्री की असहायता को सशक्त ढंग से चित्रित किया गया है । शिवानी का यह उपन्यास मानव जीवन की रहस्यात्मकता का एक विलक्षण पक्ष प्रस्तुत करता है । "पाथेय" तिलोत्तमा के दिल की गहराइयों से उभरनेवाली कथा है । इसकी नायिका जीवन के अनेक उतार-चढ़ावों से परिचित रही है । "किशुनली" में किशोर वय की उन्मादिनी के जीवन की मार्मिक कथा का ताना-बाना है । "अभिनय" में ज़िन्दगी की विद्रूप स्थितियों का जायजा लिया गया है । "तीसरा बेटा" आज के जीवन और संबंधों की त्रासदी को रेखांकित करता है । इन उपन्यासों के अतिरिक्त "चलखुसरो घर आपने", "अतिथि", "पूतोंवाली" नामक उपन्यास भी प्रकाशित हो चुके हैं ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इनके उपन्यासों ने समाज के जीते-जागते पात्रों को उठाकर उन्हें अमर कर दिया है । जहाँ शिवानी एक ओर नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व को अपने उपन्यास में चित्रित करती हैं वहाँ दूसरी तरफ वे अपनी भारतीय नारी संस्कारों से अपने आप को अलग नहीं कर

पातीं । उनके उपन्यासों में सदैव नारी के दो रूपों का चित्रण होता है और अंत में हमेशा नारी का भारतीय त्यागमयी, सहनशील रूप ही वे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर पाती हैं । उनके उपन्यास अधिकतर घटना प्रधान होते हैं और उनके निजी अनुभवों पर ही आधारित होते हैं । घटना प्रधान कथाशैली को वे कभी चरित्र प्रधानता का हल्का सा मोड देकर और भी रोचक बना देती हैं । अधिकतर पर्वतीय समाज से संबंधित समस्याओं, प्रथाओं और मनोभावों के कुशल चित्रण से उनके उपन्यासों में एक अजीब नवीनता आ जाती है ।

वे हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में संस्मरण नियमित रूप से लिखती रहती थीं । संस्मरण-लेखिका के रूप में उन्होंने पाठकों का अनन्य स्नेह एवं अत्यधिक प्रशंसा प्राप्त की है । इनके प्रमुख संस्मरण हैं - "झरोखा", "चार दिन की", "बिन्नू", आमोदर शांतिनिकेतन", "सुनहु तात यह अकथ कहानी" आदि । शिवानी के संस्मरणों में लेखकीय तटस्थता विद्यमान है । इन संस्मरणों में लेखिका ने अपने अनुभवों को ही महत्व दिया है - वे अनुभव जो उन्हें क्षुब्ध और हर्षित करते रहे हैं ।

विषय वस्तु की दृष्टि से इन संस्मरणों में पर्याप्त विविधता है कहीं समाज की अन्ध रूढ़िग्रस्तता पर व्यंग्य है कहीं तो किसी नृत्यांगना के कौशल और सरल व्यवहार की मुक्त कंठ से प्रशंसा, कहीं राजनीतिक भ्रष्टाचार, गलत चुनाव प्रचार या नसबन्दी जैसे अमानवीय अभियान की भर्त्सना है, कहीं शांतिनिकेतन के कला संस्कार से संपन्न सत्यजित रे जैसे व्यक्तियों के फिल्मी जीवन के अनुभवों का लेखा जोखा, कहीं सर्पदंश के रूढ़िग्रस्त उपचार पर व्यंग्य किया गया है तो कहीं शरत् साहित्य की महिमामयी नारी का भोलभालाहै ।

इनके संस्मरणों में एक सजग और समाज के प्रति प्रतिबद्ध साहित्यकार की प्रतिक्रियाएँ निबद्ध हैं । इन ब्यौरों में न तो विवरणों की शुष्कता है और न कवित्वपूर्ण काल्पनिकता हो, बल्कि दोनों के सन्तुलित समावेश से यह चित्र सामान्य होते हुए भी लेखकीय दृष्टि संपन्नता के कारण विशिष्ट बन गये हैं ।

लेखिका की अतीत, वर्तमान और भविष्य के प्रति आस्था रही है । अतीत की स्मृतियाँ, जिनमें न जाने कितने मधुर-तिक्त क्षण संपृक्त हैं, लेखिका द्वारा उजागर की गयी हैं । इनमें विलासप्रिय नरेशों और नवाबों की प्रदर्शनप्रियता है तो ट्रेनों में चोरी, डकैती करनेवाले स्त्री पुरुषों का कपटपूर्ण व्यवहार भी, व्यापारियों, दुकानदारों की बेईमानी भी है और ईमानदारी भी, ढोंगी-धर्म व्यवसायियों की कामलिप्सा है तो समाज द्वारा उपेक्षित लांछित मातृत्व को पुनः प्रतिष्ठित करने का सद्विचार भी हैं ।

कुल मिलाकर इनके संस्मरणों में देश की राजनीति, धर्मनीति, अंधविश्वास, अशिक्षा, प्रदर्शनप्रियता आदि पर तीखे व्यंग्य हैं । इन संस्मरणों में अनेक छोटी-छोटी घटनाएँ निबद्ध हैं जिनसे यही अन्दाज़ लगता है कि आज का व्यक्ति पहले की अपेक्षा ज़्यादा स्वार्थ केन्द्रित हो गया है । लेखिका के हृदय में सच्चे कलाकारों के प्रति आदर का भाव है चाहे वे कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर हो और शरतचंद हो या नृत्यांगना संयुक्ता पाणिग्रही हो या फिल्मकार सत्यजित रे हो । वे मानती हैं कि कला ही मनुष्य का परिसंस्कार कर सकती है यदि साधक की साधना उत्कृष्ट हो । 'एक थी रामरथी' एक जीवन्त पात्र रामरथी को लेकर लिखा गया मार्मिक कथात्मक संस्मरण है ।

निबन्ध के क्षेत्र में भी शिवानी ने जो काम किया है वह सराहनीय है । उनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं - "वातायन", "गवाक्ष", "दरीबा", "झरोखा", "जालक", "झूला" आदि । घर के झरोखे से बैठे देखते रहिए न जाने कितने दृश्य आँखों के आगे चलचित्र की तरह गुज़रते जाते हैं, तरह-तरह के लोग, तरह-तरह की घटनाएँ । ये सभी दृश्य इनके निबन्धों में अत्यंत प्रौढ़तम रूप में देखे जा सकते हैं । इनसे हिन्दी पत्रकारिता में स्तरीय लेखन का स्तर ऊँचा हुआ है ।

"क्यों ?" में शिवानी के प्रभावशाली रूप का परिचय देनेवाली छोटी बडी इक्कीस रचनाएँ संकलित हैं । इन रचनाओं में शिवानी के विचारदर्शन, जीवन के मीठे-कडवे अनुभव, राजनीति के छिछलेपन पर तीखे व्यंग्य और कुछ कहानीनुमा रोचक संस्मरणों से परिचय ही नहीं तादात्म्य होता है । उन्होंने संस्कृति, भाषा, कला, अभिनय, यात्रा, सामाजिक समस्या आदि पर खूब जमकर लिखा है । "वातायन", "गवाक्ष", "जालक" आदि इसके प्रमाण हैं । "मेरा भाई" शिवानी की बहुत मर्मस्पर्शी आत्मकथात्मक रचना है जो सांप्रदायिक एकता की नींव को मज़बूत बनाती है यानी सही मायनों में सांप्रदायिक सद्भाव और भाई-चारे की जीती जागती तस्वीर है ।

रिपोर्ताज के क्षेत्र में भी शिवानी ने अपनी कलम चलायी है और उसको संपन्न बनाने की कोशिश की । उनको रिपोर्ताजों का संग्रह है - "अपराधिनी" ।

"हे, दत्तात्रेय" नामक कृति में कुमाऊँ अंचल की सांस्कृतिक विविधता का समूचा दृश्य एक कलात्मक फिल्म की तरह उभरकर आया है । इसमें शिवानी ने कुमाऊँ के जीवन की धड़कनों, माटी की गंध, आपसी प्रेम, रिश्तों, रीति-रिवाज़, धर्म, व्रत-त्यौहार, पूजा अर्चना, साहित्य, इतिहास और लोक-गाथाओं को एक ऐसी सुगंध-भरी माला में गूँथा है, जो रोचक कहानियों, सुन्दर कविताओं और सुरीले संगीत का आनन्द-भरा अहसास करता है ।

बच्चों का मन बहलाने के लिए बाल साहित्य भी शिवानीजी ने लिखा है । उनके द्वारा लिखा गया बाल साहित्य है -"अलविदा हर हर गंगे", "राधिकारानी","स्वामी भक्त चूहा" आदि ।

कहानी-संकलन

शिवानी के कहानी संग्रह हैं - "मेरी प्रिय कहानियाँ", "शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ", "पुष्पहार","उपहार","लाल हवेली", "रीतिविलाप", "स्वयंसिद्धा", "करिए छिमा", "गैंडा","चिरस्वयंवरा", "विषकन्या", "कैंजा", "रथ्या", "अपराधिनी", "पुतोंवाली" आदि ।

अध्ययन का परिप्रेक्ष्य

शिवानी की कहानियों का अध्ययन विषयगत परिप्रेक्ष्य के साथ जोडकर हमने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । कथाकार की रचना-प्रक्रिया कथ्यात्मक विविधता के साथ जुडकर उभरता है । समूची रचना प्रक्रिया

कालानुगत वास्तविकता का ही संकलन है । इस वास्तविकता की विशेषता को समझने के लिए शिवानी के कथाजगत को हमने विषयगत सीमाओं के अंतर रखने का प्रयास किया है ।

विश्लेषण की सुविधा के लिए विषयात्मक दृष्टि से हमने सात वर्गों में कथ्य को बाँटा है । नारी समस्या, दांपत्य संबंध विघटन, प्रेम की सफलता और असफलता, वेश्या जीवन और सेक्स, अंधविश्वास-रूढ़ियाँ और पाखंड, व्यक्तिनिष्ठता की विशिष्टता तथा अन्य विषयक कहानियाँ आदि सात शीर्षकों में शिवानी की कहानियों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

नारी समस्या से संबंधित कहानियों में "ज्येष्ठा", "लाटी", "तीन कन्या", "अनाथ", "लाल हवेली", "दो बहनें", "अलखमाई", "जा रे एकाकी", "गूँगा", "नथ", "माई", नामक ग्यारह कहानियों का कथ्य हम ने प्रस्तुत किया है ।

दांपत्य संबंध विघटन से संबंधित कहानियों में "गहरी नींद", "उपहार", "प्रतिशोध", "के", "भीलनी", "मौसी", "शायद", "मन का प्रहरी", "करिए छिमा", "चन्नी", "तोमार जे दोक्खिन मुख", "छि: मम्मी तुम गंदी हो", "चाँद", "सौत", "चील गाडी", "बन्दघडी", "चाचरी", "अपराजिता", "मित्र" नामक उन्नीस कहानियों का कथांश हमने प्रस्तुत किया है ।

प्रेम की सफलताऔर असफलता से संबंधित कहानियों में "शिबी", "विप्रलब्धा", "शायद", "मास्टरनी", "चलोगी चन्द्रिका", "केया", "मन का प्रहरी", "प्रतीक्षा" नामक आठ कहानियों का कथा परिचय हम ने प्रस्तुत किया है ।

वेश्या जीवन और सेक्स से संबंधित कहानियों में "करिए छिमा", "पुष्पहार", "तोप", "चाँद", "अलख भाई", "धुआँ", "क्यों ?", "दंड" नामक आठ कहानियों का कथ्य हम ने प्रस्तुत किया है ।

अंधविश्वास, रूढ़ियाँ और पाखंड नामक शीर्षक के अंतर्गत "चीलगाड़ी", "श्राप", "ज्येष्ठा", "मधुयामिनी", "निर्वाण", "के" नामक छः कहानियों का कथा परिचय हम ने प्रस्तुत किया है ।

व्यक्तिनिष्ठता की विशिष्टता नामक शीर्षक के अंतर्गत "मसीहा", "मेरा भाई", "मरण सागर पारे", "जिलाधीश" नामक चार कहानियों की कथा का सारांश हम ने प्रस्तुत किया है ।

अन्य विषय नामक शीर्षक के अंतर्गत "भूल", "ठाकुर का बेटा", "साधो ई, मुर्दन कै गाँव", "भामाजी", "शपथ", "सती", "अपराधी कौन", "जोकर", "चिरस्वयंवरा", "भूमिसुता", "मणिमाला की हँसी", "पिटी हुई गोट", "शर्त", "जा रे एकाकी", "लिखूँ", "ज्यूडिथ से जयन्ती" नामक सोलह कहानियों का कथ्य हम ने प्रस्तुत किया है ।

शिवानी अपनी कहानियों में उच्चवर्ग,मध्यवर्ग और निम्न-मध्यवर्ग की ज़िन्दगी का उद्घाटन करती हैं । सामाजिक संचेतना का उसमें अभाव नहीं है । कथावस्तु का आयोजन किसी न किसी उद्देश्य को सामने रखते हुए किया गया है । इसलिए कथाविन्यास में लेखिका को यथासंभव कल्पना का सहारा लेना पडा है । इस काल्पनिकता की सीमा कभी-कभी अविश्वसनीयता पर आकर रुकती है । वस्तुत: शिवानी की कथा योजना का एक क्षीण पक्ष के रूप में इसको प्रस्तुत किया जा सकता है ।

आधुनिक कथा रचना प्रक्रिया की दृष्टि से शिवानी की कथ्यात्मकता का मूल्यांकन करना कठिन है क्योंकि आज का कहानीकार क्षणों के बीच घटित होनेवाली स्थितियों की आंतरिकता में प्रवेश करता है । कहानी की अकथनीयता को लिपिबद्ध करता है । इस दृष्टि से आधुनिक कथा अधिक सूक्ष्म हो जाती है और घटना क्रम की प्रधानता गौण हो जाती है । परंतु शिवानी का कथा जगत बिलकुल पुराना सा लगता है । घटनाओं का ब्योरा प्रस्तुत करती हुई लेखिका बीस पच्चीस वर्ष के अंतराल की कथा वर्णनात्मक ढंग से प्रस्तुत करती हैं ।

लगता है कि औरतों की मानसिकता को और आम औरत की मनोरंजन वृत्ति को ध्यान में रखकर उनके लिए कथांश को लेखिका ने संचित किया है । इसलिए कई कहानियाँ कौतूहल प्रधान हो गयी हैं और कई अविश्वसनीय । कथ्यात्मकता का फैलाव पाठक की मनोवृत्ति में गहराई को

उभार नहीं पाता । पाठकीय संवेदना इस कारण पूरी तरह उभर नहीं पाती । घटनाक्रम का विधान और उसकी वास्तविकता बहुत सारी कहानियों में विवादास्पद हो जाते हैं । इसके बावजूद सारी कहानियों में एक विशिष्टता देखी जा सकती है । वह विशिष्टता लेखिका की उद्देश्य की सफलता पर केन्द्रित हो जाती है । कहने का ढंग अस्वीकार्य हो जाने पर भी कही हुई बात की सच्चाई कहीं न कहीं स्वीकार्या जा सकती है । कथ्य और कथ्यात्मक विश्लेषण के अंतर इस सत्य के उद्घाटन की हमने कोशिश की है । शिवानी की रचना प्रक्रिया को समझने के लिए लेखिका के प्रति सहानुभूति रखना आवश्यक बन जाता है ।

अध्याय - 2

शिवानी का कथ्य और कथ्यात्मक विश्लेषण

कहानीकार शिवानी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी जीवन के विशेष पहलुओं को उद्घाटित करने का प्रयास यहाँ एक ओर किया है तो दूसरी ओर सामाजिक परिप्रेक्ष्य में नारी की भूमिका के विविध आयामों पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया है । नारी समूचे समाज की वह संचालिनी शक्ति है जिसके इशारों पर समाज का कल्याण सुस्थापित हो सकता है परन्तु भारतीय समाज में नारी को अपनी सही भूमिका अदा करने की इजाजत नहीं दी है । शोषण, उत्पीडन और अमानवीय व्यवहार की शिकार नारी की अनदेखी व्यथा का प्रस्तुतीकरण शिवानी ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया है । लेखिका की कथ्यात्मकता इस बात को सूचित करती है कि नारी के प्रति सहानुभूति की आवश्यकता है ।

उधर शिवानी ने अपने कथा विस्तार के अंतर्गत समाज में जीवित ऐसे पुरुषों का भी चित्रण प्रस्तुत किया है जो अपने आचरण का घिनौनापन कई बार व्यक्त करते हैं । उत्तर भारत की पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था के बल पर नारी को खिलौना मानकर उसके साथ मनमानापन दिखानेवाले पुरुष शिवानी की कहानियों में यत्र तत्र मिल जाते हैं । कथ्य की स्वाभाविकता की अपेक्षा उद्देश्य की विशिष्टता ही अधिकांश कहानियों में लेखिका की शैली को निर्देशित करती है । इस कारण कथ्य की स्वाभाविकता अधिक मुखर नहीं हो पाती । फिर भी नारी चेतना के जागरण में शिवानी की लेखनी ने वास्तव में बडी ही सफल भूमिका अदा की है ।

नारी समस्या

नारी को समाज में अनेक तरह की कष्टताएँ भोगनी पडती हैं । अनादिकाल से ही स्त्रियों को अनेक प्रकार के धक्के सहने पडते हैं । कभी-कभी सासों एवं सौतेली माताओं से, घर के अन्य सदस्यों से, कभी-कभी कामुक पुरुषों से, कभी तो समूह के ऊँचे-ऊँचे पदों पर विराजमान महन्त जैसे अधम पुरुषों से, यहाँ तक कि अपने निर्मम पतियों के क्रूर व्यवहार से - स्त्रियों का इन सबसे बच निकलना कठिन है । स्त्रियाँ अपनी दयनीय अवस्था के कारण समाज की इन अनीतियों को चुपचाप सहती हैं । ऐसी कई स्त्रियाँ शिवानी की कहानियों के द्वारा हमारे सम्मुख आती हैं ।

शिवानी ने नारी और उसके परिवेश की विभिन्न समस्याओं के विविध पहलुओं को गहराई के साथ देखा है और उसे यथार्थ के धरातल पर पूरे साहस के साथ प्रस्तुत किया है । शिवानी ने आज के व्यस्त जीवन में नारी के वास्तविक यथार्थ को अभिव्यक्त किया है । शिवानी की प्राय: सभी कहानियों में नारी है केन्द्रबिन्दु । संयोग से ये सभी स्वयं या अपनी नियति के कारण ही पीडाएँ भोगती हैं । जब वे संत्रास की चरमसीमा पर पहुँचती हैं तब उसके लिए न तो समाज होता है, न धर्म, न कोई आत्मीय भी सिर्फ वे ही होती हैं । वे आत्मग्रस्त, कुंठित, आत्मघाती या बहुत से बहुत नियतिग्रस्त हैं शिवानी ने नारी के अच्छे या उजागर पहलुओं तथा बुरे पेचिदा पहलुओं का भी चित्रण बडी तन्मयता से किया है ।

"ज्येष्ठा" नामक कहानी नारी के प्रति नारी के ईर्ष्या भाव, नारी के प्रति पुरुष की लालसा और नारी के दुर्भाग्य की कथा कहती है

पिरी एक ऐसी नारी है जिसकी कुण्डली में अशुभ ग्रह खडे हैं । अतः जो भी विवाह हेतु उसकी कुण्डली देखता है उसका रिश्ता अस्वीकार कर देता है । सब जगह निराशा ही हाथ आती है । अंत में एक पांडेजी के डाक्टर पुत्र के साथ उसका विवाह किया जाता है । पहले डॉक्टर की माँ पिरी को अपनी पुत्र वधु बनाने के लिए तैयार नहीं होती और अंत में पिरी की संपत्ति को अपनाने के लक्ष्य में पिरी और डॉक्टर की शादी के लिए माँ और पिता सहमति प्रकट करते हैं । लेकिन विवाह के आठ दिन पहले उनका जो ज्येष्ठ पुत्र गायब हो गया था वह वापस आता है।पिरी की कुण्डली के अनुसार उसकी शादी होने से पति ज्येष्ठ की प्राणहानी संभव है । इसलिए उसकी शादी नहीं होती । इसके बाद वह ज्येष्ठ पुत्र पिरी से विवाह की अभ्यर्थना करता है लेकिन पिरी उसका तिरस्कार करती है । वह पांडेजी के डाक्टर पुत्र के साथ यौनसंबंध स्थापित करती है । अपना घर त्यागकर डाक्टर की मिस्ट्रेस बनकर रहने लगती है । लेकिन सन्निपात ज्वर के कारण एक दिन डाक्टर की मृत्यु होती है । डाक्टर की मृत्यु के बाद पिरी जो विवाहिता न होने पर भी सधवा थी, अग्निसाक्षी न होने पर भी विधवा थी डाक्टर का सामान और पास बुक देने उसके घर जाती है । वहाँ डाक्टर का भाई उसके प्रति अपने आकर्षण का संकेत देता है लेकिन वह अस्वीकार करके चली जाती है ।

"लाटी" अपने पति के घरवालों के क्रूर व्यवहार से दुनिया के खिलवाड बनी बानो की मार्मिक कथा है । कप्तान अपने माँ-बाप के द्वारा चुने गये बानो से विवाह करता है और तीसरे दिन ही कप्तान को पत्नी को छोडकर नौकरी के लिए जाना पडता है । अपने यौवन काल में ही बानो को अपनी शारीरिक और मानसिक इच्छाओं को नियंत्रण में रखना पडता है

और उस विरह वेदना के साथ ही "दो साल बाद घर पहुँचा तो दुनिया बदल चुकी थी । उन दो वर्षों में बानो ने सात-सात ननदों के ताने सुने, भतीजों के कपड़े धोए, ससुर के होज बिने, पहाड़ की नुकीली छतों पर पाँच-पाँच सेर उड़द पीसकर बड़ियाँ तोड़ीं । कभी सुनती, उसके पति को जापानियों ने कैद कर लिया है, अब वह कभी नहीं लौटेगा । सास और चचिया सास के व्यंग्य-बाण उसे छेद देते, वह घुलती गई और एक दिन क्षय का तक्षक कुंडली मारकर उसकी नन्हीं-सी छाती पर बैठ गया । उसे सैनेटोरियम भेज दिया गया था । दूसरे ही दिन कप्तान बानो को देखने चल दिया तो घरवालों के चेहरे लटक गये ।"[1] कप्तान घरवालों और डाक्टर की बात न मानकर अत्यधिक स्नेह और लाड से बानो की शुश्रूषा कर उसके पास ही पूरा समय बिताता है । लेकिन एक दिन रोग के आधिक्य के कारण वह मर जाएगी यह जानकर डाक्टर बानो को सैनेटोरियम से ले जाने को कहता है । लेकिन उसी रात बानो वहाँ से अप्रत्यक्ष हो जाती है । लेकिन जब नदी के पास से बानो की साड़ी मिलती है तो सब समझ जाते हैं कि बानो ने आत्महत्या कर ली है । बहुत दिनों तक कप्तान बड़े दुःख में डूब जाता है । आखिर एक वर्ष बाद वह एक बड़े घर की बेटी से विवाह करता है । वह उच्च पद में पहुँचता है । वास्तव में बानो की मृत्यु नहीं हुई थी । वैष्णवों के गुरु बानो को नदी में तैरती देखकर उसकी रक्षा करता है । वह गुरु के शरण में आती है और रोगविमुक्त हो जाती है । लेकिन वह गूँगी बन जाती है और अतीत की सारी बातें भूल भी जाती है । अंत में जब कप्तान अपनी नयी पत्नी और बच्ची के साथ चाय के दुकान पर चाय पीने के लिए आता है तो वहाँ वैष्णवी ग्रुप के बीच बानो को देखता है । लेकिन अब के उसके सुखी ऊँची गृहस्थी में बानो का लौट आना असंभव है यह मानकर वह चुप हो जाता है ।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 166

"नथ" पुट्टी नामक एक युवती की करुण कहानी है । अपनी माँ के साथ गाँव-गाँव में फेरी लगाकर बिसाती का छोटा-छोटा सामान बेचनेवाली पुट्टी के सौंदर्य पर रीझकर गुमान उससे शादी करना चाहता है । पहले पुट्टी की माँ सहमत नहीं होती लेकिन तभी उसे याद आता है कि गाँव के मनचलों के बीच पुत्री का जीवन कष्टपूर्ण होगा । इसलिए माँ उसकी शादी गुमान से कराती है । ससुराल में आते ही सास और भाभियाँ उस पर अमानवीय व्यवहार करती रहती हैं । गुमान को युद्ध के लिए जाना पड़ता है । उसके जाते ही पुट्टी पर विपत्तियों का पर्वत टूट पड़ता है । सास, विधवा ननद और जेठानी की गालियाँ सुनती तो वह जान बूझकर ही बहरी बन जाती है । विधवा ननद व्यंग्य-भरे स्वर में चीखकर कहती है -"अन्धी, कानी, बहरी लड़कियाँ क्या अभी और बची हैं भौजी ? तुम्हारे तिब्बत में ? अभी हमारा एक भाई और भी तो है ।.... " इतना घमण्ड था न अपने रूप का । तिब्बत के जादू से हमारे भैया को भेंड़ बनाकर रख दिया । इसी से भगवान ने सजा दी । भगवान करे, तुम्हारे कानों पर ही नहीं, पूरे शरीर पर बज्जर गिरे । कुलच्छनी न होती, तो क्या गुमान को लद्दाख जाना पड़ता ।"[1] यही नहीं गुमान युद्ध में मर जाता है और विधवा पुट्टी बहुत दु:खी बन जाती है । पुत्र की मृत्यु उसकी सास को जीती-जागती तोप बना देती है । वह दिन-रात आग उगलती, पर पुट्टी पत्थर बन गई थी । अपनी माँ के बुलाने पर भी वह नहीं जाती । अपने पति के साथ के जीवन के सुन्दर स्मरण को जगानेवाले आलू के ढेर के पास ही रहती है । एक दिन वह अपने पति से जो नथ उपहार के रूप में मिला था उसको अपने पति के हत्यारे चीनियों से प्रतिशोध लेने के लिए दान देती है और वह अपने दान को गुप्त रखने के उद्देश्य से वहाँ से खिसक जाती है ।

---

1. चिरस्वयंवरा - शिवानी - पृ. 76-77

"अलखमाई" की जोगी माई की शादी दस वर्ष की उम्र में आनसिंह के साथ होती है । आनसिंह ड्राइवर है । आधा पेट्रोल अपनी मोटर में डालता है और आधा अपने पेट में । घर में नशे में डूबकर आता है और माई को पीटता है । कभी-कभी माई को अपनी सास की भी मार-पीट सहनी पड़ती है । कभी सास भूखी-प्यासी माई को ऐसा हरामी भैंस चराने जंगल में भेजती है कि भैंस जोगी माई को भगा-भगाकर अधमरी कर देता है जब माई मायके जाना चाहती है तो सास गरमचिमटे से दाग देती है । एक दिन माई को बुखार में ही सास बाघ लगा उस वन में भैंस चराने के लिए भेजती है । पहले माई "हम नहीं जाएगा सासू, उस वन में बाघ लगा है, हमको बुखार है ।"[1] कहकर बहुत रोती है । तब सास कहती है -"जा, जा, बाघ ने तुझे खा लिया तो हम दूसरा बहू ले आएगा ।"[2] उस दिन भैंस को भी सास ने ..तर दिया था । भगाते-भगाते भैंस जोगी माई को बहुत परेशान करती है । आखिर जाकर वह खड़ी हो जाती है हरामी घाटी के ऊपर । नीचे काली गंगा, एक धक्का लगा तो चूर-चूर । माई को बहुत गुस्सा आता है उस दिन । भूख का गुस्सा, सास का गुस्सा, मरद का गुस्सा । सब निकालती है वह भैंस पर । वह भैंस को एक धक्का देती और धड़ाम से भैंस गिरती है । भैंस को दिखाने के बहाने सास को भी वहाँ ले जाकर धकेल देती है और फिर पति को माँ की रक्षा करने के बहाने वहाँ ले जाकर उसकी भी हत्या करती है । माई फिर घर नहीं लौटती । ओडयार में नेपाली बाबा के पैर पकड़कर सब पाप कबूल कर लेती है । गुरू महाराज दीक्षा देते हैं और कहते हैं -"माई जा, दिन रात चिमटा बजाकर भिच्छा माँगकर खा, और भिच्छा माँगकर पहन-ओढ़ । तू ने जीव-हत्या किया है, यही तेरा पिराचित है, अब परभू तेरा मालिक और परभू सहारा है ।"[3] तभी से वह भिक्षा माँगकर अपना जीवन बिताती है ।

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ.86
2. वही - पृ.86
3. वही - पृ.87

"जा रे एकाकी" में माँ की इच्छा के विपरीत पुत्र अपनी मनपसंद चनुली से विवाह करता है । माँ तो विवश होकर बहू ले तो आती है किन्तु उसे स्वीकार नहीं कर पाती । हर दिन दोनों के बीच झगडा होता है और इसका मज़ा लूटने के लिए पडोसी लोग रोज़ उनके यहाँ इकट्ठा होते हैं । इसी बीच सीमा में होनेवाले भारत-चीनी युद्ध में भाग लेने के लिए नवेली चनुली के फौजी पति को बुलाया जाता है । वह जाता है परन्तु फिर कभी वापस नहीं आता । पुत्र की अकाल मृत्यु कर्कश स्वभाववाली सास को "जीती-जागती तोप" बनाती है । एक दिन चनुली नई दरांती लेकर घास काटने निकलती है । एक झगडालू पडोसिन जान-बूझकर ही उसके पीछे हो जाती है । मार्ग भर वह उसको छेडती है । चनुली के मन में पूर्ण विश्वास था कि उसके पति मर नहीं गए हैं लेकिन पडोसिन चनुली से ऐसी बात कहती है कि चनुली क्रोध से पागल हो जाती है । वह दरांती उसकी ओर फेंकती है और एक ही चोट में उसकी गर्दन लटक जाती है । वास्तव में वह उसको नहीं मारना चाहती थी लेकिन उसको आजन्म कारावास का दंड भोगना पडता है । इसी बीच उसका पति अचानक लौट आता है और उच्च न्यायालय में अपील देता है कि यदि दयालु न्यायाधीश उसकी पत्नी को छोड दें तो वह उसे ग्रहण कर लेगा । दोष उसकी पत्नी का नहीं था । उसकी कर्कशा प्रतिवेशिनी ने ही उसे उकसाया था । सुप्रीम कोर्ट चुनेली के दंड की अवधि की कटौती कर चार वर्ष की कर देता है । पहले उसका पति उसको चिट्ठी भेजा करता था अब दो साल से उसको चिट्ठी नहीं मिलती । दंड की समाप्ति के आखिरी दिन चनुली दिशा हीन होकर खडी रहती है क्योंकि उसे लेने के लिए कोई नहीं आता ।

"माई" रुक्की नामक एक लडकी की करुण कहानी है । उसके बचपन में ही उसकी माँ मर जाती है । थानेदार पिता तो बहुत कर्कश

स्वभाववाला है । चौदह वर्ष में ही पिता उसकी शादी अपनी ही बिरादरी के ऊँचा अगले जबरू जवान से कराता है । लेकिन पति तो शराबी ही नहीं अविहित संबंध भी करता रहता है । नववधू रुक्को के समस्त आभूषण शराब के नशे में चूर-चूर मदालस पति अपने गोपिकाओं के लिए बाँटता है । आखिर रुक्की विवाह के पन्द्रहवें दिन हो अपने पिता के सम्मुख अपनी सुचिक्कन पीड उल्लघ कर खडी हो जाती है । एक क्षण थानेदार पत्थर का मूरत बन जाता है । क्रोध से दांत पीसता थानेदार उसी क्षण वहाँ से बाहर जाता है और दामाद की हत्या करने का प्रबन्ध कराता है । रुक्की के पति मारा जाता है । ब्राह्मण की बेटी की दूसरी शादी का रिवाज़ उस समय नहीं था । पिता के गृह में उस पर किसी भी प्रकार की रोक-टोक नहीं रही लेकिन रुक्की स्वेच्छा से ही कठोर वैधव्यव्रत का ऐसा पालन आरंभ करती है कि गाँव की अनुभव प्राप्त वरिष्ठ विधवाएँ भी देखती ही रह जाती हैं । वह साधारण मानवी के स्तर से निरंतर ऊपर उठती सबकी पकड से दूर होती जाती है । गाँव में कोई बीमार पड जाए तो चाहे वह शूद्र हो या चांडाल रुक्की रात-दिन उसकी सेवा-शुश्रूषा करती है । जिस सहजता से उस बालिका के वैधव्य ने उसे विवेकशील प्रौढा बना दिया उसे देखे सब अवाक् रह जाते हैं । जीवन के सोलह वसंतों में ही रुक्की ने जैसे जीवन का महान सत्य उपलब्ध कर लिया था कि मनुष्य भोग से शाश्वत सुख प्राप्त नहीं कर सकता, त्याग में ही उसे चिरंतन सुख मिल सकता है । एक बार पूर्णकुम्भ का पुण्य लूटने गाँव की भीड़ जाती है । रुक्की जिद कर उनके साथ हो लेती है । किन्तु मेले के जानलेवा भीड़ के रेले में कुमाऊँ के कई धर्म भीरू गाँव के लोग विलीन हो जाते हैं और लाख ढूँढने पर भी स्तूपीकृत लाशों के ढेर में मौसी की देह नहीं मिलती । पुत्री के वियोग के कारण थानेदार पिता की मृत्यु होती है । लेकिन तीन वर्ष के बाद रुक्की सिद्धि माई बनकर गाँव में आती है । अपने ही घर के पास देवदार के गगनचुंबी वृक्ष के नीचे ही

वह जम जाती है । अनेक रोगियों को अपनी दिव्य शक्ति से रोगविमुक्त कर देती है । किसी की भैंस खो जाती है तो माई अपनी दिव्य शक्ति से उसका स्थान बताती है । धीरे-धीरे माई की ख्याति कई शहरों में फैल जाती है । आखिर वह खुद बीमार हो जाती है । वह रोग से तडपते समय पुरानी सखी लेखिका से उसकी मुलाकात होती है । जिसने अपना कौशोर्य यौवन स्वेच्छा से शुचिता के अभेद्य दुर्ग में बंदी बनाकर अपनी सब इन्द्रियों को विजित कर लिया था, जिसने अन्नजल त्याग केवल पत्ते चबाकर ही जिह्वा को पालतू बिल्ली बना लिया था, पवित्र, बेदाग सात्त्विकी सिद्धि माई आखिरी समय बचकानी अविवेकी फरमाइश करती है । वह लेखिका से कहती है -"जीवन भर कभी गोश्त नहीं चखा, सुना है बहुत बढ़िया स्वाद होता है । बिना अतृप्त लालसा लिए ही चली गई तो एक बार फिर इस मनहूस पृथ्वी पर लौटना होगा - जा मेरी बच्ची - ले आ जल्दी ।"[1] लेखिका गोश्त लाती हैं और माई वह खाती है । लेखिका की सहायता से अपनी शादी की बनारसी साडी पहनती है । बिन्दी डालकर आईने में अपने को देखकर कहती है -"इतनी बुरी तो नहीं हूँ देखने में । सब इच्छाएँ पूरी हो गईं आज । बस एक ही इच्छा रह गई ।"[2] कहकर वह मर जाती है । लेखिका उसकी सारी सज्जा उतारती हैं और माई का वेष पहनाती हैं ।

"तीन कन्या" अपनी असुन्दरता के कारण वर प्राप्ति में असफल होनेवाली दो कन्याओं की कथा है । साथ ही साथ सुन्दर होने पर भी होनेवाले पति के साथ विवाह के पहले घूमने की असमर्थता के कारण विवाह

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 124

2. वही - पृ. 125

से वंचित होनेवाली लडकी की भी कहानी है । लेखिका की मामी को तीन पुत्रियाँ हैं । पति मर गये थे । दो पुत्रियाँ जुडवाँ बहन हैं - रीना और सोना - जो उतनी सुन्दरियाँ नहीं हैं । लेकिन तीसरी पुत्री बेबी अतिसुन्दरी है । इसलिए बेबी का रिश्ता पहले तय हो जाता है । लेकिन बेबी की शादी बडी बहनों की शादी के पहले नहीं हो सकती । इस विचार से माँ रीना और सोना के लिए वर ढूँढती रहती है । लेकिन वर नहीं मिलता । इसी समय एक दिन बेबी का भावी पति बेबी के घर में आता हैं और बेबी को साथ लेकर घूमने की इच्छा प्रकट करता है । लेकिन माँ नहीं सहमत होती है । इसलिए वह इस रिश्ते को तोड देता है और एक सुन्दरी लडकी से विवाह करके सुखमय जीवन बिताता है । लेकिन अब भी ये तीनों लडकियाँ अविवाहित ही बनी रहती हैं ।

आज के युवा लोगों के प्रेम में कोई पवित्रता नहीं है जिसके कारण नारियों और बच्चों का जीवन दुःख में पडता है । "अनाथ" में जब आइरिश मेजर मर जाता है तब ऐनी और ऐनी की माँ बंगले में अकेली हो जाती है । धीरे-धीरे उसके आत्मीय स्वजन उससे मिलने के लिए आते हैं । लाख छिपाने पर भी उसके महारोग का रहस्य खुल जाता है । ऐनी की माँ के पूरे खानदान को कुष्ठ रोग था । उसका बंगला छीनकर ग्रामवासी उसे पुत्री सहित खदेड देते हैं । बाद में सुन्दरी ऐनी बडी हो जाती है । बनर्जी नामक एक युवक ऐनी के सौंदर्य पर रीझकर उसको अपनी पत्नी बनाता है । लेकिन जब बनर्जी के पिता को यह मालूम होता है तब पुत्र को ऐनी से बिछुडाकर विदेश भेजता है और वह दूसरा विवाह करके बहुत आडंबर में जीवन बिताता है । लेकिन ऐनी तो अपने बच्चे को हिन्दू अनाथालय को देता है और वर्षों के बाद भी ऐनी पति के इन्तज़ार में कुष्ठरोगाश्रम में सेवारत रहती है । उसे इस बात का पता नहीं है कि उसके पति ने किसी दूसरी औरत से विवाह किया है ।

"लाल हवेली" ताहिरा नामक एक युवती की कहानी है जो पाकिस्तान के दंगे में शिकार बन गयी थी । वह अपने मामाजी की बेटी के विवाह में भाग लेने के लिए जाती है लेकिन दंगे में मुसलमान लोगों के आक्रमण का शिकार बनती है तब रहमान अलि नामक मुसलमान युवक जिसकी पत्नी को दंगे में हिन्दू लोगों ने आक्रमण किया था, वह उसकी रक्षा करता है और सुधा को ताहिरा नाम डालकर उसको अपनी पत्नी के रूप में स्वीकारता है । वह उसे बहुत अधिक प्यार करता है । एक बच्चा भी पैदा होता है । वर्षों बाद अपनी बेटी और पति के साथ एक शादी में शामिल होने के लिए वह पुनः अपने पुराने जगह में आती हैं । तब अपने प्रथम पति की याद उसके मन को अशान्त करती है । उस समय ताहिरा के मन की करूण व्यथा और अन्तर्द्वन्द्व का मार्मिक चित्रण है प्रस्तुत कहानी ।

"दो बहनें" नामक कहानी में शिवानी ने नारी शोषण का एक और पहलू प्रस्तुत किया है । पुरूष के जाल में पडकर नारी अपना सब कुछ विवाह के पहले ही उसको समर्पित करती है । लेकिन पुरूष उस नारी के प्रति वफादार नहीं होता, वह उसे छोडकर चला जाता है । इस कारण नारी का जीवन दुःखपूर्ण हो जाता है । जया और विजया दोनों बहनें हैं । उनकी माँ की मृत्यु हो चुकी थी इसलिए जब जया के विवाह की बात आती है तब वह पिता से "मैं चली जाऊँगी तो इसे कौन रखेगा पापा ?" कहकर अपने लिए आए कई वांछनीय रिश्ते केवल छोटी बहन के लिए छोड देती है और बाद में पिता की भी मृत्यु हो जाती है । जया तो विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्राध्यापिका बनती है । विजया अपनी शिक्षा पूरी कर आई.ए.एस में बैठने की तैयारी करती रहती है । उस समय छोटी बुआ विजया को देखने के लिए केशव को

उसके घर भेजती है । वह युवक जया को पसंद करता है । जाने से पहले वह जया से अविहित संबंध भी जोड़ता है । वह जया से विवाह करने का वादा कर चला जाता है लेकिन बहुत दिनों से बुआ का पत्र न आते देखकर जया बहुत निराशा में डूबती है । वास्तव में ट्रेन से लौटते समय केशव का एक लखपति से परिचय होता है और उसकी बेटी से ट्रेन में ही उसकी सगाई हो जाती है ।

"गूँगा" कृष्णा नामक लड़की की करुण कहानी है । डॉ. सर्जन पांड्या की मातृहीना पुत्री कृष्णा अपने पड़ोसी डॉ. डिसूजा के मातृहीन पुत्र विक्की से प्रेम करती है लेकिन पिता उससे सहमत नहीं होता । एक दूसरे युवक से उसकी शादी तय करता है । तब विक्की और कृष्णा किसी पादरी के पास जाकर विवाह कर लेते हैं और कुछ ही दिनों में विक्की नौकरी के लिए चला जाता है । कृष्णा गर्भवती होती है । उधर एक दुर्घटना में विक्की की मृत्यु होती है । जब डॉ. सर्जन कृष्णा से विवाह और माँ बनने की बात सुनता है तब कृष्णा को दिल्ली में ले जाकर किसी आश्रम की संचालिका की सहायता से गुप्त रूप में प्रसव के बाद पुत्रीको लेकर घर आता है । नवजात शिशु को आश्रम छोड़ देता है । कृष्णा की शादी दूसरे युवक के साथ होती है । वह एक बालक को जन्म देती है । पाँच वर्ष के बाद जब वह अपने पति के साथ नृत्योत्सव में जाकर लौटती है तब वह आश्रम देखती है और उसका मन विचलित होने लगता है । वह आश्रम में जाकर अपने पुत्र को देखती है । वह पुत्र गूँगा है । कृष्णा उस बच्चे को खिलौने देकर और चूम-चूमकर दुःखी मन से लौट आती है । उसकी स्मृति कृष्णा को इतना दुःखित बनाती है कि उसका वर्णन करना संभव नहीं है ।

दाम्पत्य संबंधों का विघटन

पति-पत्नी का रिश्ता रथ के दो पहियों की तरह होता है । पति-पत्नी के बीच में आपसी विश्वास और सामंजस्यपूर्ण दृष्टि दोनों की ज़रूरत है । सामंजस्यपूर्ण वातावरण नहीं है तो परिवार की स्थिति और दोनों का वैवाहिक जीवन समस्याओं से भरपूर हो जाता है । इसीलिए अकेली नारी का और अकेले पुरुष का अलग सा महत्व नहीं रह जाता । स्त्री और पुरुष, पुरुष और स्त्री एक दूसरे के पूरक हैं । पति-पत्नी एक दूसरे के विश्वास को अपनाकर ही पारिवारिक विकास कर सकते हैं ।

शिवानी ने अपनी कहानियों में अधिकतर अवैध संबंध या अविश्वास के कारण दांपत्य संबंधों में ह्रास का वर्णन किया है । दो भिन्न संस्कारों में पले स्त्री-पुरुष जब विवाह सूत्र में बंध जाते हैं तब उनका दाम्पत्य जीवन बिखर जाने की संभावना होती है । दोनों के संस्कारों में जितनी बड़ी खाई होगी तनाव उतना अधिक गहरा होगा । ऐसी स्थिति में दोनों की मानसिकता को उभारने का प्रयत्न शिवानी ने किया है ।

"गहरी नींद" अपने पति के अविहित संबंध देखकर आत्महत्या करनेवाली उमा की कहानी है । बुरे काम करनेवाली, मार-पीट आदि करनेवाली स्त्रियों की संरक्षिका थी उमा । उसके पिता मर गये थे और उसके लिए वर ढूँढने के लिए कोई नहीं था । अंत में एक पुलिस अफ्सर से उसकी शादी होती है । उस पुलिस अफसर की पहले की दो पत्नियाँ मर गयी थी

और दो पुत्रियाँ भी थीं । उमा अपने स्नेह, करुणा से मग्न स्वभाव से सब को जीत लेती है लेकिन पति को नहीं जीत पाती । पति कठोर स्वभाववाला था । एक अख्तरी नामक स्त्री का संरक्षण भी उमा करती थी । लेकिन उस अख्तरी और अपने पति का अविहित संबंध देखकर उमा नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या करती है और इस हादसे से घर को छोडकर चलते समय रेल के सफर में अख्तरी की भी मृत्यु हो जाती है ।

"उपहार" पति के संशय के कारण नष्ट होनेवाली दाम्पत्य जीवन की कथा है । अनाथा नलिनी अपनी बुआ के संरक्षण में थी । कालेज में पढते समय बुआ की इच्छा के विरुद्ध उसने अधूरी पढाईवाले रघुनाथ से प्रेम किया और विवाह भी कर लिया । इससे बुआ और नलिनी के बीच मन-मुटाव पैदा हो गया । नलिनी और रघुनाथ दोनों खुशी से आनन्दपूर्ण वैवाहिक जीवन बिता रहे थे । अपनी वैवाहिक जीवन बिताने के बीच एक चोर नलिनी के सब आभूषण और रुपया लेकर भाग निकलने की कोशिश करता है । इसी बीच नलिनी उस चोर को पकड लेती है । इस कोशिश में नलिनी का ब्लाउज़ फट जाता है । सारी घटना का घुमा फिराकर वर्णन एक पत्रकार के मुँह से सुनकर रघुनाथ अपनी पत्नी पर अविश्वास करने लगता है । नलिनी के होनेवाले बच्चे के पितृत्व पर भी वह अविश्वास करने लगता है । इस हालत में नलिनी रघुनाथ से घर छोड देने को कहती है । रघुनाथ घर छोडकर चला जाता है और बुआ नलिनी को संरक्षण देती है और नलिनी रघुनाथ के बच्चे को जन्म देती है और रघुनाथ तो पागल होकर घूमता फिरता है ।

"प्रतिशोध" कहानी एक ओर आज के युगीन यथार्थ को प्रस्तुत करती है । एक आइ.ए.एस पति की पत्नी किस प्रकार विभिन्न लोगों से

उपहार लेती है, किस तरह पति के अधीनस्थ अधिकारियों से सामान बटोरती है, किस प्रकार पति पर शासन करती है इसका उदाहरण इस कहानी में देखा जा सकता है । अपने शिक्षित होने व समृद्ध परिवार की कन्या होने के घमण्ड से सौदामिनी अपने पति के प्रति रूखा व्यवहार करती है और हमेशा उससे अपनी बात मनवाती है । वह सास ससुर के प्रति इतना हृदयहीन व्यवहार करती है कि उनको दुबारा पुत्र के घर की तरह आने का साहस नहीं होता । सौदामिनी में स्त्रैण भावनाओं की कमी है और इसलिए पति की शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए भी वह तैयार नहीं होती । ऐसी स्थिति में पति को दूसरी औरतों से संबन्ध जोडने के लिए विवश होना पडता है । साथ ही पति के द्वारा गर्भ धारण करनेवाली महिला की आत्महत्या के कलंक से पति को मुक्त करने के लिए वह अपने गहने बेच डालती है । परन्तु इन सबके बावजूद भी पति-पत्नी का रिश्ता बिलकुल ठंडा बना रहता है । एक प्रकार का अलगाव उन दोनों के बीच बना रहता है । समसामयिक जीवन में दिखाई पडनेवाले पति-पत्नी के जीवन की यांत्रिकता को इस कहानी के द्वारा शिवानी ने उजागर किया है ।

"के" कहानी की डाक्टरनी कमला को अपनी कुरूपता के कारण वर नहीं मिलता है और अंत में अपने अहसानों के भार से युक्त अपने से कम उम्रवाले शेखर से वह शादी कर लेती है । डाक्टरनी जितनी ही बदसूरत, भद्दी और बेढंगे स्वभाव की है, शेखर उतना सुन्दर, सुसंस्कृत और दर्शनीय है । इस बेमेल विवाह के कारण शेखर किशोरी की तरफ़ आकर्षित हो जाता है और दोनों ही प्रणय व्यापार में निमग्न हो जाते हैं । लेकिन जब डाक्टरनी यह जानती है वह बडी चतुरता से कुल्फी में जहर डालकर किशोरी को देती है । जब शेखर यह जानता है तब वह अपनी पत्नी को मारता और पीटता है और करारनेवाली अर्धमूर्च्छित कमला को छोडकर चला जाता है ।

"भीलनी" का कथ्य भी अवैध संबंधोंवाली नैतिकता और विलासिता के कारण दांपत्य संबंध में हुई दुर्घटना का कथन करता है । सुहासिनी और विलासिनी सगी बहनें हैं । सुहासिनी कुरूप है और विलासिनी सुन्दरी है । इसलिए सुहासिनी को रिश्ते के लिए देखने आनेवाला युवक विलासिनी को पसंद करता है । इस तरह विलासिनी सुहासिनी के विवाह में बाधक बनती है । अंत में जब एक सुन्दर तथा सुगठित शरीरवाला युवक आता है तब विलासिनी को कमरे के अन्दर छिपाकर सुहासिनी को दिखाया जाता है और वह युवक सुहासिनी को पसन्द करता है । युवक तो विलासिनी को देख नहीं पाता किन्तु वह उसको अवश्य देख लेती है और उसी दिन से उस पर मुग्ध हो जाती है । बड़ी बहन के प्रसवकाल में सहायतार्थ विलासिनी उसके घर में जाती है और एक दिन विलासिनी सुहासिनी के पति के साथ शारीरिक संबंध में लग जाती है। विलासिनी और अपने पति की इस संबंध विच्छृंखलता पर सुहासिनी क्रुद्ध होकर विलासिनी को गोली का निशाना बनाती है लेकिन निशाना चूक जाता है और गोली पति को लगती है । पति की हत्या करके वह स्वयं अपने ऊपर गोली दाग लेती है और मृत्यु के समय दिये गये बयान में कहती है कि मेरे पति एक भीलनी के साथ सोया हुआ था । अतः उसकी हत्या मैं ने की है । इस तरह संपूर्ण कहानी का वातावरण ईर्ष्या, प्रतिद्वन्द्विता, षड्यंत्र, हत्या, झूठ तथा प्रवंचना का है ।

"मौसी" कहानी में पति का अविहित संबंध दांपत्य के विघटन का कारण बनता है । अपने स्नेही काका के घर से भागकर तिला मिस्टर वेदी से प्रेम विवाह करती है । परन्तु ब्राह्मण कुल की कन्या सिख परिवार के रिवाज़ों और आधुनिकता को स्वीकार न कर पाई । अब उसे अपने उसी प्रेमी पति से ऐसी घृणा हो गई है कि महीनों बाद लौटे पति को एक मिनट भी वह

सह नहीं पाती । "मिसेज़ वेदी उसके आलिंगन के बन्धन के जाल में फंसी मुर्गी-सी छटपटा उठी थी, गलित कुष्ठ से सड़ा कोढ़ी भी उन्हें अपने बाहुपाश में बांध लेता तो शायद इतना नहीं सिहरती ।"[1] उसकी इस घृणा का कारण ब्रिगेडियर वेदी का रसिक स्वभाव है । "बेदी सात दिन घर रहा था पर उनके कमरे में सोया केवल एक दिन, बाकी छः दिन उसने छः विभिन्न नारियों के संसर्ग में हंस-खेलकर गुज़ार दिए थे, जिनमें से एक उसकी अठारह वर्ष की नौकरानी भी थी ।"[2] इन्हीं कारणों से तिला अपने पति से अत्यंत घृणा करती है और एक दिन वह घर छोड़कर मौसी के पास आकर एक बच्ची को जन्म देने के बाद उसे वहाँ छोड़कर चली जाती है ।

"शायद" कहानी की कुसुम के पिता, जो कि पेशे व स्वभाव के कारण जल्लाद पाण्डे के नाम से जाने जाते थे, अपनी पत्नी के साथ इतना दुर्व्यवहार करते हैं कि बिचारी अपनी इस ज़िन्दगी से ही ऊब गई थी । उनके मुँह से गालियों के असंख्य बाण उनकी पत्नी की छाती को छलनी कर गए ।

"बिट्टो, अपनी हरामज़ादी अम्मा से कह हुक्का भर लाए ।"[3]

"बिट्टो क्या आज तेरी नानी को श्मशान घाट ले गए हैं, जो अब तक चूल्हा नहीं जला ?"[4]

जेल जीवन के अभ्यस्त जेलर पाण्डे अब सारे दिन अपनी पत्नी और बच्ची के पीछे पड़े रहते हैं । "जिस कर्कश जिह्वा के चाबुक कई कैदियों की

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 130
2. वही - पृ. 130
3. वही - पृ. 148
4. वही - पृ. 148

पीठ पर पड़कर उन्हें तिलमिला देते थे, अब एक ही निरीह पीठ पर दिन-रात ताबड़-तोड़ पड़ते, उसकी चमड़ी उधेड़ने लगे ।"[1] इसके अतिरिक्त अपनी मुंहबोली भाभी और सगी साली से उनके रहस्यात्मक संबंध भी उनकी पत्नी की अकाल मृत्यु में सहायक बनता है ।

"मन का प्रहरी" कहानी की अनुराधा के पिता की नैरोबी में कमाई गई अटूट धनराशि ही उनके दाम्पत्य संबंधों में ह्रास का कारण बनती है । अनुराधा के पिता को धन कमाने की कोशिश में विदेश यात्रा करनी पड़ती है । इसी बीच एक विमान परिचारिका से प्रगाढ़ मैत्री कर उसे अनुराधा की माँ की सौत बना देते हैं । उनका प्रणय व्यापार छिपा नहीं है । इसी दुःख से कातर पत्नी आत्महत्या कर लेती है । इसी कहानी के मधुकर के पिता भी रंगरेलियाँ मनाते रहते हैं और बाद में एक अभिनेत्री की हत्या के अपराध में जेल की सजा काटते है और मधुकर की माँ आत्महत्या कर लेती है । एक अन्य पात्र महन्ती की कश्मीरी माँ उड़िया पिता के साथ प्रेम-विवाह करती हैं परन्तु आपस में निभी नहीं और दोनों में तलाक हो जाता है । इसी परंपरा को निभाते बाद में महन्ती और अनुराधा का प्रेम-विवाह भी असफल होता है और महन्ती को छोड़कर अनुराधा अपने पूर्व प्रेमी मधुकर के पास चली जाती है । मधुकर भी अपनी दबंग जर्मनी पत्नी से तलाक ले लेता है ।

"करिए छिमा" की पिरावती अपने पति को अपनी बहन हीरावती के साथ रंगरेलियाँ मनाती रंगे हाथ पकड़ती है परन्तु उसका पति

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 148

दोनों बहनों की शक्ल एक होने का लाभ उठाकर बचना चाहता है,"झूठ बोलता है बेशरम ।" पिरावती ने घृणा से पति की ओर देखकर कहा,............।"[1] पति पत्नी के बीच नफ़रत का कारण पति का रसिक स्वभाव है । इसी कहानी के श्रीधर की पत्नी अपने खराब स्वभाव के कारण अपने पति को अपने से दूर रहने के लिए मजबूर करती है, "रुग्णा पत्नी का चिड़चिड़ा, विलासी स्वभाव उसे बुरी तरह उबा देता और वह वन-बिलाव-सा अनावश्यक दौरों में जंगलों की धाक छानता फिरता ।"[2] बार-बार घर परिवार से दूर रहने के कारण पति-पत्नी का संबंध बिगड जाता है । परिणाम स्वरूप शेखर हमेशा के लिए पत्नी को छोडकर चला जाता है ।

"चन्नी" कहानी में चन्नी और योगेन के संबंधों में ह्रास का कारण अविश्वास है । योगेन को पता चल जाता है कि चन्नी की सुन्दरता और चंचल स्वभाव के कारण, उसकी शादी के पहले भी कई जगह चन्नी का पत्र व्यवहार होता रहा है,बस वह चन्नी को राह पर लाने के लिए अचूक नुस्खा प्रयोग करते हैं -"योगेन जीजा शायद जान गए थे कि बिगड़ा घोड़ी को लगाम और चाबुक की शान में नहीं साधा, तो वह उन्हें भी अनाड़ी सवार की तरह मिट्टी में लिटा देगी ।"[3] व्यवहार की यही कठोरता उनके संबंधों में ह्रास का कारण बनती है । बेचारी पति का विश्वास जीतने की बहुत कोशिश करती है लेकिन पति उस पर अविश्वास ही रखता है और चन्नी एक दिन किसी आदमी के साथ भाग जाती है ।

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 54
2. वही - पृ 66
3. स्वयं सिद्धा - शिवानी - पृ. 106

"तोमार जे दोक्खिन मुख" में राघवन की पत्नी पति के मित्र अखिलन के साथ यौन संबंध स्थापित करती है और राघवन यह देख लेता है तो राघवन अपनी पत्नी और उसके प्रेमी की हत्या कर देता है । "प्रवंचक था मेरा अभिन्न मित्र अखिलन । जिस अवस्था में मैं ने दोनों को देखा, उसे देख शायद क्लीव पति ही चुप रह सकता था । मेरा मदालस, उन्मत्त चित्त उसी क्षण प्रतिशोध लेने को अधीर हो उठा ! मेज़ पर धरी बोतल से ही मैं ने दोनों की एकसाथ कपाल-क्रिया कर दी ।"[1] पत्नी के अवैध संबंधों के कारण दो-दो परिवार बर्बाद हो जाते हैं । अखिलन की पत्नी भी पति की मृत्यु की बात सुनकर आत्महत्या करती है ।

"छिः मम्मी, तुम गंदी हो" - में पंजाब के एक समृद्ध गाँव के मध्यवर्गीय परिवार की एक सोलहवर्ष की कन्या को देखने के लिए पात्र का बड़ा भाई आता है । वह कन्यारत्न को देखते ही चुनता है लेकिन अपने छोटे भाई के लिए नहीं स्वयं अपने लिए । वह अड़तालीस का था लेकिन लड़की उसे पसन्द नहीं करती । परन्तु माँ-बाप के कहने पर वह उससेशादी कर लेती है । इधर पति अपनी भोली नवेली के लिए आकाश के चाँद सितारे तोड़ लाने में व्याकुल हो उठता है । पर स्वभाव से पति ईर्ष्यालु होता है । पत्नी का अपने छोटे भाई से बातचीत करना भी वह बर्दाश्त नहीं करता । वैसे इस पति के साथ जीते-जीते वह तीन बच्चों की माँ बन जाती है । फिर भी उन दोनों के बीच किसी प्रकार की भावनात्मक एकता नहीं बन पाती । पत्नी धीरे-धीरे सोलहवर्षीय अपने ट्यूषन छात्र से प्यार करती है । दोनों मिलकर पति की हत्या करते हैं और कारावास का दंड भोगते हैं ।

---

1. स्वयं सिद्धा - शिवानी - पृ. 122

"चांद" - मानवी पिता की मुंहलगी इकलौती सन्तान है । मातृहीना लड़की को पिता उच्च शिक्षा देता है और भावी दामाद के सपने संजोता है । लेकिन उस सपने को तोड़कर मानवी प्रौढ़ अवस्थावाले जे.के. से शादी कर लेती है । जिस व्यक्ति के कठोर व्यक्तित्व पर वह रीझी थी, वही धीरे-धीरे उसके लिए अभिशाप बन बैठता है । दोनों के स्वभाव में ही नहीं दोनों के पितृकुल के रहन-सहन, अदब-कायदों में भी कहीं कोई साम्य नहीं था । एक का स्वभाव उत्तर था तो दूसरे का दक्षिण । वैसे मानवी ज़्यादा शिक्षित और ज्ञानयुक्त महिला है जब कि जे.के. में ज्ञान का अभाव है । वह स्वयं इस बात को जानता है और यह भी उनकी अनबनी का कारण बनता है । अपने कठोर अनुशासन, गांभीर्य एवं अनुकरणीय आदर्शों की अमिट लक्ष्मण रेखा में मानवी को बाँधकर वह स्वयं घेरे से दूर हट जाना चाहता है । इसी बीच चाँद जैसी चंचल महिला जब घर की नौकरानी बनकर आती है तब जे.के. उसके साथ अवैध संबंध जोड़ता है । मानवी को जब उसका पता चलता है तो वह जे.के. को छोड़कर चली जाती है ।

"सौत" कहानी की नीरा अपने पति पर अत्यधिक विश्वास रखती है । इस कारण वह छली जाती है । पड़ोस में रहनेवाली राज्यम उसके पति के साथ किस तरह का अमर्यादित व्यवहार करती घूमती है, यह नीरा को दिखाई नहीं पड़ता । अपने पति और सखी पर विश्वास करनेवाली नीरा को धोखा देकर दोनों भाग जाते हैं । उधर राज्यम भी विवाहिता है । यहाँ दो परिवारों का सुख नष्ट होता है । नीरा तो अपने माँ-बाप के साथ रहने के लिए विवश होती है । महानगरों का फ्लाट सिस्टम और आधुनिक वातावरण में उभरनेवाली व्यावहारिक स्वतंत्रता परिवार में इस तरह की दुर्घटनाओं को जन्म देते हैं ।

"चीलगाडी" में लेखिका का पति लेखिका को कभी औरों के साथ निपटना नहीं पसन्द करता है । लेखिका का पति लेखिका को औरों के साथ बातचीत करते देखते तो किसी बहाने उसी क्षण उन्हें बुला लाता है । उसका यह सन्देहपूर्ण व्यवहार लेखिका को अच्छा नहीं लगता है । धीरे-धीरे उनके संबंधों में अलगाव आता है और वह पति से दूर होने लगती है । रोगग्रस्त होकर पति जब दम तोडता है तब भी पत्नी के मन में कोई सहानुभूति नहीं जन्म लेती है । एयरहोस्टस की नौकरी पाकर वह घर छोडकर चली जाती है ।

"बन्द घडी" में पति-पत्नी के दाम्पत्य संबंध के तनाव का चित्रण है । माया भावुक स्वभाव की औरत है । वह अपने इंजनीयर पति से अडजस्ट नहीं कर पाती । माया को शोख-रंग की साड़ियाँ पसन्द है, कभी-कभी लिपस्टिक भी लगा लेती तो गिरीश कहता "चूहा मारकर खून लगा लो न ओठों पर, और अच्छी लगेगी ।"[1] माया जल भुनकर रह जाती । माया को रोस्ट चिकन चिंचोडने में स्वर्गीय आनन्द आता और गिरीश को गोश्त देखकर उबकाइयाँ आती हैं । पति पत्नी में बोलचाल हाँ हूँ तक ही सीमित है । पति-पत्नी के बीच में सब समय झगडा है । बच्चों के लिए पिता डेविल-सा है । आखिर माया आत्महत्या करने का निश्चय करती है । लेकिन अपने बच्चों की स्मृति उसे दुःखित बनाती है । फिर भी वह अपने मन को संभालती है और मिट्टी का तेल लेकर गुसलखाने में पहुँच जाती है । लेकिन उस समय अपने पुत्र की हँसी की आवाज़ सुनकर वह बाहर आती है । वहाँ सब लोगों को खुश देखकर वह आत्महत्या का फैसला बदल देती है । इस अवसर पर पति गिरीश का प्रेमपूर्ण स्पर्श का अहसास उसके मन को बदलने में सहायक सिद्ध होता है ।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 127

नारी की मानसिक चंचलता का एक और उदाहरण कहानीकार ने प्रस्तुत किया है ।

"चांचरी" में काम के प्रति अपनी पत्नी का शीतल मनोभाव श्रीनाथ को विवशता का कारण बनता है । अपने घरवालों के घोर विरोध को झेलकर वह बिन्दी को ब्याह कर लाया था । इसलिए रात को भी वह छुई मुई बनी जा रही बिन्दी को ज़ोर से बुरा-भला नहीं कह पाता था । "वह रात भर पिंजरे में बन्द ख़ूँखार शेर-सा ही कमरे में चक्कर लगाते-लगाते देखता - दोनों हाथ छाती पर धरे उसकी प्राणप्रिया, दंतहीन भोले शिशु की सी गहन निद्रा में निमग्न है । न चाह, न चिन्ता - मनुआ बेपरवाह ।"[1] किन्तु पिता की कृतज्ञ विनम्रता का शतांश भी वह अब तक उनकी अहंकारी पुत्री में नहीं खोज पाया था । कभी-कभी तो अपनी विवशता पर ऐसा क्रोध आता कि मन करता, उठाकर उसे खिड़की से नीचे फेंक दे - टूट जाए दोनों टांगें और उसका अहंकार पल-भर में चूर-चूर हो जाए । उसके सोने के बाद ही वह कमरे में आती और उसके उठने के पहले ही गायब हो जाती । इसके साथ ही अपनी निरपराधी पत्नी को अपनी बहन के कहने पर अपराधी समझकर वह घर से बाहर निकालता है । इस प्रकार उसका दांपत्य जीवन नष्ट हो जाता है । तीस वर्ष बाद जब श्रीनाथ पश्चाताप से अपनी पत्नी के पास उसे स्वीकारने आता है तब तक बिन्दी सन्यासिनी का जीवन अपना चुकी होती है । श्रीनाथ के साथ जाने के लिए वह तैयार नहीं होती और श्रीनाथ निराश होकर लौटता है ।

---

1. एक थी रामरथी - शिवानी - पृ. 25

"अपराजिता" कहानी की आरती एक उच्चपदस्थ अधिकारी है जिसका ब्याह एक साधारण ग्रामीण पुरुष से होता है । वह अपने उच्च पद के अहंकार से ग्रस्त होकर पति के साथ इस तरह दुर्व्यवहार करती है कि उसका अस्तित्व ही नहीं के बराबर हो जाता है । अपनी अफसर मित्र मण्डली के बीच आरती उसे शोधकार्यरत विद्वान के रूप में प्रस्तुत करती है । इस अभिनय से ऊबकर भजन एक औघड़ स्वामी के आश्रम में चला जाता है । अफसर पत्नी का रौब, पति के प्रणय निवेदन को कठोरता से ठुकरा देना और अपने स्वाभाविक गुणों से हटकर पत्नी की इज़्ज़त के लिए किया गया अभिनय उसे गृह त्याग के लिए बाध्य करता है । यहाँ पत्नी आरती का निरंकुश व्यवहार, दिखावा और अहंकार उसके दांपत्य संबंधों को खोखला कर देता है ।

"मित्र" कहानी में पति-पत्नी के बीच झगड़े का मुख्य कारण अर्थभाव है -"दो दिनों से पति-पत्नी में बुरी तरह खटक रही थी । झगड़े का सूत्रपात अर्थभाव से हुआ था । पति कह रहा था कि तनख्वाह महीने में एक बार मिलती है और पत्नी पति को उसकी फिज़ूलखर्ची का ताना दे रही थी ।"[1] यही अर्थभाव पति-पत्नी संबंधों में ह्रास का कारण बन जाता है । मध्यवर्गीय परिवारों में दिखाई पडनेवाले अर्थभाव और उसके कारण जन्म देनेवाली पति-पत्नी के मानसिक असन्तोष इस कहानी में मुखरित हुआ है ।

प्रेम की सफलता और असफलता

आधुनिक युग में स्त्री-पुरुषों के संपर्क के अवसर ज़्यादा होता है और इनके बीच प्रेम की संभावना भी बढ़ जाती है । यह प्रेम विवाह में

---

1. एक थी रामरथी - शिवानी - पृ. 125

परिवर्तित होता है तो नारी के लिए समस्याएँ कम होती हैं अगर ऐसा नहीं हो पाता तो वह प्रेम स्मृति का एक अंश बन जाता है । कालान्तर में किसी और के साथ विवाह सूत्र में बंधकर नई ज़िन्दगी की शुरूआत करनी पडती है । विवाह-पूर्व प्रेम अगर बहुत गहरा हो तो उसका प्रभाव विवाहोत्तर जीवन में भी झलकने लगता है । अगर यह प्रेम विवाहोत्तर जीवन में प्रवेश करने लगता है तो, दांपत्य जीवन में दरारें पड़ने लगती हैं । कभी-कभी स्त्री अपने पूर्व प्रेम को भुला देती है तो भी पति उसे संदेह की दृष्टि से ही देखता है और संशय के कारण उसका दांपत्य जीवन बर्बाद हो जाता है । कभी-कभी स्त्री-पुरुष अपने विवाहोत्तर जीवन में और किसी के साथ प्रेम करने लगते हैं तो उनके जीवन में दरारें पड़ने लगती हैं । कहीं-कहीं ऐसा होता है कि असफल प्रेमी और प्रेमिका अविवाहित ही रह जाते हैं । ऐसे हालत में उनका जीवन त्रासदायक हो जाता है ।

"शिबी" में शिबी नामक एक युवती के असफल प्रेम का चित्रण है । अनेक युवक लोग शिबी को पाना चाहते हैं लेकिन शिबी किसी की नहीं बनती । वह एक ही युवक की वास्तविक प्रेमिका है उसका नाम है धरणीधर । लेकिन जब धरणीधर के पिता धरणीधर और शिबी के प्रेम संबंध के बारे में जानते हैं तब उनके द्वारा किये गये क्रूर साजिश के कारण शिबी की स्थिति अतिदयनीय बन जाती है । पिता गुण्डों के द्वारा शिबी को नेपाल की सरहद पर छोडते हैं । वे पुत्र को संभालते हैं । अपने साथ वे उसे जावा-सुमात्रा और आन्डमान की सैर कराते हैं और व्यापार करके भारत लौटते हैं । धरणीधर एक प्रसिद्ध आदमी की कन्या से विवाह करता है लेकिन अपने प्रेमी द्वारा वंचिता शिबी अपनी अवैध संतान के साथ कुष्ठरोगाश्रम में जीवन बिताती है ।

"मास्टरनी" अपने प्रेमी के द्वारा छली राजेश्वरी नामक एक अध्यापिका के असफल प्रेम की कहानी है । सुबोध नामक युवक डॉक्टर अपने मरीज़ मास्टरनी से प्रेम करता है और महीनों तक वे लुक छिपकर अवैध संबंध जोडते रहते हैं । तीन महीने की अवधि में दोनों बहते-बहते दूर निकल जाते हैं । प्रेम के ज्वारभाटे में मास्टरनी राजेश्वरी गले तक डूब जाती है । साथ ही साथ सुबोध चिन्तित हो उठता है । डाक्टर के पिता का पत्र आता है कि उसके टीके का मुहूर्त्त निकल आया है, छुट्टी लेकर डाक्टर को घर आना है । पिता का पत्र उसकी छाती में गोली-सा दाग देता है । राजेश्वरी से विवाह करने की बात डाक्टर सोच भी नहीं पाता । आज तक कुमाऊँ के इतिहास में किसी ब्राह्मण-पुत्र ने क्षत्रिय कन्या से विवाह करने का दुस्साहस नहीं किया था । राजेश्वरी को छोडकर दूसरे ही दिन सारा सामान बटोरकर डाक्टर चला जाता है । बडी धूम से टीका चढाता है, उससे भी धूम से विवाह होता है । समृद्ध ससुर पुत्री और जामाता को हनीमून के लिए काश्मीर भेजता है । विवाह के एक वर्ष बाद एक यात्रा के बीच डाक्टर राजेश्वरी को देखता है । वह चढ़ गाडी से उतरकर चला जाता है । राजेश्वरी की अपनी माँ भी नष्ट हो जाती है और वह एक दूसरे स्कूल में तबादला ले लेती है ।

"शायद" में जल्लाद पाण्डे अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद अपनी बेटी कुसुम को मौसी के पास पढने के लिए भेजता है । वहाँ कुसुम मौसी के देवर तारी की ओर आकृष्ट हो जाती है और तारी से उसकी सगाई मौसी एक प्रकार से पक्की करती है । लेकिन जल्लाद पाण्डे तारी को जामाता के रूप में स्वीकार को तैयार नहीं है । उसका कहना है -"यह भी कोई मर्द है । मुट्ठी-भर की कमर और एक बिलश्त का सीना । हमें ऐसा बटेर-सा दामाद

नहीं चाहिए ।"[1] मौसी से लड-झगडकर जल्लाद पाण्डे कुसुम को घर खींच लाता है । एक प्रकार से कुसुम को कारावास का जीवन बिताना पडता है । फिर भी एक दिन जब तारी सानिटोरियम में रोग से पीडित होकर रहता है तब कुसुम उसको देखने के लिए जाती है और अपना सर्वस्व उसे समर्पित करती है । लेकिन जल्लाद पाण्डे बेटी की शादी एक ऊँचे गबरू जवान से कराता है लेकिन प्लेग रोग के कारण कुसुम के पति की मृत्यु हो जाती है और कुसुम विधवा हो जाती है ।

"केया" नलिनी नामक एक युवती की मार्मिक व्यथा-कथा है । अपने यौवनकाल में नलिनी एक युवक से प्रेम करती है लेकिन पिता यह जानकर उसका विवाह एक अत्यंत धनिक परिवार के असुन्दर युवा से कराता है । लेकिन वह पति उससे रूखा व्यवहार करता है और अन्य स्त्रियों से यौन संबंध जोडता रहता है । नलिनी तो डाक्टर बन जाती है । बहुत वर्षों पश्चात् उसको अपने पुराने प्रेमी का पत्र मिलता है कि वह मरणासन्न है एक बार उसे देखने के लिए उसके पास आना । उस समय पति वहाँ नहीं होता । वह खबर पाते ही प्रेमी के यहाँ चली जाती है । वह प्रेमी तो नलिनी की याद में अविवाहित ही रहा । प्रेमी नलिनी के साथ अपनी माँ के घर जाना चाहता है । वह अपनी माँ से माँफी मांगना चाहता है । नलिनी उसके लिए तैयार होती है लेकिन सफर के समय गाडी में प्रेमी की मृत्यु हो जाती है और नलिनी उस लाश को गाडी में ही छोडकर चली जाती है ।

"मन का प्रहरी" अनुराधा नामक एक युवती के विवाहपूर्व प्रेम की असफलता और विवाह के बाद उस पुरानी प्रेमी के आने पर हुई दुर्घटना

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 152

की कहानी है । अपनी माँ की मृत्यु के बाद अनुराधा पढ़ने के लिए अपनी मौसी के पास बनारस चली आती है । मौसी अंग्रेज़ी विभाग के अध्यक्षा है और दिन-रात उनके छात्र उन्हें घेरे रहते हैं । उन छात्रों में से एक मधुकर नामक युवक से अनुराधा प्रेम करती है और अनुराधा पिता को लिखती है "मेरे लिए पात्र ढूँढने का सरदर्द अब उन्हें मोल नहीं लेना होगा
वो ईट गॉन टू फार...."[1] इकलौती पुत्री का पत्र पाते ही उसके पिताजी आगबबूला होकर स्वयं उपस्थित हो जाते हैं । वे प्रवासी व्यवसायी मित्र सूमा सेठ के पुत्र से अनुराधा का संबंध स्थिर कर चुके थे । वे अपनी पुत्री से प्रेम की बात भूल जाने को कहते हैं । लेकिन अनुराधा सहमत नहीं होती । बंबई की एक प्रसिद्ध अभिनेत्री की हत्या के अपराध में मधुकर के पिता आजन्म कारावास का दण्ड भोग रहे थे । माँ ने बहुत पहले ही आत्महत्या कर ली थी । इन सारी बातों को लेकर पिताजी बेटी को अपने प्रेमी से विवाह करने के लिए अनुमति नहीं देते हैं और बेटी से कहते हैं -"चल, अब तुझे यहाँ नहीं पढ़ना होगा । हो चुकी तेरी पढ़ाई । एक हत्यारे के बेटे से मैं तेरा विवाह नहीं होने दूँगा और अगर तू ने नहीं माना तो तेरे विवाह के दिन ही मैं तुझे उपहार दूँगा अपनी निर्जीव देह का ।"[2] यह कहकर अपनी जेब से रिवाल्वर निकालकर वे अपनी चौड़ी छाती पर धर लेते हैं । तब नहीं पापा नहीं कह अनुराधा सिसकती अपने पिता से लिपट जाती है और पापा के साथ नौरोबी चली जाती है । वहाँ की अधूरी शिक्षा हारवर्ड में पूरा करती है । अनुराधा के पिता के मित्र-पुत्र पी-पिलाकर अपना लिवर इतना चौपट कर लेता है कि उसे सिरोसिस हो जाता है । अनुराधा के पिता एक मोटर दुर्घटना में मर जाते हैं । पिता की संपत्ति सब बेच-बाचकर वह स्वदेश लौट आती है और

---

1. गैंडा - शिवानी - पृ. 120
2. वही - पृ. 123

विश्वविद्यालय के ऊँचे पद पर काम करती है । इसी बीच अनुराधा घर में ट्यूशन के लिए आनेवाले अपने से आधे उम्र के प्रियतम महंती नामक एक छात्र से विवाह करती है और अपना हनीमून बड़े आनन्द के साथ मनाती है । पानी की भाँति पैसा बहाती, वह प्रियतम महंती को भृंगकीट की भाँति छाती से चिपकाए देश-विदेश के आकाशों में उड़ती रहती है । इस विश्वव्यापी हनीमून के बीच अनुराधा की मुलाकात पुराने प्रेमी मधुकर से होती है । लुक छिपकर मधुकर से अनुराधा मिलती रहती है । उसको लेकर अनुराधा और महंती के बीच झगड़ा होता है । बाद में अनुराधा महंती से विरक्त होकर एक दिन मधुकर के पास चली जाती है लेकिन महंती उसके वियोग में निराश होकर वैरागी का वेष धारण करता है ।

"चलोगी चन्द्रिका" में रूप सौंदर्य की ओर उन्मुख विवाहपूर्व प्रेम और उसकी असफलता का चित्रण है । चन्द्रवल्लभ अपनी भाभी की छोटी बहन के प्रति आकर्षित है । अन्तर्मन से चाहता है कि दोनों वैवाहिक संबंधों में बंध जायें । लेकिन धनलोभी घरवाले चन्द्रिका का विवाह पियक्कड़ सदानन्द के साथ कराते हैं और चन्द्रवल्लभ का विवाह माधवी के साथ हो जाता है फिर भी चन्द्रवल्लभ के मन में चन्द्रिका के प्रति आकर्षण कम नहीं होता । कालान्तर में चन्द्रवल्लभ राजनीतिक क्षेत्र में उच्चपद को प्राप्त करने के बाद फिर से गिर पड़ता है । इसी बीच उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है । दूसरी ओर चन्द्रिका भी वैधव्य के दिन गुज़ारती है । चन्द्रवल्लभ एक दिन एक पत्र द्वारा चन्द्रिका को सेनिटोरियम के पीछे उसी देवदार वृक्ष के नीचे जिसकी छाया में वे दोनों मिला करते थे, सदैव एक हो जाने का निमंत्रण देकर बुलाता है किन्तु चन्द्रिका के आने पर, उसके ढलते यौवन और साधारण वेशभूषा देखकर चन्द्रवल्लभ छिप जाता है ।

दो घंटों तक प्रतीक्षा करने के बाद चन्द्रिका अपनी अटैची लेकर लौट जाती है । उसका आगमन तथा प्रत्यागमन झाड़ी के पीछे छिपा चन्द्रवल्लभ देखता रहता है किन्तु अप्रभावित रहता है ।

"विप्रलब्धा" निम्मी नामक एक लड़की के असफल प्रेम का चित्रण है । रायसाहब अपनी बेटी निम्मी की सगाई दुर्गादत्तजी के बेटा सुरेश से कराते हैं । एक वर्ष के बाद विवाह की तिथि तय की जाती है लेकिन विवाह के कुछ दिन पूर्व सुरेश के ताऊ को दिल का दौरा पड जाता है और वह मर जाता है । तब दुर्गादत्तजी कहलवा भेजते हैं कि वे पूरे एक वर्ष तक सहोदर की मृत्यु का मातम मनाएँगे । दूसरे ही वर्ष उसके मंझले चचिया ससुर मर जाता है और फिर विवाह एक वर्ष के लिए टल जाता है । छठें महीने उसके तीसरे ससुर की मृत्यु होती है । तीसरे वर्ष स्वयं दुर्गादत्तजी भी मर जाते हैं । जिस पुत्र के मुंडे सिर पर बाप की क्रिया का छोपा बँधा हुआ था उस पर मौर बाँधने की आशा दुराशा मात्र थी । पुत्री को लेकर रायसाहब बहुत पहले बाप-दादों की खरीदी गयी ज़मीन की देख-भाल करने के लिए नेपाल चले जाते हैं । सुरेश की पहली नियुक्ति बिहार में होती है । तीन विधवा ताई-चाचियों को लेकर वह अपनी नयी डिप्टी कलेक्टरी संभालने के लिए चला जाता है -"चाहता तो क्या मुझे ब्याहकर नहीं ले जा सकता था ?"[1] यह सोचकर निम्मी का मन विद्वेषपूर्ण हो जाता है । दूसरे वर्ष विवाह की तिथि निश्चित करने के लिए सुरेश नम्रतापूर्ण पत्र लिखता है तो निम्मी लिखती है -"अबके, अपने घर-भर के बडे बूढ़ों की डाक्टरी जाँच करा लेना, तब तिथि निश्चित करना । कहीं ऐसा न हो कि फिर मुहूर्त टल जाए ।"[2] इसी पत्र से सुरेश भड़क जाता है ।

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 121

2. वही - पृ. 121

इस लम्बे अर्से में वह समझ जाता है कि अपनी तटस्थता एवं औदात्य को समझने की शक्ति निम्मी में नहीं है, वह आवश्यकता से अधिक स्वतंत्रता-प्रेमी लड़की है, एक न एक दिन अवश्य ही उसकी अनुशासित दलीलों को अवहेलना कर निम्मी विद्रोह कर बैठेगी और वह दिन सुरेश के लिए बड़े सुख का नहीं रहेगा । सुरेश अपने चाचा से कहता है कि वह गाँव की अनपढ़ कन्या भले ही ले जाये, पर अब उस घमण्डी लड़की से रिश्ता नहीं करेगा जिसने उसके गुरु-गुरुजनों का अपमान किया था । सगाई टूट जाती है । अत्यधिक मद्यपान से निम्मी के पिता की हृदयगति सहसा बन्द हो जाती है तो निम्मी सब बेच-बाचकर विदेश चली जाती है । पच्चीस वर्ष के बाद जब निम्मी अपनी मामी की लड़की की शादी के लिए अल्मोड़ा आती है तब वह घर पहुँचने के पहले ही अपनी सखी लेखिका से जानती है कि वह सुरेश का लड़का है । यह जब वह जानती है तब लेखिका के हाथ में मामी के लिए मखमली डिबिया में झलमलाते हीरे का कर्णफूल फिरवा देती है । साथ ही सुरेश ने वर्षों के पहले निम्मी को जो अंगूठी पहनायी थी उस नीलम की अंगूठी को उतारकर वह कहती है - "उसे सुरेश को दे देना, अपने बेटे की बहू को पहना देना ।"...... "आज तक जिसके लिए मूर्खतावश इसे पहनती रही वह मेरे अज्ञान से अन्धी कल्पना दृष्टि में अभी भी मेरे लिए कुंआरा बैठा था । आज अचानक वही अपने बेटे की बारात सजाकर चल दिया तो अब किसके लिए पहनूँ ?"[1] यह कहकर निम्मी लौट जाती है ।

"प्रतीक्षा" कहानी में ज्योतिष और हस्तरेखा का सुविज्ञ पण्डित विमल अपने विवाह के लिए कन्या की खोज में अखबार में "एक उच्च कुल के उच्चपदस्थ भारद्वाज गोत्रोत्पन्न ब्राह्मण नवयुवक के लिए सुन्दरी कॉन्वेण्ड

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 125

शिक्षिता ब्राह्मण कन्या को । अन्तर्जातीय विवाह मान्य होगा ।"[1] इस तरह एक विज्ञापन देता है । यह विज्ञापन देखकर शिवेन्द्रमोहन पंत उसे अपने घर पर बुलाता है । शिवेन्द्र मोहन अपने अन्तर्जातीय विवाह से जन्मी अंग्रेज़ लगनेवाली लडकी से विमल का विवाह कराने को तत्पर होता है । लेकिन विमल शिवेन्द्र की भानजी माधवी को ही पसन्द करता है और उससे विवाह करने की बात शिवेन्द्रमोहन से कहता है । तब वह विमल से माधवी की पागल होने की संभावना के बारे में कहता है । लेकिन विमल का माधवी से जो घनिष्ठ प्रेम है वह उस बात को स्वीकारने को तैयार नहीं है और वह माधवी से विवाह करता है । एक वर्ष अत्यन्त सुखी जीवन बिताता है । इसी बीच माधवी में पागलपन के लक्षण दिखाई पडते हैं । वह उसे पागलखाने में शुश्रूषा के लिए भेजता है और उसके ठीक होने के बाद आने की प्रतीक्षा में वह जीवन बिताता है ।

वेश्या जीवन और सेक्स

संयम के नाम पर दबायी जानेवाली यौन-भावना से बचना असंभव नहीं तो मुश्किल अवश्य है । उसके उमडने पर किसी भी संग या सहारे की तीव्र आवश्यकता महसूस होती है । तब नैतिक मूल्य भुलाया जाता है और उससे अनेक समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं । यौन अपराध की प्रवृत्ति केवल अविवाहित पुरुष-स्त्रियों में ही पायी जाती है ऐसी बात नहीं है । दरअसल यह एक प्रकार की विकृति है जो विवाहित या अविवाहित दोनों में ही पायी जाती है । शिवानी की कहानियों में ऐसे अनेक पात्र आते हैं जिनके अवैध संबंधों के कारण उनका पारिवारिक व दाम्पत्य जीवन नष्ट हो जाता है ।

1.लाल हवेली- शिवानी - पृ. 143

"करिए छिमा" की हीरावती एक वेश्या के रूप में हमारे सामने आती है । जब अपनी जुड़वा बहन पिरावती का पति अपनी पत्नी समझकर हीरावती का हाथ पकडकर छाती से लगाता है तब वह उससे बचने के बगैर चुपचाप छाती से लगी हँसती रहती है । जब उसके लिए सजा मिलती है वह खुशी से उसको स्वीकार करती है और दंड के अनुसार वह प्रेतगृहा में अकेली रहती है । श्रीधर ने ही उसको गाँव से जाने का दंड दिया था फिर भी उसके प्रति हीरावती के मन में प्रेम है और वह अपने क्रिया कलाप द्वारा श्रीधर को अपने जाल में फंसाती है । वह श्रीधर से गर्भवती हो जाती है और श्रीधर के बच्चे को जन्म देती है । हीरावती यह सोचती है कि बड़े होने पर लोग समझेंगे कि लडका श्रीधर का पुत्र है क्योंकि श्रीधर की ही कंजी आँखें, वही नाक यानी श्रीधर का ही रूप है । वैसे सारे गाँव में श्रीधर का बडा सम्मान है अगर बच्चा जीवित रहेगा तो श्रीधर पर कलंक लग जाएगा । इस भय से हीरावती बच्चे की हत्या करती है और कभी न झूठ बोलनेवाली हीरावती हाकिम के सामने सत्य नहीं कहती । हाकिम पूछता है "बोल लडकी, इसका पिता कौन है ?"[1] तब हीरावती कहती है -"सरकार आप तो दिन-रात पहाडों का दौरा करते हैं । कई झरनों का पानी पीते होंगे । कभी आपको जुकाम भी हो जाता होगा । क्या आज बता सकते हैं कि किस झरने के पानी से आपको जुकाम हुआ है ?"[2] उसके बाद हीरावती को जेल भेजा जाता है ।

"पुष्पहार" में दुर्गी का पति लंगडा होने पर शराब पीकर घर में ही रहता है दुर्गी ही घर के अन्दर और बाहर का सब काम करती है ।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 10

2. वही - पृ.39

इस प्रकार पति की ओर से उसे कोई खुशी नहीं मिलती । वह यौवनयुक्ता है और अपने को काबू में नहीं रख पाती । परिस्थितिवश यानी पति के उपेक्षा भाव से दुर्गी को वेश्या बनना पड़ता है । जब मंत्री से उसकी मुलाकात होती है तब उसको अपने रसिक स्वभाव द्वारा मोहित करती है और मंत्री भी उसके मोहपाश में बंध जाता है । सभी दिन रात्रि में वे दोनों अवैध संबंध स्थापित करते रहते हैं । एक बार वेश्या होने पर फिर उस प्रवृत्ति से बच जाना मुश्किल है । इसलिए जब पति के द्वारा वह पकड़ी जाती है, मंत्री को तो दंड मिला, फिर भी दुर्गी अन्य पुरुषों से जुड़ती रहती है ।

"तोप" अपने इच्छानुसार वेश्या का जीवन जीनेवाली तोप नामक वेश्या के जीवन का अत्यंत मार्मिक चित्रण है । द्वितीय महायुद्ध के समय अलमोड़ा शहर की छावनी में, बाहर से जब आस्ट्रेली सैनिकों की एक बड़ी फौजी टुकड़ी आती है तब शहर की बहू-बेटियाँ मन्दिरों के दर्शन के लिए भी जाना छोड़ देती हैं । यहाँ तक कि पुरुष लोग भी बाहर आने से डरते हैं । लेकिन तोप नामक एक युवती किसी डर के बिना उन सैनिकों से मिलती रहती है । सैनिकों के लिए वह खिलौने के समान थी । बाद में वह अपने रेस्ट हाउस में मरीज़ों की देखभाल करती रहती है । उसके रेस्ट हाउस में दो कठिन नियम हैं - एक तो वहाँ स्त्रियों के लिए स्थान नहीं है और दूसरा किराया पेशगी देना है । वह हर बार एक-एक मरीज को अपना बायफ्रेंड बनाकर ताज आदि देखने के लिए ले जाती है । इतना ही नहीं प्रत्येक रविवार को अपने मरीज़ों के लिए गेलफ्रेंड भी लाती है और स्वयं अपने मरीज़ों को बायफ्रेंड बनाकर घूमने निकलती है । तोप लेखिका से कहती है -"सैनेटोरियम के पास दिल नहीं तोप के पास बहुत बड़ा दिल है ।"[1] तोप का कहना ठीक था । उसके पास बड़ा

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 38

दिल है केवल पुरुषों के लिए । कहानी के आरंभ में सैनिकों के साथ दोस्ती करने से लेकर जो घटनाएँ हुई हैं उनसे तोप की ज़िन्दगी का नग्न चित्र मिलता है ।

"अलख माई" की वेश्या का काम करनेवाली ईश्वर की दासी रजुला अच्छी गायिका भी है । गाना गाकर वह अधिक रुपया कमाती है । लेकिन देवतानुमा व्यक्ति से वह गर्भ धारण करती है और वह अपने पुत्र की हत्या करती है । उस बच्चे के शक्ल एक दम अपने बाप से मिलती है । पैदा होते ही रजुला उस बच्चे की शक्ल पहचानती है । बडा होने पर लोग उसके पिता को पहचानेंगे । इस भय से बच्चे की हत्या कर देती है और चालीस तोला सोना और विक्टोरिया के चार हज़ार नकद रुपये नदी में डुबाकर वह गाँव छोडकर चली जाती है और पश्चात्ताप से खिन्न होकर गाना गाकर भिक्षा माँगकर जीवन बिताती है ।

"चाँद" में चाँद नामक युवती पुरुषों को अपने वश में डालकर उनसे यौनसंबंध जोडती है और परिवारों की खुशी और चैन मिटाती चलती है । वह ऊँचे अफसरों के घर में काम के लिए जाती है और वहाँ के पुरुषों से अवैध संबंध जोडती है । इस प्रकार उनकी गृहस्थी में विष घोलकर फिर दूसरे घर में उसकी गृहस्थी में विष घोलने के लिए चली जाती है । एक बार एक प्रसिद्ध क्लब में किसी बौरा के साथ शराब पी-पीकर विवस्त्रा बनी चाँद को पी.ए.सी की विराट गाडी पकड़कर ले जाती है । उसका संबंध केवल ऊँचे लोगों से ही नहीं बल्कि आइस्क्रीमवालों और रिक्षावालों से भी था । यह सब जानने पर भी मानो चाँद को अपने घर में काम करने के लिए रखती है और कुछ ही

दिनों में चाँद मानो का विश्वास प्राप्त करती है । मानो को तो अपने पति पर अतिविश्वास है । वह अन्य स्त्रियों पर रीझनेवाले स्वभाववाला नहीं था । एक दिन मानो को अपने पिता के रोग के कारण उन्हें देखने के लिए विदेश जाना पडता है । तब वह चाँद को अपने घर संभालने का काम सौंप देती है । लेकिन चाँद घर संभालने के साथ जे.के.को भी अपने वश में डालती है । वह जे.के. से अविहित संबंध जोडती है और जब मानवी को उसका पता चलता है तो जे.के. को छोडकर चली जाती है ।

"धुआँ" अपना सब बन्धन भूलकर यौन संबंध जोडनेवाले रजुला और सेठ की करूण कहानी है । संतानहीन बत्तीस वेश्याओं के बीच जब मोतिया सुन्दरी रजुला को जन्म देती है तब सब संतानहीन वेश्याएँ आनन्द में डूब जाती हैं । रजुला बत्तीस मातृत्व-वंचिता नारियों के अभिशप्त दग्ध हृदयों का मलहम बन जाती है । रजुला जब आठ साल की होती है तब वह संगीत सीखने लगती है । रजुला के गाने की क्षमता देखकर उस्ताद बुन्दु मियाँ रजुला को लखनऊ में गाना सिखाने के लिए ले जाता है । बुन्दु मियाँ की बहन बेनजीर रजुला को पहले ही दिन से शासन की जंजीरों में जकडकर रखती है । बत्तीस मौसियों के लाड और देवकी के दुलार के लिए बेचारी रजुला तरसती है । माँ के पास भी रजुला को नहीं भेजी जाती । चन्दन का उबटन लगाकर तीन-तीन नौकरानियाँ उसे नहलाती हैं, बादाम पीसकर गाय के घी में तर बतर हलुआ बनाकर उसे खिलाया जाता है और वह रियाज़ करने बैठती है । हिंडोले पर बेनजीर उसके एक-एक स्वर और आलाप का लेखा रखती है, जोनपुरी, कान्हडा, मालगुंजी, शहाना, ललित, परज जैसी विकट राग-रागिनियों की विषम सीढियाँ पारकर रजुला संगीत के नन्दनवन में पहुँचती है और वह धीरे-धीरे

सबको भूलने लगती है । धीरे-धीरे रजुला सोलह वर्ष की होती है । लगता है वह मानवी नहीं स्वर्ग की कोई स्वप्न सुन्दरी अप्सरा है । हाथ लगाते ही उड जाये । बेनजीर इसी से उसे बडे यत्न से रूई को फांकों में सहेजकर रखती है । वह उसका कोहनूर हीरा है जिसे न जाने कब कोई दबोच ले । फिर भी रजुला अपना सब बन्धन भूलकर अपने बंगले के पास की हवेली के सेठ दादूमल का विवाहित पुत्र छोटे सेठ के प्रति आकर्षित होती है और सेठ भी रजुला के सौंदर्य देखकर दंग रह जाता है और दोनों लुक-छिपकर अवैध संबंध जोडते हैं । ऐसे तीन महीने बीत जाते हैं । एक दिन सेठ रजुला के बंगले से अपने बंगले की ओर कूदते समय नीचे गिर पडता है और मर जाता है । रजुला यह सह नहीं पाती । उस घटना के बाद बेनजीर के यहाँ रजुला को एक तरह कारावास ही भोगना पडता है । एक दिन नौकरानी रजुला के कमरे में ताला डालने को भूल जाती है । तब रजुला वहाँ से भाग जाती है और अपने जन्म गृह में पहूँचती है और नाना नेपाली बाबा से दीक्षा लेकर ईश्वर भजन में जीवन बिताने लगती है ।

"क्यों ?"-ऊँचे सरकारी अफसर डी.डौयल की पुत्री और जामाता विदेश में हैं और एक पुत्र है । समृद्ध गृह है । डौयल की पत्नी तो कठोर स्वभाववाली है । डौयल के मनबहलाव के लिए उसके मित्र सुन्दरी लडकियों का चयन करता है और डौयल अविहित संबंध जोडता रहता है । उसी बीच एक दिन वह अपने पुत्र के लिए एक हीरे के व्यापारी की पुत्री कुंभा को देखने के लिए उसके होस्टल में जाता है लेकिन कुंभा वहाँ नहीं थी । लौटते वक्त डौयल एक वेश्यालय में जाता है और वहाँ एक सुन्दरी लडकी से वह अविहित संबंध जोडता है और उस लडकी को वह चार सौ रूपया देता है । बाद में पुत्र के विवाह के दिन जब वह पुत्र-वधू को देखता है तब वह दंग रह जाता है और परेशान हो जाता है क्योंकि एक दिन कुंभा ही डौयल की अंकशायिनी

बनी थी । आखिर मानसिक शांति के नष्ट होने पर डौयल आत्महत्या कर लेता है । किसी को भी डौयल की आत्महत्या का कारण नहीं मालूम था लेकिन वह कारण जाननेवाली एक ही व्यक्ति कुंभा थी ।

'दंड' नामक कहानी में डॉ. सिंह के विचित्र स्वभाव पर लेखिका प्रकाश डालती है । साथ ही साथ ऐसी रोगिणियों का चित्रण भी करती हैं जिन्हें असल में कोई बीमारी नहीं है तो भी डाक्टर के सामने आती है । समाज को अध:पतन की ओर ले जानेवाले ऐसे लोगों का चित्रण लेखिका यहाँ सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करती हैं । डॉ. सिंह अपने यौवनकाल में परीक्षा की तैयारी करने के लिए पूजा की छुट्टियों में पिता के अंतरंग मित्र जमीन्दार स्नेही दंपति का अतिथि बनकर गोआलपाडा में आता है । वहाँ घाघू उसका सेवक बनकर रहता है । एक दिन घाघू बीमार में पड जाता है तब उसकी बेटी चंदमनी उसकी सेवा के लिए आती है । तीन ही दिनों में उस कर्मपरायण सुन्दरी सेविका अपनी नि:स्वार्थ सेवा से सिंह को अपने वश में कर लेती है । चन्दमनी नित्य आधी रात को निर्भीक अभिसारिका बन डॉक्टर के पास आती रहती है । एक दिन डॉ. सिंह समझ जाता है कि चंदमनी गर्भवती है । सिंह रात भर सो नहीं पाता । वह घाघू के हाथ में कालेज फीस के लिए धरे पूरे दो सौ देकर कहता है -"चन्दमनी के ब्याह में लगा देना । अब विवाह में देरी मत करना घाघू ।"[1] किसी से कहे बिना डॉ. सिंह चुपचाप वहाँ से चला जाता है । तीसरे ही महीने डॉ. सिंह पिता को अपने विवाह को स्वीकृति देता है और अपने वैभव और प्रभुता के मद से अंधा बना वह जानबूझकर ही अतीत को सशक्त भुजाओं से पीछे ढकेलता है । इसी बीच ब्रस्ट कैंसर से डाक्टर की पत्नी की

---

1. गैंडा - शिवानी - पृ. 112

मृत्यु होती है । फिर वह पिता के लाख कहने पर भी विवाह नहीं करता है । अपनी अधूरी डाक्टरी पूरा कर वह कुछ दिनों विदेश में ही रहता है फिर स्वदेश लौटकर दिल्ली में ही अपना क्लिनिक खोलता है । डाक्टर का पुत्र विदेश में ही पिता के पेशे की शिक्षा ग्रहण कर आश्चर्यजनक रूप से छोटी अवस्था में एफ.आर. सी.एस कर लौटता है और अनायास ही पिता की दक्षिण भुजा बन जाता है । डा. सिंह लाखों में एक सर्जन था तो पुत्र लाखों में एक चिकित्सक । दोनों के पास समृद्ध गृहों की सुन्दरी किशोरियाँ स्वेच्छा से नकली रोगों का वरण कर आने लगती हैं । खासी बीमारी के न होने पर भी टॉन्सिलस्ट का बहाना बनाकर आती हैं । पुत्र के आते ही किशोरी रोगिणियों की संख्या में ऐसी वृद्धि होती है कि उन्हें अपने क्लिनिक में नया विंग बढ़ाना पड़ता है । स्वयं विधुर पिता के मिलनेवालों में आकर्षक मिलनेवालियाँ ही अधिक संख्या में रहती हैं । यह संसारी पुत्र भी समझता है । माँ की आदमकद ताम्रमूर्ति के पास ब्रिज-टेबल पर वह उस विधानसभा की धूर्त सदस्या के साथ पिता डॉ. सिंह की ही-ही-ठी-ठी सुन चुका है । पर पिता की समस्त दुर्बलताओं को जानने पर भी वह स्नेही पुत्र डॉ. पिता से एक क्षण भी अलग नहीं रह पाता है । शालांक-सा क्रूर पिता, मरीज के प्राण जाने से पूर्व भी अपनी ऊँची फीस का जान बोमा करवा लेता है यह भी पुत्र से छिपा न था । पिता की आसव से आसक्ति, नारी लोलुप चटोरी जिह्वा, कुछ भी उससे लुका-छिपा नहीं है, फिर भी स्वेच्छा से अनजान बना, वह डाक्टर सिंह के समस्त दुर्गुणों पर काला परदा डालकर ढांप देता है । पुत्र के इसी क्षमाशील व्यक्तित्व को देखकर डॉ. सिंह संतोष की साँस लेता है । पर ठीक तीसरे ही महीने पुत्र की मृत्यु होती है । डॉ. सिंह से यह सहा नहीं पाता । वह किसी से कहे बिना सहायक सुशील के नाम एक चिट्ठी रखकर वहाँ से चला जाता है । अट्ठाइस वर्ष पूर्व जहाँ से एक सरला किशोरी को असहाय अवस्था में छोड़कर भाग आया था जिसके निःस्वार्थ आत्मसमर्पण की सुध शायद ही कभी सुख के क्षणों में आई थी - उसी साँवली चेहरे पर जड़ी दो

करूण आँखों का मूक उपालंभ आज उसे अपने जीवन के चरम दु:ख के क्षणों में पागल बनाता है । अपनी निस्पायता, आवारापन उसे कचोडते लगता है और वह फिर उसी विस्तृत गाँव की ओर भागता है और वहाँ पहूँचता है । वहाँ जाकर उसे पता चलता है कि चन्दमनी में जन्मा हुआ उसके पुत्र की मृत्यु अभी-अभी हुई है । इस दु:ख को सहन नहीं कर पाने के कारण वह पागल सा वहाँ से लौटता है और मालगाडी के डिब्बे में जानवरों के साथ सफर करता हुआ लौटता है । उसे लगता है कि बैलों की घंटियों की आवाज़ मन्दिरों की घंटियों की आवाज़ से कम नहीं है ।

अन्धविश्वास - रूढ़ियाँ और पाखंड

शिवानी ने अंधविश्वास, रूढ़ियाँ, धार्मिक पाखंड और उससे जनित नारी शोषण की कई तस्वीरें कहानियों में प्रस्तुत की हैं । नारी कहीं-कहीं अन्धविश्वास का शिकार बनती है तो विवाह के बाज़ार दहेज का शिकार बन जाता है । संत महंत भी उसको अपने जाल में फंसाते हैं ।

"श्राप" में वर के पिता लडकी के पिता से कहते हैं कि हम कुछ नहीं मांगेगे तुम अपनी बिटिया को जो देना चाहे दे दें । लेकिन दित्या के बेचारे पिता इस कटु सत्य से अनभिज्ञ हैं कि मुँह से कुछ न मांगनेवाले ही कभी-कभी मुँह खोलकर सब मांगनेवालों से भी अधिक खतरनाक होते हैं । वधु के पिता साडियों का स्तुप, टेलीविज़न, फ्रिज, इस्तरी, बर्तन, रेशमी-रजाइयाँ, कट्टे-मलमल के थान, गैंस का चूल्हा, सिलिण्डर, बिजली के पंखे आदि कई वस्तुएँ

दहेज देने के लिए जुटाते हैं । एक दिन वर पक्ष के अतिथि दहेज सामग्री का अवलोकन करने के लिए आते हैं और वर के पिता कहते हैं - "देखिए समधीजी, साड़ियों के स्तूप की ओर वर के पिता ने छड़ी घुमाई, "हमारे घर की रुचि जरा सोफिस्टिकेटेड है, वे ये सब तड़क-भड़क की बनारसी कभी नहीं पहनेंगी - ये सब हटाकर कांजीवरम और चंदेरी गढ़वाल रखवा दें । यही फरमाइश मेरी लड़कियों ने भी की है ।"[1] छड़ी से उन्होंने साड़ियों को ऐसे उथल-पुथल दिया है जैसे कोई स्वास्थ्य निरीक्षक, सड़क की पटरी पर सड़ी-गली सब्जी या खुले-कटे तरबूज का ठेला उलट देता है । चलते-चलते सहसा वर के पिता मुड़कर कहते हैं - "हमने तो आपसे कह ही दिया है हम कुछ नहीं लेंगे । द्वाराचार में हमारा और हमारे अतिथियों का स्वागत ठीक-ठाक रहे, बस इसीका ध्यान रखिएगा ।"[2] विवाह के दिन वधू के घरवाले वर पक्ष का अच्छी तरह स्वागत करते हैं । अतिथियों के कण्ठ में अजगर-से पृथुल फूलों के हार भी डालता है । गुलाबजल का छिड़काव भी करते हैं । वर के लिए कहीं से मर्सिडीज़ भी मंगाकर फूलों से भरपूर सजाते हैं । लड़की विदा होने लगी तो पिता हाथ बांधे समधी के सामने ऐसे खड़े हो जाते हैं जैसे दीन-हीन चोबदार हों । एक ही रात में उनका दमकता चेहरा स्याह पड़ जाता है । वे वर के पिता से कहते हैं- "आप लोगों के स्वागत में कोई त्रुटि हुई तो क्षमा करें ।"[3] तब समधी एक ही आनन को दशानन की अहंकारी मुद्रा में हिलाते बोलते हैं - "क्या त्रुटि रह गई है, यह भला हम अपने मुँह से क्या कहें, हम तो आपके मेहमान हैं । पर हाँ, यह 500 आपने द्वाराचार में रखे हैं, यह लीजिए, इन्हें आप हमारी ओर से नाई, धोबी, महरी और मालियों को बांट दें ।"[4] यह सुनकर अपमान से कन्या के

---

1. पूतोंवाली - शिवानी - पृ. 93
2. वही - पृ. 94
3. वही - पृ. 94
4. वही - पृ. 94

पिता का चेहरा स्याह पड़ जाता है । इतना ही नहीं विवाह के चार ही महीनों में पति के घरवाले दिव्या की हत्या भी करते हैं ।

"मधुयामिनी" - कुमाऊँ की सर्वसाधारण जनता पुराने आचार विचारों का पालन करने से नहीं हिचकती । प्रत्येक घराने में बेटी के विवाह का शुभ लग्न निकालने का रिवाज़ बना रहता है । इस कारण इन दिनों में कन्याओं का एक साथ एक ही समय विवाह चलता है । उस समय एक लखपती प्रवासी परिवार तिवारी के कुटुम्ब उस प्रदेश में आकर अपनी कन्या की शादी के लिए एक कोठरी ऊँचे किराये पर लेता है । उसकी शादी में भाग लेने के लिए जो बारात आती है वह हवाई जहाज़ से आती है । हवाई जहाज़ की यात्रा के लिए जो किराया देना पडता है उससे तो सर्वसाधारण परिवार की दस लडकियों का विवाह कर दिया जा सकता है । देश की साधारण जनता की शक्ति के परे की बात है यह । तिवारी जैसे अमीर लोग हज़ारों रुपये खर्च करके अपनी बेटियों को शादी कराते हैं, भेज देते हैं । किन्तु साधारण कुमायूँ घराने के लिए एक कन्या को ब्याह कराके भेजना भी कठिन कार्य है । इस प्रकार वे बहुत ही आडंबर से अपनी कन्या की शादी लंदन के एक अंग्रेज़ युवक के साथ कराते हैं । मगर उनको अपनी इच्छा के अनुसार वर नहीं मिलता । वर काना था । विवाह के दिन रात में जब वर वधू मिलते हैं तब वर वधू से कहता है कि वह उसको उतनी सुन्दरी नहीं समझता यदि पहले ही यह बात जानता तो वह उससे शादी नहीं करता । वैसे वर की एक आँख काँच की थी । उधर लडकी के मन में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती क्योंकि वह बहरी और गूँगी थी ।

"के" – किशोरी एक अनाथ बालिका है । ताऊ और ताई के संरक्षण में वह बडी होती है । सयानी हुई तो विवाह का समय भी पहुँचता है । उसके लिए वर निश्चित किया जाता है लेकिन देखिए –"इसी पिछले रविवार को किशोरी के कुंआरे मीठे सपनों का सुनहरा प्रासाद भर-भराकर चूर-चूर हो गया था । उसके ससुरालवालों ने ही धोखा दिया था । रामजाने ताऊ की ही मति भ्रष्ट हो गई । ठीक-फेरों के समय दुल्हे को मिरगी का दौरा पड गया..................... "मिरगी के रोगी को विवाह की अनुमति अदालत कब से देने लगी ?"[1] मौसी किशोरी को धडल्ले से खींच ले गई । इस प्रकार किशोरी के कुआरे मीठे सपनों का सुनहरा प्रसाद टूटकर नीचे गिर जाता है ।

विवाह के लिए जन्मकुण्डली देखना एक धार्मिक आचार है । कभी-कभी तो स्त्री की जन्मकुण्डली शुद्ध होती है तो पुरुष की अशुद्ध । तब उन दोनों में विवाह होना प्रचलित आचार के अनुसार निषिद्ध है । इस आचार के कारण कई युवा-युवतियों को कौमार्यव्रत का पालन करना पडता है, उनका जीवन अंधेरे कुए में पड जाता है । "ज्येष्ठा" कहानी में इसका उदाहरण मिलता है जिसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं । "ज्येष्ठा" में पिरी को शादी अशुद्ध कुण्डली के कारण नहीं हो पाती । इसका कारण आचारों पर अटूट विश्वास है ।

"चीलगाडी" में लेखिका को अपने पति की मृत्यु के बाद अन्य लोगों का शिकार बनना पडता है । एक बार अनमन होकर महन्त का पैर

---

1. विषकन्या – शिवानी – पृ. 104

दबाना पडता है । साथ ही वह उसकी कामपूर्ण दृष्टि का भी शिकार बनती है । इस समय उसकी असहाय अवस्था का वर्णन देखिए -"देख क्या रही है, बहू, दाब दे न पैर" बडी अम्मा का आदेश मैं कैसे टाल सकती थी ? फिर झुकते उसके चरण दबाने लगती तो मुझे लगता असंख्य घिनौने कीडे मेरे हथेलियों में कुल बुलाने लगे हैं । कभी-कभी सबकी दृष्टि बचाकर वह मेरी हथेली अपने पैरों के बीच दाब लेता, उसकी भूखी आँखों की दुनाली से वासना की गोलियाँ दनदनाने लगती...

मेरी जी में आता, उसकी स्वर्ण मण्डित पादुका उसके सिर पर दे मारूँ, पर लोगों की दृष्टि में उस परमहंस बाबा की महिमा अपार थी, उसका चरणोदक शीशियों में भरकर विदेश तक भेजा जाता था । मैं कुछ कहती, तो वह लपट मुझे ही लपेट लेता ।"[1] आखिर लेखिका को एयरहोस्टस का काम मिलता है तब वह घर छोडकर चली जाती है ।

"निर्वाण" की मनोरमा एक कार्यकुशल नारी है जो घर में पति को परमेश्वर स्वरूप स्वीकारती हुई बच्चों का पालन पोषण करती है और बाहर गुरु के हर साधन का माध्यम जानती हुई गुरुनाम का कीर्तन करती है । अपना अधिकांश समय गुरु के साथ व्यतीत करती है । गुरु के चमत्कारों की कहानियाँ लोगों को सुनाती है और गुरु के निम्नलिखित वचनों से शांति प्राप्त करती है - "मन्नू साधना तुझे नहीं करनी होगी, तेरे लिए जो करणीय है, वह मैं करूँगा । शक्ति, अनुभूति ये सब बाह्य वस्तुएँ हैं, इनमें तेरी आसक्ति रही तो कभी-भी तुझे निर्वाण की प्राप्ति नहीं होगी । साधना का तब कोई महत्व नहीं होता जब तक गुरु अनुगत न हो । धीरे-धीरे सब कार्य स्वतः सिद्ध होंगे पगली ।"[2]

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 90
2. स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ. 60

गुरु के अनुगत होने तथा कार्यों को सिद्धि के आश्वासनों से भ्रमित मनोरमा समय पाकर पति से लड़-झगड़कर बुखार से तड़पते बच्चे को छोड़कर गुरु के साथ निकल पड़ती है । मनोरमा घरवालों के लिए एक पत्र लिखकर अपने उत्तरदायित्व से मुक्त हो जाती है कि -"आप लोग मेरा मोह छोड़ दें, मैं ने गुरु-कृपा से अपने जीवन का लक्ष्य पा लिया है ।"[1] थोड़े समय बाद ही विभिन्न पत्रकार गुरुनाम की धज्जियाँ उड़ा देते हैं । अनेक सुशिक्षित किन्तु भोली-भाली आधुनिकाओं के सम्मोहन टूटने की गाथाएँ समाचार पत्रों में प्रकाशित होने लगती हैं, किन्तु अभागिनी मनोरमा का कहीं नाम तक नहीं दिखाई देता ।

व्यक्तिनिष्ठता की विशिष्टता

व्यक्तिनिष्ठता से जुड़ी हुई कई स्थितियों का उद्घाटन शिवानी की कहानियों में हुआ है । यहाँ पात्र सामान्य से विशिष्ट हो जाते हैं और उनका आचरण भी असाधारण सा होता है । कई कहानियों में विशिष्ट मानसिकता उभरती है । स्त्री और पुरुष असाधारण-सी प्रतिक्रियाएँ प्रकट करती हुए कहानियों में प्रस्तुत होते हैं । इनको आम पात्रों को कल्पना से जोड़ा नहीं जा सकता ।

"मेरा भाई" सुबय्या नामक एक बालक की जीवन रेखा है । लेखिका अपने बचपन में बैंगलूर में रहती थीं । गिरजाबाई और उनके पति वहाँ उनके पड़ोसी थे । वे निस्सन्तान थे इसलिए एक बच्चे को ले अपने बेटे के रूप में गोद लिया था । उसका नाम है सुबय्या । सुबय्या लेखिका और लेखिका की

---

1. स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ. 73

भाई-बहनों के साथ पढने और खेलने के लिए चलता है । रक्षा बन्धन के दिन लेखिका को राखी बाँधता है । अपने पिता के मरने के बाद लेखिका और परिवार पहाड लौटते हैं और चालीस वर्ष के बाद वे जब बैंगलूर आती हैं तब गिरजाबाई के घर में जाने के लिए वहाँ के एक पुजारी से उसके बारे में पूछती हैं तब पता चलता है कि वे दोनों अब नहीं रहे, उनका पुत्र सुबप्या एक मुजरिम है, उसको पकडनेवाले को दस हजार रूपये का इनाम देने की घोषणा सरकार ने की है । अंत में लेखिका रेल गाडी में लौटते समय एक चोर आकर छुरी दिखाकर उसके सब आभूषण माँगता है और सूटकेस को भी । तब लेखिका सूटकेस से अपना पासपोर्ट लौटा देने के लिए कहती हैं तब वह सहमत होकर देने के पहले पासपोर्ट खोलकर देखता है तो वह लेखिका को पहचानता है, अपने बचपन की याद आती है और लेखिका से राखी बाँधने को कहता है लेकिन लेखिका नहीं बाँधती । तब वह उसका सभी राखी के दिन दिया हुआ पैसा स्वीकारने को कहता है । वह भी नहीं स्वीकारती हैं । तब वह लेखिका के लिए अपनी चोरी से प्राप्त डालर आदि को लेखिका के पास छोडकर चला जाता है ।

"मसीहा" एक ऐसे लडके की कहानी है जो बाद में बदर बनकर मसीहा के स्तर तक पहुँचता है । शिशु वॉरेसी माँ-बाप का इकलौता बेटा है । उसके पिता शिकारी में दिलचस्प रखते हैं । माँ बलरीना और बाप के बीच हमेशा झगडा होता रहता है । शिशु वॉरेसी को न माँ का स्नेह मिलता है न पिता का अनुशासन । बचपन से ही वॉरेसी को गांभीर्य घेर लेता है । दिन-रात अध्ययन में डूबकर वॉरेसी सांसारिक बंधनों से दूर हट जाता है । अगम्य और तात्त्विक ग्रन्थों की ग्रन्थि उसे बाँधकर सामान्य मानव से ऊँचा उठाती है और वह ईसाई पादरी बन जाता है । एक दिन अगाध वैभव को ठोकर मारकर वह भारत में आता है और नैनीताल में रहता है । एक दिन वहाँ

भूकम्प आता है । लोगों को बचाने का काम वॉरेसी करता है । उसी बीच परी नामक लड़की को भी बचाता है । वह सरल बालिका किसी भी तरह अपने जीवनदाता को छोड़ने को तैयार नहीं होती । वॉरेसी बीमारी में नितान्त बालिका-सी दिखती, बिस्तर से घुली-मिली परी को सहसा अनिंद्य रूपसी के रूप में देखकर स्तब्ध होता है । उसकी कम्युनिटी के फादर वॉरेसी को अच्छी तरह जानते थे किन्तु फिर भी पन्द्रह-सोलह वर्ष की सुन्दर बालिका को अपने बंगले में रखना बुद्धिमानी नहीं थी । उस समय उसके परम स्नेही फादर पाल उससे मिलने आते हैं और उनके साथ परी को कॉण्वेट में भेजते हैं । लेकिन परी को फादर को छोड़कर जाना पसन्द नहीं था । तीन दिन के बाद एक रात में परी वहाँ से दौड़कर ब्रदर के पास आती है और बीमारी के कारण उसकी मृत्यु होती है । अंत में ब्रदर वॉरेसी बहुत दुःखित हो जाता है और वह कुष्ठरोगाश्रम में रोगियों की शुश्रूषा कर जीवन बिताने लगता है मसीहा बनकर ।

"मरण सागर पारे" अपने वैधव्य जीवन में भी अनाथों का संरक्षण कर, दूसरों की सहायता कर स्नेह और वात्सल्य की धारा बहानेवाली बसंती दीदी की कथा है । एक बार जब उनके अनेक आश्रितों में से एक पढ़-लिख, योग्य बन विदेश हो आया और बारिस्टर बन गया तो बहुत वर्षों बाद लेखिका किसी से उसके अतीत की कहानी सुनकर बसंती दीदी से पूछती हैं -"क्यों बसंतीदी, एक नौकर को तुमने पढ़ा-लिखाकर इतना योग्य बनाया, उसने तुम्हें कभी कुछ भेजा ?"[1] तब बसंती दीदी कहती हैं -"अरी चल हट, मैं ने क्या उसे इसलिए पढ़ाया था कि वह मुझे कुछ भेजे । पर जब कभी भी आया, कुर्सी देने पर भी नहीं बैठा, खड़ा ही रहा ।"[2] उनका चेहरा कृतज्ञ भृत्य की नम्रता की स्मृति से

---

1. रथ्या - शिवानी - पृ. 103
2. वही - पृ. 103

स्निग्ध हो उठा । तब लेखिका कहती है -"मैं उसकी जगह होती, तो तुम्हें सोने से मढ़ देती ।"[1] तब बसंती दीदी कहती है -"अरी, सोने से तो मैं तब ही मढ़ गई, जब सुना कि वह "बारिस्टर" बन गया । देख, एक बात मेरी गांठ बांध ले - किसी का भला करती है, तो कभी मुंह मत खोल, और न कभी यह आशा रख कि तुझे वह सोने से मढ़ेगा ।"[2] उसके दिल में केवल अपने बच्चों के लिए नहीं वरन् उसके सभी आश्रितों के लिए अजस्र वात्सल्य का स्रोत है ।

"जिलाधीश" एक मध्यवर्गीय परिवार की असाधारण लड़की सुमन की कहानी है । कड़े संघर्ष के पश्चात् उसे जिलाधीश का पद प्राप्त होता है । सचिवालय का वेदाध्ययन कर वह ऐसे कुख्यात् जिले की बागडोर संभालने के लिए पहुँचती है जो एक नहीं अनेक जिलाधीशों का सिरदर्द रह चुका था । दिन-दहाड़े निरीह राहगीरों को छुरा भोंकना, साइकिल सवारों की साइकिल घड़ी लूटना, किसी किशोरी का अपहरण तो वहाँ के निवासियों के लिए दाल-भात था । यहाँ जिलाधीश बनने के पहले ही सुमन के अनेक सहकर्मी सुमन को पत्र में लिखते हैं कि वे कभी स्वयं उस जिले का कठिन शासन-भार संभाल चुके थे । यह जिला तो हमारे प्रदेश का "प्रॉबल्म चाइल्ड" है । देख लेना साल भर से पहले ही तुम्हें लम्बी छुट्टी पर जाना होगा । तब गर्वीली सुमन तीर-सा उत्तर भेजती है -"निश्चिंत रहो, मुझे छुट्टी नहीं लेनी पड़ेगी ।"[3] वहाँ के विरोधी दल का नेता है रणधीर सिंह जो किसी भी महानेता को थर थर कंपा सकता है । सुमन का गांभीर्य, तटस्थता और असाधारण प्रतिभा देखकर रणधीर सिंह दंग रह जाता है । न सुमन कहीं जाती थी, न किसी से उतना मैत्री

---

1. रथ्या - शिवानी - पृ. 103
2. वही - पृ. 104
3. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 53

नहीं करती । आश्चर्य की बात यह है कि ऐसी आकर्षक लडकी सुमन का कोई पुरूष मित्र नहीं है । मीटिंग होती तो वह अपने मातहतों के बीच ऐसे तनकर कुर्सी पर बैठी रहती जैसे कैबिनट के मंत्री गणों से घिरी गरिमामयी प्रधानमंत्री हो । कभी-भी उसे लजाते-सकुचाते, झंपते रणधीर सिंह ने नहीं देखा था । सुमन को तो गहरा आत्मविश्वास है । यहाँ जिले के प्रभुजातीय अफसरों की परम गोपनीय फाइलें रणधीरसिंह बगल में दाबे फिरता है । एक सुमन ही उसे कभी कंधे पर हाथ नहीं धरने देती । इसी बीच एक दिन सुमन अकेले अपनी जीप में यात्रा करते वक्त मार्ग में जीप खराब हो जाती है । उस समय रणधीरसिंह वहाँ पहूँचता है और वह सुमन से अपने घर से गाडी में उस को पहूँचाने की बात कहकर सुमन को अपने घोडे के ऊपर बिठाकर उस को लेकर गहन वन में पहूँचता है और बल प्रयोग करके सुमन से यौन-संबंध जोडता है । अकेली सुमन कुछ नहीं कर पाती । उसके बाद रणधीरसिंह उसे घर पहूँचाता है । इस घटना के बाद सुमन मानसिक असन्तुलन में पड जाती है । वह अपना काम नहीं कर पाती । रात में नींद नहीं आती । नींद आने के लिए उसको नींद की गोलियाँ खानी पडती हैं । वह लंबी छुट्टी लेकर वहाँ से जाने का निश्चय करती है । इस समय रणधीरसिंह सुमन के पास आता है लेकिन सुमन उससे बात नहीं करती । लेकिन रणधीर सिंह सुमन को अपने वश में करता है और सुमन और रणधीरसिंह रोज़ अवैध संबंध जोडते रहते हैं । बाद में वे शादी करते हैं ।

अन्य

शिवानी की कहानियों का वर्गीकरण करते समय विषयगत दृष्टि से कुछ ऐसी कहानियाँ दिखाई पडती हैं जिनको किसी विषय-विशेष के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता । इसलिए उनको हम ने अन्य कहानियाँ शीर्षक के अंदर रखा है और अध्ययन प्रस्तुत किया है ।

"ठाकुर का बेटा"-ठाकुर हयातसिंह की दो पत्नियाँ हैं। लेकिन उन दो पत्नियों में उसको एक बेटा नहीं मिलता। वह पंडितजी को बुलाकर कुण्डली दिखाते तो पंडित कहता है -"महाराज, पुत्र होगा, किन्तु आपकी इन दो पत्नियों से नहीं, एक और विवाह करना होगा आपको...........

पुत्र आपका वन-विहारी ही रहेगा, महाराज। आपके राजमहल का सुख आप ही भोगेंगे, हरि इच्छा हरि इच्छा।"[1] अंत में ठाकुर आलू के ठेकेदार रामसिंह की सुन्दरी बेटी हंसा से विवाह करता है और वह गर्भवती हो जाती है। वह पूरे महीने में थी। उस समय हयातसिंह के तराई के खेतों में जंगली हाथियों का एक दल बडा उत्पात मचाता है इसलिए ठाकुर को हंसा को छोडकर जाना ही पडता है। उस समय एक भयानक भालू वहाँ आकर हंसा को बाँहों में भरकर कद्दावर डगें भरता अन्धकार में खो जाता है। ठाकुर हयातसिंह ने कुमाऊँ जंगल छनवा दिये, किन्तु गहन वनों की अभेद्य दुर्गमता को चीरना आसान नहीं था। हंसा को नहीं मिलती। ठाकुर बहुत दुःखित हो जाता है। दस वर्षों के बाद भी वहअपनी सुन्दरी पत्नी की स्मृति को भुला नहीं पाता। एक दिन हयातसिंह का एक अंतरंग मित्र गुमानसिंह हयातसिंह के पास आकर कहता है कि उसने ठाकुर के बेटे को वन में भालू के पीछे विहार करते देखा अभी हम को वहाँ जाकर उसको ले आना है और वह पुरानी घटना भी उन्हें बता देता है कि हंसा को ठाकुर के रिश्ते के पहले ही वह पसंद करता था। इसलिए जब जंगल में हंसा का मृत देह देखा - "जिसकी जीवित काया तो पाने के लिए मैं तरसता रहा उसकी निष्प्राण देह पर भी मेरा उतना ही मोह था, उसे छाती से लगाकर मैं रात-भर बैठा रहा। प्रातः होने से पूर्व ही एक तीव्र दुर्गन्ध से मैं तटस्थ हुआ। सूरज उगने से पहले ही मैं ने उसकी चिता रचा दी।........ अब वह नहीं रही हयात, पर उसके बेटे को, तुम्हारे बेटे को छुडाकर लाना ही होगा।"[2] वे दोनों बेटे को लाने के लिए बन्दूकें लेकर निकल जाते हैं लेकिन

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 78

2. वही - पृ. 83

अगले दिन ग्राम का थाकदार धरमदेव लुटिया लेकर दिशा जंगल जा रहा था कि वह देखता है गुमानसिंह का चेहरा नुचे मांस से बीभत्स बन गया है और उसमें प्राण के कोई चिह्न नहीं किन्तु ठाकुर की साँस थोडी-थोडी चल रही है । धरमदेव भागकर सबको बुला लाता है, लादकर उन्हें हयातकोट ले जाता है । मुख में गंगाजल की बूँदें डालकर पहली दो पत्नियों ने उसके ओठों के पास कान सटा लिये । रक्त से सने, सूजे ओंट बुदबुदाये -"ठीक कह रहा था गुमान - ठाकुर का बेटा है, ठाकुर का ।"[1] यह कहकर ठाकुर मर जाता है ।

"भूल" में गिरीश जब इंजीनियर बनकर अपनी विदेश यात्रा से लौटा था तब कुछ महीनों के लिए अपने पिता के पुराने दोस्त श्री कृष्णचन्द्र तिवारी के घर में रहना पडता है । तिवारी को दस पुत्रियाँ थीं, पाँच जुडवाँ बहनें । आठ लडकियों का विवाह हो चुका था और अंत में दो पुत्रियाँ बाकी थी दिप्पी और तिप्पी । दोनों एक ही रूप और रंग की है । उन्हें पहचानने में बडी कठिनाई है । अंत में वहाँ से लौटते समय तिवारी गिरीश से वह जिसको अपनी सखी के रूप में चाहता है उसको अंगूठी पहनाने को कहता है । गिरीश वास्तव में तिप्पी को पसन्द करता है लेकिन वह तिप्पी ही समझकर दिप्पी को अंगूठी पहनाता है जिससे वह निराशा में डूब जाता है और तिप्पी भी बहुत दुःखित हो जाती है ।

"सती" नामक कहानी में आजकल यात्रा के बीच चलनेवाली चोरी का सुन्दर चित्रण है । एक बार जब लेखिका ट्रेन यात्रा कर रही थी तब

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ.83.

सहयात्रियों में एक पंजाबी, एक महाराष्ट्री और मदालसा नामक एक स्त्री भी थी । मदालसा ट्रेन में चढते ही उन तीनों से बातें करने और तीनों की इण्टरव्यू लेने लगी । पहला प्रहार लेखिका पर ही होता है । उसके बाद समाज सेविका पर । समाज सेविका ठक-ठक दो तीन रूखे उत्तरों में समाप्त करती है । महाराष्ट्री महिला हिन्दी नहीं जानती कहकर चुपचाप बैठती है । फिर भी मदालसा चुप नहीं रहती । वह त्रुटिहीन अंग्रेज़ी का धाराप्रवाह भाषण देने लगती है । वह कहती है -"मुझे मदालसा कहते हैं, मदालसा सिंघाडिया । कल ही प्रिटोरिया से आयी हूँ अपने पति की मृत देह लेने

अमल में पिछले वर्ष एक पर्वतारोही दल के साथ मेरे पति भारत आए थे, वहीं एक तूफान के नीचे दबकर उनकी मृत्यु हो गई ।"[1] मृत पति की स्मृति उन्हें भावविभोर कर देती है । बटुए से मर्दाना रूमाल निकाल वह कभी आँखें पोंछने लगती है, कभी अपनी सूर्पनखा-सी लम्बी नाक । तब महाराष्ट्री महिला पूछती है कि तो क्या अब अपने हसबैंड का डैडबॉडी लेकर प्रिटोरिया "फ्लाई" करेगा ? तब मदालसा कहती है -"नहीं बैन ।"...... मैं असल में सती होने भारत आई हूँ ।"[2] तब अन्य स्त्रियाँ उसे रोकती हैं । लेकिन मदालसा कहती है कि ब्रह्मा भी अब मुझे अपने निश्चय से नहीं डिगा सकते । भोजन के समय मदालसा अपने भोजन में नींद की गोलियाँ मिलाकर उन तीनों को देती है और उन तीनों का भोजन वह खाती है । वे तीनों खूब नींद में पड़ती हैं और सबेरे उनके उठने के पहले ही मदालसा उन तीनों की चीज़ें लेकर वहाँ से फरार जाती है ।

"अपराधी कौन" नामक कहानी में लेखिका ने स्त्रियों के बीच

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 96-97

2. वही - पृ. 100

आभूषणों को लेकर चलनेवाले झगडे और उनके दुष्परिणामों को अत्यंत प्रभावात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है । अमला और मीना प्राणप्रिया सखियाँ थीं । अमला ही अपने भाई के लिए मीना को वधू के रूप में घर लायी थी । लेकिन बाद में एक आभूषण को लेकर उस प्रगाढ़ मैत्री का अंत होता है । मीना की विधवा माँ के पास अनेक आभूषण थे और पुत्र के कहने पर भी वह आभूषण बैंक में नहीं रखती । वह उन आभूषणों को एक-एक कर तीर्थयात्रा के समय कभी बद्रीनाथ और कभी रामेश्वरम में चढ़ाती है । तब अमला और मीना इसको रोकना चाहती हैं और अमला अम्मा से उन आभूषणों को बाँटने को कहती है । अम्मा आभूषणों को ठीक तरह से दोनों के लिए बांटती है लेकिन अकेली एक नागिन के आकार की लचकती करधनी बच जाती है । दोनों करधनी को अपना बनाना चाहती हैं लेकिन अम्मा कहती है करधनी अलग रख दी है मैं ने पुर्जी डाल देंगे । लेकिन अम्मा की पुर्जी के पहले ही नियति की पुर्जी पड जाती है । मीना के विवाह की तिथि निश्चित होती है । गहने बनाने के लिए सुनार बुलवाया जाता है । दोनों पोटलियों के आभूषण ज्यों के त्यों धरे थे, लेकिन अकेली करधनी नहीं थी । इससे अम्मा पागल-सी हो जाती है और बेचारी मीना रिक्त कमर लेकर ही ससुराल चली जाती है । पति के साथ मीना विदेश चली जाती है । धीरे-धीरे वह माँ, भाई-भाभी सबको भूल जाती है पर करधनी को नहीं भूल जाती । लेकिन वह खूब समझती है कि चतुरा नटिनी-सी भाभी ने ही वह चोरी की ।

पूरे बीस वर्ष बाद अमला की बेटी की शादी में शामिल होने के लिए मीना स्वदेश लौट आती है । अब अम्मा नहीं रही । अमला मीना की ओर बहुत अधिक स्नेह प्रकट करती है । एक दिन वह अमला को देने के लिए मिठाई खरीदने जाती है तब मीना अम्मा के बचे हुए सामान देख

रही थी और इसी बीच उस करधनी उसके हाथ में आती है । वह उसको अपने सूटकेस में रखती है । उस दिन अमला उसके साथ ही सोती है और पिछले दिन भाई-भाभी दोनों उसको स्टेशन तक भेजने के लिए आते हैं । भाभी कहती है कि दामी चीज़ लेकर सफर कर रही हो मीना, सूटकेस को सिरहाने धर लेना । भाभी उसके पास आकर फुसफुसाती है तो मीना का चित्त पश्चाताप से खिन्न हो जाता है और वह अपनी नीचता के बारे में सोचती है । वह करधनी निकालकर भाभी के चरणों में लोट अपना अपराध स्वीकार करने के लिए सोचती है लेकिन गाडी स्टेशन से छूट जाती है । कुछ समय के बाद एक तूफान आता है तब उसके बेग से सब चीज़ें बाहर निकल आती हैं । इन चीज़ों के बीच रखी हुई करधनी ही नहीं हीरों के हार भी दिखाई नहीं पडते । रात भर भाभी उसे गलबाहियों में घेरकर सोयी थी, चाबी का गुच्छा पार करने में उन अद्वितीय अंगुलियों ने फिर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर दिया था । उसके हीरे के हार का केवल लोलक ही बेचने पर भाभी के पूरे खानदान की बेटियाँ ब्याही जा सकती हैं । यहाँ मीना एक छोटा अपराध करती है लेकिन भाभी कुशलता से इससे भी बडा अपराध करती है ।

"जा रे एकाकी"- एक घर के दोनों भाइयों की आर्थिक असमानता के कारण देवरानी और जेठानी के बीच का संबंध टूट जाता है । देवर समृद्ध है और शृंगारप्रिया देवरानी पति की समृद्धि का उन्मुक्त प्रदर्शन कर दिन-रात जेठानी का जी जलाया करती है और एक दिन जेठानी देवरानी की हत्या करती है और उसको प्राणदंड मिलता है किन्तु गोद के दूध-पीते शिशु को देखकर फांसी का फंदा खींच लिया जाता है और वह अपने शिशुपुत्र के साथ आजन्म कारावास भुगतने लगती है । छः वर्ष के बाद पुत्र को घर भेजा जाता है ।

विधुर देवर अपनी साली से विवाह करता है और वह देवरानी उस बच्चे को बड़े सरल औदार्य से भुलाकर उसे बड़े लाड-दुलार से पालती है । सहसा अग्निगर्भा जेठानी पौरोल पर छूटकर फिर घर पहुँच जाती है । लाख बुलाने पर भी जेल से छूटी जननी के निकट पुत्र नहीं जाता है । चाची का आंचल पकड़ छिप गए पुत्र को देखकर जेठानी की मज्जा भस्म हो उठती है । जाते समय जेठानी देवरानी को खूब जली कटी सुनाती है । वह कहती है -"जैसे तेरी बहन को साफ किया ऐसे ही एक दिन आकर तुझे भी साफ कर जाऊँगी समझी ? खबरदार ये मेरे ननकू को फुसलाया । मैं क्या नहीं समझती कि तू उसे दूध जलेबी खिला-खिलाकर क्यों फुसला रही है ? चुपचाप किसी दिन कत्ल कर देगी उसका ।"[1] यह सुनते ही उसके नन्हा पुत्र स्नेही चाची से कन्नी काटता है । चाची का क्रोध उतरता है नन्हे भतीजे पर । जेठानी वापस जेल पहुँची नहीं कि बेटे का कत्ल हो जाता है और दोनों को एक साथ एक ही कारागार में आजन्म कारावास का दंड मिलता है ।

"साधो ई, मुर्दन के गाँव" की नायिका एक ऐसे डकैत की पत्नी है जिसके आतंक ने सैकड़ों गाँवों को थर्रा दिया था । पिता अपनी बेटी की शादी अपने इस समवयस्क डकैत से सम्पत्ति के मोह में ही कराता है । वह तो डाके डालकर आता तो जंगल में मंगल हो जाता है । दस्युदल का कोई शूरवीर था उसका मुंहबोला देवर, कोई जेठ और कोई भानजा-भतीजा । इसीसे जब भी दस्युदल सफल अभियान के पश्चात् लौटता है, कोई भाभी के गले में लूट का हार झूला देता है और कोई पहना देता है मोती का तोड़ा । एक बड़े-से कड़ाह में फिर सोने के उन आभूषणों को खौलाकर, खोए-सा घोट दिया

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 28

जाता है। गलाई गई उस सुवर्णराशि से फिर नवीन आभूषणों की सृष्टि होती है । इस प्रकार वह दस्युदल की पटरानी नित्य नवीन आभूषणों से जगमगाती रहती है । एक बार पति एक साथ कई गर्दनों को साफकर अनेक पीला सोना, रत्न और जडाऊ हार को लेकर पत्नी के पास आता है और पत्नी के गले में पहनाकर कहता है -"सुनो,..... इसे आज भले ही पहन लो, पर जहाँ से यह मिला है, वह इसे सहज में नहीं छोडेगा । कल ही इसे गलवाना होगा ।"[1] लेकिन पत्नी उस हार के सौंदर्य में डूबकर उसे गलवाने नहीं देती है और एक बार हार को पहनकर सिनेमा के लिए जाती है और लौटने वक्त पुलिस उन दोनों को पकड लेती है । सात डकैतियाँ और कत्ल करने के अपराध की सजा मिलती है और पत्नी एक और जेल में चार सौ ग्यारह की सजा भोगती है ।

नारी सुलभ ईर्ष्या, विद्वेष, अहंकार आदि के कारण स्नेह संबंधों में तनाव आता है । "शर्त" में अपनी पडोसी सखी के वर्षों के बाद भी न मिटनेवाला विद्वेष और शर्त की कथा है । रमा और लीला पडोसिन हैं साथ ही सखियाँ भी हैं । एक ऐ.ए.एस आनन्द की पत्नी बनना दोनों चाहती हैं । रमा एक साधारण परिवार की लडकी है और लीला संपन्न परिवार की । रमा के आनन्द के साथ की दोस्ती देखकर लीला एक दिन रमा को अपने घर में बुलाकर उसका अपमान करती है । वह कहती है -"कुछ कहने को ही बुलाया था तुझे, तेरी इन्हीं मनमोहन से मेरे रिश्ते की बात चल रही है पगली । इसीसे सोचा तुझे आगाह कर दूँ । बेकार में स्वेटर मत बुनना, सब मेहनत मिट्टी में मिल जाएगी"[2] तब रमा ने निर्भीक दृष्टि से लीला की ओर देखकर कहती है-

---

1. अपराधिनी शिवानी - पृ. 91
2. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 69

"बात चलने में और पक्का होने में बड़ा अन्तर है, लीला । मैं शर्त रख सकती हूँ कि चाची तेरा रिश्ता कभी नहीं लेंगी । उस साली चाची को पूछेगा ही कौन ? और तीरी शर्त ।"[1] ही-ही-ही -कर वह हँसने लगी । रमा जाने लगी तो लेटे-लेटे ही लीला उसे अंगूठा दिखाती है । "तू शर्त जीत गयी लाडो, तो मैं तेरी बाँदी, नहीं तो यह तेरा इनाम "[2] कहकर वह मोटा काला अंगूठा फिर नचाती है । रमा की आँखों में अपमान के आँसू छलकती हैं और धड़धड़ाती सीढ़ियाँ उतरती घर की ओर भागती है । लीला और आनन्द का विवाह होता है । बाद में रमा का विवाह भी एक आई.सी.एस लड़के गिरीन्द्र जोशी से ही होता है । अब वह बहुत ऊँचे पद पर है । एक दिन रमा लीला और आनन्द को घर पर बुलाती है लेकिन लीला रमा के घर में आकर भी रमा से उतना बातचीत नहीं करती और एक-एक व्यवहार में वह रमा का अपमान करती रहती है ।

"लिखूँ" प्रिया नामक एक सुन्दरी लड़की जो बाद में पुरुष बन जाती है उसकी कथा है । प्रिया माँ-बाप की एक ही संतान है । वह बहुत सुन्दरी है जिसे देखकर उसके सहपाठी लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं । एक दिन वह आश्रम विद्यालय छोड़कर भाग जाती है, शादी भी होती है और एक बच्चे को जन्म देती है । उसके बाद उसके शरीर में और स्वभाव में पुरुष का लक्षण दिखाई पड़ने लगता है । एक छोटी-सी सर्जरी करके वह पुरुष बन जाती है और पति और पुत्री को छोड़कर भारत चली आती है । बाद में वह एक युवती का पति बनती है और दो बच्चे भी पैदा होते हैं और वर्षों बाद कैंसर रोग के कारण वह मर जाती है ।

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 69-70
2. वही - पृ. 70

"भूमिसुता" सुता नामक एक लड़की की करुण कहानी है । सौतेली माँ के दुर्व्यवहार से ऊबकर घर से भागी समृद्ध जमीन्दार ठाकुर की पुत्री से मुसलमान डाक्टर इदरीस कुरेशी अवैध संबंध जोड़ता है और वह एक बच्ची को जन्म देता है । उसके जन्म होते ही डाक्टर कुरेशी प्रेमिका की हत्या करता है और बेटी को कूड़ेदार के पास छोड़ता है । उस बेटी को ब्रिगेडियर बालकृष्ण की पत्नी जिसे विवाह के पन्द्रह साल बीतने पर भी संतान का मुँह देखने का भाग्य नहीं मिला था, गोद ले लेती है और नाम रखती है भूमिसुता । वह बड़ी होती है, स्कूल जाने लगती है । उसके बाद उसे एक भाई भी मिलता है । ब्रिगेडियर और अनुराधा सुधा को अपने प्राणों के समान प्यार करते हैं । सुता कभी शिकायत का मौका नहीं देती । अपने माँ-बाप से वह बहुत प्यार करती है । इसी बीच पुत्र रजत सुता के बारे में अपने माँ-बाप से पूछता है और झगड़ा करता है । पिता उसे मारता है और वह पिता के रहते समय तक घर नहीं लौटता । सुता जब पढ़ाई पूरा करके घर लौटती है तब माँ से जान पाती है कि वह उनकी गोद ली गयी बेटी है । उस रात वह सो नहीं पाती फिर भी वह उस अवांछित प्रसंग को उभरने नहीं देती । अपने व्यवहार से, स्नेहसिक्त हंसी से वह जैसे अपने माँ-बाप को यही विश्वास दिलाने की प्राणांतक चेष्टा करती रहती है कि चाहे कुछ भी हो जाए वह उन्हीं की सगी बेटी है और हमेशा रहेगी । दूसरे दिन पिता की मृत्यु होती है । माँ रोगी बन जाती है । वह माँ को देखने के लिए छुट्टी बढ़ाती है लेकिन माँ के कहने पर जाने को तैयार होती है और कहती है, "अभी, मैं उसका पता लगाकर रहूँगी.... उसी का, जिसने हमारे घर की सुख-शांति भंग की, जिसने पापा के प्राण लिये, रजत को मेरा शत्रु बना दिया ।"[1] वह अपने पिता कुरेशी के पास जाकर उसकी पत्नी और बच्चों के सामने ही कुरेशी की क्रूरता के बारे में बातें करती है और श्राप देकर घर लौटती

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 23

है । इस प्रकार वह अपना बदला लेकर रोगी माँ के पास शुश्रूषा के लिए आ जाती है । माँ की देखभाल वह स्वयं करती है । बीमारी की शिकार माँ की मृत्यु तीसरे दिन होती है । इस हालत में भूमिसुता अकेली रह जाती है ।

"चिरस्वयंवरा" रजनी दी नामक एक अध्यापिका के विचित्र रोमांस की करुण कहानी है । अट्ठाईस वर्ष में ही रजनी दी चालीस की लगने लगती है । दाँत ऐसे हो गये थे कि तेज़ हवा का झोंका भी दाँतों को इधर-उधर हिलाने लगता है । एक बार दाँत विशेषज्ञ से मिलकर वह अपने लिए दाँतों का डेंचर बनाती है और उसे लगाने पर रजनी दी का चेहरा एकदम बदल जाता है । उससे भी छोटी उम्रवाला डाक्टर प्रद्युम्न रजनी दी की काली केशराशि और दाँत को देखकर रजनी दी से आकर्षित हो जाता है और दोनों प्रेम संबंध में डूब जाते हैं । रजनी दी का कथन देखिए -"सच कह रही हूँ, अनजाने में ठोकर खाकर गिर रही थी, तुम सबकी रजनी दी, विधाता ने बाँह पकडकर उबार लिया प्रेम ने मुझे अंधी बना दिया था बच्ची"[1] वे दोनों विवाह करने का निश्चय करते हैं । तिथि भी निश्चित करते हैं । इसी बीच एक दिन अचानक प्रद्युम्न दंतविहीन रजनी को देखता है । तब उसका चेहरा फक पड जाता है । वह एक शब्द भी नहीं बोलता । तब रजनी दी अपने सफेद दाँत, डेंचर और यथार्थ उम्र के बारे में प्रद्युम्न से कहती है और पागलों के समान हँसने लगती है । प्रद्युम्न उसे छोडकर चला जाता है ।

"शपथ" शिवानी की मनोवैज्ञानिक स्पर्श रखनेवाली कहानी है । साधारण कन्याओं के जीवन में होनेवाली एक अपूर्व घटना शुभ्रा के जीवन

---

1. चिरस्वयंवरा - शिवानी - पृ. 13

में भी होती है । वह विवाह के पूर्व गर्भवती हो जाती है लेकिन दूसरे लोगों से इस बात छिपाने के लिए उसके घरवाले सन्निपात ज्वर के नाम पर मौसी के पास शुभा को भेज देते हैं । समय से पहले वह अपने बच्चे को जन्म देती है । उसके बाद विवाह के समय जब भाभी उससे मुख के पीलेपन के बारे में पूछती है तब शुभा झूठ बोलती है कि उसको सन्निपात ज्वर था । यहाँ शुभा अपने को कलंकित मानकर यह घटना किसी से कहे बिना अपने ही अन्दर छिपा रखती है । लेकिन यह बात वह अपनी भाभी कालिन्दी से कहने के लिए अनुकूल ताक में रहती है । बहुत वर्षों बाद एक दिन कालिन्दी भाभी भोलानाथ के मन्दिर में पूजा और दर्शनार्थ शुभा को ले जाती है । पूजा के बाद शुभा अपनी रहस्यपूर्ण कहानी का उद्घाटन अपनी बड़ी भाभी कालिन्दी के सामने करती है । वह कहती है - "मुझसे एक बड़ी गलती हुई । इला मेरी बच्ची है । विवाह से पूर्व मैं गर्भिणी हो गयी थी । अन्य लोगों से यह बात छिपाकर रखने के लिए मैं डाक्टरनी मौसी के पास गयी और वहीं एक अंधेरे कमरे में समय से पूर्व ही इला को जन्म दिया । उस समय के मेरे चेहरे के पीलेपन में कुछ भाभी-भाभियों द्वारा पोती गई हल्दी का कला कौशल था कुछ सन्निपातजन्य रक्तहीनता ।"[1] उसकी बातों से कालिन्दी भाभी समझती है कि उन्हीं के पतिदेव नवजात शिशु के पिता थे, यह अनहोनी बात सुनते ही कालिन्दी का मन अशान्त हो जाता है । वह अचेत हो जाती है । शुभा सोचती है कि यह परिवर्तन तात्कालिक है किन्तु कुछ ही दिनों में भाभी मर जाती है । तब शुभा की मानसिक स्थिति शिथिल हो जाती है । प्रस्तुत घटना के उपरांत प्राय: सभी रातों-रातों में शुभा को कालिन्दी भाभी स्वप्न में मिलती है । शुभा को ऐसा लगता है कि मरी हुई भाभी का प्रेत उसकी छाती में बैठकर यों कहा करता है -"तुझे पति सुख नहीं भोगने दूँगी शुभा, तू ने झूठी शपथ खाकर मेरा पति छीना है न ।"[2] शुभा की

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 119
2. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 122

धारणा है कि अपने कारण ही अकाल में भाभी की मृत्यु हुई थी । वह कभी-कभी सोचती है कि अपने पति से इस पर कुछ बोले, लेकिन वह कुछ नहीं कहती क्योंकि उसे डर है कि यह सुनने पर पति की हालत भी भाभी के समान हो जाय तो क्या करे । सचमुच यहाँ स्मरण रखने की बात यह है कि भाभी की मृत्यु शुभा के कारण नहीं थी । मृत्यु का कारण था रक्तचाप का रोग । इस कथा की योजना लेखिका विचित्र ढंग से करती हैं । नायिका की स्वस्थ अवस्था में लेखिका स्वयं प्रकट होती हैं तो मानसिक बीमारी से त्रस्त नायिका के रूप में शुभा आती है । इस विचित्र कथागति से कथा अधिक अबोधगम्य तथा विचित्र सी लगती है ।

"मामाजी" अपनी विवेकहीनता और बुरे स्वभाव के कारण अपनी जुड़वाँ बहन के ही द्वारा घर से निष्कासित होनेवाली नन्दन की कथा है । रोहिणी साधारण ब्राह्मण-वृत्ति करनेवाले परमानन्द पाण्डे की पुत्री है । एक दिन रोहिणी के पिता की मृत्यु होती है माँ बड़े कष्ट से पुत्री को इण्टर तक पढ़ाती है । दरिद्र अनाथा रूपवती रोहिणी को केवल उसके सौंदर्य पर ही रीझकर उसके ससुर बहू बनाकर लाते हैं समधी आग्रह कर स्वयं भाई नन्दन को भी साथ लेते हैं । लड़की और लड़के को दयावान समधी को सौंपकर माँ बदरीनाथ की यात्रा के लिए चली जाती है और तीर्थयात्रियों को लेकर माँ की बस उलट जाती है और माँ की मृत्यु होती है । ससुराल के सदस्यों से नन्दन नचाया जाता है । अपने उस मूर्ख जुड़वाँ सहोदर को लेकर रोहिणी को नित्य घर-भर के ताने सुनने पड़ते हैं । स्कूल भागकर वह दिन-भर सड़क के आवारा छोकरों के साथ गुल्ली-डण्डा खेलता कभी घर-भर की औरतों के पेटीकोट और ब्लाउज़ सुखाने छत पर चढ़ जाता है कभी एक-एक आने के

पान के लिए तीन मील दूर बाज़ार भगाया जाता है । नन्दन में आत्मसम्मान नामक कोई वस्तु नहीं है । इसी बीच ससुर की मृत्यु हो जाने से नन्दन अपनी बहन, पति और बच्चों के साथ दूसरे घर में रहने लगता है । ट्यूशन मिलने पर भी वह हाइस्कूल में लगातार पाँच वर्ष फेल होता है । कभी रोहिणी की नज़र बचाकर वह बच्चों की भाँति नन्हों नीलू के हाथ से बिस्कुट छीनकर खाता है, कभी उसके मुँह से दूध की बोतल खींचकर खूब बड़ी-बड़ी घूँटें ले लेता है । जीजा के अर्दली अली मर्दान से उसकी प्रगाढ़ मैत्री थी । वह नन्दन को अफीम कुटेव डाल देता है । पहले पहले अली अपने किशोर मित्र का शौक स्वयं पूरा करता रहता है फिर वह नन्दन को घर की छोटी-मोटी चीज़ें पार करना सिखाता है और उसे अपने पैरों पर खड़ा कर देता है । एक दिन जीजा के हाथ की 2500 रुपये की घड़ी चुराकर 25 रुपये पर बेचता है । इसी से क्रुद्ध होकर जीजा से उसको मार खाना पड़ता है । जुड़वाँ बहन ही उसे घर से निकाल देती है । बाद में वह याचक का जीवन बिताता है ।

"मणिमाला की हंसी" दीनबंधु नामक एक युवक की कहानी है अनाथ दीनबंधु के बचपन में ही माँ और पिता की मृत्यु होती है । अनाथ दीनबंधु चरवाहे की नौकरी करता है फिर सहसा ऊबकर गाँव छोड़कर चला जाता है बाद फिर गाँव में लौट आता है तो दयालु हेडमास्टर की कृपा से पुनः स्कूल में प्रवेश मिलता है हाइस्कूल की परीक्षा में वह पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त करता है । हेडमास्टर दीनबंधु को अपना दामाद बनाने का निश्चय करके उसका पूरा खर्च उठाते हैं । वह इंटर करने के लिए शहर चला जाता है पाँच वर्षों के बाद वह गाँव लौट आता है तो स्वयं हेडमास्टर भी दामाद को नहीं पहचान पाता । विवाह के अगले दिन ही

वह जानता है कि अपनी पत्नी मणिमाला पगली है । वह दूसरे दिन ही किसी से कुछ कहे बिना गौने में मिली समस्त गृहसज्जा की सामग्री और पत्नी दोनों को छोड़कर एक प्रकार से संसार त्यागी ही बनकर निकल जाता है । बाद में वह सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जाता है । अपने ससुर का समाचार पाकर हेडमास्टर उसे एक पत्र लिखते हैं -"मुझे क्षमा करे न करे उसको क्षमा कर देना बेटा । इधर गौने के बाद जब तुम चले गए तो उसका उन्माद बहुत बढ़ गया था । खटिया से बांधकर रखना पड़ता था, हारकर आगरे के पागलखाने में डाल आया हूँ । मेरा क्या ठिकाना, आज हूँ, कल नहीं । वह कभी ठीक होकर लौटे तो अपने चरणों में उसे स्थान देना बचुआ । तुम्हारा गुरु रहा हूँ, यही गुरुदक्षिणा होगी मेरी ।"[1] दीनबंधु अपने ही पुराने विश्वविद्यालय के एक रीडर की पुत्री से प्रेम करता है । दो पुत्र और एक पुत्री का पिता बन जाता है । आगे वह मंत्री भी बनता है । उस समय एक दिन उसे एक पत्र मिलता है कि मणिमाला ठीक होकर आ गई है उसे दीनबंधु ले जाना । पत्र पाकर दीनबंधु स्टेशन में जाकर मणिमाला को साथ लेकर घूमने के लिए जाता है और एक पर्वत के ऊपर से उसे नीचे धकेल देता है । मणिमाला की मृत्यु होती है । उस अवस्था में उसका मन सदा मणिमाला की याद से विह्वल हो जाता है । उसकी मनःशान्ति नष्ट हो जाती है । उसे पश्चात्ताप से तड़प-तड़पकर रहना पड़ता है ।

"जोकर" आकाशवाणी कलकत्ता की बहुचर्चित कलाकार श्रीमती तिलोत्तमादेवी के जीवन की दर्दभरी कहानी है । तिलोत्तमा राजा सतीशदेव वर्मन की इकलौती सुन्दरी दुलारी राजकन्या है । बचपन में ही वह गायन में अपूर्व क्षमता रखती थी । ननिहाल में ही तीनों मामा निःसन्तान थे । मौसी

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 90

बालविधवा थी । वह भी बंगाल के सुप्रसिद्ध जोतदारों के परिवार की बड़ी बहू थी इसीसे तिलोत्तमा को रूई के फाहे में धरकर पाला जाने लगा । लाड दुलार का यही गरिष्ठ ग्रास उसके अभिजात्य के नील रक्तवर्ण को और प्रगाढ़ बनाता चला गया । जो चाहती, वह न मिलता तो पैर पटक-पटककर आसमान सिर पर उठा लेती । मनचाहा ओढ़ना-पहनना, मनचाही पढ़ाई अर्थात् कभी घर पढ़ाने आई मिशनरी मेम को अकारण ही छुट्टी, कभी असमय मेले जाने की जिद, कभी मौसी की ससुराल जाकर कभी घर न लौटने की धमकी । आखिर मेम के प्रस्ताव को स्वीकारकर राजा देववर्मन तिलोत्तमा को पढ़ाने के लिए आश्रम में भेजता है इसी बीच बंगाल के सबसे समृद्ध जोतदार स्वयं घुटने टेककर उसका रिश्ता मांगते हैं । विलायत से बैरिस्टरी पास कर आनेवाले प्रशान्त नामक लड़के से उसकी शादी होती है । शादी के बाद सास-ससुर के लाड-दुलार में तिलोत्तमा कुछ मोटी होती जा रही है तब ज़ोर जबरदस्ती कर पति विदेश से कोर्सेट मंगवाकर उसके अनुशासन में पत्नी को जकड देता है, कभी कभी वह साँस भी नहीं ले पाती । साहस कर उस बन्धन ढीला करने को चाहती है तब पति कहता है -"अपने सोने की प्रतिमा की साँचे में ढली देह की एक रेखा भी विकृत नहीं होने दूँगा ।"[1] तिलोत्तमा नहीं समझ पाती है कि वह माँ बननेवाली है । तीसरे महीने जब साँस इसे पकड़ लेती है तब घबराकर तिलोत्तमा को कोर्सेट के बन्धन से मुक्त कर देती है । तब तक उसकी सोने की लंका जलकर राख हो जाती है । वह एक विकृत रूप के बच्चे को जन्म देती है । जब वह दोनों बाँहें फैलाकर उसकी ओर भागता है तब वह पत्थर हो जाती है । उसका विचित्र रूप देखकर बेटे को एक कमरे में बन्दी बनाकर रखता है । प्रशान्त तो अत्यंत निराशा में डूबता है । बेटे के जन्म के बाद वह पत्नी से बहुत दूर चला जाता है वह अलग कमरे में रहने लगता है । वह अपने पुत्र को तिलोत्तमा को

---

1. माणिक - शिवानी - पृ. 95

देखने का अवसर भी नहीं देता है । एक दिन प्रशांत बेटे को एक सर्कस कंपनी को बेचता है । यह जानकर तिलोत्तमा झुंझलाहट और विवशता से पागल सी हो जाती है और तभी प्रशान्त अंगुली पकडकर पत्नी को संगीत के दिव्यलोक ले जाता है । उसको ख्याति मिलती है, यश मिलता है । उसको वैभव की कामना नहीं थी, फिर भी लक्ष्मी ज़िदकर उसकी कीर्ति को रससिक्त करने लगती है । उसको सब कुछ मिलता है पर बेटा नहीं मिलता । इसी से जहाँ भी सर्कस कंपनी के आने की बात सुनती है तो वहाँ वह भागती है अपने बेटे को पाने के लिए । इसी बीच प्रशान्त रोगी बन जाता है । वर्षों बाद एक दिन रवीन्द्रालय में संगीतानुष्ठान में वह गायन के लिए जाती है और वहाँ अपनी पुरानी सखी लेखिका से मिलती है और उसके साथ वहाँ के सर्कस कंपनी में जाती है । उस सर्कस के देखते वक्त तीन जोकरों में से वह अपने बेटे को पहचान लेती है । सर्कस मैनेजर के पास जाकर उस जोकर को बुलवाती है और पागलोंके समान उस जोकर को गोदी में बिठाकर चूमने लगती है और कहती है -"मैं तुझे अभी ले जाऊँगी रे खोका । तेरा बाप अब चाहने पर भी कुछ नहीं कह पाएगा - चलोगा न अभी ?"[1] लेकिन मैनेजर लपककर जोकर को छीनकर नीचे उतारता है और कहता है कि यह जोकर तिलोत्तमा का बेटा नहीं है । लेकिन तिलोत्तमा सहमत नहीं होती । वह कहती है कि जोकर अपना बेटा है लेकिन मैनेजर कहता है कि वह सर्कस कंपनी के दंपति का बेटा है । तब तिलोत्तमा नहीं कहकर रोने लगती है । तिलोत्तमा को हिस्टोरिकल होते ही लेखिका उसे जबरदस्ती बाहर खींच लाती है । लौट जाने तक वह फिर बिस्तर पर ही चुपचाप ऐसी लेटी रहती है जैसे किसी भयानक दिल के दौरे ने लगभग प्राण ही ले लिए हो ।

"पिटी हुई गोट" का गुरुदास कौडी कौडी कर जोडी गयी

---

1. माणिक - शिवानी - पृ. 10।

आठ हज़ार की पूँजी ही नहीं बाप-दादों की धरोहर, अपनी प्यारी दूकान भी दाँव पर लगाकर हार चुका था। महीने की रसद लाने के लिए एक पाँच का नोट भी तो जेब में नहीं रहा था। दिन भर वह अपनी छोटी-सी दूकान में चेस्टनट, स्ट्रोबरी और अखरोट बेचता था। उसकी दूकानदारी सीज़न तक ही सीमित थी, भारी-भारी बटुए लटकाए टूरिस्ट ही आकर मेवे खरीदते। डंडी मार कर बडी ही सूक्ष्म बुद्धि से वह दस हज़ार जोड पाया था, दो हज़ार शादी में उठ गये। तिरसठ वर्ष की उम्र में वह एक बार भी जुआ नहीं खेला था किन्तु आज लाल के बहकावे में आ गया। साठ वर्ष के गुरूदास अठारह वर्ष की अनाथा युवती से विवाह करता है। वह उसकी तीसरी पत्नी थी। उसी से उनका जी करता है कि उसे भी चूल्हे के नीचे अपने दस हज़ार की संपत्ति के साथ गाडकर रख दें पर धीरे-धीरे उस सौम्य सन्त बालिका के साधु आचरण उसके शक्की स्वभाव को जीत लेता है। वह अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता है और जब उसको जुआ खेल से सब नष्ट हो जाता है तब ज़रूर विजय की प्रतीक्षा से वह अपनी पत्नी को दाँव पर रखकर खेलता है। लेकिन जब पराजित होता है तब वह कुए में कूदकर आत्महत्या करता है।

"ज्यूडिथ से जयन्ती "रमादी की करुण कहानी है। वह अपनी माँ के मरने पर पाँच वर्ष के छोटे भाई को अपनीउस छोटी उम्र में ही जिस गांभीर्य से माँ का रिक्त आसन ग्रहण कर लेती उसे देखकर सब दंग रह जाते हैं। भण्डार, चौका, तिज़ोरी, लेनदेन में उस बालिका फिर कभी भूले से भी ठोकर नहीं खाती। वर्षों बाद पिता की भी मृत्यु होती है तब मामाजी रमा दी का विवाह एक विधुर युवक से कर अपना हाथ धोता है। लेकिन अपने पति से उसे किसी प्रकार का स्नेह नहीं मिलता और कितना कठोर व्यवहार करने

पर भी रमा दी क्षमा के साथ अपने पति का देखभाल करती है । लेकिन अकाल में ही रमा दी विधवा बन जाती है । भरी जवानी में वैधव्य उसे श्रीहीन ही नहीं करती दीनहीन भी बना देती है । न सास, न ससुर न कोई आत्मीय । जो थे वे औपचारिक सान्त्वना के अतिरिक्त उसे किसी प्रकार के संरक्षण के लिए आश्वस्त नहीं करते । इसी से वह कर्मठ नारी इधर-उधर भाग-दौडकर एक स्कूल में नौकरी प्राप्त करती है और वहीं से प्राइवेट बी.ए., एम.ए कर ट्रेनिंग भी कर लेती है । अपने पुत्र को इंजनीयर बनाकर ऊँची शिक्षा के लिए भेजती है लेकिन जब पुत्र विदेशी ईसाई लडकी को लेकर विवाह के लिए आता है तब वह दुःखी होने पर भी पुत्र की शादी उससे करवाती है । पुत्रवधू उससे नीरस व्यवहार करती है । पुत्र तो अपनी पत्नी के कहे अनुसार चलता है फिर भी रमा दी किसी से झगडा नहीं करती । पुत्र और बहू विदेश जाते हैं । रमा दी अपना दुःख स्वयं दबाकर आखिर अकाल में ही मृत्यु का वरण करती है ।

शिवानी की कथ्यात्मकता का विश्लेषण

शिवानी के कथ्य का जो स्वरूप प्रस्तुत किया गया है उससे कई बातें स्पष्ट होने लगती है । वैसे प्रत्येक रचनाकार की अपनी दृष्टि होती है जिसके आधार पर वह अपने कथा संसार का निर्माण करता है । कथ्यात्मक विविधता रचनाकार के अनुभवों के आधार पर जन्म लेती है । रचनाकार का अनुभव जितना व्यापक और गहरा होगा उतना ही उसका कथ्य आकर्षक होगा । शिवानी की कथाएँ इस दृष्टि से विविधता का परिचय देती हैं ।

विभिन्न शीर्षकों के अंदर आनेवाली कहानियाँ लेखिका के अनुभवों की विविधता से जुडी हुई हैं । शीर्षकों के अंतर जिन कहानियों को संकलित करके रखा गया है उन कहानियों में एक तरह की समानता अवश्य दिखाई पडती है । यह समानता विषयगत समानता के आधार पर यद्यपि प्रस्तुत की गयी है फिर भी यह कहना पडता है कि उस शीर्षक के अंदर आनेवाली प्रत्येक कहानियाँ दूसरी कहानी से भिन्न हैं ।

उदाहरण के रूप में नारी समस्या से संबंधित कहानियों में दस कहानियाँ हमने प्रस्तुत की हैं । ये कहानियाँ प्रमुख रूप में भारतीय नारी के जीवन से संबंधित समस्याओं,पारिवारिक, वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक पहलुओं से जुडकर उभरती हैं । शिवानी ने प्रस्तुत कहानियों में भारतीय नारी के जीवन की दुर्दशा का और समाज के कटु व्यवहार का प्रभावात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है ।

रूढिग्रस्त समाज में प्रचलित अन्धविश्वास के आधार पर जन्मकुण्डली का चयन नहीं होता तब जो समस्या खडी होती है उसी का भोग स्त्री को ही सहना पडता है । "ज्येष्ठा" में विवाह के बिना किसी डाक्टर की मिस्ट्रेस बनकर जीनेवाली अभिशप्त नारी की तस्वीर समाज के अंधविश्वासों के प्रति एक प्रश्न चिह्न खडा करती है । जन्मकुण्डली देखने की प्राचीन प्रथा का परिणाम मानवीय स्तर पर किस तरह दुःखदायक होता है यह ध्यान देने योग्य है ।

"लाटी" कहानी में स्त्री के प्रति किये जानेवाले अमानवीय व्यवहार का दर्दभरा चित्र है । पतिगृह में पति के अभाव में किस तरह औरत लाटी की शिकार बनकर नरकीय जीवन बिताती है यह प्रस्तुत कहानी लाटी का विषय है । नारी को जानवर से भी बदतर समझनेवाले पतिगृह के लोगों के व्यवहार और नारी की असहाय अवस्था दोनों नारी मुक्ति की आवश्यकताओं की ओर संकेत करते हैं ।

"अलखमाई" में पतिगृह में स्त्री के प्रति किये जानेवाले अमानवीय व्यवहार का दर्दभरा चित्र है । नशे में डूबकर पति जिस प्रकार अपनी पत्नी से क्रूर व्यवहार करता है साथ ही सास के द्वारा जिस प्रकार बहू क्रूरता का शिकार बनती है यह अच्छी तरह लेखिका हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं । लेकिन यहाँ "लाटी" के समान इसकी नायिका माई चुप नहीं रहती । क्रूरता के अंतिम क्षणों में वह विद्रोही बन जाती है । पीडा को सहते-सहते माई का मन प्रतिशोध से भरपूर हो जाता है । वह अपने पति की हत्या करती है । लेकिन उसके बाद भी उसको सुख नहीं मिलता है । समाज द्वारा पीडित नारी की दर्द भरी कहानी लेखिका कितनी सहजता से प्रस्तुत करती हैं यह देखने योग्य है ।

अपनी इच्छा के विरुद्ध पुत्र द्वारा ब्याही हुई वधू के खिलाफ दुश्मनी निभानेवाली माँ की तस्वीर "जा रे एकाकी" में दिखाई पडती है । यहाँ भी सास की क्रूरता की शिकार बनते-बनते चनुली को जब पडोसिन के भी क्रूर वाक्यों को सुनना पडता है तब वह भी विद्रोह कर बैठती है । लेकिन यहाँ वह अनजाने ही उसकी हत्या करती है फिर भी समाज उसको ही दंड देता है । यहाँ एक तरह की विडम्बना है ।

"माई" कहानी में एक ऐसी नारी का चित्र है जो अपने क्रूर पति के कुकर्मों का फल भोगती है । पति की क्रूरता से बाज़ आकर ससुर उसकी हत्या करवाता है और माई विधवा बनकर जीवन बिताती है । धीरे-धीरे वह सिद्धियों को हासिल करती है और लोगों की सेवा में लग जाती है परन्तु वर्षों के बाद जब मृत्यु शय्या पर लेटी रहती है तब उसकी आकांक्षाएँ जीवन की इच्छाओं के प्रति करवट लेती है । नववधू के वस्त्र पहनकर वह एक बार साज-शृंगार करती है और मांस भक्षण भी करती है । विरक्ति से आसक्ति की ओर मन की यात्रा यहाँ दिखाई गयी है ।

"तीन कन्याएँ" सौंदर्यहीनता के कारण विवाह के बाज़ार में परेशान रहनेवाली लडकियों की कथा है । रूप का न होना औरत के लिए अभिशाप बना हुआ है । समाज स्त्री को बाहरी सौंदर्य की दृष्टि से ही देखता है । उसके अंग प्रत्यंग की कान्ति और शोभा ही पुरुष को नारी के प्रति आकर्षित करती है । अगर नारी में यह नहीं होता तो शादी के बाज़ार में वह बिकती नहीं । इस समस्या का कोई विशिष्ट समाधान न होते हुए भी विवेचनात्मक स्तर पर शिवानी ने एक प्रश्न खडा किया है ।

"अनाथ" कहानी में अशिक्षित समाज में पनप अज्ञान के कारण पीडाग्रस्त जीवन बिताने के लिए बाध्य नारी की कहानी है । आधुनिक वैद्यशास्त्र जानता है कि कुष्ठरोग परंपरागत रोग नहीं है । इस बात को न माननेवाले सभ्य कहलानेवाले समाज के लोग ऐनी को कुष्ठरोगी ही समझते हैं और उसकी ज़िन्दगी को तबाह कर देते हैं । न वह पति के ही साथ जी पाती

न अपने संतान के साथ । समाज के कुष्ठरोगियों के प्रति समाज का दुर्व्यवहार सह उसी के परिणाम को भोगने के लिए बाध्य निर्दोष रेनी पाठक के मानस पटल पर तीखा त्रास पैदा करती है ।

"लाल हवेली" की समस्या हिन्दू-मुस्लिम दंगों के परिणाम स्वरूप बेघरबार होनेवाली औरत की है जिसको अपना धर्म तक नष्ट करना पडता है । हिन्दू से मुसलमान बनकर रहमान अली की पत्नी बननेवाली ताहिरा अपनी पुरानी हवेली देखकर जिस पीडा का अनुभव करती है वह मर्मस्पर्शी है । पुराने पति के नष्ट होने पर रहमान की पत्नी बननेवाली ताहिरा नारी की उस विवशता का चित्रण है जो दंगों के विशेष परिस्थिति में दिखाया देता है । विषय की दृष्टि से शिवानी की यह कहानी अन्य कई कहानियों के समान अत्यधिक मौलिक है ।

"दो बहनें" कहानी में शिवानी नारी शोषण के एक और पहलू प्रस्तुत करती हैं । नारी जिस प्रकार पुरूष के जाल में फंसकर पहले अपना सब कुछ उसको समर्पित करती है और पुरुष जिस सहजता से उसको छोडकर चला जाता है उस विषय का प्रतिपादन लेखिका ने सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है । साथ ही जया के द्वारा लेखिका यह बताती हैं कि यौवनावस्था में मन को नियंत्रण में रखना मुश्किल कार्य है । उस समय वैराग्य को अपनाने पर भी अंत तक उसका निर्वाह करना कठिन कार्य ही है । यहाँ रमा भी कठोर व्रत का पालन करने में पराजित हो जाती है ।

"गूँगा" में नारी के और एक विवशता का चित्रण शिवानी प्रस्तुत करती हैं । नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के आचार-विचारों का खण्डन करती चली आती है । प्रेम के विषय में तो मनुष्य अंधा बनकर चलता है । यहाँ हिन्दू धर्मवाली कृष्णा और ईसाई धर्मवाला डिसूजा के विवाह को कृष्णा के पिता सहमति नहीं देते हैं जिससे उन दोनों को रजिस्टर विवाह करना पड़ता है । डिसूजा तो मर जाता है । जब कृष्णा डिसूजा के बच्चे को जन्म देती है उसका पालन करने का अधिकार भी कृष्णा को नहीं मिलता है और पिता कृष्णा की दूसरी शादी कराता है । वर्षों बाद अपने उस बेटे को देखने पर कृष्णा के मन में जो पीड़ा उत्पन्न होती है इसका वर्णन अवर्णनीय है ।

शिवानी ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी जीवन की आधारभूत समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है । नारी के अस्तित्व और व्यक्तित्व की तलाश प्रत्येक कहानी को एक नया मोड़ देती है । नारी पुत्री है, पत्नी है, बहन है और माँ भी । प्रत्येक स्थिति में उसकी भूमिका बदलती रहती है । स्त्री के प्रति पुरूष की दृष्टि अधिक सकारात्मक नहीं है । शोषण और पीड़न की शिकार भारतीय नारी को अपने पैरों पर खड़े होने के लिए बहुत आगे बढ़ना पड़ेगा । शिवानी ने इस सत्य की ओर संकेत किया है । नारी शक्ति का रूप तभी धारण कर सकती है जब वह खुद को पहचान सकती है और पत्नी की सही भूमिका को अदा करने में सफल हो सकती है ।

दाँपत्य संबंधों के विघटन से संबंधित कहानियों में अठारह कहानियाँ हम ने प्रस्तुत की हैं । इन कहानियों में मुख्यत: अवैध संबंध या

अविश्वास के कारण टूटनेवाले दाँपत्य संबंधों का चित्रण देखा जा सकता है । पति का क्रूर व्यवहार भी दाँपत्य जीवन की शिथिलता का कारण बनता है । साथ ही पति -पत्नी की भावनाओं में सामंजस्य का न होना भी इसका कारण बनता है । आर्थिक विषमता किस तरह दाँपत्य विघटन में सहायक बनती है इसका सुन्दर चित्रण इन कहानियों द्वारा लेखिका हमारे सामने रखती हैं ।

"गहरी नींद" में उमा को अपनी विवशता के कारण विधुर पुलिस अफसर से शादी करनी पडती है । उनके बच्चों को अपने बच्चों के समान देखने पर भी पति से उसको कोई स्नेह नहीं मिलता । अंत में पति का अवैध संबंध उमा को आत्महत्या का कारण बनता है । "मौसी"और "चाँद" नामक कहानी में पति के अविहित संबंध और पारिवारिक सांस्कारिक भिन्नता दांपत्य विघटन का कारण बनते हैं । प्रेम विवाह है फिर भी ब्राह्मण कुल की कन्या तिला पति वेदी के सिक्ख परिवार के रिवाज़ों और आधुनिकता को स्वीकार न कर पाती । साथ ही भोगासक्ति में लीन पति का स्नेह भी नहीं मिलता । "चाँद" में मानवी और जे.के. के स्वभाव में ही नहीं दोनों के पितृकुल, रहन-सहन और अदब-कायदों में भी कोई साम्य नहीं था । यहाँ लेखिका यह व्यक्त करती हैं कि आधुनिक समाज के लोगों में सदाचार किस प्रकार नष्ट होता है और पारिवारिक सांस्कारिक भिन्नता किस प्रकार दाँपत्य संबंध के विघटन का कारण बनती है । साथ ही मानवी का वेश्या को घर में काम के लिए रखना और उससे पति का बुरे मार्ग में पडना यह दिखाता है कि दाँपत्य संबंधों की सुरक्षा के लिए ऐसा मूर्ख कार्य नहीं करना चाहिए । "मन का प्रहरी" में पति का अविहित संबंध ही दाँपत्य संबंध के विघटन का कारण बनता है । अनुराधा के पिता और मधुकर के पिता के अविहित संबंध उनकी पत्नियों को आत्महत्या

का कारण बनता है । यहाँ "के" कहानी की डाक्टरनी कमला के विपरीत ये दोनों स्वयं आत्महत्या करके प्रतिशोध करती हैं । अनुराधा का दांपत्य प्रेम आपस में निभी नहीं इसका कारण अनमेल विवाह है । साथ ही पुराने प्रेम को भूल जाना मुश्किल ही है । इसलिए यहाँ अपने पुराने प्रेमी को देखने पर महन्ती अपने स्नेहमयी पति को छोडकर प्रेमी के साथ भाग जाती है । यहाँ एक प्रकार की मानसिक अस्थिरता है ।

अनमेल विवाह किस तरह दाँपत्य विघटन का कारण बनता है यह "के" कहानी का विषय है । साथ ही सेक्स के प्रति आसक्ति किस प्रकार मनुष्य को अंधा बनाती है, इस भोगासक्ति के कारण किस प्रकार परिवार का सुख और शांति नष्ट होती है इसका चित्रण उपर्युक्त कहानी में प्रस्तुत किया गया है । कोई भी पत्नी अपने पति का अवैध संबंध स्वीकार नहीं कर सकती । डाक्टरनी के प्रतिशोध के माध्यम से लेखिका यह व्यक्त करती हैं । "तोमार जे दो क्खिन मुख" में "के" कहानी के विपरीत पत्नी पति के मित्र के साथ अविहित संबंध जोडती है । यह उनके दाँपत्य संबंध विघटन का कारण बनता है । "भोलनी" का कथ्य भी अवैध संबंधोंवाली नैतिकता और विलासिता पर आधारित है । यहाँ अपनी कुरूप पत्नी की सौंदर्यवती बहन की ओर आकृष्ट होकर जीजाजी उससे शारीरिक संबंध जोडता है । विलासिनी भी उसके साथ अविहित संबंध जोडती रहती है । यहाँ यह सिद्ध होता है कि सौंदर्य और सेक्स के प्रति मानव मन में पैदा होनेवाली वासना को दबाकर रखना मुश्किल कार्य ही है । इसका परिणाम तो बुरा ही है । इस वासना के फलस्वरूप यहाँ एक परिवार छिन्न-भिन्न हो जाता है । साथ ही लडकी को तो अवैध संबंध से जन्मे हुए बच्चे के साथ जीवन की सारी खुशियाँ नष्ट करनी पडती है । "शायद" कहानी में

पति के क्रूर व्यवहार से पत्नी रोगी बन जाती है और उसकी मृत्यु होती है । पुरुष के शासन चलनेवाले इस समाज में पारिवारिक विघटन का बुरा परिणाम नारी को ही सहन करना पड़ता है । समाज की नारी समस्या को शिवानी ने अच्छी तरह पर्दाफाश किया है ।

"उपहार", "चीलगाडी", "चन्नी" आदि में पति के संशय के कारण नष्ट होनेवाली दाँपत्य जीवन की कथा है । "उपहार" में रेलयात्रा में हुई घटना से पति का पत्नी पर अविश्वास स्वाभाविक ही है । यहाँ पत्रकार की बातों से पति का मन विचलित होता है । पत्रकार के रिपोर्ताज के कारण ही ऐसा होता है । पत्रकार बढ़ा-चढ़ाकर घटना प्रस्तुत करता है और इसी से प्रभावित होकर पति पत्नी पर अविश्वास करता है । "चन्नी" कहानी में चन्नी और योगेन के संबंधों के विघटन का कारण भी अविश्वास है । अपनी चंचल पत्नी के विवाह के पहले के पत्र व्यवहार के बारे में जानने से पति योगेन जीजा उस पर अविश्वास करता है और कठोर नियंत्रण रखता है । यहाँ व्यवहार की कठोरता उनके संबंधों में ह्रास का कारण बनती है । "चीलगाडी" में पति के क्रूर और संदेहपूर्ण व्यवहार के कारण लेखिका का जीवन कष्टपूर्ण हो जाता है । धीरे-धीरे उनके संबंधों में अलगाव आता है । वैवाहिक जीवन के विजय के लिए स्नेह और पारस्परिक विश्वास की आवश्यकता है । जब दांपत्य जीवन में इसका अभाव होता है तब वैवाहिक जीवन निरर्थक बन जाता है । यहाँ लेखिका अपने पति के वियोग में रोती तक नहीं है । "छि: मम्मी, तुम गंदी हो" में दाम्पत्य विघटन का कारण अनमेल विवाह, भावात्मक एकता का अभाव, पति का पत्नी पर अविश्वास और कठोर नियंत्रण है । विवाह का यथार्थ उद्देश्य मानसिक लगाव नहीं है तो क्षणिक स्त्री सौंदर्य और भोग के लिए

अगर कोई विवाह करता है तो वह वैवाहिक संबंध शाश्वत नहीं हो सकता । "बन्द घड़ी" में भी पति का क्रूर व्यवहार और पति-पत्नी के बीच के मानसिक एकता के अभाव का ही चित्रण है जिससे पत्नी आत्महत्या करने तक सोचती है । लेकिन बाद में एक दिन पति की स्नेहपूर्ण दृष्टि और व्यवहार से अनेक वर्षों से पति की क्रूरता सहनेवाली पत्नी को एक नया जीवन मिलता है । यह सत्य "बन्द घड़ी" के द्वारा लेखिका हमें समझाती हैं ।

इन कहानियों से भिन्न एक चित्र "चाचरी" में लेखिका प्रस्तुत करती हैं । यहाँ काम के प्रति अपनी पत्नी बिंदी का शीतल मनोभाव श्रीनाथ की विवशता का कारण बनता है । साथ ही बहन के कहने पर अपनी निरपराधी पत्नी पर अविश्वास करता है और उसे घर से बाहर निकालता है । पत्नी या पति का सेक्स के प्रति ठंडेपन से दाम्पत्य संबंधों में तनाव आना स्वाभाविक ही है । स्नेह के साथ यौन इच्छाओं की पूर्ति भी वैवाहिक जीवन के आनन्द के लिए आवश्यक है । यह सत्य शिवानी यहाँ व्यक्त करती हैं । "अपराजिता" नामक कहानी में अफसर पत्नी आरती का रौब, पति के प्रणय निवेदन को कठोरता से ठुकरा देना और अपने स्वाभाविक गुणों से हटकर पत्नी की इज़्ज़त के लिए किया गया अभिनय आदि से ऊबकर पति गृह से भाग जाता है । यहाँ पत्नी का निरंकुश व्यवहार, दिखावा और अहंकार उसके दांपत्य संबंधों को खोखला कर देता है । दाँपत्य संबंध के विजय के लिए पति-पत्नी के व्यक्तित्व में सामंजस्य होना आवश्यक है । "प्रतिशोध" कहानी द्वारा शिवानी समसामयिक जीवन में दिखाई पड़नेवाली पति-पत्नी के जीवन की यांत्रिकता को उजागर करती हैं । एक आइ.ए.एस पति की पत्नी किस प्रकार विभिन्न

लोगों से उपहार लेती है, किस तरह पति के अधीनस्थ अधिकारियों से सामान बटोरती है, किस प्रकार पति पर शासन करती है इसका उदाहरण इस कहानी में देखा जा सकता है । पत्नी में स्त्रैण भावनाओं की कमी है तो पति का अवैध संबंध में लग जाना भी स्वाभाविक है । पति के द्वारा गर्भिणी बनी हुई लड़की की आत्महत्या के कलंक से पति को मुक्त करने के लिए वह अपने गहने बेचती है । परन्तु इन सबके बावजूद भी एक प्रकार का अलगाव उन दोनों के बीच बना रहता है ।

"मित्र" कहानी में तो पति-पत्नी के बीच झगड़े का मुख्य कारण अर्थाभाव है । आज के समाज में यह समस्या भी साधारण रूप से दिखाई पड़ती है । आज जीविका की तलाश में मनुष्य बेतहाशा दौड़ता है क्योंकि पैसा नहीं है तो समाज में उसका कोई मूल्य नहीं होता और पैसे के अभाव में परिवार में झगड़ा होने की संभावना भी है । यहाँ भी ऐसा होता है ।

पति-पत्नी के संबंधों का और उनकी संकीर्णता का स्वरूप प्रस्तुत करनेवाली उपर्युक्त कहानियाँ यथार्थ की भूमिका से जुड़ी हुई लगती हैं । यद्यपि कथ्यात्मकता की बारीकियों में काल्पनिकता और अविश्वसनीयता का पुट है फिर भी लेखिका के उद्देश्य की विशिष्टता स्वीकार्य हो जाती है । ये कहानियाँ नयी पीढ़ी के अनुभव रहित युवा-युवतियों के लिए सबक प्रस्तुत कर सकती हैं । इस दृष्टि से इनका महत्व स्वीकारा जा सकता है ।

प्रेम की सफलता और असफलता से संबंधित कहानियों में पाँच कहानियाँ हमने प्रस्तुत किया है । अपनी यौवनावस्था में सब बन्धन भूलकर स्त्री और पुरुष प्रेम करते हैं और कुछ समय के बाद पुरुष स्त्री को छोडकर चला जाता है । अपने पिता और माता से डरकर, धन के लोभ में और अपने पिता की क्रूरता के कारण पुरुष किस प्रकार प्रेमिका को छोडकर दूसरा विवाह करता है और किस प्रकार स्त्री को असहाय होकर दुःखपूर्ण जीवन बिताना पडता है आदि की तस्वीर लेखिका उभारकर रखती हैं ।

"शिबो" में प्रेमी धरणीधर के पिता के द्वारा किये गये क्रूर साजिश के कारण शिबो की स्थिति अनिर्वचनीय बन जाती है । पिता अपने पुत्र का विवाह दूसरी लडकी से कराता है पिता से डरकर पुत्र भी इस क्रूर कृत्य करता है । यहाँ धरणीधर का प्रेम पवित्र नहीं है । उसका कोई व्यक्तित्व भी नहीं । समाज में इस तरह माँ-बाप की क्रूरता का शिकार बननेवाले अनेक युवा-युवतियों का कारुणिक चित्र इस कहानी के द्वारा लेखिका प्रस्तुत करती हैं । संपत्ति या भौतिक सुख को मूल्य देकर यथार्थ स्नेह को कोई मूल्य न देनेवाले पिताओं के हठ के कारण असफल हो जानेवाले प्रेम संबंध का सुन्दर चित्रण करना ही लेखिका का उद्देश्य है । "शायद" में भी पिता जल्लादपाण्डे के क्रूर व्यवहार का शिकार बनती है बेटी कुसुम और तारी । पिता की ओर से बेटी को जेल जीवन ही भोगना पडता है और अंत में दूसरे पुरुष की पत्नी बननी पडती है । "मास्टरनी" में डॉ. सुबोध अपने पिता के कहे अनुसार प्रेमिका को छोडकर दूसरा विवाह करके आडंबरपूर्ण जीवन बिताता है । धैर्यहीन, आदर्शहीन व्यक्तित्वहीन पुरुष का प्रेम असफलता में ही परिणत होता है जिसके कारण नारी को असहाय होकर कष्टतापूर्ण जीवन बिताना पडता है । समाज में

आज भी ऐसे अनेक उदाहरण देख सकते हैं । "केया" में भी पुत्री नलिनी के प्रेम के बारे में जानकर पिता उसकी शादी दूसरे युवक से कराता है जिससे नलिनी का जीवन दुःखपूर्ण बन जाता है । लेकिन दूसरी कहानी के प्रेमी की तरह इसके प्रेमी दूसरी शादी नहीं करता बल्कि अपनी प्रेमिका की याद में अपना सारा जीवन बिताता है । यहाँ प्रेमी का प्रेम पवित्र है लेकिन प्रेमिका के पिता के व्यवहार से उनके प्रेम संबंध विजय में परिणत नहीं होता । "मन का प्रहरी" में भी अनुराधा और मधुकर का प्रेम अनुराधा के पिता की क्रूरता के सामने असफल हो जाता है । विवाह का आनन्द और प्रेमी प्रेमिका के मानसिक एकता को कोई मूल्य न देकर भौतिकता को मूल्य देकर संतान का विवाह करानेवाले माँ-बाप के हठ के परिणाम भोगनेवाले समाज की युवा-युवतियों का चित्र अत्यंत करुणाजनक है ।

"चलोगी चन्द्रिका" में तो रूप सौंदर्य की ओर उन्मुख विवाहपूर्व प्रेम और उसकी असफलता का चित्रण है । वर्षों बाद विधवा चन्द्रिका को विधुर चन्द्रवल्लभ सदैव के लिए एक हो जाने का निमंत्रण देकर बुलाता है किन्तु चन्द्रिका के आने पर उसके ढलते यौवन और साधारण वेशभूषा देखकर चन्द्रवल्लभ छिप जाता है । रूप सौंदर्य की ओर उन्मुख प्रेम या विवाह कभी सफल नहीं होगा । सौंदर्य के कम होने के साथ प्रेम में भी कमी आने की संभावना है । यह सत्य शिवानी यहाँ प्रस्तुत करती हैं ।

प्रेम की असफलता का एक और चित्रण लेखिका "विप्रलब्धा" में प्रस्तुत करती है । पारिवारिक प्रश्नों के कारण परस्पर अच्छाई के

उद्देश्य से निस्सहाय होकर अलग होनेवाले भाग्यहीन व्यक्ति का चित्रण इस कहानी में लेखिका प्रस्तुत करती हैं । "प्रतीक्षा" कहानी में तो, ज्योतिष और हस्तरेखा के सुविज्ञ पण्डित विमल और माधवी का प्रेम सफल होता है। यह प्रेमसंबंध विवाह में ही परिणत होता है । अन्य कहानियों से भिन्न होकर यहाँ का प्रेमी लडकी के सनातन मूल्य और विशुद्धियों में आकृष्ट होकर अपना प्रेम सफल करने के लिए त्याग और स्थिरचित्तता प्रकट करता है ।

उपर्युक्त कहानियों के माध्यम से लेखिका यह सूचित करना चाहती हैं कि माता-पिताओं को अपनी संतान के प्रति उदारता दिखानी है और विवाह की समस्या को और प्रेम की समस्याओं को पुत्र और पुत्रियों की इच्छा पर छोडना ही अधिक समीचीन है क्योंकि ज़िन्दगी जीनेवाले बूढे माँ-बाप नहीं परन्तु उनकी संतान हैं ।

वेश्या जीवन से संबंधित - सेक्स केन्द्रित कहानियों के अंतर्गत हमने आठ कहानियाँ प्रस्तुत की हैं । वेश्या जीवन और सेक्स से संबंधित विभिन्न कथा लेखिका यहाँ प्रस्तुत करती हैं । अवैध संबंधों के कारण अनेक लोगों का पारिवारिक व दांपत्य जीवन किस प्रकार नष्ट हो जाता है और किस प्रकार परिस्थितिवश नारी वेश्या बनती है इसका दुःखदायक चित्रण लेखिका ने सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है ।

"करिए छिमा" अपने इष्टानुसार वेश्या बननेवाली हीरावती नामक लडकी की कथा है । यहाँ एक विचित्र प्रकार की मानसिकता है ।

यहाँ नैतिकता का अभाव है । इस अनैतिकता के कारण बहुतों का जीवन बरबाद हो जाता है । आज के समाज में भी ऐसे अनेक पात्र हम देख सकते हैं । "तोप" में तो "तोप" अपनी इच्छा के अनुसार ही वेश्या बनती है । सेक्स के प्रति अधिक मोह मानसिक व्यवस्था को विकृत बनाता है । तोप की भी एक विचित्र मानसिकता है । "चाँद" में चाँद नामक युवती पुरुषों को अपने वश में डालकर उनसे यौन संबंध जोडती है और परिवारों की खुशी और चैन मिटाती चलती है । यहाँ भी स्वेच्छा से ही वह वेश्या का काम करती है । "पुष्पहार" में तो परिस्थितिवश ही दुर्गी वेश्या बन जाती है । पति लंगडा है और शराब पीकर घर में ही रहता है । दुर्गी ही घर के अन्दर और बाहर का सब काम करती है । इस प्रकार पति की ओर से उसे कोई खुशी नहीं मिलती । यौवनयुक्ता दुर्गी अपने मन को काबू में नहीं रख पाती । यहाँ परिस्थितिवश यानी पति के उपेक्षा भाव से ही दुर्गी को वेश्या बनना पडता है । पति के उपेक्षा भाव से, किसी पुरुष के स्नेह पाने के मोह में पडकर आखिर वेश्या बननेवाली अनेकों स्त्रियों में एक है दुर्गी ।

"अलखमाई" की वेश्या का काम करनेवाली गायिका रजुला ईश्वर की दासी है यानी ईश्वर की दासी के नाम पर वेश्या का काम करनेवाली स्त्री है । देवतानुमा व्यक्ति से वह गर्भधारण करती है और बाद में शिशु को वह मार डालती है । आखिर पश्चाताप से वह अपनी सारी संपत्ति नदी में डुबाकर गाँव छोडकर चली जाती है और पश्चाताप से खिन्न होकर वह गाना गाकर भिक्षा माँगकर जीवन बिताती है । यहाँ सारा कथ्य अविश्वसनीय लगता है । "धुआँ" की कथा में वेश्या की पुत्री की दुःखद कहानी है जो अंत में सन्यासिनी बन जाती है ।

"दंड" नामक कहानी में डाक्टर के विचित्र स्वभाव पर लेखिका प्रकाश डालती है । साथ ही साथ ऐसी रोगिणियों का चित्रण भी करती हैं जिनको असल में कोई बीमारी नहीं है परन्तु डाक्टर से मिलने के लिए बहाना बनाकर आती हैं । समाज को अध:पतन की ओर ले जानेवाले ऐसे लोगों का चित्रण लेखिका यहाँ सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करती हैं । समाज में शराफत के आवरण ओढ़कर अनैतिक संबंध जोडनेवाली स्त्रियों का चित्रण लेखिका यहाँ प्रस्तुत करती हैं । नारी या प्रेमिका के पवित्र प्रेम को मूल्य न देकर मात्र अपनी कामवासना की पूर्ति के उद्देश्य से अनैतिक संबंध जोडनेवाले समाज के ऐसे पुरुषों के रूप में डाक्टर यहाँ आता है ।

"क्यों ?" में शिवानी की दृष्टि आज के तथाकथित सभ्य समाज की अनेकानेक विसंगतियों पर पडी है । इनमें से सबसे अधिक त्रासदायक है छात्रावासों में रहनेवाली लडकियों में वेश्यावृत्ति की बढती हुई प्रवृत्ति । इन लडकियों के सामने ऐसी कोई परिस्थिति नहीं जिससे मज़बूर होकर वे वेश्या-वृत्ति करती हैं । अंधाधुन्ध फैशन और आवारगर्दी के लिए जितना भी पैसा मिल जाए, थोडा है । यहाँ कुंभा तो हीरे के व्यापारी की पुत्री है । वह क्यों और कैसे अपना शरीर बेचकर चार सौ रूपये के लिए हाथ फैलाती है यह बात समझ में नहीं आती । वैसे ये सारी स्थिति समाज के सामने प्रश्न चिह्न खडी करती है जिसकी गहराई में नैतिक मूल्य विघटन की जड़ें दिखाई पडती हैं । साथ ही पत्नी और बडी संतान के होने पर भी यानी प्रौढावस्था में भी अपनी कामवासना की पूर्ति के लिए अपनी बेटी के समवयस्क लडकियों से यौन संबंध जोडनेवाले पुरुषों की गाथा लेखिका प्रस्तुत करती हैं ।

सामाजिक मूल्यच्युति के कई आयाम हैं जिनमें वेश्यावृत्ति और अनैतिक संबंध प्रमुख हैं । इन्हीं दोनों तत्वों पर शिवानी ने प्रकाश डालने की कोशिश की है । वेश्यावृत्ति एक पेशा है तो शराफत की चादर ओढ़कर उसी पेशे को करनेवाले लोग समाज की आँखों में ऊँचे लोग हैं । इस विडम्बना को लेखिका ने भली-भाँति प्रस्तुत किया है । छात्रावासों में रहनेवाली लड़कियों का शोषण और प्रौढ़ पुरुषों की वासना कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनको भी लेखिका ने उभारा है ।

विवाह और धर्म के क्षेत्र में अनाचार, छल-कपट, आडम्बर, धार्मिक अन्धविश्वास और रूढ़ियाँ नामक शीर्षक के अंतर्गत छः कहानियाँ हमने प्रस्तुत की हैं । इन कहानियों में समाज के अनाचार और आडम्बर का नग्न चित्र लेखिका प्रस्तुत करती हैं ।

"शाप" में दहेज प्रथा और विवाह से संबंधित अनाचार और उसके फलस्वरूप उठनेवाली समस्याओं का हृदयस्पर्शी चित्र लेखिका ने प्रस्तुत किया है । विवाह के अवसर पर दहेज प्रथा का प्रचलन कन्या पक्ष के लिए अत्यधिक दुःखदायी संकल्पना है । वर्तमान समय में इस दहेज के अतिरिक्त कन्या के पिता को वर पक्ष द्वारा निर्धारित की गई एक मोटी रकम भी वर को देनी पड़ती है । दहेज के कम होने से वर के घरवाले वधू पर अत्याचार करते हैं और उसकी हत्या तक करते हैं । "शाप" नामक कहानी इसका जीवन्त चित्र प्रस्तुत करती है ।

प्राय: शादियों में छल-कपटता होती है । कभी-कभी वर की न्यूनताओं को माँ-बाप और बन्धुवर्ग छिपा रखने की कोशिश करते हैं । उसका कटुआ फल बेचारी कन्या को भुगतना पड़ता है । इस प्रकार कई विवाह छल-कपट से समाज में संपन्न हो रहे हैं । "के" कहानी इसके उदाहरण के रूप में लेखिका प्रस्तुत करती हैं ।

विवाह के लिए शुभ लग्न देखना एक धार्मिक आचार है जिसके कारण लोग कई तरह की कष्टताओं को भोगते हैं । निश्चित समय के अंतर्गत सभी पिता अपनी बेटियों की शादी कराने के लिए व्याकुल हो उठते हैं इसलिए आर्थिक समस्या भी उस समय उपस्थित होती है जिससे आम लोग परेशानियों में फँस जाते हैं । उधर विवाह में धनी लोग वैभव का प्रदर्शन करते हैं । वैभव प्रदर्शन के लिए वे फ़िज़ूल का खर्च करते हैं । परिणामत: जिन बेचारे गरीबों के पास पैसा नहीं होता उनके लिए विवाह एक समस्या बन जाती है । शिवानी की कहानी "मधुयामिनी" में इसका चित्रण देखा जा सकता है । साथ ही वर और वधू दोनों जिस तरह धोखे में पड़ते हैं यह भी इस कहानी में वर्णित है ।

विवाह के लिए जन्मकुण्डली देखना एक धार्मिक आचार है । कभी-कभी तो स्त्री की जन्मकुण्डली शुद्ध होती है तो पुरुष की अशुद्ध । तब उन दोनों में विवाह होना प्रचलित आचार के अनुसार निषिद्ध है । इस आचार के कारण कई युवा-युवतियों को कौमार्यव्रत का पालन करना पड़ता है उनका जीवन अंधेरे कुए में पड़ जाता है । "ज्येष्ठा" कहानी में पिरी की शादी अशुद्ध कुण्डली के कारण नहीं हो पाती । इसका कारण आचारों पर अटूट विश्वास है ।

शिवानी ने अघोरपंथी साधकों के व्यवहार को अच्छी तरह पर्दाफाश किया है । वे उच्चतम साधना में रत रहकर भी सामान्य सांसारिक वासना से मुक्त नहीं हो पाते । सामान्य-सी नारी भी उन्हें पतन के गर्त को धूल चटवा देती है । शिवानी यह बताना चाहती हैं कि ऐसे योगियों से तो भोगी ही अच्छा है । "चोलगाडी" नामक कहानी के पाण्डे जैसे लोग धर्म के नाम पर स्त्रियों का चूषण करते हैं । ऐसे लोग अपनी धार्मिक पवित्रता को नष्ट करते हैं । धर्म के नियामक साम्प्रदायिक गुरुओं, सन्तों, सिद्धों आदि की भूमिका नारी के लिए अत्यन्त कष्टदायक रही है । ये लोग परिवार और समाज द्वारा पीड़ित नारी को चिकनी-चुपड़ी बातों से भरमा लेते हैं । वे उसे मुक्ति का मार्ग दिखाने का आश्वासन देकर उसका अनुचित लाभ उठाते हैं । शिवानी ने व्यंग्यात्मक लेखन पद्धति से "निर्वाण" कहानी में इस विडम्बना को चित्रित किया है । कहानी के दूसरे पक्ष में शिवानी ने व्यंग्यात्मक ढंग से युगीन परिस्थितियों तथा आडम्बरों पर प्रहार किया है । थोड़े समय बाद ही विभिन्न पत्रकार गुरुनाम की धज्जियाँ उड़ा देते हैं । अनेक अशिक्षित किन्तु भोली-भाली आधुनिकाओं के सम्मोहन टूटने की गाथाएँ समाचार पत्रों में प्रकाशित होने लगती हैं किन्तु अभागिनी मनोरमा का नामोनिशान तक उसमें नहीं दिखाई पड़ता ।

अंधविश्वास, रूढ़ियाँ और धार्मिक कपटता की बुराइयाँ समाज को किस तरह पीड़ित करती हैं इसका चित्रण ऊपर चर्चित कहानियों में मिलता है । अंधविश्वास के साथ-साथ संत-महंतों की धोका धड़ी का सारा शाप स्त्री को ही सहना पड़ता है । धर्म के नाम पर योगी स्त्री का शोषण करते हैं और जन्मकुण्डली के आधार पर समाज के लोग भी स्त्री को ही दोषित ठहराते हैं । पुत्रियों के पिताओं को जो पीड़ा सहनी पड़ती है उसका दर्दनाक चित्र शिवानी ने सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है ।

वैयक्तिक स्पर्श से संबंधित कहानियों के अंतर्गत चार कहानियाँ हमने प्रस्तुत की हैं । इनमें आनेवाले पात्र कहीं न कहीं लेखिका के वैयक्तिक जीवन से जुड़े हुए लगते हैं । परिचय की कड़ियाँ समय के साथ टूट जाती हैं फिर भी टूटी हुई कड़ियों के बीच कहीं न कहीं परिचय का हल्का सा भाव उभरने लगता है ।

बचपन में स्नेह का अभाव, समाज की ओर से उपेक्षा आदि से पीड़ित होकर भौतिक शिक्षा न मिलने से कौमार्यवस्था में युवा लोग दुर्मार्ग में पड़ते हैं और हत्यारे और लुटेरे आदि बनते हैं । इस तरह के व्यक्तियों के मन में भी अपने बचपन का स्नेह और उस स्नेह की जो मीठी याद बनी रहती है उनका चित्र "मेरा भाई" में दिखाई पड़ता है ।

"मसीहा" में समाज के पथभ्रष्ट होनेवाले चरित्रों के उद्घाटन के साथ लेखिका समाज के अंधे के चेहरा का भी पर्दाफाश करती हैं । परिस्थिति के प्रतिकूल बनने पर भी उत्कृष्ट मूल्य के द्वारा विशिष्ट व्यक्तित्व को बनाये रखनेवाले व्यक्ति का चित्रण करने में भी लेखिका सफल होती हैं ।

"मरण सागर पारे" की वसंती दीदी के द्वारा लेखिका स्नेह, ममता, उदारता आदि उत्कृष्ट भावों के ऊँचे स्तर को प्रस्तुत करती हैं । निष्काम स्नेह की सफलता को कोई भौतिक चीज़ों के उपहार में सीमित करने को वह नहीं चाहती । कपटता से भरपूर समाज के लिए वसंती दीदी की कहानी अनुपम संदेश देती है ।

"जिलाधीश" कहानी भी एक असाधारण कथ्य को उभारती है । पुरुषों से नफ़रत करनेवाली स्त्री जिलाधीश बनती है और बाद में एक वरिष्ट पुरुष के द्वारा भोग का शिकार बनती है । बाद में उन दोनों का संबंध बना रहता है और वह उसे पति के रूप में स्वीकार लेती है । इस कहानी में अस्वाभाविकता तो है परन्तु नारी मन की एक विशिष्ट मनोवृत्ति का भी उद्घाटन हुआ है । नारी के अहं को पराजित करनेवाले पुरुष के सामने झुकने की मनोवृत्ति यहाँ उभरकर आती है ।

वैयक्तिक स्पर्श रखनेवाली उपर्युक्त कहानियाँ साधारण कहानियों से भिन्न लगती हैं क्योंकि इनमें आनेवाले पात्र सड़कों में नहीं मिलते हैं । न ही इनके चेहरे चिरपरिचित हैं । लेखिका ने इनको भीड़ में से कहीं ढूँढ निकाला है ।

अन्य कहानियों के अंतर्गत हमने जिन कहानियों का अध्ययन प्रस्तुत किया है ये कहानियाँ विविध विषयक हैं । इनको किसी एक वर्ग के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता । वैसे लेखिका ने इन्हीं कहानियों के माध्यम से जीवन की कई झाँकियाँ प्रस्तुत की हैं जिनके अंतर्गत स्त्री पुरुष संबंधों की विशिष्ट परिस्थितियाँ उभरती हैं । यहाँ भी कई कहानियाँ अविश्वसनीय की सीमा रेखाओं को छू लेती जाती हैं फिर भी विशिष्ट मानसिकता के परिवेश से जुड़कर कहानियाँ सत्य की रंगीन रूपरेखा प्रस्तुत करती हैं ।

"ठाकुर का बेटा" की कथावस्तु तो पुराने काल के राजा-राणियों की कथा जैसी लगती है । उसमें अविश्वसनीयता का पुट ज़्यादा है ।

शायद मनोरंजन की दृष्टि को सामने रखते हुए लेखिका ने इस कहानी की रचना की है ।

"भूल" शीर्षक कहानी में अचानक होनेवाली भूल के कारण अपनी पसंद की लडकी को वधू न बना पाने की विडंबना झलकती है ।

समाज में अनेक प्रकार के धोखे का रोज़-रोज़ विस्तार होता जा रहा है । "सती" नामक कहानी द्वारा यात्रा के बीच होनेवाली इस प्रकार की धोखाधडी का चित्रण लेखिका ने प्रस्तुत किया है ।

स्त्रियों के बीच आभूषणों को लेकर चलनेवाले झगडे और उनके दुष्परिणामों का चित्रण अत्यंत प्रभावात्मक ढंग से "अपराधी कौन" नामक कहानी द्वारा लेखिका ने प्रस्तुत किया है । स्त्री सहज ईर्ष्या, विद्वेष, आभूषणों के प्रति लालसा आदि का जीवन्त चित्रण मीना और अमला के द्वारा यहाँ हुआ है ।

"साधो, ई मुर्दन कै गाँव" डाकू-डकैती की कहानी है । सात मनुष्यों की हत्या करके जो माला चुराकर डाकू पति पत्नी को देता है उस विशिष्ट माला को पति के रोकने पर भी सिनेमा घर जाते वक्त पत्नी पहनती है । चोरी के इल्जाम वह पकडी जाती है और उसे जेल जाना पडता है । आभूषण के प्रति स्त्री की लालसा का दुष्परिणाम की ओर यह कहानी संकेत करती है ।

"शर्त" में नारी सुलभ ईर्ष्या, विद्वेष, अहंकार आदि के कारण स्नेह संबंधों में जो तनाव आता है उसका सुन्दर चित्रण लेखिका रमा और

लीला के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं । साथ ही यह भी देखा जा सकता है कि आज के युग में विवाह में पवित्र प्रेम को नहीं धन को ही मुख्यता दी जाती है । यही कारण आनन्द अपनी मनपसन्द लडकी रमा से विवाह नहीं कर पाता । घरवाले उसका विवाह संपन्न परिवार की लडकी लीला से ही कराते हैं ।

कृत्रिम रूप में सौंदर्य को बनाये रखने को स्त्री की कोशिश की असफलता का पर्दाफाश "चिरस्वयंवरा" में हुआ है ।

सौंदर्य की ओर पुरुष की आसक्ति का दुष्परिणाम "जोकर" में देख सकते हैं । इस कथासूत्र में एक लंबी कहानी की झलक मिलती है जो किस्सा गोई किस्म की है । इसमें आनेवाला पति एक निर्दयी मनुष्य का परिचय देता है ।

"भूमिसुता" की कथा असाधारण-सी है । सडक से मिली बच्ची को पाल-पोसकर बडी करने के बाद जब बच्ची को अपने पितृत्व का पता चलता है तब बदला चुकाने के उद्देश्य से लडकी का निकल पडना प्रमुख प्रतिपाद्य हुआ है ।

"पिटी हुई गोट" नामक कहानी जुआ खेल के दुष्परिणामों की ओर संकेत करती है । खेल में अपनी रकम के बदले अपनी पत्नी को बाजी में लगाकर जुआ खेलनेवाले पति की करुण कहानी है इसमें । इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने जुए का नशा किस तरह आदमी को अंधा कर देता है इसका ब्योरा प्रस्तुत किया है ।

"जा रे एकाकी" में भी नारी सुलभ ईर्ष्या, विद्वेष आदि का ही चित्रण है । आर्थिक असमानता जिस तरह जेठानी और देवरानी के संबंध विघटन में सहायक बनती है इसका ब्योरा यहाँ दिया गया है । ईर्ष्या, क्रोध आदि के होने पर जिस तरह मनुष्य अपना सुधबुध खो बैठता है और हत्या तक करता है यह जेठानी के द्वारा लेखिका प्रस्तुत करती हैं । साथ ही उस जेठानी के एक ही वाक्य से दूसरी देवरानी जेठानी के बच्चे की हत्या भी करती है । यहाँ नारी मन की ईर्ष्या का और प्रतिशोध का घृणात्मक स्वरूप उभरता है ।

"शपथ" शिवानी की मनोवैज्ञानिक स्पर्श रखनेवाली कहानी है । अपनी यौवनावस्था में हुई एक भूल के कारण बहुत वर्षों बाद शुभ्रा का मन अशांतिपूर्ण हो जाता है । मानसिक बीमारी से त्रस्त नायिका के रूप में शुभ्रा आती है । इस विचित्र कथागति से कथा अधिक अबोधगम्य तथा विचित्र-सी लगती है । मानसिक उथल-पुथल के कारण कई व्यक्तियों का जीवन बर्बाद हो जाता है । यह एक समस्या का रूप आज धारण कर रहा है । अपने द्वारा हुई गलतियाँ, विवाह के पूर्व के प्रेम संबंध, यौनसंबंध आदि से बाद में वैवाहिक जीवन में आनेवाली दुर्घटनाएँ आदि के कारण मन की शांति नष्ट हो जाती है, व्यक्ति का जीवन भी दुःख के अगाध गर्त में पड़ता है । शिवानी ने शपथ के द्वारा उसका सुन्दर चित्रण किया है ।

"मामाजी" अविवेकी बुद्धिहीन लड़के की कहानी है जो बुरे संग में पड़कर स्वयं अपना नाश करता है और अपनी बहन के दांपत्य जीवन को भी परेशानियों से भर देता है । ऐसे लड़के या युवा समाज में कम नहीं है । अपनी जिम्मेदारी को समझने में जो युवक पराजित होते हैं वह दूसरों के लिए शाप बन जाता है ।

"मणिमाला की हँसी" नामक कहानी में लेखिका ने नारी के प्रति किये जानेवाले अत्याचार का एक और चेहरा अनावृत किया है । दांपत्य संबंधों को गहरा बनाने के लिए शारीरिक और मानसिक संतुलन की आवश्यकता है । पागल स्त्री पागलपन से मुक्त होने पर भी पगली ही कहलाती है । पत्नी के प्रति किया जानेवाला पति का व्यवहार और पत्नी की हत्या एक और मुक्ति को लेकर की जाती है तो उसका परिणाम मानसिक दंड के रूप में पति को खुद भोगना पड़ता है । इसे अपराध और दंड की प्राकृतिक नियम संहिता का परिणाम ही माना जा सकता है ।

"लिखूँ" कहानी का विश्लेषण करते समय बहुत सारी अस्वाभाविकताएँ उभरकर आती हैं । आधुनिक युग में विज्ञान के प्रयोग के सहारा पुरूष का स्त्री बनना या स्त्री का पुरुष बनना असंभव नहीं है । परंतु प्रस्तुत कहानी की घटनात्मकता कल्पना के पंखों पर लेखिका को उड़ा देती है । उस ऊँचाई पर पहूँचकर स्वाभाविकता को और विश्वसनीयता को लेखिका तिलांजली दे देती हैं । समूची कथा में भारी-भारी से आनेवाली घटनाएँ साधारण बुद्धि के लिए भी अविश्वसनीय प्रतीत होती हैं लेकिन इस विशिष्ट संभावना से जनित समस्याओं के उद्घाटन के लिए इस तरह की ऊहात्मकता स्वाभाविक हो सकती है । यानी संभावनाओं की संभावनाओं पर ही यह कहानी केन्द्रित रही ।

"ज्यूडिथ से जयन्ती" नामक कहानी में नारी की विविध भूमिकाओं को रमा दी निभाती है । पति के न होने पर भी सारे दायित्व को अपने कंधे पर उठाकर, अपने पैरों पर खड़े होकर पुत्र को इंजनीयर बनाकर ज़िन्दगी को नया अर्थ देना चाहती है । लेकिन पुत्र का घृणात्मक व्यवहार और

ईसाई पत्नी के इशारों पर चलने की आदत उस माँ की ममता को धक्का पहुँचाती है । यहाँ माँ का मन असहाय, व्याकुल और आशाहीन बन जाता है । निराशा के इस कगार पर खडी होनेवाली नारी के सामने सान्त्वना के लिए सिर्फ कर्म की महत्ता और उसके परिणाम मात्र रह जाते हैं ।

अन्य कहानियों के अन्दर हम ने जिन कहानियों की चर्चा की है वे विषय दृष्टि से विविधात्मक हैं । उनमें आनेवाली स्थितियाँ एक सीमा तक अविश्वसनीय भी हैं । लेखिका की विशेष मनोवृत्ति के साथ-साथ पात्रों के आचरण की विशिष्टता भी इन कहानियों में दिखाई पडती है । मूल रुप में मनुष्य की हताशा और निराशा के साथ-साथ कर्मों की प्रतिक्रिया और परिस्थितियों का धावा बोलना आदि इन कहानियों में उभरकर आते हैं । मनुष्य की प्रतीक्षा के अनुसार सारे कार्य घटित नहीं होते ! नियति की शक्ति कर्मों का विधान करती है तभी ये कहानियाँ उभरती हैं ।

"कथ्य और कथ्यात्मक विश्लेषण" इस अध्याय में शिवानी की कथ्यात्मकता का विवेचना प्रस्तुत करने की कोशिश हमने की है । वैसे शिवानी की दुनियाँ कथ्यात्मक दृष्टि से बहुत ही व्यापक दिखाई पडती है । अनेक प्रकार की समस्याएँ, विशेष प्रकार के पात्र,असाधारण परिस्थितियाँ, अविश्वसनीय घटनाक्रम आदि इस कहानी संसार में उपलब्ध होते हैं । कहानीकार शिवानी ने हर स्थिति को अपनी एक विशेष दृष्टि से देखने की कोशिश की है । समस्याओं का उद्घाटन करते समय लेखिका की शैली वर्णनात्मक और विवरणात्मक घटनाक्रम का अनुसरण करती है । यहाँ तक फैले हुए घटनाक्रम का प्रस्तुतीकरण आधुनिक

कहानियों की सीमा रेखाओं से शिवानी की कहानियों को बाहर कर देता है । एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलनेवाला घटनाक्रम साधारण से लोगों के मनोरंजन को ध्यान में रखते हुए स्वीकारा गया है । कौतूहल के पक्ष को बनाये रखने की कोशिश कथाओं को कहीं-कहीं अविश्वसनीय बना दिया है । जिन ग्राम पात्रों की कथा गठन शिवानी की कहानियों में आया है वे ग्राम और प्रांतर साधारण लोगों की भावना में शायद ही जंच पाते हैं । जिन रईसों की, वेश्यागामी पुरूषों की और हत्यारों की, हर हत्या करनेवाली स्त्रियों की गाथा लेखिका ने प्रस्तुत की है वे साधारण न होते हुए भी कहीं न कहीं घटित होनेवाले अवश्य है ।

कथ्यात्मकता की विशेषता कहीं-कहीं समस्याओं को उभारने के उद्देश्य से आयोजित की गयी है । लगता है कि कथानक के रचना विन्यास से पूर्व ही लेखिका किसी उद्देश्य को सामने रखती हैं और उस उद्देश्य तक पहुँचने के लिए कथा में हेरफेर करती हुई, पात्रों के कारनामों से खिलवाड़ करती हुई आगे बढ़ जाती हैं । इसलिए कथ्यात्मकता को कई बार अनचाहे ढंग से मोड़ लेना पड़ता है । पाठक लेखिका के करिश्मे को अवाक् देखता रह जाता है ।

अध्याय - ३

स्त्री पात्रों की मानसिकता

इस अध्याय में शिवानी की कहानियों के स्त्री पात्र और उनकी मानसिकता पर हमने विचार किया है । शिवानी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से विविध प्रकार के पात्रों को जन्म दिया है । ये पात्र परिस्थिति विशेष से जुडकर जन्म लेनेवाले होते हुए भी कभी-कभी विशिष्टता के कारण अविश्वसनीय भी बन जाते हैं । शिवानी की कहानियों में वैसे वर्ग-विशेष के पात्रों की कमी है । अधिकांश पात्र कहानी की विशिष्ट स्थितियों के बोधक बनकर कोई न कोई भूमिका अदा करने के लिए बाध्य से लगते हैं । इस बाध्यता और पाबन्दी के कारण पात्रों की मानसिकता उतनी विकसित नहीं होती जितनी होनी चाहिए । इसके बावजूद शिवानी के पात्र अपनी कथ्यात्मकता की सूक्ष्म भूमिका को निभाने में सक्षम निकलते हैं ।

अध्ययन की सुविधा के लिए स्त्री पात्रों की मानसिकता के अंतर्गत हम ने कई लघुशीर्षक बनाए हैं । इन शीर्षकों के अंतर्गत हमने स्त्रियों की आचरण विशेषताओं को और उनकी प्रतिक्रियाओं को आंकने का प्रयास किया है । स्त्री पात्रों को उनकी आचरण विशेषताओं के अनुसार हमने कई शीर्षकों में रखा है - ये शीर्षक हैं - पीडित नारी पात्र, पतिव्रता, विवाह के पहले अविवाहित संबंध रखनेवाली नारियाँ, पारिवारिक बन्धनों को तोडनेवाली नारियाँ, शिक्षित नारियाँ और उनकी अहंवादिता, पति पर शासन करनेवाले नारी पात्र, नारी का वारांगना का स्वरूप, निम्न मनोवृत्तिवाले स्त्री पात्र और अन्य स्त्री पात्र ।

पीडित नारी पात्र

शिवानी ने नारी पात्रों के कई स्तर बनाए हैं उनके व्यवहार की जटिलता को नारी चरित्र के आधार पर आँकते समय भी व्यवहार की विशिष्टता को सामान्यीकृत नहीं किया है । इसलिए एक ओर पीडित नारियों का चित्रण है तो दूसरी ओर प्रतिशोध लेनेवाली नारियों का स्वरूप भी उभरकर आता है ।

"चीलगाडी" की नायिका लेखिका शिवानी ही है । अपने मायके में जाने के बाद अनेक तरह की कष्टताओं को और पुरुषों के अत्याचारों को परिस्थितिवश चुपचाप सहननेवाली नारी के रूप में वे हमारे सामने आती हैं । कहानी की नायिका एक दिन एयरहोस्टस की नौकरी पाकर मायकेवालों को छोड देती हैं । लेखिका का कन्यादान चाची ने ही किया था, विमाता के षड्यंत्र ने लेखिका को दुर्भाग्य का द्वार खटकाने भेज दिया । मायके में तो पति उसके साथ कठोर व्यवहार ही करता था वह सब चुपचाप सहती थी । जब प्रयाग में कुंभ स्नान के लिए वे परिवार के साथ जाती हैं तब वहाँ उसको प्रौढ पाण्डे और आइ.ए.एस प्रौढ कमीशनर की भूखी दृष्टि का शिकार होना पडता है । एक बार अनमन होकर उसे संत आत्मानन्द का पैर दबाना पडता है । पति की मृत्यु के बाद अपने प्रति किए गए अत्याचारों का बदला वे चुकाना चाहती हैं । घर में उस पर देवर देबूलला का दुःसाहस भी बढता जाता है । तब लेखिका यह बात बडी माँ से कहने को सोचती हैं किन्तु देवर परिवार के सबों का प्यारा था इसलिए वह बडी माँ से कहने से डरती हैं । क्योंकि बडी माँ तब लेखिका को ही गलत समझ बैठी तो लेखिका की स्थिति क्या होगी । आखिर एक दिन जब उसको एयरहोस्टस का काम मिलता है तब वे घर छोडकर चली जाती हैं ।

समाज के अनाचार को सहते-सहते आखिर लेखिका के मन में प्रतिशोध की भावना जन्म लेती है । फिर भी परिस्थितिवश उसको अनमन होकर कुछ कार्य करना पडता है । यह उसको धैर्यवती बनाता है । वह घर छोडकर चली जाती है ।

"के" के डाक्टरनी "के" के चरित्र में अनेक विशेषताएँ हैं एक तो वह अधिक बुद्धिशालिनी है, दूसरा डाक्टरनी, तीसरा पति के प्रति अटूट प्रेम रखनेवाली है चौथा दयालु और हत्यारिणी भी है । "के" का पूरा नाम है कमला कमला एक बहुत बडे जमीन्दार की पुत्री है । जब अपनी कुरूप पुत्री के लिए वर नहीं मिला तब पिता उसे डाक्टरनी बना देता है । वह सुन्दरी नहीं लेकिन वह बुद्धि का प्रतीक है । वह अपने काम में अतिनिपुण है । जब कमला डाक्टरनी बनकर निकलती है तब अंगुलियों से अमृत संजीवनी टपकने लगती है । नाडी देखते ही रोग का निदान करने की क्षमता उसमें है । कठिन प्रसव को भी वह पल भर में सुलझा देती है । यहाँ वह एक सफल डाक्टरनी का रूप धारण करके हमारे सामने आती है । जब उसका पिता मर जाता है तब वह माँ के गहने और पिता के शेयर को लेकर नई नौकरी का भार संभालने के लिए शहर चली आती है और शहर में एक विराट बंगले का एकांकी जीवन उसके स्वभाव को और भी रूखा और कठोर बना देता है । डाक्टरनी के मित्रों की संख्या प्राय: कम है क्योंकि वह चतुरा है और जानती है कि मित्रों की संख्या बढ़ने से फीस नहीं मिल सकती ।

डाक्टरनी दयालु भी है । इसके उदाहरण के रूप में हम निम्नलिखित घटना देख सकते हैं । एक दिन डाक्टरनी रोगियों के क्यू में एक सिर मुंडे-से उदास पीले चेहरे के युवक को देखती है और पीडित चेहरे की व्यथा उसे पिघला देती है । डाक्टरनी उसे अपने निजी कमरे में बुलाती है और पूछती

है कि उसके लिए वह क्या सहायता कर सकती है । अंत में जब उसको मालूम होता है कि वह अब फिज़िक्स में एम.एस.सी फाइनल दे रहा है । जब मुंशीजी नहीं रह गये तब डाक्टरनी को उस पर दया आती है और वह अपने बड़े बंगले में सभी सुविधाएँ उसको प्रदान करती है । कितना ही काम क्यों न हो डाक्टरनी उसे साथ बिठाकर अच्छे-अच्छे भोजन खिलाती है और अच्छे-अच्छे वस्त्र भी देती है । अंत में डाक्टरनी अपने से कम उम्रवाले शेखर को पति के रूप में स्वीकार लेती है । वह पति से इतना प्रेम रखती है कि जब रायज़ादा साहब की बहू की डिलिवरी के लिए डाक्टरनी गोरखपुर जाती है और वहाँ कुछ दिन और भी रहने की आवश्यकता पड़ती है फिर भी पति के बिना रहना असह्य हो जाने के कारण जल्दी ही लौट आती है । लेकिन वह पति से खाना पकाना जैसे काम भी करवाती है । विवाह के बाद जब हनीमून को निकलती है तब वह सारी साज सज्जा के साथ ही निकलती है ।

वह अतिबुद्धिमति है । जब वह घर में आती है तब पति को न देखकर नौकरानी छेदी से सब समझकर वह उससे कहती है मेरे आने की बात न कहना और यह कहना कि "मेरा गोरखपुर से ट्रंककाल आया था कि मैं कल सुबह पहुँच रही हूँ । अगर तुम ने उसे मेरे आज यहाँ आने के बारे में कुछ कहा तो फिर तुम मुझे जानते हो ।"[1] दूसरे दिन सुबह शेखर जब कार लेकर स्टेशन जाता है के मन में सब छिपकर शेखर से मधुर बातें करती रहती है । किशोरी ही उसके जीवन में बाधा डालनेवाली है यह जब वह समझती है तब वह उसकी हत्या करने का निश्चय करती है । इसके लिए अगले ही दिन उन संतिनियों और किशोरी को चाय पर बुलाती है । कुल्फी में जहर मिलाकर किशोरी की हत्या करती है । लेकिन वह अभिनय के साथ बड़ी संतिनी से कहती है -"होश में आओ बहन,

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 76

वैसे तो इसे कौलरा था, पर सुबह होने से पहले ही अर्थी उठा दीजिए, उस हरामज़ादी पुलिस का कुछ ठीक नहीं, बेकार में परेशान करेगी ।"[1] लेकिन जब शेखर समझ जाता है कि किशोरी की हत्यारिणी "के" है तब उसको शेखर की मार-पीट सहनी पडती है और वह बेहोश अवस्था में पहुँचती है ।

अपने पति का दूसरी स्त्री के पीछे जाना कोई भी पत्नी सह नहीं सकती । इसलिए यहाँ डाक्टरनी के मन में किशोरी के प्रति विद्वेष पैदा होना स्वाभाविक ही है । यहाँ वह साहस के साथ प्रतिशोध करती है । रोती हुई नहीं बैठती । उसकी मानसिकता पति के प्रेम संबंध मानने को तैयार नहीं होती ।

"गहरी नींद" की उमा अपराधिनियों की देखरेख करनेवाली वार्डन है । उसके पिता की मृत्यु के बाद उसके लिए वर ढूँढने के लिए कोई नहीं था । अंत में एक पुलिस अफसर से उसकी शादी होती है । उस पुलिस अफसर की पहले की दो पत्नियाँ मर गयी थीं और दो पुत्रियाँ भी थीं । उमा अपने स्नेह, करुणा से मग्न स्वभाव से सबको जीत लेती है लेकिन पति को नहीं जीत पाती । पति कठोर स्वभाववाला है और एक दिन अपने संरक्षण में पली अख्तरी से अपने पति का अविहित संबंध देखकर उमा सोने की गोलियाँ खाकर आत्महत्या करती है ।

यहाँ उमा "के" के डाक्टरनी के समान प्रतिशोध नहीं करती है बल्कि स्वयं अपने को पराजिता स्वीकार करती हुई आत्महत्या कर लेती है । उसका मन दुर्बल है । यहाँ उमा के माध्यम से नारी चरित्र के एक और पक्ष

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 79

को लेखिका ने उभारा है । जब वह समाज के प्रति प्रतिशोध नहीं कर पाती तब प्रतिशोध अपने प्रति होता है । उमा की आत्महत्या उसका उदाहरण है ।

"भीलनी" की सुहासिनी अत्यन्त अनाकर्षक है । "उसके अस्वाभाविक रूप से लंबे कद ने उसके चौडे कन्धों को क्षमा माँगने के से अनाकर्षक झुकाव में झुका दिया था । आवश्यकता से अधिक लम्बी नाक, आवश्यकता से अधिक चौडा कल्ला और आवश्यकता से अधिक सपाट छाती ने उसके विचित्र व्यक्तित्व को किसी बृहन्नता की-सी छवि में ढाल दिया था । उसका प्रत्येक अवयव लाइफ - साइज़ से कुछ बडा ही लगता ।........................।"[1]
इस कुरूपता के कारण सुहासिनी को देखने के लिए आनेवाले युवक लोग उसे पसन्द नहीं कर पाते । अंत में एक युवक उससे शादी करने के लिए तैयार हो जाता है । शादी के बाद वह एक बच्चे की माँ बनती है । सुहासिनी अपनी बहन से बहुत अधिक प्यार करती है । लेकिन जब वह विलासिनी को अपने पति के साथ सोये हुए देखती तब वह अपने मन को नियंत्रित न कर पाती । वह विलासिनी को मारने के लिए भरी रिवाल्वर निकालती है । लेकिन निशाना चूक जाने पर पति की हत्या होती है जिसके कारण वह स्वयं आत्महत्या करती है । गलती विलासिनी के होने पर भी जब मरने के पहले पुलिस उससे घटना के बारे में पूछती है तब वह अपनी बहन को अपमान से बचाती है । देखिए -"मैं ने देखा, दिद्दा स्पष्ट स्वर में कह रही थीं, मेरे पति की बाहों में एक अर्द्धनग्न काली-कलूटी भीलनी पडी रही है । मैं क्रोध से एक क्षण को विवेक खो बैठी । भागकर भरी रिवाल्वर निकाली - मारना चाहा था भीलनी सौत को, पर निशाना चूक गया अंकल, I was always a poor shot."[2]

---

1. गेंडा - शिवानी - पृ. 51
2. वही - पृ. 69

"वह भीलनी क्या नाम था उसका ? कहाँ गई वह ?"[1] अंकल व्यग्र होकर पूछने लगे। "नाम ? नाम तो मैं नहीं जानती, खिडकी से कूदकर भाग गई । मैं ने अपने को खुद गोली मार दी, पुलिस किसी को परेशान न कर पाए अंकल ।"[2]

सुहासिनी बचपन में भी विलासिनी के सारे अपराध स्वयं ओढ अनेक बार उसको बचाती थी। यहाँ उसके सहनशील और क्षमा करने का स्वभाव हम देख सकते हैं ।

यहाँ भी नारी का प्रतिशोध अपने प्रति ही केन्द्रित होता है । नारी जब असहनीय व्यथा या अप्रत्याशित रूप में होनेवाली किसी घटना का शिकार होती है तब असन्तुलित मनस्थिति का शिकार बनती है और आत्महत्या कर लेती है ।

"उपहार" की अनाथा नलिनी को उसकी लखपती बुआ ही पालती हैं । वे नलिनी को बडे लाड से रखती हैं । पर उनके शासन का अंकुश कभी-कभी बड़ी क्रूरता से कोंचता है । डाक्टरनी पद नलिनी बुआ के साथ आफ्रिका जाकर अपनी स्वतंत्र प्रैक्टिस आरंभ कर देगी, साथ ही उनके सिल्क के कारोबार की देख-रेख में भी योगदान देगी, यही बुआ की पूर्व निर्धारित योजना है । लेकिन इन सब को टुकराकर नलिनी रिसर्च करनेवाले रघुनाथ से विवाह करने का निश्चय करती है । तब बुआ कहती हैं "तुम इस अधूरी पढाईवाले जनखे से छोकरे से ब्याह करेगी तो मैं तुम्हें अपनी संपत्ति का एक धेला भी नहीं दूँगी ।"[3] लेकिन नलिनी अपनी जिद पर अडी रहती है और रघुनाथ से

---

1. गैंडा - शिवानी - पृ. 70
2. वही - पृ. 70
3. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 83

विवाह करती है । वह पति से बहुत प्यार करती है । लेकिन पति के प्रेम व्यवहार से वह दु:खी है । वह दिन रात मनौती करती है कि ईश्वर उसके निर्वीर्य पति को पौरुष के मद से भर दे, कभी तो उसका यह आलसी जलसर्प क्रोध की फुत्कार छोड सके । ट्रेन में हुई डकैत घटना से रघुनाथ पत्नी पर अविश्वास करता है और उसके गर्भस्थ शिशु के पितृत्व को ट्रेन में आ धमकनेवाले डकैत पर आरोपित करता है । यह सुनकर नलिनी क्रुद्ध होकर "घर मेरा है निकल जाओ बाहर, तुम कमीने पशु हो"[1] कहकर पति को भगा देती है । वह बुआ के साथ विदेश जाकर रहने लगती है । रघुनाथ के बच्चे को जन्म देती है । वह दिन रात एक ही प्रार्थना करती है कि हे भगवान मेरी संतान अविकल उसी का रूप लेकर जन्मे जिससे कभी मैं उसे देखकर कह सकूँ कि मूर्ख देख ले अपने पुत्र को । भगवान उसकी प्रार्थना सुन लेता है । घटनाओं का चक्र इस तरह घूमता है कि नलिनी के पुत्र को उसका पिता शेखर देख लेता है परन्तु उस समय शेखर की हालत पागलों को-सी बनी होती है । वह गर्व से लेखिका से कहती है कि मैं तो अब विधाता की सुप्रीम कोर्ट में अपने जीवन का सबसे बडा मुकदमा जीत चुकी हूँ ।

नलिनी के चरित्र के माध्यम से लेखिका ने कलंक के आरोप से क्रुद्ध महिला का प्रतिशोध दिखाने का प्रयास किया है । नारी किसी भी प्रकार की पीडा को सह सकती है लेकिन उसके चरित्र पर आरोपित किये जानेवाले झूठे कलंक को किसी भी हालत में बरदाश्त नहीं कर सकती । प्रतिशोध करने का कोई भी अवसर अपने हाथ से गंवाना नहीं चाहती ।

"चन्नी" की चन्नी लेखिका के मंझले मामा की इकलौती लडकी है । जब वह माँ की कोख में होती है तब पिता की मृत्यु हो जाती है ।

---

1. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 88

जन्मते ही माँ भी मर जाती है । अनाथ चन्नी को बड़ी मामीजी ही पालती है । अभागिनी चन्नी को अलसेशियन के समान पाला जाता है । घर-भर की उतरनें वह पहनती, फिर भी कुन्दकली-सी चटकती रहती । घर-भर की बासी जूठन उदरस्थ करने पर भी उसके स्वास्थ्य कभी हार नहीं मानती । वह सांवली है । उसे अपने कृष्णवर्ण का कोई दुःख नहीं है । वह जानती है कि विधाता उसकी शोख आँखों और मोती-सी दन्त-पंक्तियों में लावण्य का ऐसा अपरिमित कोष भर दिया है, जिसे अपने गौरवर्ण की महिमा से भी उसको चचेरी बहनें तुच्छ सिद्ध नहीं कर सकतीं । अपनी मेम-सी बहनें कान्वेण्ड स्कूलों में पढ़ने जातीं तो वह केवल रीठे से ही समृद्ध अपनी एड़ी तक लहराती चोटी पीठ पर डालकर "जगततारिणी" स्कूल में पढ़ती । उसकी अध्यापिकाओं का कहना है कि ऐसी तेज लड़की उनके स्कूल में आज तक नहीं आई । एक बार अपने स्कूल के खेल के टीम के साथ वह रूस भी घूम आती है । शोख पहले से ही से थी, अब वह ढीठ भी हो गई । जवान हुई तो उसकी किताबों से एक आध प्रेम पत्र का गिरकर बड़ी मामीजी के हाथ पड़ जाना तो नित्य की घटना बन जाती है । मुहल्ले भर के छोकरों की भ्रमरावली उसके इर्द-गिर्द मंडराने लगती है । अपनी सामान्य-सी साड़ी के आंचल-सिग्नल से चन्नी मुहल्ले-भर के युवकों के हृदइंजनों को रोक सकती है । वह किसी के साथ भाग जाने के पहले उसकी शादी करने के विचार से उसके लिए दायें-बायें वर ढूँढने लगते हैं । किन्तु इसी बीच एक सुयोग्य पात्र उसे स्वयं ढूँढ लेता है । योगेन जीजा के साथ उसकी शादी होती है । लेकिन अपनी पत्नी के रसिक स्वभाव के बारे में योगेन को पता लगता है । एक दिन तीन बच्चों की माँ चन्नी अपने पति के निर्मम व्यवहार और शक्की स्वभाव से ही ऊबकर किसी और के साथ भाग जाती है ।

कथा में चन्नी के चरित्र के माध्यम से फिर एक बार नारी चरित्र के एक प्रबल पक्ष को लेखिका ने उभारा है । निर्दोष नारी पर जब दोष

मढ दिया जाता है तब उन दोनों प्रतिशोधों में उसका निशान व्यक्ति या समाज होता है । कभी-कभी ये आरोप निर्दोष ही सहो अपराधी बनने का अवसर बनकर आते हैं और वह स्वयं असली दोषी बनकर व्यक्ति और समाज के सामने प्रतिशोध करती है । चन्नी का किसी के साथ भाग जाना इसका ही परिणाम है ।

"अलखमई" की जोगी माई अपने पति और सास के क्रूर और कठोर व्यवहार के कारण एक दिन दोनों की हत्या करती है । उसका विवाह दसवीं उम्र में ड्राइवर आनसिंह के साथ हुआ था । आनसिंह सभी दिन नशे में डूबकर माई को मारता है और कभी सास की मारपीट भी माई को सहना पडता है । कभी-कभी भूखी-प्यासी माई को ऐसे हरामी भैंस को चराने के लिए भेजा जाता है जो हमेशा जोगी-माई को हमेशा भगाता है और आक्रमण करती है । माई मायके जाने की इच्छा प्रकट करती है तो सास गरम चिमटे से दाग देती है । एक दिन जब माई को बुखार में ही सास बाघ लगा उस वन में भैंस चराने भेज देती है तब माई बहुत रोती है और वह कहती है कि हम नहीं जाएगा, सास उस वन में बाघ लगा है, हमको बुखार है । पर सास कहती है कि जा, जा बाघ ने तुझे खा लिया तो हम दूसरा बहू ले आएँगे । उस दिन भैंस को भी सास मंतर देती है । भागते-भागते जोगी माई का दम निकाल देती है, आखिर जाकर खडी हो जाती है हरामी घाटो के ऊपर । नीचे काली गंगा, एक धक्का लगा तो चूर-चूर । माई को बहुत गुस्सा था उस दिन । भूख का गुस्सा, सास का गुस्सा, मरद का गुस्सा सब निकालती है वह भैंस पर । वह भैंस को एक धक्का देती है और धड़ाम से भैंस गिरती है । भैंस को दिखाने के बहाने सास को भी वहाँ ले जाकर धकेल देती है और फिर पति को माँ की रक्षा करने के बहाने वहाँ ले जाकर उसको भी हत्या करती है । माई फिर घर नहीं लौटती है । ओडयार में नेपाली बाबा के पैर पकडकर सब पाप कबूल देती है । गुरु महाराज दीक्षा देता है और कहता है -"माई जा, दिन रात चिमटा बजाकर भिच्छा मांगकर

खा, और भिच्छा माँगकर पहन ओढ़ । तू ने जीव-हत्या किया है, यही तेरा पिराचित है । अब परभू तेरा मालिक और परभू सहारा है ।"[1] तभी से वह भिक्षा माँगकर अपना जीवन बिताती है ।

माई के माध्यम से लेखिका ने एक ऐसी नारी का प्रतिशोध रेखांकित किया है जो गंवार है । परन्तु परम पीडा का शिकार है ! जब उस पर असहनीय और पैशाचिक अत्याचार होता है तब उस अत्याचार के तीनों साधनों को - भैंस, सास और पति सदा के लिए मिटा देती है । जीवहत्या करने के पाप से मुक्त होने की अभिलाषा लेकर भिखारिन का जीवन बिताती है ।

"माई" की रुक्की नामक लडकी का जीवन अत्यंत करुणाजनक है । उसके बचपन में ही माँ मर जाती है । थानेदार पिता तो बहुत कर्कश स्वभाववाला है । चौदह वर्ष में ही पिता उसकी शादी अपनी ही बिरादरी के युवक से कराता है । लेकिन पति शराबी ही नहीं अविहित संबंध जोडनेवाला भी है । नववधू रुक्की के समस्त आभूषण शराब के नशे में चूर-चूर मदालस पति अपनी गोपिकाओं के लिए बाँटता है । आखिर रुक्की विवाह के पन्द्रहवें दिन ही अपने पिता के सम्मुख अपनी सुचिक्कन पीड उल्लंघ कर खडी हो जाती है । क्रोध से दांत पीसता थानेदार उसी क्षण दामाद की हत्या करने का प्रबन्ध कराता है । रुक्की का पति मारा जाता है । ब्राह्मण की बेटी की दूसरी शादी का रिवाज़ उस समय नहीं था । पिता के गृह में उस पर किसी भी प्रकार की रोक-टोक नहीं रहती । लेकिन रुक्की स्वेच्छा से ही कठोर वैधव्यव्रत का ऐसा पालन आरंभ करती है कि गाँव की अनुभव प्राप्त वरिष्ठ विधवाएँ भी देखती ही रह जाती हैं । वह साधारण मानवी के स्तर से निरंतर ऊपर उठती सबकी पकड से दूर जाती है । गाँव में कोई बीमार पड जाए तो चाहे वह शूद्र हो या चांडाल

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 87

रुक्की रात दिन उसकी सेवा शुश्रूषा करती है । जिस सहजता से उस बालिका के वैधव्य ने उसे विवेकशील प्रौढा बना दिया उसे देख सब अवाक् रह जाते हैं । जीवन के सोलह वसन्तों में ही रुक्की जैसे जीवन का महान सत्य उपलब्ध कर लेती है कि मनुष्य भोग से शाश्वत सुख प्राप्त नहीं कर सकता, त्याग में ही उसे चिरंतन सुख मिल सकता है । एक बार पूर्णकुंभ का पुण्य लूटने गाँव की भीड जाती है तो रुक्की भी ज़िद कर उनके साथ चल पडती है फिर वर्षों तक वह नहीं लौटती । उसके वियोग में पिता की मृत्यु होती है । तीन वर्ष के बाद रुक्की सिद्धि माई बनकर गाँव में आती है । अपने ही घर के पास देवदार के गगनचुंबी वृक्ष के नीचे ही वह जम जाती है । किसी की भैंस खो गयी तो माई अपनी दिव्य शक्ति से उसका स्थान बताती है । धीरे-धीरे माई की ख्याति कई शहरों में फैल जाती है । आखिर वह खुद बीमार हो जाती है । रोग से तडपते समय पुरानी सखी लेखिका से उसकी मुलाकात होती है । जिसने अपना कौशोर्य यौवन स्वेच्छा से शुचिता के अभेद्य दुर्ग में बंदी बनाकर अपनी सब इन्द्रियों को विजित कर लिया था जिसने अन्नजल त्याग केवल पत्ते चबाकर ही जिह्वा को पालतू बिल्ली बना लिया था, पवित्र, बेदाग सात्विकी सिद्धि माई आखिरी समय बचकानी अविवेकी फरमाइश करती है । वह लेखिका से कहती है "जीवन-भर कभी गोश्त नहीं चखा, सुना है बहुत बढ़िया स्वाद होता है । बिना अतृप्त लालसा लिए ही चली गई तो एक बार फिर इस मनहूस पृथ्वी पर लौटना होगा । जा मेरी बच्ची ले आ जल्दी ।"[1] लेखिका गोश्त लाती हैं और माई खाती है । लेखिका की सहायता से अपनी शादी की बनारसी साडी पहनती है । बिन्दी डालकर आईने में अपने को देखकर कहती है -"इतनी बुरी तो नहीं हूँ देखने में । सब इच्छाएँ पूरी हो गई आज बस एक ही इच्छा रह गई ।"[2] कहकर वह दम तोडती है ।

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 124
2. वही - पृ. 125

अपने मन को कितने संयम में रखने पर भी उसका सच्चा रूप एक न एक दिन ज़रूर बाहर आता है । यहाँ मौसी के जीवन में ऐसा ही घटित होता है । इस पात्र के माध्यम से लेखिका ने एक विशिष्ट चरित्र को हमारे सामने प्रस्तुत किया है । रुक्की माई अपने मन को काबू में रखकर आंतरिक शक्तियों का विकास कर सिद्धि प्राप्त करती है । दूसरों की सेवा भी करती है । परंतु मृत्यु से पहले उसकी अतृप्त लालसाएँ जागती हैं जो कि अत्यंत स्वाभाविक है । नारी चित्त की चंचलता भी इस तरह प्रकट होती है । माँस खाने की इच्छा करना और शादी की साडी पहनना आदि अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति के द्योतक है । जब तक शरीर धर्ती से बंधा रहता है तब तक इच्छाओं का अंत नहीं होता । लेखिका ने इस बात को प्रस्तुत पात्र के माध्यम से अभिव्यक्त किया है ।

"छिः मम्मी, तुम गंदी हो" की पत्नी सोलह वर्ष की सुन्दरी लडकी की शादी अडतालीस सालवाले से होती है । माँ-बाप की इच्छा के अनुसार वह शादी की मंजूरी तो देती है लेकिन मन ही मन उस व्यक्ति से नफ़रत करती है । वह बहुत दुःखी है फिर भी अपने पति बच्चे और घर को देखभाल अच्छी तरह करती है । तीन बच्चों की माता भी बन जाती है । लेकिन अपने पति का निर्मम और क्रूर व्यवहार से ऊबकर वह ट्यूषण के लिए आनेवाले सोलह वर्ष के विद्यार्थी से प्रेम करती है और एक दिन अपने पति की हत्या करने के लिए उस प्रेमी की सहायता करती है और फिर कारागार की सजा भोगने के लिए तैयार हो जाती है ।

यहाँ अपने पति का अकारण ही संशय का स्वभाव और उसके साथ के क्रूर और निर्मम व्यवहार ही उसको ऐसी क्रूर हत्या करने के लिए प्रेरित करती है ।

"जा रे एकाकी" को चनुली को एक कुमाऊनी जवान पसंद करता है और माँ विरोध करने पर भी उससे विवाह करता है । इसलिए माँ उससे हमेशा झगडा करती है । इसका मज़ा लूटने के लिए पडोसी लोग रोज़ उसके यहाँ इकट्टा होते हैं । इसी बीच सीमा में होनेवाले भारत-चीनी युद्ध में भाग लेने के लिए नवेली चनुली का फौजी पति जाता है । परन्तु फिर कभी वापस नहीं आता । पुत्र की अकाल मृत्यु कर्कश स्वभाववाली सास को "जीती-जागती तोप" बना देती है । वह चनुली से कहती है - "कुलच्छनी, तू ने ही मेरे बेटे को खा लिया ।"[1] चनुली को एक प्रतिवेशिनी उसकी सास के तोपखाने के लिए नित्य बारूद जुटाती थी । चनुली ने गले का मंगलसूत्र और नाक की फुल्ली न उतारने की धृष्टता की थी क्योंकि उसका विश्वास था कि पति जीवित है । इसी से नारी वर्ग ने उसका सामाजिक बहिष्कार कर दिया था । एक दिन चनुली नई दरांती लेकर घास काटने निकलती है । एक झगडालू पडोसिन जान-बूझकर ही उसके पीछे हो जाती है मार्ग भर वह उसको छेडती है, उसकी अन्य सखियाँ छौंक लगाती हैं । उस समय कर्कशा प्रतिवेशिनी चनुली से कहती है -"यह श्रृंगार क्या रांउ-रंड-कुली औरत को शोभा देता है । वहाँ बुढिया बेटे के लिए पागल हो रही है । यहाँ इस मुई का यह चरित्तर है ।"[2] यह सुनकर चनुली क्रोध से पागल हो जाती है । वह दरांती उसकी ओर फेंकती है और एक ही चोट में उसकी गर्दन लटक जाती है । वास्तव में वह उसको मारना नहीं चाहती थी । लेकिन उसको आजन्म कारावास का दंड भोगना पडता है । उसका कथन देखिए - "मेरा मन कहता था कि वे ज़िन्दा हैं, और मेरा मन कभी झूठ नहीं बोलता, इसी से मैं चरयो, फुल्ली नहीं उतारती थी और क्या मैं सजने-धजने के लिए यह सब करती थी ? फिर उसी रात को, मैं ने उन्हें सपने में देखा था । मन भारी था, उसने मुझसे ऐसी बात कह दी तो मैं क्रोध से पागल हो गई । खींचकर मैं ने

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 33

2. अपराधी कौन - शिवानी - पृ. 34

दरांती उसकी ओर फेंकी, मैं क्या जानती थी दीदी कि एक ही चोट में उसकी गर्दन ऐसे लटक जाएगी ?"[1] इसी बीच उसका पति अचानक लौट आता है और उसके अपील से सुप्रेम कोर्ट चनुली के दंड की अवधि की कटौती कर चार वर्ष की कर देता है । पहले उसका पति उसको चिट्ठी भेजा करता था फिर दो साल से चिट्ठी भी नहीं मिलती । वह दिशाहीन होकर खडी रहती है । वह सोचती रहती है कि पति ने दूसरी शादी कर ली होगी । दो साल कट गए हैं दो साल और हैं । पर छूटकर कहाँ जाऊँगी मैं ? कभी मिलते तो यही पूछती "जब ले ही नहीं जाना था तो मेरी सजा कम क्यों करवा दी ?

इसमें नारीत्व का एक और चेहरा है जो हमेशा अपने को सुहाग सिन्दूर से युक्त देखना चाहता है । पत्नी का आश्रय पति है और पति पर उसकी अटूट आस्था होती है । परन्तु पति की स्थिति ऐसी नहीं होती । पत्नी के प्रति पूर्ण आस्था रखनेवाले पुरुष समाज में कम ही मिलते हैं । जेल में दंड भोगनेवाली पत्नी को फिर कभी देखने नहीं आनेवाला पति पुरुष की निर्दयता का फिर एक बार परिचय देता है । स्त्री और पुरुष के चरित्रों की तुलना यहाँ मिलती है । चनुली उस होनहार नारी का प्रतीक है जो अपने सुहाग और सिन्दूर की सुरक्षा के लिए अकथनीय पीडा सहने के लिए तैयार रहती है ।

"बन्द घडी" की माया सुन्दरी, भावुक होते हुए भी शरीर और मन दोनों से दुर्बल है । सिविल सर्जन पिता की लाडली पुत्रियाँ बडे दुलार में पलकर बडी होती हैं । माया नाजुक और छोटी होने के कारण पिता के बहुत मुँहलगी है । इसी से बडे यत्न से उसके लिए वर चयन करना पडता है । एक इंजनियर के साथ उसका विवाह होता है । माया अपने पति के विपरीत

---

1. अपराधी कौन - शिवानी - पृ. 34

भावुक है जिसके कारण पति के साथ हमेशा झगडा करना पडता है । माया को शोख रंग की साड़ियाँ पसन्द है, कभी-कभी लिपस्टिक भी लगा लेती, तो गिरीश कहता "चूहा मारकर खून लगा लो न ओठों पर, और अच्छी लगेगी ।"[1] माया जल भुनकर रह जाती है । माया को रोस्ट चिकन चिंचोडने में स्वर्गीय आनन्द आता और गिरीश को गोश्त देखकर उबकाइयाँ आती हैं । पति-पत्नी में बोलचाल हाँ हूँ तक ही सीमित है । पति-पत्नी के बीच में हर समय झगडा होता रहता है । आखिर माया आत्महत्या करने का निश्चय करती है लेकिन अपने बच्चों की स्मृति उसे दुःखी बनाती है फिर भी वह अपने मन को संभालती है और मिट्टी का तेल लेकर गुसलखाने में पहुँच जाती है । लेकिन इस समय अपने पति की हँसी सुनकर वह बाहर आती है और अपने पुत्र अतुल के खेल देखकर वह पुरानी बातें भूल जाती है और पति गिरीश के स्नेहपूर्ण व्यवहार से माया का मन पुलकित होता है और वह आत्महत्या करने का फैसला छोड देती है ।

नारी मन की चंचलता का एहसास करानेवाली इस कहानी में नायिका की बदलनेवाली मानसिकता का सफल चित्रण हुआ है ।

शिवानी ने उपर्युक्त कहानियों में जिन नारी पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ प्रस्तुत की हैं वे पात्र एक सीमा तक अत्यधिक पीडा के शिकार हैं । पति, सास, देवर और समाज के लोगों से पीडित ये पात्र प्रतिशोध करने के लिए बाध्य हो जाते हैं । जब वह अपने शत्रुओं से इनतकाम नहीं कर पाते तब पराजित होकर आत्महत्या कर लेती है । कभी-कभी बदला चुकाने में भी वे सफल निकलती हैं । वैसे नारी का यह बदला लेना सामाजिक मूल्यों का उल्लंघन माना जा सकता है परन्तु जिस समूह में नारी को जानवर के समान देखा जाता है

---

1. लाल हवेली - शिवानी - पृ. 127

उस समूह के प्रति नारी का दृष्टिकोण इस तरह का ही बन सकता है । वस्तुतः नारी और उसके जीवन की परिस्थितियाँ ही प्रतिशोध और प्रतिहिंसा की स्थितियों को जन्म देती हैं । इसके लिए नारी को दोषी ठहराना उचित नहीं है ।

भोली-भाली नारियाँ

शिवानी ने नारी का भोलेपन बड़े ही स्वाभाविक ढंग से कई कहानियों में अनावृत किया है । निष्कलंक मन रखनेवाली भोली-भाली गौ जैसी औरतों की कमी समाज में नहीं है । पुरुष चाहे वह पति हो या प्रेमी नारी के भोलेपन का अनचाहा फायदा उठाता है । कभी वह नारी ठगी जाती है और वह नहीं जानती कि उसके साथ धोखा कैसे हो रहा है । नारी की इस विडंबना का पक्ष दर्दनाक है ।

"पिटी हुई गोट" की चन्दो अनाथा है । गुरुदास की दुकान पर सब्जी लेने जाती उस लड़की को साठ वर्ष का गुरुदास अपनी तीसरी पत्नी के रूप में स्वीकार करता है । उस सौम्य सन्त बालिका के साधु आचरण उसके शक्की स्वभाव को जीत लेता है । न वह पास-पड़ोस में उठती-बैठती न कहीं जाती । गुरुदास दुकान जाता है तो वह अपने प्रकाशविहीन कमरे में पति के पूरी बाँह के जीर्ण स्वेटर को उधेड़कर आधी बाँह का बनाती तो कभी आधी-बाँह के पुराने बनियान से मोजे बनाती है । गुरुदास नया ऊन तो दूर, सलाइयाँ भी लेकर नहीं देता । किन्तु पड़ोसिनें और आत्मीय स्वजनों के उभारे जाने पर भी चन्दो कृपणी पति के प्रति बगावत का झण्डा नहीं खड़ा करती । उसे सचमुच ही पति के प्रति अनोखा लगाव है । उस लगाव में प्रेम कम, कृतज्ञता ही अधिक है जिसे जीवन के पन्द्रह वर्षों में मिठाई तो दूर, भर-पेट अन्न भी न जुटा हो, उसके लिए

नित्य जलेबी का दोना पकडानेवाला पति परमेश्वर है । वह चन्दो के अंधकारमय जीवन का प्रथम प्रकाश है । वह अपनी खिड़की से नित्य नवीन साड़ियों में मटकती, सीज़न की सुन्दरियों को देखती, तो कभी भी उसे डाह नहीं होता । "गुरुदास दुकान से लौटता तो संकरी सीढ़ियों पर पति की फटीचर जूतियों की फत्त-फत्त सुनकर वह आश्वस्त होकर उठती, गर्म राख से अंगारे निकालकर आग सुलगाती, चाय बनाकर पति को देती, अंगुलियों चाट-चाट कर चटखारे लेती, जलेबी का दोना साफ करती और फिर नित्य मन्दिर जाती थी ।"[1] मन्दिर के रास्ते में उसे प्राय: ही डिग्री कालेज के मनचाहे लडके "वैजयन्तीमाला" कहकर छेड भी देते हैं पर उनके फिल्मी गाने, सीटियाँ और हाय-हुय उसे छू भी नहीं सकतीं । वह सिर झुकाये मन्दिर जाती, नित्य देवी से आँखें मूँद कर एक ही वरदान माँगती कि मेरा सौभाग्य अचल हो माँ । पास पडोस की स्त्रियाँ गुरुदास के कृपण स्वभाव की आलोचना को नित्य नवीन रूप देकर चन्दो को भडकाने की कई चेष्टाएँ करती हैं पर वे विफल होती जाती हैं । रविवार, सोमवार और बुधवार को चन्दो मौनव्रत धारण करती है । उस पतिव्रता किशोरी के लिए पति की आज्ञा कानून की अमिट रेखा है । वह पति की आदेशपूर्ण वाणी को ब्रह्मवाक्य समझकर ग्रहण करने को सदा तत्पर है । इतना ही नहीं जब अपने पति उसे जुआरी खेल के लिए दाँव पर रखने के लिए बुलाता है तब वह उसके साथ जाती है और खेल में अपने पति की पराजय से उस पर महिम भट्ट को अधिकार मिलता है और उस दु:ख से पति आत्महत्या करता है और वह विधवा बन जाती है ।

शिवानी ने चन्दो को पति परायणा स्त्री के रूप में चित्रित किया है । चंदो पति को देवता मानती है और उसके प्रति हमेशा कृतज्ञ रहती है ।

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 136

गरीबी में पली चन्दो अपने अन्नदाता को समूचा प्यार देती है और हमेशा अपने सुहाग को बचाया रखना चाहती है । इस पात्र के माध्यम से लेखिका ने नारी के आदर्श भारतीय स्वरूप को प्रस्तुत किया है ।

"अनाथ" की ऐनी की माँ नेपाली है, पिता आइरिश मेजर । जब ऐनी दो वर्ष की हो जाती है तब मेजर की मृत्यु होती है । धीरे-धीरे ऐनी की माँ के आत्मीय स्वजन उससे मिलने आने लगते हैं । लाख छिपाने पर भी माँ के महारोग का रहस्य खुल जाता है । ऐनी की माँ के पूरे खानदान को कुष्ठ रोग था उसका बंगला छीनकर ग्रामवासी उसे पुत्री सहित खदेड़ देते हैं । माँ भाग जाती है लेकिन ऐनी के यौवन और सौंदर्य के सम्मुख क्रूर समाज घुटने टेकता है । सुन्दरी ऐनी फिर मेजर के बंगले में रहने लगती है । "कभी सुनहरे बालों पर रेशमी रूमाल बाँध कर हेय-होय हो हो, कहती, कनस्तर बजाती सेब के पेडों पर बैठे तोते भगाती, कभी अपने मृत पिता के विलायती सूटों के अम्बार को धूप दिखाती और कभी भागकर हमारे बंगले में आ जाती । लड़की वास्तव में पूरी अंग्रेज़ लगती थी । कहीं भी उसकी चाल-ढाल में शील सौजन्य की मुहर नहीं थी । चलती तो लगता, पानी में फिसलती चिकनी मछली तैर रही है । हँसती तो दीवारें ढहा देती । ईसाई बिरादरी ने उसको गिरजे में जाने की अनुमति नहीं दी तो उसने मुक्तेश्वर महादेव के मन्दिर पर धरना दे दिया । वहाँ के पुजारी ने खदेड़ा तो शूद्रों की पूजा का प्रसाद लेने पहुँची । वहाँ भी चाण्डालिका का प्रवेश निषिद्ध था । लोग फुसफुसाने लगे "हिरुली कोढ़िन की बेटी है । बाप फिरंगी था, इसीसे गाल देखो जैसे रामगढ़ के सुर्ख सेब हैं ।"[1] पर ऐनी अकेली ही समाज से मोर्चा लिये खड़ी रहती है । एक आध दुःसाहसी मनचले आधी रात को उसका द्वार खटखटाते हैं तो वह रणचण्डी सी उनके बीच कुल्हाड़ी लेकर

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 104

कूद पडती है । वह सुन्दरी साहसी और खरा सोना है । ऐनी का पडोसी बेनर्जी ऐनी की इस बहुमुखी प्रतिभा पर आकर्षित होता है और वह उससे विवाह करता है । लेकिन जब बेनर्जी का पिता अपने पुत्र के विवाह के बारे में जानता है तब वह क्रोधी पिता बनर्जी को चील की भांति बंगाल भगा ले जाता है । ऐनी निराश होकर अपनी बिरादरी के साथ जीवन बिताती है । एक पुत्र की माता बनती है । मिशन और बिरादरी के लोग उसके पुत्र के संरक्षण की मंज़ूरी मांगते हैं लेकिन ऐनी मंज़ूरी नहीं देती । बेनर्जी हिन्दू है इसी वजह अपने पुत्र को वह हिन्दू अनाथालय को सौंपती है । ऐनी यह सोचती है कि उसका पति कभी दूसरा विवाह नहीं करेगा । इस भरोसे पर वह अपनी माँ की देखरेख करने के लिए फिर अपने कसबे में चली जाती है । वह पतिव्रता है अपने पति से वंचित रहने पर भी वह उस पर विश्वास करके जीवन बिताती है ।

"सौत" कहानी की नीरा अपने पति पर भरोसा रखती है । लेकिन छली जाती है । अपने फ्लाट में रहनेवाली राज्यम उसके पति के साथ किस तरह का अमर्यादित व्यवहार करती घूमती है यह नीरा को दिखाई नहीं पडता । जब राज्यम नीरा के पति के साथ स्कूटर में पान खरीदने के लिए दूकान जाने को तैयार होती है तब लेखिका कहती हैं कि नहीं, मुझे पान की कोई ऐसी आदत नहीं है । लेकिन उस समय भोली नीरा के चेहरे पर, अपनी सखी के प्रति कृतज्ञता की सहस्र किरणें फूट रही थीं । नीरा कहती है "प्लीज़, राज्यम, पुडा-भर लेती आना, फ्रिज में रख दूँगी ।"[1] अपने पति और सखी पर विश्वास करनेवाली नीरा को धोखा देकर एक दिन महेश राज्यम के साथ भाग जाता है और नीरा तो अपनी माँ-बाप के साथ रहने के लिए विवश होती है ।

---

1. स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ. 79

अपने पति और पडोसिन पर नीरा इतना विश्वास करती है कि अपनी सखी के कहे जाने पर भी वह अपने पति और पडोसिन पर अविश्वास नहीं करती । वह एक स्नेही पत्नी है । समाज में प्रचलित धोखेबाजी का स्वरूप वह समझ नहीं पाती ।

"नथ" की पुट्टी अपने पति के घरवालों से पीडित नारी है । अपनी माँ के साथ गाँव-गाँव में फेरी लगाकर बिसाती का छोटा-छोटा सामान बेचनेवाली पुट्टी अतिसुन्दरी है और उसके सौंदर्य पर रीझकर गुमान उससे शादी करता है । लेकिन गुमान युद्ध में मर जाता है और विधवा पुट्टी बहुत दुःखी बन जाती है । अपनी माँ के बुलाने पर भी वह नहीं जाती । अपने पति के साथ के जीवन के सुन्दर स्मरण को जगानेवाले आलू के ढेर के पास ही रहती है । एक दिन कमिशनर साहब भारत-चीन की लडाई में देश की सहायता के लिए गहने माँगने आते हैं । तब अपने पति से पुट्टी को जो नथ उपहार के रूप में मिला था उसको अपने पति के हत्यारे चीनियों से प्रतिशोध लेने केलिए दान देती है और वह अपने दान को गुप्त रखने के उद्देश्य से वहाँ से जल्दी खिसक जाती है । "तभी भीड़ को चीरकर एक तिब्बती किशोरी बढ़ गई । उसके फटे लबादे की बाँहों से उसकी बताशे-सी सफेद कुहनियाँ निकल आई थीं । तेज़ी से चलने के कारण वह अभी भी हाँफ रही थी । ललाट पर पसीने की बूँदें उसके चम्पई रंग को और भी मनोहारी बना रही थीं । जल्दी से हाथ की खाकी पोटली को कमिशनर की थैली में डालकर वह भीड़ में खो गयी । न उसे अपनी उदारता की घोषणा करने का अवकाश था, न कोई कामना ।".....................

भीड़ में कोई भी महिला उठकर रसीद लेने नहीं आई, केवल नथ ही चमक-चमककर पुट्टी के सात्विक दान की रसीद अपने सुनहले अक्षरों में स्वयं लिख गई ।"[1]

---

1. चिरस्वयंवरा - शिवानी - पृ. 84

पुट्टी का चरित्र पति से असीम प्रेम करनेवाली औरत का है । किसी भी हालत में वह पति के प्यार को भुला नहीं पाती । इसलिए माँ के साथ जाती तक नहीं । पति के द्वारा दी गयी नथ को दान में देकर चीनियों के प्रति अपना प्रतिशोध ज़ाहिर करनेवाली पुट्टी एक असाधारण पात्र के रूप में हमारे सामने आती है ।

इन कहानियों में नारी चरित्र का वह स्वरूप उभारा गया है जहाँ नारी पति को अपना सर्वस्व देकर ख़ुश होती है । ये भारतीय परंपरा के अनुकूल हैं ।

शिक्षित नारियाँ और उनकी अहंवादिता

नारी जब शिक्षित बन जाती है तब उसके अन्दर आत्मविश्वास जन्म लेता है । यहआत्मविश्वास कभी अहंवादिता के रूप में भी परिवर्तित होता है । अपनी अस्मिता की खोज करनेवाली नारी जब पुरुष को शक्तिहीन पाती है तब वह उस पर अपने व्यक्तित्व का भार डाल देती है । यह एक स्वाभाविक मनोवृत्ति है जिसको शिवानी ने भली-भाँति प्रस्तुत किया है ।

विप्रलब्धा की मातृहीना पुत्री निम्मी को निम्मी का पिता अंग्रेज़ी अदब-कायदे को घुट्टी में पिलाकर बड़े-लाड-दुलार से पालता है । वह युवती हुई तो पिता सुरेश से उसको सगाई करवाता है और सगाई के एक वर्ष बाद विवाह चलाने का निश्चय करता है । विवाह के पहले ही निम्मी शांतभीरू स्वभाव के भावी सहचर को अपने तीखे स्वभाव की विस्फोटकारी दुर्घटनाओं से सहमाती है । उसे तो शिकायत है कि अपने भावी वर की चुप्पी और सगाई की लंबी अवधि से । "पढ़ाई क्या शादी के बाद नहीं हो सकती ?"[1] वह

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 117

प्राय: हो सुधीर से पूछ बैठती । उसके इसी अधीर प्रश्न के उत्तर में ही शायद सुरेश उसे एक नीलम की अंगूठी लाकर पहनाता है । विवाह के एक महीने पहले वे पहाड़ जाकर विवाह की तैयारियाँ आरंभ करते हैं । विवाह के चार दिन पहले वर के ताऊ को दिल का दौरा पड़ता है और वह मर जाता है । दुर्गदत्त कहलवा भेजता है कि वह पूरे एक वर्ष तक सहोदर की मृत्यु का मातम मनाएगा । दूसरे ही वर्ष दुर्गदत्त के मंझले चचिया ससुर की मृत्यु हो जाती है और विवाह फिर एक वर्ष के लिए टल जाता है । छठे महीने दुर्गदत्त के तीसरे ससुर चल बसता है । निम्मी के पिता के धैर्य का सिंहासन भी डगमगा जाता है । तीसरे वर्ष दुर्गदत्त की ही मृत्यु हो जाती है । तब बाप-बेटी दोनों हथियार डाल देते हैं । जिस पुत्र के मुंडे सिर पर बाप की क्रिया का छोपा बंधा था, उस पर मौर बांधने की आशा दुराशा मात्र थी । पुत्री को लेकर रायसाहब बहुत पहले बाप-दादों की खरीदी गयी ज़मीन का देख-भाल करने नेपाल चला जाता है । रायसाहब रोती पुत्री को समझाता है -"जब विवाह की घड़ी आयेगी तो विधाता भी नहीं टाल पायेगा ।"[1] पर निम्मी जान पाती है कि वह घड़ी अब कभी नहीं आ सकती । इस स्थिति में सुरेश तीन अदद विधवा ताई-चाचियों को लेकर अपनी नयी डिप्टी कलेक्टरी संभालने चला जाता है और भावी सुनहले भविष्य की रूपरेखा संजोकर एक सात पृष्ठ का पत्र निम्मी को भेजता है । पढ़ते ही वह धज्जियों में बिखेर देती है "बनता है नालायक, चाहता तो क्या मुझे ब्याहकर नहीं ले जा सकता था ?"[2] और वह नेपाल चली जाती है । इसी बीच निम्मी की अल्पबुद्धि स्वयं ही अपने सौभाग्य की अर्थी निकालती है । विवाह की तिथि निश्चित करने सुरेश नम्रतापूर्ण पत्र लिखता है लेकिन निम्मी उत्तर भेजती है "अब के अपने घर-भर के बड़े बूढ़ों की डाक्टरी जांच करा लेना तब तिथि निश्चित करना । कहीं ऐसा न हो कि फिर मुहूर्त टल जाए ।"[3] इसी पत्र से सुरेश भटक

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 121
2. वही - पृ. 121
3. वही - पृ. 121

जाता है । वैसे शायद उसका भड़कन भी उचित है । इस लंबे अर्से में वह समझ जाता है कि उसकी तटस्थता एवं औदात्य को समझने की शक्ति निम्मी में नहीं है उसका आवश्यकता से अधिक स्वतंत्रता प्रेमी व्यक्तित्व एक न एक दिन अवश्य ही सुरेश की अनुशासित दलीलों को अवहेलना कर विद्रोह कर बैठेगा और वह दिन सुरेश के लिए बड़े सुख का नहीं रहेगा । वह अपने चाचा से कहता है कि गाँव की अनपढ़ कन्या भले ही ले आये, पर अब उस घमण्डी लड़की से रिश्ता नहीं करेगा जिसने उसके मृत-गुरूजनों का अपमान किया था । सगाई टूट जाती है । अत्यधिक मद्यपान से निम्मी के पिता की मृत्यु हो जाती है तो निम्मी भी सब बेच बाचकर विदेश चली जाती है । वह सुरेश की प्रतीक्षा में दूसरा विवाह नहीं करती है और अविहित जीवन बिताती है । वर्षों पश्चात् भी उसका घमण्डी स्वभाव परिवर्तित नहीं होता ।

आधुनिक शिक्षा के फलस्वरूप घमण्डी बननेवालियों के प्रतीक रूप में निम्मी आती है । उसका स्वतंत्र प्रेमी व्यक्तित्व भावी वर के पारिवारिक स्थिति को समझने में असमर्थ हो जाता है । आधुनिक लड़कियों की स्वतंत्रता की चाह मानव संबंधों को नकारती है । उससे पारिवारिक संतोष मिट जाता है ।

"दादी" की छोटी बहू पढ़ी लिखी है और आधुनिक विचारवाली है । उसको स्वार्थवश अपनी सास का आना अच्छा नहीं लगता क्योंकि उसके रसोईघर में अण्डे से लेकर वे सभी वस्तुएँ पकती हैं जो दादी के आने पर घर में झांक भी नहीं सकती । अम्माजी के चौके में सर्वदा 144 लागू धारा रहती है । कोयले की लक्ष्मण रेखा खींचकर सास अपनी सीमा स्वयं निर्धारित कर लेती है । पर निर्लज्ज बर्बर शत्रु की भाँति छोटी बार-बार उस सीमा का उल्लंघन जान बूझकर ही करती है । "हाय अम्मांजी अब क्या होगा, चौका तो मुझसे छू गया ।"[1] जब दादी छोटी बहू से नौकर के बारे में

---

1. रति विलाप - शिवानी - पृ. 128

कहती है तब वह व्यंग्य से कहती है "आँखों से हमें क्या लेना-देना । हाथों में तो गज़ब की फुरती है । हरदम हंसता रहता है । एक बिशनसिंह था, मुआ एक दो ही मेहमान आ गए तो मुँह फुलाकर कुप्पा । यहाँ आजकल घर दिन-रात होटल बना रहता है ।"[1]

इधर लगातार सास के भानजे-भतीजे उनकी कुशल मंगल पूछने चले आ रहे थे, इसी से गृह को होटल के विशेषण से विभूषित करती है ।

आज की पढ़ी लिखी नारियाँ, आधुनिकता को अपनानेवाली नारियाँ अपनी सास का भी परिहास करने से हिचकती नहीं । वे अपने पर दूसरों का शासन करना पसन्द नहीं करतीं । परंपरागत संस्कारों को तोडती भी हैं । साथ ही पारिवारिक संबंध को भी कोई महत्व नहीं देतीं । बाहर से पतिगृह से किसी का आना भी यह पसंद नहीं करतीं । उनकी मानसिकता परंपरागत संस्कारों को नकारने की है ।

"गजदन्त" की गिरीन्द्र की माँ अपने पुत्र के भविष्य देखे बिना धन के लोभ में अतिविरूपी लडकी को बहू बनाकर लाती है । प्रतिष्ठा, सत्ता, वैभव और कीर्ति के छलनामय आकर्षण का मोतियाबन्द पूर्ण रूप से उसकी आँखों की ज्योति छीन चुका है । वह एक मध्यवर्गीय क्लर्क से अपने ब्याहे जाने की व्यथा को, अपने तेजस्वी सौंदर्य की पराजय की मर्मांतक वेदना को, किसी समृद्ध परिवार की राजकन्या को बहू बनाकर भुलाना चाहती है । वह कभी-कभी लेखिका से कहा करती है "मैं जब भी बहू लाएंगी, ठोक-पीटकर ऐसे गृह की

---

1. रति विलाप - शिवानी - पृ. 132

कन्या लाएंगी जहाँ लक्ष्मी स्थिर आसन लगाकर विराजमान हों ।"[1] जब निम्मी से गिरीन्द्र का रिश्ता पक्का करने को लेखिका कहती हैं तब वह जवाब देती है - "छिः छिः तुमसे मुझे ऐसी आशा नहीं थी, भाभी । और कोई नहीं मिला तुम्हें । वही नकट्टे रमेश की बिटिया रह गई थी मेरे लिए । तुम्हें तो पता है, अभागे ने शादी से पहले मुझे कैसी-कैसी नंगी चिट्ठियाँ लिख मारी थीं । तुम कहती हो गिरीन्द्र को लडकी बेहद पसन्द है । अपने ये प्रणय-प्रसंग अपने कथापात्रों तक ही सीमित रखो, समझी ?"[2]

आधुनिक समाज की स्त्रियों की धनलोलुपता का चित्रण गिरीन्द्र की माँ के द्वारा लेखिका सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करती हैं । गिरीन्द्र की माँ अपने बेटे की मानसिक स्थिति की परवाह नहीं करके उसे प्रेमिका से बिछुडाकर अतिविरूपिणी लडकी से विवाह कराके आज के समाज की प्रतीकात्मक पात्र बन जाती है ।

पुराने ज़माने के विपरीत आज के ज़माने में पति पर शासन करनेवाली नारियों को भी देखा जा सकता है । ऐसे पात्रों का चित्रण भी शिवानी ने यहाँ प्रस्तुत किया है ।

"प्रतिशोध" कहानी की सौदामिनी ऊँचे अफसर की पत्नी है । अपने शिक्षित होने व समृद्ध परिवार की कन्या होने के घमण्ड में वह अपने पति के प्रति रूखा व्यवहार करती है और हमेशा उससे अपनी बात बनवाती है । अपनें अभावग्रस्त संस्कारी ससुरालवालों के साथ पहली बार ही सामंजस्य स्थापित न कर पाती और वह दूसरी बार कभी ससुराल नहीं जाती । वह सास ससुर के प्रति इतना हृदयहीन व्यवहार करती है कि उनको दुबारा पुत्र के घर की तरफ

---

1. रति विलाप - शिवानी - पृ. 106
2. वही - पृ. 106-107

आने का साहस नहीं होता । सौदामिनी इतना कटु व नीरस व्यवहार अपने पति से करती है कि फलस्वरूप पति शंकर किसी और के साथ अवैध संबंध स्थापित करता है ।

सौदामिनी में वे सब गुण हैं जिनका एक ऊँचे अफ़सर की पत्नी में अनिवार्य होता है ! वह अपनी तीखी उन्नत नासिका हवा में उठाकर चलती है । उसकी गर्वीली ग्रीवा की तनी ऐंठन, उठने-बैठने में एक निराली अकड़ और सर्वोपरि उसकी अनुकरणीय तटस्थता वास्तव में दर्शनीय है । पुत्री से, पति से वह अंग्रेज़ी में ही बातें करती है । अर्दली उससे थर-थर कांपते, उसकी यत्न से नुची भृकुटि ही नौकरों का पटु संचालन करने में समर्थ है । आटा, दाल, चावल, मसाले, यहाँ तक कि चाय भी चम्मच से नाप-तौलकर नौकरों को देती । भण्डार की चाबी एक क्षण भी उसके कमर से लटके चांदी के गुच्छे से बिलग नहीं होती । वह उन लापरवाह गृहिणियों में से नहीं थी, जिन्हें पति के ऊँचे ओहदे की समृद्धि गृहस्थी के प्रति उदासीन बना देती । धोबी उसका एक रूमाल भी खो देता तो वह पैसे काट लेती । साड़ी की जरीदार कन्नी में ज़रा-सी भी सिकुड़न रह जाती, तो नौकर दुबारा इस्तरी करवाने भागता । नौकरों को ही नहीं, पति के अधीनस्थ अफ़सरों को भी वह तर्जनी पर नचाती रहती । किसी को सरकारी गाडी पर भिजवाने के लिए टेलीफोण करती, किसी को सरकारी माली को अपने बंगले पर बेगार लगाने का आदेश देती और किसी को अपनी भव्य मुस्कान से मोहकर कहती, "अरे, आप देहरादून जा रहे हैं ? एक कट्टा बासमती लेते आइएगा ।" "कोई इटावा जानेवाला हो तो बताइएगा, थोडा घी मंगवाना है ।"[1] प्रदेश के कौन-कौन से जिले से किस वस्तु की चौथ समेटी जा सकती है वह खूब जानती है । शहर में कोई भी नृत्य-संगीत गोष्ठी होती या कोई बहु चर्चित फिल्म का प्रीमियर होता, तो मुंहमांगे मनचाहे पास सौदामिनी

---

1. रथ्या - शिवानी - पृ. 82

की मुट्ठी में स्वयं ही सरसराने लगते । रौबदार सौदामिनी का व्यक्तित्व के सम्मुख पति शंकर का व्यक्तित्व दबकर सिकुड जाता है । वह किस-किससे मिलेगा, किनके साथ उठेगा-बैठेगा, क्या खाएगा, क्या पहनेगा यह सब निर्णय सौदामिनी ही लेती थी । सौदामिनी को अपनी अनुशासित गृहस्थी पर बडा गर्व है - "अपने पति को किसी लंबी कैद में बन्द कैदी की भाँति उसके सुआचरण के बूते पर सौदामिनी पैरोल की छुट्टी दे माँ-बाप से मिलने घर भेज देती ; किन्तु एक नियत अवधि के भीतर वापस लौटना उसके लिए अनिवार्य रहता ।"[1]

वह अपनी बेटी को अन्य पुरुष के साथ घूमने की स्वतंत्रता देती है जिसके कारण वह मुसलमान युवक के साथ चली जाती है ।

सौदामिनी पति की कामवासना को तृप्त करने को तैयार नहीं और इससे पति एक अन्य लडकी के साथ अविहित संबंध जोडता है और जब पति की प्रेमिका आत्महत्या करती है तब वह उस को अपनी सूझबूझ से बदनामी से तो बचा लेती है लेकिन रोज़-रोज़ की इस खींचतान से वे एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं ।

सौदामिनी के माध्यम से शिवानी ने सरकारी अफसरों की पत्नियों के घमण्ड और दुर्व्यवहार का पर्दाफाश किया । पति पर शासन करनेवाली सौदामिनी जैसी स्त्रियाँ पति की शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी राजी नहीं होतीं । इतना ही नहीं अपनी बेटी के भावी जीवन के लिए भी कोई दिलचस्पी नहीं लेती । लेकिन जब बदनामी की समस्या खडी होती है तब पति को बचाने के लिए धन दौलत लुटाने के लिए भी वह तैयार होती है । वैसे इस पात्र में स्त्रैणता की कमी दिखाई पडती है । उसका

---

1. रथ्या - शिवानी - पृ. 88

व्यवहार साधारण स्त्रियों का जैसा नहीं है । स्त्री का अधूरापन इस पात्र के माध्यम से दिखाने का प्रयास लेखिका ने किया है ।

"अपराजिता" की आरती गहन अध्ययन, अनुपम शौर्य एवं असाधारण योग्यता के कारण अबकारी विभाग की कलक्टरी का पदभार तक संभालती है । पिता सुदर्शन जामाता भजन के कमनीय चेहरे पर रीझकर पुत्री आरती का विवाह उससे कराता है । जब माँ और पिता की मृत्यु ट्रेन दुर्घटना में होती है तब आरती विक्षिप्त-सी हो जाती है किन्तु कठिन से कठिन परिस्थितियों से भी वह हार नहीं मानती । ससुराल का बेढंगा मकान बेच, वह पिता की कोठी को किराये पर उठाती है फिर पति की नाममात्र की नौकरी छुड़वाकर उसे साथ लेकर अपनी नौकरी संभालने के लिए चली जाती है । पति की अप्रतिम खिसियाई हंसी को, अकारण की गुनगुनाहट और बीच-बीच में कन्धे उचकाने के बद-अभ्यास को रोबदार पत्नी की कनखियों की मार सदा के लिए मुक्ति दिलाती है । यही नहीं रात-रात पढ़ाकर आरती उसे एम.ए. की परीक्षा भी ठेल-ठालकर उत्तीर्ण कराती है । फिर वह अपनी मित्र मण्डली में अपने पति का परिचय पठन-पाठन-प्रेमी विद्वान के रूप में देने लगती है -"इन्हें क्या कभी अपनी रिसर्च से फुर्सत मिलती है ? जब देखो तब मोटी-मोटी किताबें लिए किसी कोने में बैठे रहते हैं ।"[1] वास्तविकता एकदम उसके कथन के विपरीत होती है । बेचारा भजन कोने में स्वेच्छा से नहीं बैठा था । उसे बैठा दिया जाता था, जिससे आरती की बौद्धिक गोष्ठी के बीच, वह कहीं अपना कोई सस्ता-सा चुटकला न सुना बैठे । यही नहीं पति के प्रणय निवेदन को वह कठोरता से ठुकराती है । आखिर पति उससे विरक्त होकर सन्यासी के साथ भाग जाता है तब आरती बहुत दुःखी होती है और आश्रम में जाकर अपने पति को वापस ले आती है ।

---

1. स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ. 44

आरती का व्यक्तित्व बडा ही सफल दिखाई पडता है । परिस्थितियों से जूझती हुई आरती अपने पैरों पर खडी हो जाती है और पति को ऊपर उठाती है । इस कोशिश में वह भूल जाती है कि वह एक पत्नी है । पति पर वह हावी हो जाती है और पति दब्बू बनकर रह जाता है । गलती को समझकर पति से समझौता करनेवाली आरती नारी की नयी भूमिका का एहसास कराती है ।

उपर्युक्त कहानियों में नारी के दो पक्ष उभरकर आते हैं । शिक्षा प्राप्त करने के बाद घमण्ड की शिकार बननेवाली नारी दो प्रकार से व्यवहार करती है । पति पर शासन करने का स्वभाव एक ओर उसमें जन्म लेता है तो दूसरी ओर पुरुष और समाज के अन्य लोगों के प्रति बहुत ही हेय दृष्टि रखना भी उसके स्वभाव का अंग बन जाता है । ये दोनों शिक्षित नारी के लिए अभिशाप हैं ।

पारिवारिक बन्धनों को तोडनेवाली नारियाँ

शिवानी ने पारिवारिक बन्धनों को तोडनेवाली नारियों का चित्रण किया है । ये नारियाँ स्वार्थवश ही अपने पति और बच्चों को छोडकर चली जाती हैं । एक तरह की विकृत मानसिकता है उनकी ।

"निर्वाण" की मनोरमा चोपडा एक विख्यात फर्म के जनरल मैनेजर की पत्नी है । पहले मनोरमा आकाशवाणी केन्द्र में काम करती है बाद में वह टेलिविज़न की अत्यंत लोकप्रिय तारिका बन जाती है । वह एक आदर्श पत्नी, पुत्रवधू और जननी है । "उसका सुखी पारिवारिक जीवन किसी भी संपन्न श्रीमंत की पत्नी का हृदय ईर्ष्या से उद्वेलित कर सकता था । पति के आफिस जाने से पूर्व और लौटने के पश्चात् वह जिस निष्ठा से उसकी सेवा में जुडी रहती, उसे

देखना भी स्वयं अपने आप में एक आनन्दपूर्ण अनुभूति थी । उसके उस व्यवहार में कहीं भी, किसी को प्रभावित करने को बनावटी फुर्ती का आडम्बर नहीं रहता । वह स्वयं पति के जूतों में पालिश करती, उनके कपडे निकाल पलंग पर धरती, कमीज़ की बांहों में "स्टड" जडती, फिर उसी फुर्ती से शून्य में फैली उसकी बाँहों को दिशा निर्देश देती, कोट लेकर उसके पीछे खडी हो जाती ।"[1] वह दो बच्चों की माता भी बन जाती है । सास की सेवा में वह किसी भी आज्ञाकारिणी पुत्रवधू को पराजित कर सकती है । ऐसी मनोरमा बाद में एक गुरुदेव के जाल में फंस जाती है । अपने घर में गुरुदेव और मनोरमा के नेतृत्व में कुछ लोगों को बुलाकर प्रार्थना सभाएँ चलाती हैं । वह हमेशा लेखिका से गुरुदेव के अनेक चमत्कारों की कहानियाँ सुनाती है । वह कहती है -"जानती है, क्या कहते हैं गुरुदेव ? कहते हैं, "मन्नू, साधना तुझे नहीं करनी होगी, तेरे लिए जो करणीय है, मैं करूँगा । शक्ति, अनुभूति ये सब बाह्य वस्तुएँ हैं, इनमें तेरी आसक्ति रही तो कभी भी तुझे निर्वाण की प्राप्ति नहीं होगी । साधना का तब तक कोई महत्व नहीं होता जब तक गुरु अनुगत न हो । धीरे-धीरे तेरे सब कार्य स्वत: सिद्ध होंगे, पगली ।"[2] मनोरमा और पति के बीच गुरुदेव को लेकर झगडा भी होता है । एक दिन मनोरमा पुत्र को तीव्र ज्वर में छोडकर तिरुपति जाने लगती है तब पति उसे रोकता है फिर भी मनोरमा गुरुदेव के साथ जाती है । एक दिन मनोरमा एक पत्र भेजती है उसमें लिखती है "आप लोग मेरा मोह छोड दें, मैं ने गुरु-कृपा से अपने जीवन का लक्ष्य पा लिया है ।"[3] उसके बाद महीनों तक उसका कोई समाचार नहीं मिलता । एक दिन एक साथ ही देश के प्रमुख समाचार पत्र उसके गुरुदेव की धज्जियाँ उडाकर रख देता हैं । गुरुदेव की तस्करी की कहानियाँ, भोली-भाली युवतियों को ही नहीं, अनेक सुशिक्षित आधुनिकाओं को भी अपने

---

1. स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ. 63
2. वही - पृ. 70
3. वही - पृ. 73

सम्मोहन पाश में बांधने का रंगीन विवरण, कई विदेशी चेले-चपाटों की लूटपाट, उन्हें पथ का भिखारी बना देना आदि । गुरुदेव के जाल में फँसकर मनोरमा के जीवन का सर्वनाश होता है ।

कितनी शिक्षिता होने पर भी अन्धविश्वास से बचना मुश्किल कार्य है । यहाँ मनोरमा का किसी साधु के चक्कर में पड़कर अपने पति व बच्चों की उपेक्षा करके साधु के साथ चला जाना उसकी मानसिक अस्थिरता का सूचक है ।

"भिक्षुणी" की किकी पुलिस के बहुत बड़े अफसर की पुत्री है । वह मातृहीना लाडली पुत्री एक प्रकार से थानेदारों की ही गोद में खेलकूदकर बड़ी होती है । जब वह सयानी होती है तो पिता का एक सुदर्शन मुंहलगा मातहत बड़े अधिकार से उससे राखी बंधवाने पहुँचाकर उसे एक से एक दामी उपहारों से लाद देता है और उन दोनों का संबंध जब अविहित संबंध बनता है तब उसको एक चतुरा मौसी चील का सा झपट्टा मार उसे चोंच में लेकर दूर उड़ जाती है । बाद में किकी का विवाह हो जाता है । पति के घरवालों के साथ उसका झगड़ा होने लगता है । वह अपने पति के घरवालों के आचारों को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं होती । अपने हँसमुख चेहरा, कुछ-कुछ तोतली चपल वाणी और अपनी अनुपम परिहास रसिकता से उसके सर्वथा अनूठे व्यक्तित्व की नित्य नवीन झांकियाँ दिखाती रहती है । सरल समाज के नीति निपुण नारी - समुदाय में जितना ही उसकी निन्दा होती, उतनी ही लोकप्रियता वह पुरुषवर्ग में प्राप्त करती है । होलियाँ आतीं तो अबीर-गुलाल से लाल कपोलों की रक्तिम आभा में वह शहर भर के देवरों को आकंठ डुबाकर रख देती है । रंग से भीगी साड़ी का चुनाव भी शायद वह अपनी सबसे महीन साड़ियों में से ही उस दिन करती है और फिर, "भर पिचकारी गोरे सम्मुख मारी" गाने में वह किसी भी पेशेवर गायिका को धूल चटा सकती है । उसके रिश्ते की देवरानी-जिठानियाँ संयुक्त मोर्चा

बांधे हाथ मटका मटकाकर उसके विरुद्ध विष उगलती हैं - "बेहया, मरदों के साथ कैसी गुझियाँ दनदनाती चली जा रही है । ऐसी ही चटोरी है बहन, उधर सास बेचारी बरत के दिन भी अपने हाथ से फराल बनाती है ।"[1]

एक दिन लेखिका किकी से उसके बारे में कहती हैं तब किकी उस पर बरस पड़ती है, "तू भी आ गई उनकी बातों में ? भाड़ में जाएं सास । मैं ने क्या उनसे कहा है कि भूखी रहो ? जब देखें तब बरत, आज एकादशी, तो कल प्रदोष - ये तो हम से होता नहीं कि बारह बजे खाना खाकर दो बजे से फिर कोटू की पुड़ियाँ बनाओ और साबूदाने का हलुआ घोंटो । मैं तो यह भी कर देती थी, पर कमर पर हाथ धरे, मेरे सिर पर सवार हो, एक-एक बर्तन उठाकर देखती थीं - बहू, हाथ पैर धो लिए थे ? कहीं जूठन तो नहीं लगी है बर्तनों में ? सच कहती हूँ, तन बदन में आग लग जाती थी, एक दिन मैं ने साफ-साफ कह दिया - अम्माजी, आज से अपनी फराल खुद बना लिया करें...."[2] वर्षों के बाद वह अपने पति व बच्चों को छोड़कर पुराने प्रेमी के साथ भाग जाती है ।

आधुनिक शिक्षित नारियों की स्वार्थता किकी के द्वारा लेखिका ने प्रस्तुत की है । मातृहीन किकी को जिस परिस्थिति में जीना पड़ता है उसका प्रभाव उसके भावी जीवन में भी पड़ता है । इतना ही नहीं सास के आचार विचारों को स्वीकारने के लिए वह तैयार नहीं होती । साथ ही अपने मन की बात धैर्य के साथ कहने में भी वह हिचकती नहीं । आखिर अपनी सुखी दांपत्य जीवन - पति और बच्चों को छोड़कर पुराने प्रेमी के साथ चला जाना उसकी विचित्र मानसिकता का, अस्थिर चित्त का परिचय देता है ।

---

1. कैंजा - शिवानी - पृ. 83
2. वही - पृ. 83

शिवानी ने दोनों कहानियों में नारी की विशेष मानसिकता का परिचय दिया है । नारी कभी-कभी अपने पारिवारिक बन्धनों को तोडकर स्वतंत्र हो जाती है और अपनी इच्छा के अनुसार अन्य पुरुषों का हाथ थाम लेती है । इस प्रकार का आचरण नारीत्व के लिए कलंक बन सकता है । फिर भी आधुनिक समाज में ये सब घटित होते ही हैं ।

नारी और अवैध संबंध

यौवनावस्था में अपने मन को नियंत्रण में रखना मुश्किल कार्य ही है । आज युवतियाँ नैतिक मूल्यों को महत्व नहीं देतीं । विवाह के पहले ही वे अनैतिक संबंध स्थापित करती हैं । इस स्थिति का और उससे उत्पन्न समस्याओं का चित्रण शिवानी ने अपनी कुछ कहानियों में किया है ।

"दो बहनों" की जया की माता की मृत्यु होती है । इसलिए जब जया के विवाह की बात आती है तब वह पिता से "मैं चली जाऊँगी तो इसे कौन रखेगा, पापा ?" कहकर अपने लिए आए कई वांछनीय रिश्ते केवल छोटी बहन के लिए फेर देती है । बाद में पिता की भी मृत्यु होती है जया तो विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्राध्यापिका के रूप में नौकरी करती रहती है । इस समय छोटी विजया के लिए एक युवक को बुआ उसके घर भेजती है लेकिन जया उस पर आकृष्ट होती है और उससे शारीरिक संबंध भी जोडती है । जब वह युवक बाहों में जया को उठा लेता है तब जया की स्थिति देखिए - "यह कैसा आश्चर्य था, जिसमें अनुभूति ही शेष रह गई थी, कौतूहल नहीं ? यह कैसा निर्वीर्य क्रोध था, जो अपने सुगठित शरीर की शक्ति और दृढ संयम के रहते हुए भी उस दुःसाहसी, दुर्दमनीय युवक को वह एक चांटा खींचकर प्रताडित नहीं कर सकी ? यह कैसा

अनोखा समुद्र था - जिसमें आकंठ डूबकर भी प्रणय के ज्वार-भाटे की उर्मियों ने उसे जीवित ही चेतना के कछार पर पटक दिया था ?"[1] लेकिन वह युवक से वह वंचित होती है और उस युवा के विवाह के बारे में सुनकर जया बहुत दुःखी हो जाती है ।

यौवनावस्था में अपने मन को नियंत्रण में रखना मुश्किल कार्य ही है । यहाँ जया पहले शादी करने से अपने मन को नियंत्रित रख सकती है फिर भी एक दिन वह अपने मन का नियंत्रण हवा में उडा देती है । जया आधुनिक पीढी की युवतियों की चारित्रिक झाँकी प्रस्तुत करती है । विवाह को टालते रहना और नौकरी पाकर संतोष का अनुभव करना एक सीमा तक आत्मवंचना है । क्योंकि नारी की शारीरिक भूख इन दोनों से नहीं मिलती । कोई न कोई क्षण ऐसा आता है जब वह महसूस करती है कि शारीरिक भूख जैसी कोई चीज़ होती है । ऐसे क्षणों में वैधता अवैधता का सवाल उसके सामने खडा नहीं होता और वह किसी न किसी पुरूष से संबंध जोडने के लिए बाध्य हो जाती है । नारी चरित्र की इस कमज़ोरी को कमज़ोरी न मानकर प्रकृति की नियमावली के अंदर आनेवाली एक आवश्यकता मात्र समझना वास्तव में एक नया दृष्टिकोण होगा ।

"भीलनी" की विलासिनी रूपवती है और रूपवती होने के कारण वह गर्व भी करती है । ईर्ष्या, वासना आदि से युक्त वह सुहासिनी दीदी और जीजाजी के मरने का कारण बनती है । वह अपनी सुहासदीदी के रूपवान पति की ओर आकर्षित होकर सुहासदीदी के सामने जीजाजी से अनैतिक संबंध में लग जाती है और वह यौन संबंध जोडती है जिससे उसकी और सुहासदीदी के परिवार का नाश हो जाता है ।

---

1. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 52

"जीजा के साथ हम दोनों बहनें कितना घूमीं- कितनी पिकनिक कीं, चांदनी रात में बजरे की सैर की, घुडसवारी सीखी, तैरना सीखा । अब सोचती हूँ शायद तैराकी का वही प्रशिक्षण मुझे निरंतर घातक गहराई में खींचता चला गया था । तैरते-तैरते मैं अनाडी तैराकी के बीच बुरी तरह पानी में डूबने-उतराने लगती, तो जीजा सर्र से तैरते-तैरते अपने दोनों हथेलियों पर मेरी डूबती उतराती देह को थाम लेते । मेरा कलेजा इस बुरी तरह धड़कने लगता कि मुझे लगता, अब मुँह से निकल उनके चरणों में गिर पडेगा । संयम के समग्र बन्धन तोड मैं दिद्दी ही के सम्मुख उन्हें अपनी बेहया बाहों में कसने को व्याकुल हो उठती......।"[1] इस अविहित संबंध से वह एक बच्ची की माँ बनती है और उसकी मन:शांति भी नष्ट होती है ।

अपनी बहन के पति से अविहित संबंध जोडना मानसिक अस्थिरता को सूचित करता है । नारी के उच्छृंखल बनने का परिणाम बहुत ही खतरनाक होता है । यौवन की अदम्य वासना को जब नारी अवैध संबंध में परिवर्तित कर देती है तो उसका परिणाम अत्यंत त्रासदायक होता है ।

"मास्टरनी" की राजेश्वरी एक स्कूल अध्यापिका है । जब वह बीमार हो जाती है तब सुबोध नामक डाक्टर उसे देखने आता है और उससे प्रेम करता है । महीनों तक मास्टरनी डाक्टर के साथ अविहित संबंध करती रहती है । "कभी-कभी दो पीरियड की एक साथ छुट्टी पर वह समय से पूर्व ही आ जाती । डाक्टर अस्पताल से लौटकर आता तो देखता पलंग पर, हाथ-पैर सिकोडे बिल्ली-सी मास्टरनी सो रही है । वह उसकी सुडौल नाक पकडकर दबा देता, और कान के पास फुसफुसाता, "अरी रुक्मिणी, उठ ।" इस संबोधन

---

1. भैंडा - शिवानी - पृ. 62

से मास्टरनी बौखला जाती । उठते ही रजिस्टर खिड़की से फेंक वह स्वयं कूदने का उपक्रम करती, कि उसके शुभ्र चरण चूम-चूमकर डाक्टर उसे मनाता, "अच्छा, माफ़ कर दे, अब कभी नहीं कहूँगा ।"..............................
कभी-कभी वह उसकी लापरवाही से इधर-उधर फेंके गये कपड़ों को संभालती, कभी उधड़े स्वेटर को ठीक-ठाक करती, कभी उसकी लावारिस चादरों में नाम लिखती ।"[1]
तीन महीने की विवेकभ्रष्ट अवधि में वे दोनों बहते-बहते दूर निकल जाते हैं । प्रेम के ज्वार भाटे में मास्टरनी गले तक डूब चुकी है । सुबोध पिता के कहे अनुसार दूसरी लड़की से विवाह करने के लिए राजेश्वरी को छोड़कर जाता है । राजेश्वरी का तो माँ की मृत्यु होती है और वह अकेली रह जाती है ।

मास्टरनी ऐसी नारियों का प्रतिनिधित्व करती है जो किसी दुर्बल क्षण में वासना की शिकार बन जाती है और पुरुष के जाल में फँस जाती है । एक बार इस तरह से फँस जाने पर फिर से मुक्ति प्राप्त करना नारी के लिए कठिन हो जाता है परन्तु पुरुष एक अनचाहे वस्त्र के समान नारी को अपने शरीर से अलग कर देता है और अपना रास्ता लेता है । स्त्री-पुरुष के चरित्रों की तुलना भी यहाँ देखी जा सकती है ।

"ज्येष्ठा" का प्रमुख पात्र है पिरी । लेखिका पिरी के द्वारा नारी के अस्थिर रूप और रहस्यात्मक हृदय की अभिव्यक्ति करती है । पिरी अपने प्रेमी डाक्टर पर पूर्ण विश्वास करती है । उससे पवित्र प्रेम करती है । इसलिए वह उस प्रेमी से विवाह न करने पर भी डाक्टर की मिस्ट्रेस बनकर रहने लगती है । डाक्टर की मृत्यु के बाद जब डाक्टर का बड़ा भाई उसको अपने आकर्षण का संकेत देता है तब वह अस्वीकार करके चली जाती है । लेकिन जब वह लेखिका से यह जानती है कि वेश्या की माला के मूँगे को गले में

---

1. चिर स्वयंवरा - शिवानी - पृ. 27

पहनती है तो अमर सौभाग्य मिलेगा यानी कभी विधवा नहीं होगी तब वह उस मूँगे को चुराकर भाग जाती है । एक ओर पिरी का यह दृढ़ संकल्प और दूसरी ओर अमर सौभाग्य के लिए वेश्या के मूँगे को चुराकर गले में पहनना ये दोनों विरोधाभास हैं ।

पिरी के आंतरिक और बाह्य दोनों का चित्रण लेखिका ने यहाँ प्रस्तुत किया है । जैसे - "लाखों में एक न होने पर भी उस चेहरे की लुनाई में एक अनुपम आकर्षण था, लंबी छरहरी देह, गेहुआँ रंग, सुतवाँ नाक और ऊँचे उठे कपोल । आँखें बड़ी न होने पर भी चौबीसों घण्टे उज्ज्वल हँसी से चमकती रही थी....... उस पर उनका आनन्दी स्वभाव पल-भर के पाहुने को भी अटूट मैत्री के बन्धन में जकड़ लेता । पाँच मिनट के परिचय को भी वह पाँच वर्ष का परिचय बना सकती थी ।"[1]

अपनी माँ से डरकर डॉक्टर पिरी से विवाह करने से डरता है और शादी नहीं करता है । लेकिन पिरी के जाने की जगह वह जाता है और पिरी भी उसके मिस्ट्रेस बनकर रहने लगती है तब लेखिका ने पूछा - "यू आर शेमलेस पिरी"............ जब उस व्यक्ति में इतना भी साहस नहीं है कि वह जिस जिले में तेरी बदली होती है वहाँ क्यों भागता है, क्यों तुझे बदनाम करता फिरता है ?"[2] तब पिरी कहती है -"इसलिए कि वह मेरे बिना जी नहीं सकता और अपनी खूसट माँ से बेहद डरता है । कहती है उसने यदि मुझसे विवाह किया तो वह ताल में कूद पड़ेगी, पर हम दोनों के मिलने पर अब विधाता भी प्रतिबंध नहीं लग सकता........ समझी ?"[3] इस कथन से अपने

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 103
2. वही - पृ. 112
3. वही - पृ. 112

प्रेमी के प्रति अगाध प्रेम और विश्वास, साथ ही साथ नास्तिक पिरी के स्वभाव का सबसे बडा दुर्गुण- बात- बात पर विधाता को दी गयी चुनौती और स्वयं अपने अहंकारी स्वभाव पर अटूट आस्था, यह हम समझ सकते हैं ।

यह एक ऐसी कहानी है जिसमें विषयगत और कथ्यात्मक स्थितियों का तालमेल नहीं बैठता । बिना विवाह के डाक्टर के साथ जीना और डाक्टर की मृत्यु के बाद शाश्वत पतित्व की कामना में वेश्या की माला को चुराकर पहनना या तो कथ्यात्मक शुष्कता का प्रतीक माना जा सकता है या उस कथापात्र की पागलपन का उदाहरण है क्योंकि पाठक को इस कहानी के अंतर और स्थितियों के अंतर कोई ऐसी ठोस बात नहीं दिखाई पडती जिसके आधार पर वह लेखिका की अनुभूति को और कथ्य की विशिष्टता को समझ सके । पिरी जैसे नारी पात्र शायद लेखिका की मन गढंत नारी बन सकते हैं जीवन्त नारी नहीं ।

"धुआँ" की रजुला वेश्या का काम करनेवाली संतानहीन इक्कीस स्त्रियों में मोतिया की सुन्दरी लडकी है और उसके गाने की समर्थता देखकर बुन्दु मियाँ रजुला को लखनऊ पहुँचा देता है । बुन्दु मियाँ की बहन बेनजीर रजुला को पहले ही दिन से शासन की जंजीरों में जकडकर रख देती है । रजुला संगीत के नन्दनवन में पहुँचती है । जब वह सोलह वर्ष को हो जाती है लगता है "वह मानवी नहीं, स्वर्ग की कोई स्वप्न-सुन्दरी अप्सरा है, हाथ लगाते ही उड जाएगी ।"[1] बेनजीर इसी से उसे बड़े यत्न से रूई के फांकों में सहेजकर रखती है । वह उसका कोहनूर हीरा थी, जिसे न जाने कब कोई दबोच ले । लेकिन फिर भी रजुला यह सब नियंत्रण को जीतकर अपनी हवेली के सामने की हवेली के एक विवाहित सेठ को अपनी ओर आकर्षित करती है और तीन माह तक वे दोनों अविहित संबंध जोडते रहते हैं ।

---

1. चिर स्वयंवरा - शिवानी - पृ. 37

"बस कीजिए, उफ," कांप-कांपकर रजुला उसकी बांहों में खोई जा रही थी, गलती जा रही थी, जैसे गर्म आंच में धरी मक्खन की बट्टी हो । "नहीं, नहीं, आज नहीं - यह सब नहीं", वह उसके लौहपाश में नहीं-नहीं कहती सिमटती जा रही थी ।"[1]

एक दिन मिलन के बाद खिड़की से कूदते समय उस सेठ की मृत्यु होती है और रजुला फिर कठोर बन्धन में पड़ जाती है । रजुला को कमरे में डालकर द्वार पर ताला डालकर रोटी पानी दे दिया जाता है लेकिन एक दिन रजुला उस स्थान को छोड़कर चली जाती है । नेपाली बाबा के चरणों में अपने को समर्पित करती है ।

रजुला का चरित्र कहानी में विशेष ढंग से उभरता है । वह सेठ से इतना प्रेम करती है जिससे वह बाकी जीवनकाल पूजा भजन में ही काटती है । यहाँ रजुला पवित्र प्रेम करनेवाली नारी के रूप में आती है । रजुला के चरित्र के माध्यम से वेश्यावृत्ति करनेवाले लोगों के बीच जन्म लेकर भी उससे स्वतंत्र होकर प्रेम की सच्ची पूजा करनेवाली नारी का स्वरूप लेखिका ने प्रस्तुत किया है । संबन्ध शारीरिक होते हुए भी कभी-कभी अत्यधिक मानसिक गहराई तक पहुँच जाते हैं । ऐसी स्थिति में नारी का प्यार देहेच्छा से ऊपर उठ जाता है और एक पवित्र अनुभूति के रूप में स्वरूप ग्रहण करता है ।

"के" की किशोरी एक अनाथ बालिका है और वह ताऊ और ताई के संरक्षण में पलने लगती है । जब विवाह का समय आता है तब उसके लिए एक सुन्दर वर निश्चित किया जाता है । विवाह के दिन ठीक फेरों के समय

---

1. चिर स्वयंवरा - शिवानी - पृ. 42

वर को मिरगी का दौरा पड जाता है । मुँह से फेन उगलने लगता है । वह नाटकीय रंग देखकर मंझली मौसी क्रुद्ध होकर मण्डप की ओर टूट पडती है और किशोरी का हाथ पकडकर उसे अपने साथ ले जाती है । इस प्रकार किशोरी के सुन्दर-सुन्दर सपने टूट-टूट कर धराशायी हो जाते हैं । यहाँ वह मौसी के साथ "के" के यहाँ किराये के घर में रहती है । जब "के" गोरखपुर जाती है तब वह "के" के पति शेखर के पास आकर उसको अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करती है - "चंचल अनजान सुन्दरी किशोरी ने उसका हाथ थामते ही, उस भीरू कामपुरुष की एक-एक शिरा में अनोखा दुःसाहस भर दिया । वह अब आग की लपेटों में कूद सकता था, आंधी और तूफान से लड सकता था । कुछ ही अमूल्य क्षणों ने "के" का अस्तित्व सदा के लिए मिटा दिया था । उसके दायें-बायें, दामिनी-सी दमकती बित्ते-भर की छोकरी उसे अंगुलियों पर नचा रही थी । दोनों का अभूतपूर्व दुःसाहस जंगली हिरन-सा कुलाचें भरने लगा था । छेदी के पदचाप सुनते ही किशोरी जंगली खरगोश की तेज़ी से चौकन्नी हो, वॉरड्रोब के पीछे दुबक जाती ।"[1]

अंत में उस बात में वह सफल भी होती है लेकिन जब "के" किशोरी और शेखर का यह संबंध समझ जाती है वह धोखे से किशोरी की हत्या करती है ।

यदि ठीक समय पर युवतियों का विवाह नहीं कराया जाता तो उनके अवैध संबंधों की ओर बढ़ने की संभावना बनी रहती है । यहाँ किशोरी अपने मन को नियंत्रण में नहीं रख पाती । इसलिए वह दूसरे के पति को अपनी चेष्टाओं के द्वारा वश में डालती है । अवैध संबंधों की शुरूआत कई कारणों से होती है जिनमें परिस्थितियों का बड़ा योगदान होता है । इस कहानी में भी किशोरी का संबंध इन्हीं परिस्थितियों के कारण बनता है ।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 74

"शायद" की कुसुम तारी से प्रेम करती है लेकिन उससे विवाह नहीं कर पाती । उसकापिता जल्लाद पांडे कुसुम को जामाता के रूप में स्वीकारने को तैयार नहीं है । वह कुसुम को तारी के साथ मेल न कराने के उद्देश्य से कुसुम को घर में ही बन्दिनी बनाता है । फिर भी एक दिन जब तारी सानिटोरियम में रोग से पीडित होकर रहता है तब कुसुम वहाँ जाती है और अपना सर्वस्व उसे समर्पित करती है "हड्डियों के ढांचे के कन्धे पर माथा धर, कुसुम उसी का कम्बल ओढ़े ऐसे लेटी थी, जैसे घर लौटने की सुध, जल्लाद की अंगारे-सी दपदपाती आँखें, अब तक मन्दिर से निश्चय ही लौट चुकी बुआ का अस्तित्व - सब कुछ भूल गयी हो ।"[1]

बाद में जल्लादपाण्डे बेटी की शादी एक ऊँचे अगले गबरू जवान से कराता है लेकिन प्लेग रोग के कारण वह मर जाता है और कुसुम विधवा हो जाती है । लेकिन कुसुम अपने वैधव्य के कृष्ण मेघ की छाया से अपने जीवनाकाश को म्लान नहीं होने देती । अधूरी शिक्षा पूर्ण कर वह अपनी योग्यता की बैसाखियाँ टेकती, शिक्षा-विभाग के एक ऊँचे पद पर पहुँचती है ।

यहाँ कुसुम को, अपने प्रेमी को अपना सब कुछ समर्पित करने पर भी उससे अपने प्राणों के समान प्रेम करने पर भी पिता के कठोर शासन के सामने पराजित होना पडता है ।

"शिबी" की शिबी अपनी माँ के मरने पर मामा के साथ उसके मकान में रहने लगती है और धीरे-धीरे मामा को एक दिन लगा कि शिबी का अब श्मशान घाट पर रहना ठीक नहीं है । तब उनकी एक मौसेरी बहन नैनीताल

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 157

में थी, शिबी को वहाँ भेज देता है और मौसी के दस वर्ष के निरंतर सुचारू संचालन के कारण शिबी अत्यंत सुन्दरी बन जाती है और बाद में वह युवक लोगों का आकर्षण बन जाती है । साहित्यिक, ड्रेसमेकर, सुनार, धोबी, राजनीतिज्ञ, कई प्रसिद्ध प्रौढ सर्जन और तरुण छात्र आदि अनेक युवक लोग उसको पाना चाहते है लेकिन वह किसी को नहीं बनती । उसका प्यार धरणीधर (डिकी) के लिए हैं । "उधर शिबी की रासलीला पूरे रंग में थी । डिकी आधी रात से बहुत पहले ही जम जाता था ।..........."[1] "कमर पर लगे दो गुलाबी फुन्दो को, अपनी गोरी कलाइयों में लपेट कर, शिबी पूरे कमरे में घूम-घूमकर ट्विस्ट करती रही थी और किशोर धरणीधर गिटार पर कोई अंग्रेज़ी धुन बजाता रहा था ।"[2] लेकिन धरणीधर उतना अच्छा स्वभाववाला नहीं था । दूसरे प्रेमी युवकों के कहने पर भी वह धरणीधर को नहीं छोडती लेकिन जब धरणीधर का पिता यह प्रेम समझ जाता है तब वह अपने गुण्डों के द्वारा शिबी को नेपाल की सरहद पर छोड आता है । प्रेमी द्वारा उपेक्षिता शिबी अपनी अवैध संतान के साथ कुष्ठरोगाश्रम में जीवन बिताती है ।

शिबी का चरित्र एक पुरुष के धोखे की शिकार बननेवाली औरत का है । धरणीधर द्वारा धोखा खाकर वह अवैध संतान की माँ बनती है और तिरस्कृत हो जाती है । शिवानी इस पात्र के माध्यम से युवतियों को चेतावनी देती है कि प्यार विवाह से पहले मन तक ही सीमित रखे, तन तक नहीं ।

"मन का प्रहरी" की अनुराधा अपने मौसा के यहाँ रहकर रिसर्च कर रही थी । उस समय मौसा के मधुकर नामक छात्र से वह प्रेम करती है -

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 17

2. वही - पृ. 14

"बनारस के घाटों पर युगल प्रेमियों का वह दुःसाहसी जोड़ा आधी-आधी रात तक घूमता रहता । बजरे पर प्रेमी की गोदी में लेटी निःशंक अनु गुनगुनाती दूर-दूर तक निकल जाती । कभी-कभी घाट पर जल रही चिताओं की आंच जैसे निकट आकर उन्हें छू जाती और बजरेवाले को बीच घाट में बजरा ले चलने का आदेश देता मधुकर सलोनी सहचरी के मदालस चेहरे पर झुक जाता ।"[1] एक दिन अनुराधा पिता को पत्र लिखती है । उसका कथन देखिए - "मैं ने पापा को भी लिख दिया था,..... "मेरे लिए पात्र ढूँढने का सरदर्द अब उन्हें मोल नहीं लेना होगा । लिखना आवश्यक भी हो गया था । कब क्या हो बैठे,इसका कुछ ठिकाना था । वी हैड गॉन टू फार...."[2] पत्र पाकर पिता आगबबूला होकर पुत्री के पास आता है और कहता है कि मधुकर से विवाह न करना, करती है तो मैं आत्महत्या करूँगा । यह सुनकर अनुराधा अपने प्रेमी को छोडकर पिता के पास विदेश जाती है लेकिन मोटर दुर्घटना में पिता की मृत्यु होती है तब वह सब बेच-बाचकर स्वदेश लौटती है । विश्वविद्यालय में नौकरी पाती है और अपने ही छात्र प्रियतम महंती से विवाह करती है । उसके हनीमून के बीच उसे अचानक पुराना प्रेमी मधुकर मिल जाता है । वे दोनों मिलते हैं । यह देखकर महंती उसे पीटता है, घर ले आता है लेकिन उसके बाद अनुराधा उससे नाकुश रहती है । एक दिन वह एक पत्र महंती को लिखकर पुराने प्रेमी मधुकर के साथ भाग जाती है । पत्र देखिए -"हम दोनों ने बहुत बडी भूल की थी, प्रियतम । संसार की कोई भी शक्ति हम दोनों के बीच वयस की उस दूरी को पाट नहीं सकती । तुम्हारे लडकपन को मेरे प्रौढ अनुभव का धैर्य कभी नहीं जीत पाया । जैसे अत्याधुनिक शल्यक्रिया में किए गए हृदयारोपण के अनेक प्रयास आज तक असफल ही रहे हैं, एक न एक दिन प्रकृति नवीन अंग को रिजेक्ट कर देती है, ऐसे ही तुम्हारे प्रेम को भी मेरा शरीर जिस झटके से दूर पटक चुका है, उसके बाद अब मैं नवीन प्रयोगों में

---

1. गैंडा - शिवानी - पृ. 120
2. वही - पृ. 120

समय, शक्ति और अपना धन गंवाना महामूर्खता समझती हूँ । तुम्हें विदेश के सबसे विकट रोग ने ग्रस लिया है । इतने बड़े संसार में तुम चेष्टा करने पर एक न एक दिन अपनी समवयसी सहचरी जुटा ही लोगे । मैं मधुकर के पास जा रही हूँ ।

तुम्हारी
अनुपटेल

पहले प्रेम को भूल जाना मुश्किल कार्य ही है इसलिए यहाँ वर्षों बाद अपने पुराने प्रेमी से मिलने पर अनुराधा पति को छोड़कर चली जाती है । इस कहानी की अनुराधा सामाजिक और नैतिक पाबन्दियों को नकारती है । आधुनिक नारी की एक और मनोवृत्ति यहाँ प्रतिबिंबित होती है ।

भारतीय परंपरा के अनुसार नारी को अपने ऊपर नियंत्रण रखना है । जो नारी शारीरिक नियंत्रण को नहीं मानती वह आग की लपेट बनकर सबको जला देती है । पाश्चात्य संस्कृति नारी को अवैध संबंध की छूट देती है । परंतु जब भारतीय नारी उसका अनुकरण करती है तब सामाजिक विकृतियाँ जन्म लेती हैं जो समाज के लिए घातक साबित होती हैं ।

नारी का वारांगना का स्वरूप

शिवानी ने कहानियों में ऐसी वेश्याओं का चित्रण किया है जो इच्छा से वेश्यावृत्ति को स्वीकारती है जो परिस्थितिवश वेश्याएँ बन जाती हैं ।

---

1. गैंडा - शिवानी - पृ. 133

"तोप" में अपनी इच्छा के अनुसार वेश्या का जीवन बितानेवाली तोप नामक वेश्या के जीवन का अत्यंत मार्मिक चित्रण है । "तोप" की क्रिश्चियाना वैरोनिका टॉमस [तोप] एक अध्यापक की पुत्री है । "कण्ठ के परुष स्वर, छः फुटे मर्दाने शरीर और कृष्णवर्ण को देखकर किसी कलामर्मज्ञ ने तोप नाम धर दिया था । कण्ठ की गर्जना से उसका स्वभाव अछूता रह गया था । प्रत्येक मोटी औरत की भांति वह सरल और निष्कपट थी । स्त्रियों में उठना-बैठना उसे पसन्द नहीं था ।"[1] द्वितीय महायुद्ध के समय अलमोडा शहर की छावनी में, बाहर से जब आस्ट्रेली सैनिकों की एक बडी टुकडी आती है तब शहर की बहू-बेटियाँ मन्दिरों के दर्शन के लिए भी जाना छोड देती है यहाँ तक कि पुरुष लोग भी बाहर आने से डरते हैं । लेकिन तोप आस्ट्रेलियन फौजी सैनिकों को "हेलो, स्वीट हार्ट" कहकर आमंत्रण देती है । उनसे मिलती रहती है । सैनिकों के लिए वह खिलौने के समान है । वह फौज में वैकाई की नौकरी करती है । बाद में एक सैनेटोरियम चलाकर रोगियों की सेवा करती है । माँ की तरह प्रेम तथा नियंत्रण से उसको रोग मुक्त करती है । तोप के रस्ट हाउस में दो कठिन नियम हैं - एक तो वहाँ स्त्रियों के लिए स्थान नहीं है और दूसरा किराया पेशगी देना है । वह हर बार एक-एक मरीज को अपना बायफ्रेंड बनाकर ताज आदि देखने के लिए ले जाती है । इतना ही नहीं प्रत्येक रविवार को अपने मरीजों के लिए गेलफ्रेंड बनकर घूमने निकलती है । तोप लेखिका से कहती है -"सैनेटोरियम के पास दिल नहीं, तोप के पास बहुत बडा दिल है ।"[2] तोप का कहना ठीक था, उसके पास बडा दिल है केवल पुरुषों के लिए । वह राजेन्द्र नामक एक रोगी से विवाह करके हनीमून के लिए "ताजमहल" की यात्रा करती है । युवक राजेन्द्र को मृत्यु के मुँह तक पहुँचाकर पचास वर्षीया तोप प्लूरिसी के रोगी सैम्युअल जो मेडिकल कालिज में

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 33

2. वही - पृ. 38

आखिरी वर्ष का छात्र है से पुनः विवाह कर लेती है । इस प्रकार वह कामुकता की गहराई में डूबती रहती है ।

कहानी के आरंभ में सैनिकों के साथ दोस्ती करने से लेकर जो घटनाएँ हुई हैं उनसे तोप की ज़िन्दगी का नग्न चित्रण मिलता है । तोप के द्वारा लेखिका यौन विकृतियों की व्यंजना करती हैं । तोप का व्यवहार और उसके आचरण वैसे साधारण नहीं है । असाधारण व्यवहार करनेवाली नारी के रूप में इस वेश्या का चित्रण हुआ है ।

"करिए छिमा" का प्रमुख नारी पात्र हीरावती एक वेश्या के रूप में हमारे सामने आती है । जब अपनी जुटवा बहन पिरावती का पति अपनी पत्नी समझकर हीरावती का हाथ पकडकर छाती से लगाता है तब वह उससे बचने के सिवाय चुपचाप छाती से लगी हँसती रहती है और जब उसके लिए सजा मिलती है वह खुशी के साथ उसको स्वीकार करती है । जिस गुहा को लोग प्रेतगुहा समझते हैं वहाँ वह धैर्य के साथ रहती है । श्रीधर ही उसको गाँव से जाने का दंड देता है फिर भी उसके प्रति हीरावती के मन में प्रेम है और वह क्रिया-कलाप द्वारा श्रीधर को अपने जाल में फंसाती है और वह श्रीधर के द्वारा गर्भवती हो जाती है । जब वह श्रीधर के बच्चे को जन्म देती है तब वह सोचती है कि उसके बडे होने पर लोग समझेंगे कि वह श्रीधर का पुत्र है क्योंकि उसीकी ही कंजी आँखें, वही नाक यानी उसका ही रूप है । लेकिन शेखर सारे लोगों की दृष्टि में पूजनीय व्यक्ति है । बच्चा जीवित रहेगा तो प्रेमी श्रीधर का अपमान होगा इसलिए प्रेमी को बचाने के लिए वह बच्चे की हत्या करती है और कभी न झूठ बोलनेवाली हीरावती हाकिम के सामने सत्य नहीं कहती । हाकिम पूछता है - "बोल लडकी इसका पिता कौन है ?"[1] तब हीरावती बोलती है -"सरकार आप

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 10

तो दिन रात पहाडों का दौरा करते हैं । कई झरनों का पानी पीते होंगे । कभी आपको जुकाम भी हो जाता होगा । क्यों आज बता सकते हैं कि किस झरने के पानी से आपको जुकाम हुआ है ?"[1] प्रस्तुत कथन से उसका वेश्या रूप और अपने प्रेमी के प्रति अटूट प्रेम व्यक्त होता है । अपने प्रेमी को बचाने में, अपनी अवैध संतान को जल समाधि देने में वह तिल मात्र भी विचलित नहीं होती और हत्या के अपराध में उसको जेल में सजा भी भोगनी पडती है ।

यहाँ हीरावती को एक विचित्र प्रकार की मानसिकता लगती है । चारित्रिक दृष्टि से लगता है कि हीरावती उतनी बुरी औरत नहीं है जितना लोग सोचते हैं । कहीं न कहीं उसके मन में किसी एक पुरुष के बन जाने की इच्छा है जो कभी सफल नहीं हो जाती ।

"पुष्पहार" में दुर्गी का पति एक युद्ध में लंगडा होता है और घर का सारा काम दुर्गी के सिर पर पडता है । पति हमेशा नशे में डूबता रहता है । दुर्गी तो युवती है । वह कब तक अपने मन को नियंत्रण में रख सकती ? वह अपने सौंदर्य और रसिक स्वभाव से प्रौढ पुरुष मंत्री को अपने वश में फँसाती है । वह मंत्री को आकर्षित करने के लिए सारी साज सज्जा के साथ उसके सामने आती है और मंत्री से अविहित संबंध जोडती रहती है । पति के पूछने पर झूठ बोलती है कि बकरियों को घास चराने जाती है । जब पति को इसकी वेश्यावृत्ति का पता चलता है मंत्री रंगे हाथों पकडा जाता है । "किन्तु दुर्गी गजब के दुःसाहसपूर्ण कौशल से तैरती-तैरती किनारे तक आ गयी, फिर उसने किसी तीरथ के खुले घाट पर नित्य नहाने की अभ्यस्त कुलवधुओं की भाँति जल में ही किनारे से खींची गयी अपनी धोती का तंबू तान बडे धैर्य से कपडे पहन लिये । न उसके चेहरे पर लज्जा

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 39

की एक रेखा थी, न अपदस्थ होने का संकोच । फिर बिना भीड की ओर देखे वह अपने प्रेमी को बीच भँवर में छोडकर लंबी डगें भरती न जाने किस पगडंडी की भूलभुलैया में ओझल हो गयी ।"[1] बाद में भी वह अन्य पुरुषों के साथ अविहित संबंध स्थापित करती रहती है ।

यहाँ परिस्थितिवश दुर्गी को वेश्या बनना पडता है । वह तो युवती है लेकिन अपने पति के द्वारा उसको कोई इच्छा की पूर्ति नहीं होती । पति से उपेक्षित दुर्गी अपनी वासना को नियंत्रण में नहीं रख पाती । तब वह मंत्री से अवैध संबंध जोडती है । एक बार एक गलती होने पर, काम वासना जाग उठने पर फिर उस गलत मार्ग से बचना मुश्किल कार्य है । इसलिए बाद में दुर्गी वेश्या ही बन जाती है । एक बार वेश्या बनने पर फिर उस प्रवृत्ति से बच जाना मुश्किल कार्य है ।

"अलखमाई" की ईश्वर की दासी रजुला वेश्या है । अच्छी गायिका भी है । "लगता था इस नारी की सृष्टि ही विधाता ने गाने के लिए की है ।"[2] उससे रजुला को बहुत अधिक रुपये भी मिलते हैं । लेकिन वह ऐसे पुरुष से गर्भवती होती है जिसको गाँव के लोग देवता के समान मानता है । लेकिन प्रेमी को बदनामी से बचाने के लिए वह उस पुत्र की हत्या करती है । रजुला कहती है "क्योंकि उसकी शक्ल एकदम अपने बाप से मिलती थी, पैदा होते ही जिसकी शक्ल मैं ने पहचान ली, बडा होता तो क्या लोग उसे नहीं पहचान लेते - सब जान जाते कि वह किसका बेटा है ।".... नदी में ले गई, अपनी आँखें बन्द कर मैं ने दुश्मन को डुबो दिया लली....." "पूरा गाँव उसके बाप को

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 14
2. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 91

देवता मानकर पूजता था और फिर उसका बाप क्या मेरा पति था ? मैं तो थी नाचने गानेवाली नरैण की {प्रभु की} दासी, घोर पापिन, कलमुँही रजुला, क्या अपनी कालिख उनके मुँह पर पोंछ सकती थी ? गाँव छोडकर भाग गई और पाप की पूरी कमाई, चलते चलते उसी भागीरथी में डुबो गई ।"[1]

पश्चात्ताप से खिन्न होकर चालीस तोला सोना और विक्टोरिया के चार हज़ार नकद रुपये नदी में डुबाकर वह गाँव छोडकर चली जाती है । भगवान उसे दंड देता है । गला बैठ जाता है । सारे बदन में फुर्सियाँ निकल आती हैं । जो उसे देखता है घिन्न से दूर सरक जाता है । कभी कोई कोढ़िन समझकर धेला-पैसा फेंक देता, और गुड़ खा, पानी पीकर किसी पेड के नीचे पडी रहती है । एक दिन वह उसी बैठी आवाज़ में अपना वही गीत गाती है -"करिए छिमा, छिमा मेरा परभू" ।[2] धीरे-धीरे गला खुल जाता है । खोई आवाज़ फिर लौट आती है । फिर वह इधर-उधर भीख मांगकर पेट भर लेती है । वह इस संसार को ही जेल समझकर पश्चाताप से विवश होकर क्षमा करने का गीत गाती अपना जीवन बिताती है ।

इस कथा की नायिका का चरित्र करिए छिमा कथा की हीरावती से बिलकुल मिलता जुलता है । कथा भी एक जैसी है । अवैध संबंध से जन्मी हुई संतान को नदी में डुबोकर दोनों मारती हैं और दोनों कहानियों में नायक गाँव के महात्मानुमा व्यक्ति होता है । इस तरह की पुनरावृत्ति शिवानी की कहानियों की मौलिकता को नष्ट करती है । लगता है कि लेखिका पूर्वरचित कहानियों को भूल जाती हैं और उसी कथावस्तु को फिर से दुहरा देती हैं ।

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 94
2. वही - पृ. 95

रजुला का चरित्र पाप और दण्ड से मिलता है । आवाज़ का बैठ जाना और भिखारिन के रूप में जीवन बिताना सब एक प्रकार से स्वाभाविक नहीं लगते । इसी पूर्वनिर्धारित पात्रमनोवृत्ति को स्थापित करने के लिए लगता है कहानी की रचना की है ।

"चाँद" की चाँद एक वेश्या है।वह ऊँचे अफसरों के घर में काम के लिए जाती है और वहाँ के पुरुष से अविहित संबंध जोडती है । इस प्रकार उनकी गृहस्थी में विष घोलकर फिर दूसरे घर में विष घोलने के लिए काम के लिए आ जाती है । एक प्रसिद्ध क्लब में किसी बैरा के साथ शराब पी-पीकर विवस्त्रा बनी चाँद को पी.ए.सी.गाडी पकड ले जाती है । केवल ऊँचे लोगों से ही नहीं आइस्क्रीमवाला, रिक्षावाला सबको वह अपने कटाक्ष से वश में डालकर अश्लील संबंध जोडती रहती है । "एक लम्बा चौडा पठान-सा रिक्शाचालक रिक्शा रोककर उसके सामने खडा हो गया..... उसने फटी बनियान को उठाकर, विवर्ण पाजामे के नाडे में बंधा बटुआ खोला और एक-एक के दो तीन पांडुजीर्ण नोट निकाल लिए एक बार इधर-उधर देखे उसने फिर वही पत्रपुष्प आराध्य देवी के चरणों में रख दिए । बेचारे को न जाने किन-किन थकानप्रद रिक्शा-यात्राओं से अर्जित की गई गाढे पसीने की वह कमाई हमारे देखते ही देखते फुर्र से हवा में उड गई । उसके जाते ही चाँद ने आइस्क्रीमवाले की ठेलागाडी को रोका, पल भर को उसे भी अपने कटाक्षों में बांधा और तीन के दाम देकर चार बाल्टियाँ एक साथ लेकर खाने लगी ।"[1]

यह सब जानने पर भी मानो चाँद को अपने घर में काम करने के लिए रखती है और कुछ ही दिनों में चाँद मानो का विश्वास प्राप्त करती है ।

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 99

मानो को अपने पिता की शुश्रूषा के लिए विदेश जाना पडता है तब वह चाँद को अपने घर संभालने का काम सौंप देती है । लेकिन चाँद घर संभालने के साथ जे.के को भी अपने वश में कर लेती है । वह जे.के. से अविहित संबंध जोडती है । इस प्रकार मानो के जीवन में भी विष घोलती है ।

एक विशेष प्रकार की नारी है जिसके कहीं न कहीं कई न कई दर्शन हो जाते हैं । नौकरानियाँ बनकर काम करनेवाली चाँद जैसी औरतें बड़े-बड़े शहर में दिखाई पडती हैं । रोटी कमाने का बहाना बनाकर वासना की तृप्ति करनेवाली ऐसी औरतों के लिए पुरूष एक खिलौना मात्र है । पति-पत्नी के संबंधों का उनकी आँखों में कोई महत्व नहीं होता । शारीरिक संबंधों को एक महज ज़रूरत के रूप में मात्र वे देखती हैं ।

"क्यों ?" की कुंभा हीरे के व्यापारी की सुन्दरी पुत्री है । वह दिल्ली में पढती है साथ ही ऊँचे वेश्यालय में जाकर वेश्या का काम करती रहती है । देखिए "किन्तु उसी क्षण वह दबंग छोकरी उनके पार्श्व से उठी, साडी ठीक की, बटुआ खोल-दर्पण के सामने खडी हो गई । बडी तटस्थता से उसने बाल ठीक किये, चेहरे पर पफ फेरा, लिपस्टिक लगा दोनों ओंठ भींचे और पेशेवर अन्दाज़ से, पारिश्रमिक के लिए अपनी हथेली फैला दी । सौ-सौ के चार नोट हाथ में आते ही उसने बटुए में धरे और बडी अवज्ञा से डी.डायल की ओर बिना दृष्टिपात किये सीना ताने ऐसे निकल गई, जैसे विश्व-सुन्दरी का किरीट पहन, अपना पुरस्कार बटोर कर जा रही हो ।"[1] डी.डायल अपने पुत्र के लिए कुंभा को देखने के लिए होस्टल में जाता है तब मालूम होता है कि वह किसी से

---

1. हिन्दी कहानी - पृ. 147

मिलने के लिए बाहर गयी है । वास्तव में वह वेश्यालय में थी और उस दिन अपने भावी वर के पिता डोयल की ही अंकशायनी बन जाती है । बाद में उसके पुत्र की पत्नी बन जाती है ।

शिवानी की दृष्टि आज के तथाकथित सभ्य समाज की अनेकानेक विसंगतियों पर पडी है । इनमें से सबसे अधिक त्रासदायक है छात्रावासों में रहनेवाली लडकियों में वेश्यावृत्ति की बढती हुई प्रवृत्ति । इन लडकियों के सामने ऐसी कोई परिस्थिति नहीं जिससे मज़बूर होकर वे वेश्यावृत्ति करती हैं । अंधाधुन्ध फैशन और आवारागर्दी के लिए जितना भी पैसा मिल जाए, थोडा है । यहाँ कुंभा तो हीरे के व्यापारी की पुत्री है । वह क्यों और कैसे अपना शरीर बेचकर चार सौ रुपये के लिए हाथ फैलाती है । यह बात समझ में नहीं आती । वैसे ये सारी स्थितियाँसमाज के सामने प्रश्न चिह्न खडा करती हैं जिसकी गहराई में नैतिक मूल्य विघटन की जड़ें दिखाई पडती हैं ।

शिवानी ने नारी के उस मनोवृत्ति का उद्घाटन किया है जो उसे वेश्या बनने की प्रेरणा देती है । आम औरत वैसे वेश्या नहीं बनना चाहती । किसी न किसी दबाव के कारण या परिस्थिति के कारण साधारण महिला वारांगना बन जाती है । लेकिन कुछ ऐसी स्त्रियाँ मिलती हैं जो अपनी इच्छा से ही वेश्या बनती हैं । फैशन परस्ती के आधुनिक युग में आधुनिका बननेवाली नारी शारीरिक संबंध को पाप नहीं मानती । एक विशेष अनुभव की प्राप्ति के साथ धन की प्राप्ति भी औरत को इस दिशा में बढने की प्रेरणा देती है । संक्षेप मेंयह कहा जा सकता है कि नारी में आत्मसंयम का ह्रास होता है और उच्छृंखलता बढती है तब फटकने का और मज़ा लूटने का भाव अंकुरित होता है जिसका परिणाम है उसके वारांगना का रूप ।

निम्न मनोवृत्तिवाले स्त्री पात्र

शिवानी ने निम्न मनोवृत्तिवाले स्त्री पात्रों का भी चित्रण किया है । ये स्त्रियाँ चोरी, झूठ और फरेबी का सहारा लेती हैं । उनके मानसिक गिराव का और घृणात्मक आचरण का चित्र कुछ कहानियाँ प्रस्तुत करती हैं ।

"चाचरी" की प्रेमा अपने कुल-वैभव पर अहंकार करनेवाली है जिसके कारण पुरोहित की बेटी बिन्दी से अपने भाई की शादी वह स्वीकार नहीं करती । उसके लिए वह अपमान की बात है । जब प्रेमा अपने घर में आती है इस बात को लेकर भाई से झगडा करती है । वह अपनी भाभी से बात नहीं करती । देखिए -"और कोई नहीं मिली जो भिखारी ब्राह्मण बेटी को ब्याह लाया । मेरे ससुर कह रहे थे, जब उनके बड़े बेटे की मृत्यु हुई तो इन्हीं को खर्चा भेजकर बम्बई बुलाया था, ये ही तो हैं हमारे पुरोहित । कश्मीरी शॉल, कपड़े, सोना और कितना कुछ बटोरकर तो ले गए थे । अब क्या हम बराती बन उन्हीं के दरवाज़े, रोली का तिलक लगता, शगुन के लिए हाथ फैला सकते हैं ? मुझे तो लगता है श्री, बाबूजी को जो पश्मीना दिया है उन्होंने वह भी हमारे ही घर की प्रेतशय्या का दान होगा ।"[1]

इतना ही नहीं वह दुष्टबुद्धिवाली प्रेमा स्वयं ही अपना आभूषण अपने भाई की पत्नी कीपोटली पर छिपा रखती है और बिन्दी पर चोरी का लांछन लगाती है । वह झूठा अभिनय करते हुए बिंदी का अपमान करती कहती है -"ले, दे आ अपने ससुर को । अरे इतना ही रीझी थी मेरे गहने पर तो मुंह खोलकर मुझसे मांग लेती । मेरे पास क्या गहनों की कमी थी ? छिः, थू पड़े ऐसी नीयत पर । बाबूजी, मेरा टिकट खरीद

---

1. एक थी रामरथी - शिवानी - पृ. 29

लाइए । मैं अब एक पल भी यहाँ नहीं रहूँगी ।"[1] प्रेमा के इस झूठा अभिनय [illegible] - भाई और भाभी को अलग कर देता है और उनका दांपत्य जीवन बिगड जाता है ।

ईर्ष्या, विद्वेष आदि स्त्री सहज दुर्गुण से युक्त नारी के रूप में प्रेमा यहाँ आती है । प्रेमा यद्यपि अमीर घर की लडकी है फिर भी घिनौने स्वभाववाली है । नफ़रत उसकी मानसिक वृत्ति का आधार बनती है । ढोंग के कारण वह अपने को बडे घर की बेटी मानती है और भाई की पत्नी को नीचा दिखाने के लिए फरेबी आचरण करती है । समाज में इस तरह की विकृत मनवाली औरतों की कमी नहीं है ।

"अपराधी कौन" में मुख्य दो पात्र हैं अमला और मीना । अमला और मीना आपस में बहुत प्यार करती हैं और उस प्यार के कारण ही मीना अपने भाई के लिए वधू के रूप में अमला को चुन लेती है । दोनों एक से कपड़े पहनतीं, हंसतीं, खिलखिलातीं एक दूसरी को बांहों में लिए फिरती रहती हैं । इन दोनों की मैत्री देखकर मुहल्ले-भर की स्त्रियों के हृदयों में विष पैदा होता है ।

जब मीना की माँ अपने आभूषणों को एक-एक कर कभी रामेश्वरम और कभी बद्रीनाथ चढ़ाती है तब अमला और मीना उसको रोकना चाहती हैं और उन आभूषणों को दोनों के लिए बाँटने को कहती हैं । मीना सोचती है "मैं तो अम्मा की इकलौती बिटिया हूँ, करधनी मुझे ही देंगी ।"[2] अमला सोचती

---

1. एक थी रामरथी - शिवानी - पृ. 30
2. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 125

है "कितने अरमानों की बहू हूँ मैं । करधनी, हो न हो मेरी ही हिस्से में आयेगी ।"[1] लेकिन अम्मा करधनी अलग रख देती है । एक दिन अमला उस माला की चोरी करती है । मीना को मालूम होता है कि यह चोरी अमला ने की है और इसको लेकर उन दोनों की मैत्री भी टूट जाती है ।

मीना के विवाह के बाद वह ससुराल चली जाती है और बीस वर्ष के बाद जब वह अपने भाई की पुत्री की शादी के लिए लौट आती है तब भाभी अमला उसका खूब स्वागत सत्कार करती है । एक दिन जब अमला सामान खरीदने बाज़ार जाती है तब मीना अम्मा के बचे हुए सामान देखती है । इसी बीच उसे करधनी दिखाई पड़ती है और वह चुपचाप उसे अपनी पेटी में बंदकर लेती है । बीस साल के बाद भी उस आभूषण के प्रति लालसा और अमला के प्रति जो विद्वेष है उसके मन से वह हटा नहीं ।

यहाँ अमला और मीना दोनों ने ही चोरी करती हैं । दोनों के मन में आभूषण के प्रति मोह है, दुराग्रह है और चोरी करने पर भी दोनों उस चोरी को छिपाकर अपने को निरपराधी घोषित करने का प्रयत्न करती हैं । जैसे - "जब अमला बाज़ार से आती तब मीना की लौटने की तैयारी देखकर वह बड़े दुःख के साथ कहती है -"हाय मत जाओ, मीना, इतने सालों में तो लौटी हो मैं जानती हूँ, तुम अभी भी हमसे रुठी हो उस सड़बिल्ली करधनी का सत्यानाश हो, जिसने हमें चीरकर धर दिया, तुम्हारे भैया की कसम खाकर कहती हूँ मीना, मैं ने उस हरामखोर महाराजिन को रात के दो बजे अम्मा के कमरे से निकलते अपनी आँखों से देखा था ।"[2] अमला की

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 126
2. वही - पृ. 130

यह बात सुनकर मीना भी सफल अभिनय करके कहती है, "सच भाभी.......... फिर तुम ने पकड़ क्यों नहीं लिया, बदज़ात को ?"[1] तब अमला कहती है -"हाय मेरा कलेजा तो तुम जानती हो, एक दम पिद्दी का है। सोचा एक तो अम्मा के गौने में महाराजिन आयी थीं, उतना मानती थीं, अम्मा, कहीं करधनी नहीं निकली तब ?"[2] मीना कहती है -"अब खबरदार जो उस करधनी का नाम लिया, मुझसे बुरी कोई नहीं होगी, हाँ सामान बाँध लूँ फिर रात को खूब आराम से बातें करेंगे।"[3] इस प्रकार अंत तक दोनों सफल अभिनय करती रहती हैं। आखिर जब मीना की ट्रेन के स्टेशन छोडने का समय आता है तब "दामी चीज़ लेकर सफर कर रही हो मीना, सूटकेस को सिरहाने धर लेना।"[4] यह कहकर अमला उसके पास ही आकर फुसफुसाती है तो मीना का चित्त पश्चाताप से खिन्न हो जाता है। वह अपने को बडी नीच मानती है और वह करधनी निकालकर भैया-भाभी के चरणों में लोट, अपना अपराध स्वीकार कर लेने को सोचती है। लेकिन गाडी स्टेशन से चल पडती है। यहाँ हम मीना के पश्चाताप से पूर्ण मन देख सकते हैं। लेकिन यहाँ अमला करधनी ही नहीं मीना के हीरों का हार भी चुरा लिया था। इसलिए वह मीना से भी एक कदम आगे है इस चोरी में।

जब दौलत और गहनों का सवाल आता है मनुष्य सभी बातें भूलकर उसके लिए लडता है। वहाँ वह अपने स्नेह संबंध को तुच्छ मानता है। स्त्रियों के बीच तो प्राय: आभूषणों को लेकर झगडा होता है, यही स्थिति यहाँ भी आती है। यहाँ अमला और मीना के द्वारा स्त्री सहज स्वभाव को लेखिका ने सुन्दर ढंग से चित्रित किया है।

"सती" नामक कहानी का मुख्य पात्र है मदालसा नामक स्त्री।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 13।
2. वही - पृ. 13।
3. वही - पृ. 13।
4. वही - पृ. 13।

मदालसा के द्वारा ट्रेनों में चोरी डकैती करनेवाली स्त्रियों के कपटतापूर्ण व्यवहार को लेखिका हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं । मदालसा के बाह्य व्यक्तित्व को लेखिका इस प्रकार व्यक्त करती हैं - "छह फुट साढे दस इंच टु बी एक्जैक्ट, शायद भारत की सबसे लंबी नारी....... वे लंबी होने पर भी पठानिन-सी गठे-कसे शरीर की लावण्यमयी गतयौवना थीं । उनके बाल किसी दामी सैलून में कटे-संवरे लग रहे थे ।"[1]

मदालसा के क्रिया कलाप द्वारा उसके आंतरिक व्यक्तित्व को भी लेखिका सुन्दर ढंग से चित्रित करती हैं । मदालसा का उद्देश्य चोरी करना है । इसलिए उसका व्यवहार सब कपटपूर्ण है । वह अधिक बातें करनेवाली है । गाडी में जब वह चढ़ती है और सामान रख देती है तभी से अन्य तीनों की इन्टर्व्यू लेने लगती है । समाज सेविका ठक-ठक कर दो तीन रूखे उत्तरों में समाप्त कर देती है । महाराष्ट्री महिला हिन्दी नहीं जानती कहकर पीठ फेर लेती है तो भी मदालसा चुप नहीं रहती । वह त्रुटिहीन अंग्रेज़ी भाषा में धाराप्रवाह भाषा में बोलने लगती है । सच में यह चरित्र अन्य लोगों को धोखे में डालता है । अन्य स्त्रियों के पूछे बिना ही मदालसा उनसे कहती है -"मुझे मदालसा कहते हैं - मदालसा सिंघाडिया । कल प्रिटोरिया से आयी हूँ, अपने पति की मृत देह लेने ।"..... "मैं असल में सती होने भारत आयी हूँ ।"[2] यह कहकर दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर अपनी दुःखी अवस्था को प्रकट कर दूसरों की सहानुभूति पाना चाहती है ।

इस तरह की रेल में होनेवाली डकैतियों में स्त्रियाँ भी शामिल होती हैं । इस प्रकार के पात्र कहीं न कहीं मिल ही जाते हैं ।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ शिवानी - पृ. 96-97

2. वही - पृ. 96-97

उपर्युक्त तीनों कहानियों में नारी की कुछ विशेष मनोवृत्तियों का आविष्करण किया गया है । ये नारी चरित्र के कुछ काले पक्षों को उभारते हैं । इस दृष्टि से कभी-कभी नारी कमीनेपन में और अपराधों में पुरुषों को चुनौती देती है और उनसे आगे निकल जाती है ।

अन्य स्त्री पात्र

शिवानी के नारी पात्रों का अध्ययन करते समय बहुत सारे पात्र इस तरह के उभरते हैं जो वर्ग विशेष के अंतर नहीं आते । उनको हमने अन्य स्त्री पात्रों के अंदर रखा है और उनके व्यक्तित्व का अध्ययन उस दृष्टि से करना उचित समझा है । वैसे विभिन्न धरातलों से आनेवाली ये महिलाएँ कहीं न कहीं नारीत्व के संपूर्णता के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करती हैं । उन पहलुओं को समझे बिना नारीत्व की संपूर्ण अवतारणा को स्वीकारा नहीं जा सकता । इस दृष्टि से शिवानी के ये नारी पात्र अत्यधिक महत्व रखते हैं ।

"ज्यूडिथ से जयन्ती" की रमा दी ख्यातिप्राप्त क्रिमिनल लायर की पुत्री है । अपनी दो बहिनों के विवाह के बाद माता की मृत्यु हो जाती है । उसके बाद अपने छोटे पाँच वर्ष के भाई को उस छोटी उम्र में ही जिस गांभीर्य से माँ का रिक्त आसन ग्रहण कर लेती है उसे देखकर सब दंग रह जाते हैं । भण्डार, चौका, तिजोरी, लेनदेन में उस बालिका फिर कभी भूले से भी ठोकर नहीं खोती । वर्षों बाद पिता की मृत्यु होती है तब मामाजी रमा दी का विवाह एक विधुर युवक से कर अपना हाथ धोता है । लेकिन अपने पति से उसे किसी प्रकार का स्नेह नहीं मिलता । कितना कठोर व्यवहार करने पर भी रमा दी क्षमा के साथ अपने पति की देखभाल करती रहती है । "रमा दी जान गयी थीं कि प्रणयी का प्रेम पाने की उनकी व्यर्थाशा कभी पनप

नहीं सकती । पति का साहचर्य ही उन्हें मिल सकता है, प्रेम नहीं । आश्चर्य होता है कि फिर भी रमा दी अपने उस पाषाण हृदय पति पर जान छिडकती थीं । उठते-बैठते, सोते-जागते, वह निरंतर एक आदर्श पत्नी बनी छाया-सी पति के पीछे-पीछे घूमतीं ।[1] लेकिन अकाल में ही रमा दी विधवा बन जाती है । भरी जवानी में उसे वैधव्य श्रीहीन ही नहीं करती दीनहीन भी बना देती है । न सास, न ससुर, न कोई आत्मीय जो है वे औपचारिक सान्त्वना के अतिरिक्त उसे किसी भी प्रकार का संरक्षण के लिए आश्वस्त नहीं करते । इसीसे वह कर्मठ नारी इधर-उधर भाग दौडकर एक स्कूल में नौकरी प्राप्त करती है और वहीं से प्राइवेट बी.ए, एम.ए कर ट्रेनिंग भी कर लेती है । अपने पुत्र को इंजनीयर बनाकर ऊँची शिक्षा के लिए भेजती है । लेकिन जब पुत्र विदेशी ईसाई लडकी को लेकर विवाह के लिए आता है तब वह दुःखी हो जाती है फिर भी पुत्र की शादी उस लडकी से करवाती है । लेकिन पुत्र वधु उससे नीरस व्यवहार करती है । पुत्र तो अपनी पत्नी के कहे अनुसार ही चलता है जब वे विदेश से बच्चे के जन्म के बाद फिर रमा दी के पास आते हैं तब रमा दी को अपने पौत्र को चुंबन देने का भी अवसर बहू नहीं देती । बहू रमा दी से झगडा करती है और पुत्र और पत्नी फिर विदेश चले जाते हैं । अपना दुःख स्वयं दबाकर आखिर अकाल में ही रमा दी की मृत्यु हो जाती है ।

रमा दी एक स्नेहमयी बहन, पत्नी और माँ के रूप में आती है । फिर भी उसे अनेक यातनाएँ सहनी पडती हैं । वह क्षमा के साथ अपना जीवन बिताती है । ऐसी महिलाएँ समाज में कम मिलती हैं क्योंकि कथा में आनेवाली विदेशी बहू एक अपूर्व पात्र है । विदेशी नारी से ब्याह करने के बाद पुत्र अपनी माताओं के प्रति जो दुर्व्यवहार करते हैं उसकी भी झलक इस कहानी में मिलती है ।

---

1. कैंजा - शिवानी - पृ. 61

"चाचरी" की बिन्दी सुन्दरी है लेकिन शारीरिक संबंधों के प्रति ठंडी मनोवृत्ति रखती है । इसलिए पति के विद्वेष का पात्र बनती है । वह अधिक समय पूजा में ही तल्लीन रहती है । "दो ही दिनों में उसे लगा कि बिन्दी के रहस्यमय व्यक्तित्व में ऐसा कुछ अवश्य है जो सामान्य नारी से भिन्न है । एक तो वह बहुत कम बोलती थी, चार महीने बीतने पर भी वह कभी अपने वाचाल सहचर के सम्मुख, अपना हृदय खोलकर नहीं रख पायी थी ।"[1] एक बार जब अपने पति की बहन उस पर चोरी का लांछन लगाती है और पति उसको घर से बाहर निकालता है तब वह अपने घर जाकर फिर वापस नहीं आती । पिता के साथ दूसरे जगह जाती है और सन्यासी जीवन बिताती है । इसी बीच पिता की मृत्यु होती है । तीस वर्ष के बाद श्रीनाथ उसके पास जाकर क्षमा मांगकर अपने साथ लौटने के लिए कहता है लेकिन वह एक शब्द भी पति से नहीं बोलती है और स्लेट में लिखकर उसको यह दिखाती है -"मैं ने आज तक जीवन में पराई वस्तु का कभी स्पर्श भी नहीं किया है, मैं निर्दोष थी, अब मैं जहाँ हूँ वहाँ से लौटना असंभव है । अब न मेरा कोई अतीत है, न वर्तमान, न भविष्य, तुम चले जाओ । और फिर कभी यहाँ न आना । एक बार और सुनते जाओ - वह पश्मीना किसी प्रेतशय्या का दान नहीं था । बाबू ने कश्मीरी फेरीवाले से पूरे दो हज़ार रुपये देकर खरीदा था ।"[2]

उसके पढ़ते ही स्लेट उसके हाथों से लेकर वह अपनी लिपि, अपने ही भगवा आंचल से मिटा देती है और पलक झपकाते ही अपनी पर्णकुटी की किसी अंधी गली में खो जाती है । तीस वर्ष के बाद भी वह अपने पति की गलती को क्षमा करने के लिए तैयार नहीं होती और वह पति का तिरस्कार करके अपना प्रतिशोध व्यक्त करती है ।

---

1. एक थी रामरथी - शिवानी - पृ. 23
2. वही - पृ. 41

पति के सामने पराजित होने के लिए वह तैयार नहीं होती । उसको एक विचित्र मानसिकता है । उसका आत्मसम्मान क्षतिग्रस्त होकर प्रतिशोध करने लगता है ।

"मौसी" की मिसिस वेदी का नाम है तिला । तिला का पिता लकड़ी का व्यापारी है । तिला के जन्म के तीन माह बाद माता की मृत्यु होती है । वह देवरानी काखी की गोद में पलने लगती है । तिला का पिता किसी नेपालिन से विवाह करता है पर प्रत्येक माह वह पुत्री के नाम दो सौ रूपये भेजता है । काखी सब रूपये बैंक में जमा करती है और जब तिला बड़ी होती है तब उसे अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ने भेजती है । सोलह वर्ष में तिला सीनियर कैम्ब्रिज पास करती है तब काखी को उसके विवाह की चिन्ता होती है । कई रिश्ते आते हैं पर काखी को कोई पसन्द नहीं आता । वह एक आइ.सी.एस. युवक से तिला का विवाह करना चाहती है । तिला लखनऊ आइ.टी.कालेज में पढ़ने लगती है । वहीं से अपनी सखी गुरुचरन कौर के भाई मनमोहन वेदी से उसका परिचय होता है । वह परिचय प्रेम का रूप धारण कर लेता है । कक्का चोटी पकड़कर तिला को कमरे में बन्द करता है । सिसकती चाची उसे समझाती है कि शादी ब्याह अपने ही समाज का ठीक होता है । लेकिन तिला रात के दो बजे वेदी के साथ भाग जाती है और बड़ी धूमधाम से विवाह भी हो जाता है । "वह भी बित्ते-भर के ब्लाउज़ पहन, छोटी-छोटी जीन्स से शरीर के उभार का नग्न प्रदर्शन करती पति के समाज में न जाने कब उतर गई ।"[1] दो वर्षों में वह दो बच्चों की माता बनती है । दोनों बेटे जन्मते ही आया को सौंप दिये जाते हैं । एक पठानिन आकर उन्हें दूध पिला जाती है । तिला

---

1. कैंजा - शिवानी - पृ. 135

इसका विरोध करती है तो सास बिगड जाती है । उसका मातृत्व उसकी छातियों में ही सिमटकर रह जाता है । सास, ससुर और पति के नैतिकता विहीन जीवन से वह सहमकर रह जाती है । "ब्रिगेडियर उसके दो-दो बेटों का बाप था, पर फिर भी पति को देखकर घृणा से उसका अंग-प्रत्यंग सिहर उठता । कभी इसी व्यक्ति के पीछे दीवानी होकर भूख, प्यास, मार, लांछना सब भूल गई थी । आज कपूर की लौ की ही भांति उनके प्रेम की लपट उड़ गई थी । वेदी सात दिन घर रहा था पर उसके कमरे में सोया केवल एक दिन, बाकी छ: दिन उसने छ: विभिन्न नारियों के संसर्ग में हँस खेलकर गुज़ार दिए थे ।"[1] आखिर तिला अपनी चौथी संतान पर श्वसुर कुल के पाप की छाया न पड जाने के उद्देश्य से डाक्टर के विरोध करने पर भी गर्भावस्था में किसी से कहे बिना ससुराल छोडकर काखी के घर चली आती है । एक दिन काखी की बेटी तारो और तिला दो बेटियों को जन्म देती है । तिला सोचती है "तारो की बिटिया जो कभी अपने वंश के श्राप को झेलती चल देगी और उसकी बिटिया जो अपने पिता के वंश के श्राप को झेलती जीती रहेगी ।"[2] वह अपनी बच्ची को तारो के पास लिटाकर तारो की बच्ची को ले लेती है यह बात कोई नहीं जानता । तीसरे ही दिन तिला की बेटी जो तारो की है मर जाती है । महीने भर बाद तारो वहाँ से लौट जाती है ।

प्रेम विवाह करने पर भी पति और ससुरवालों के अनैतिकतापूर्ण जीवन स्वीकारने की मानसिकता नहीं है तिला की । ससुरालवालों की आधुनिक जीवन रीति वह स्वीकार नहीं कर पाती । इसलिए वह उन लोगों से संबंध रखते हुए भी उनसे दूर रहना चाहती है जो एक विडंबना है । नारी की विवशता का पक्ष लेखिका ने यहाँ पर उभारकर रखा है ।

---

1. कैंजा - शिवानी - पृ. 133

2. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 137

"केया" की नलिनी मातृहीना है । नाना प्रत्येक छुट्टियों में नलिनी को बड़े आग्रह से बुला भेजते हैं । प्रत्येक ग्रीष्मावकाश में नलिनी ननिहाल जाती है । वहाँ से अपने छोटे मामा के सहपाठी मृगांक देववर्मन से उसका परिचय होता है । आखिर वह परिचय प्रेम का रूप धारण कर लेता है । ननिहाल से लौटी पुत्री की गतिविधि में एक नया ही लटका देखकर पिता खान खड़ा करता है । एक दिन नलिनी बिना पूछे ही होस्टल से सीधी ननिहाल चली जाती है तब पिता बौखला हो जाता है और लड़झगड़कर पिता पुत्री को साथ लाता है और समृद्ध कुल के एक मित्र के विरूप पुत्र से उसकी शादी करवाता है । नलिनी रो धोकर घर हो सिर पर उठा लेती है । आखिर विधुर श्वसुर की पितृतुल्य ममता पाकर वह धन्य हो जाती है । वह मेडिकल कालेज में प्रवेश पाती है । उस समय वह गर्भवती भी हो जाती है । लेकिन पढ़ाई में बाधा न डालने के विचार से गर्भपात कराती है । फिर जब वर्षों पश्चात् वह स्वयं विधाता के सम्मुख बच्चे के लिए आंचल फैलाती है तब विधाता मुँह फेर लेता है । इसी बीच जब श्वसुर की मृत्यु होती है तो उसे बड़ा धक्का लगता है । क्रोधी विलासी पति का अस्तित्व उसे जीवन में पहली बार ग्रस्त करता है । उतने बड़े मकान के शेर के पिंजरे में अब उस आदमखोर के साथ उसे अकेले ही रहना है । इसी से वह अपने को आकण्ठ अपनी नौकरी में डुबोकर रख देती है । पति तो अन्य युवतियों के साथ अवैध संबंध जोड़ता रहता है । "सब कुछ देखकर भी नलिनी ने देखे का अनदेखा कर दिया था । इतना वह जानती थी कि एक न एक ऐसी ही कोई विजातीय रहस्यमयी सुन्दरी उसके पति को ले डूबेगी । वह स्वयं पति की ओर से उदासीन हो गई थी । इसी से उसे अब निरंतर विदेश-प्रवासी पति के विरह का न भय था, न स्वदेशागमन के पश्चात् मिलन का उल्लास । तीन वर्षों से उन दोनों के शयनकक्ष भी एकदम दो सिरों पर थे ।"[1] एक दिन अपनी नौकरानी

---

1. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 100

को ही पति के पार्श्व में लेटी देखती है । लेकिन नलिनी अपने पति से एक शब्द भी नहीं कहती है । पति से उसकी सामान्य बोलचाल और भी कम हो जाती है । उस समय नलिनी को अपने पुराने प्रेमी का एक पत्र मिलता है उसमें लिखा होता है कि वह मरणासन्न है और उसके मन में अंतिम बार नलिनी को देखने की इच्छा है । नलिनी का पति विदेश जाता है तब नलिनी अपने प्रेमी को देखने के लिए बंबई जाती है । प्रेमी मरणासन्न है । प्रेमी नलिनी से उसे अपने माँ के पास क्षमा याचना करने के लिए ले जाने को कहता है । नलिनी उसे ट्रेन में ले जाती है तब ट्रेन में ही प्रेमी की मृत्यु होती है । तब नलिनी उसे ट्रेन में ही छोड़कर लौट जाती है ।

इस कहानी की नलिनी साधारण पात्र नहीं लगती । वह कई प्रकार के मानसिक दबावों से युक्त है । पिता के दबाव के कारण वह प्रेमी से विवाह नहीं कर पाती । पत्नी होकर भी वह पति का प्यार स्वीकारने में भी असमर्थ हो जाती है । उसके आचरण सब विशेष प्रकार के हैं जिनका कोई तर्कसंगत आधार नहीं बनता । अंत में ट्रेन में प्रेमी को लेकर सफर करना और प्रेमी की मृत्यु हो जाने पर उसे गाड़ी में ही छोड़कर अलग हो जाना सब अस्वाभाविकता के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं । लगता है कि लेखिका ने परिस्थितियों का गढ़न करके कहानी में मोड़ लाने का प्रयास किया है । इसी प्रयास में पात्र की चारित्रिक स्वाभाविकता एक बड़ी सीमा तक घायल हो जाती है ।

"भूमिसुता" की सुता सौतेली माँ के दुर्व्यवहार से ऊबकर घर से भागी समृद्ध ज़मीन्दार ठाकुर की बेटी के मुसलमान डॉ. इदरीस कुरेशी के साथ के अवैध संबंध से जन्मी लड़की है । उसके जन्म होते ही कुरेशी प्रेमिका की हत्या करता है और बेटी को कूड़ेदार के पास छोड़ता है । उस बेटी को

i

ब्रिगेडियर बालकृष्ण की पत्नी जिसे विवाह के 15 वर्ष बीतने पर भी संतान का मुँह देखने का भाग्य नहीं मिला था गोद ले लेती है और नाम रखती है भूमिसुता। सुता बहुत सुन्दरी है। जो उसे देखता है कहता है -"बड़ी होकर यह निश्चिंत ही मिस यूनिवर्स बनेगी मिसेज़ राव, क्या नैन-नक्श हैं और क्या कंप्लेक्शन।"[1] वह बड़ी होती है। स्कूल जाने लगती है। उसके बाद उसे एक भाई भी मिलता है। ब्रिगेडियर और अनुराधा सुधा को अपने प्राणों के समान प्यार करते हैं। सुता कभी शिकायत का मौका नहीं देती है। अपने माँ-बाप से वह बहुत प्यार करती है। वह एक दिन घोषणा करती है -"वह आजीवन कैरियर को ही पतिरूप में वरण करेगी - मैं शादी नहीं करूँगी, पापा, आप दोनों धकेल भी देंगे तो भी इस घर से नहीं जाऊँगी।"[2] छुट्टी में घर आते समय वह खुद पिता को काफी बना देती है, रूमाल तक इस्तरी करती है यहाँ तक कि जूतों में पॉलिश भी लगाती है। छुट्टियों के बाद वह चली जाती है तो जनरल पिता का मूड उखड़ जाता है। इसी बीच पुत्र रजत सुता के बारे में अपने माँ-बाप से पूछता है और झगड़ा करता है। पिता उसे मारता है और वह पिता के रहते समय तक घर नहीं लौटता। तीन दिन बाद सुता पढ़ाई पूरा करके घर लौटती है और खुशी के साथ कहती है- "ममा मुझे सिटी बैंक में नौकरी मिल गई है, इसी महीने ज्वॉइन करना है। अब आपको नहीं छोड़ूँगी...... आप दोनों मेरे साथ रहेंगे। अरे, अरे रजत की ट्रेनिंग भी खत्म हो गई होगी-कहाँ है वह ? अब तो भूले-भटके भी चिट्ठी नहीं लिखता।"[3] रजत का नाम सुनते ही माँ-बाप का चेहरा फक पड़ जाता है। तब वह माँ से कारण पूछती है तो माँ सुता की पूर्व कहानी सुनाती है। वह माँ से जान जाती है कि वह उनकी गोद ली गयी बेटी है। उस रात वह सो नहीं पाती फिर भी सुबह होते ही वह फिर अपनी स्वाभाविक दिनचर्या में लौट आती है

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 14
2. वही - पृ. 16
3. वही - पृ. 19

जैसे कुछ हुआ हो न हो । पिता के साथ नित्य की भांति घूमने जाती है, चाय बनाकर लाती है इधर-उधर की बातें करती है । एक पल को भी वह उस अवांछित प्रसंग को उभरने नहीं देती । अपने व्यवहार से, स्नेहसिक्त हँसी से वह जैसे अपने माँ-बाप को यही विश्वास दिलाने की प्राणांतक चेष्टा करती रहती है कि चाहे कुछ भी हो जाए वह उन्हीं की सगी बेटी है और हमेशा रहेगी । दूसरे दिन पिता की मृत्यु होती है । माँ को देखने के लिए वह छुट्टी बढाती है । लेकिन माँ के कहने पर वह जाने को तैयार होती है और कहती है, "ममी, मैं उसका पता लगाकर रहूँगी... उसी का, जिसने हमारे घर की सुख-शांति भंग की, जिसने पापा के प्राण लिये, रजत को मेरा शत्रु बना दिया ।"[1] लेकिन माँ रोकती हुई कहती है कि वह बहुत खतरनाक आदमी है उसे ईश्वर ही दंड देगा । लेकिन सुता कहती है -"नहीं, दंड मैं दूँगी और तुम्हें बता जाऊँगी कि मैं ने कैसा दंड दिया तब तक घर नहीं लौटूँगी ममी ।"[2] वह पिता कुरेशी के पास जाकर उसकी पत्नी और बच्चों के सामने ही कहती है "जी हाँ मैं वही हूँ जिसकी मासूम भोली माँ का गला घोंट, आप गोमती में बहा आए थे । मैं वही हूँ जिसका गला घोंट आप सैयद बाबा की मज़ार पर पटक आए थे । मुजावर ने देख लिया तो आपने उस गवाह को भी साफ कर दिया ।"[3] तब कुरेशी पैसा देकर उसका मुँह बंद करना चाहता है तब वह कहती है "कुछ चीज़ें ऐसी भी होती है डॉक्टर कुरेशी, जिन्हें पैसा भी नहीं खरीद सकता - जानते हैं आप ?" वह उत्तेजित होकर खडी हो जाती, "मैं इतनी दूर से यही कहने आई हूँ - सुन सकेंगे आप ?"............
"मैं यही कहने आई हूँ कि आपकी यह आलमगीर कोठी, गहनों से लदी आपकी बेगम, बेशुमार दौलत, सब यहीं धरी रह जाएगी । यहाँ तो यहाँ, कब्र में भी आप तड़पते रहेंगे । आप हत्यारे बूचड़ हैं डाक्टर, अपने कुरेशी नाम को सार्थक

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 23
2. वही - पृ. 23
3. वही - पृ. 25

किया है आपने ।"[1] इस प्रकार वह अपना बदला लेती है और वहाँ से निकल जाती है । माँ के पास उसकी शुश्रूषा के लिए आ जाती है । माँ का देखभाल वह स्वयं करती है । बीमारी की शिकार माँ तीसरे दिन मर जाती है ।

सुता यहाँ एक स्नेहमयी, करुणामयी पुत्री के रूप में आती है । अपना यथार्थ पिता दुष्ट है यह जानकर भी वह धैर्य के साथ उसके पास आकर बदला लेकर उनका मानसिक शांति नष्ट करती है ।

"लाल हवेली" की सुधा [ताहिरा] पहले हिन्दुस्तान के एक प्रसिद्ध वकील साहब के बेटे की पत्नी थी । एक बार दंगे में मुसलमान लोगों के आक्रमण में पड जाती है । वैसे रहमान की पत्नी पहले ही दंगे में मारी जा चुकी थी फिर भी रहमान अली सुधा की रक्षा करता है और अपनी पत्नी के रूप में स्वीकारता है । सुधा ताहिरा बनकर पाकिस्तान में रहमान अली के साथ रहने लगती है । एक बच्ची की माँ भी बनती है । पन्द्रह साल में पति के मामु के इकलौते बेटे अल्ताफ की शादी में वह पति के साथ पहली बार ससुराल आती है । ससुराल के पास ही अपने पुराने पति का घर देखकर उसके मन में पुरानी स्मृतियाँ जागती हैं और वह बहुत दुःखी हो जाती है । सुधा अन्तर्द्वन्द्व में पड जाती है । वह अपने पुराने पति के घर की ओर देखती है -"तीसरी मंजिल पर रोशनी जल रही थी । उस घर में रात का खाना देर से ही निबटता था फिर खाने के बाद दूध पीने की भी तो उन्हें आदत थी । इतने साल गुज़र गए, फिर भी उनकी एक-एक आदत उसे दो के पहाड़े की तरह जबानी याद थी । सुधा, सुधा कहाँ है तू ? उसका हृदय उसे स्वयं धिक्कार उठा, तू ने अपना गला क्यों नहीं घोंट दिया ? तू मर क्यों नहीं गई, कुएं में कूदकर क्या पाकिस्तान

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 25

के कुएँ सूख गये थे ? तू ने धर्म छोडा पर संस्कार रह गए, प्रेम की धारा मोड़ दी, पर बेड़ी नहीं कटी, हर तीज, होली, दीवाली तेरे कलेजे पर भाला भोंककर निकल जाती है । हर ईद तुझे खुशी से क्यों नहीं भर देती ? आज सामने तेरे ससुराल की हवेली है, जा उनके चरणों में गिरकर अपने पाप धो ले । ताहिरा ने सिसकियाँ रोकने को दुपट्टा मुँह में दबा लिया ।"[1] वह अपना सुध-बुध खोकर पुराने ससुराल की ओर भाग जाती है । आखिरी सीढ़ी आती है, साँस रोककर, आँखें मूँद वह मनाने लगती है -"हे बिल्वेश्वर महादेव, तुम्हारे चरणों में यह हीरे की अंगूठी चढाऊँगी, एक बार उन्हें दिखा दो पर वे मुझे न देखे ।"[2] सुधा फिर डूब जाती है । ताहिरा जागती है । रहमान अली के स्नेह की याद उसके मन में आती है । वह बिल्वेश्वर महादेव के निर्जन देवालय की ओर भागती है । सिर पटककर वह लोट जाती है । आंचल पसारकर वह आखिरी मनौती मांगती है -"हे भोलानाथ, उन्हें सुखी रखना, उनके पैरों में कांटा भी न गड़े ।"[3] और उसी साल शादी के दिन की यादगार में रहमान अली की पहनाई हुई हीरे की अंगूठी उतारकर चढ़ाती है और भागती हांफती घर लौट जाती है ।

मानसिक संघर्ष में डूबी ताहिरा का चित्रण लेखिका ने अत्यंत स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया है । पहला प्रेम और अपने जीवन में आनेवाले प्रथम पुरुष को भूल जाना कठिन कार्य है । यहाँ रहमान अली से कितना स्नेह उसको मिलता है । वह अपने जीवन के समान उससे प्यार करता है और एक बेटी की माँ भी बनती है । फिर भी जब अपने पुराने पति की याद उसको विह्वल कराती है तब उसे देखने की इच्छा उसके मन में जन्म लेती है । यह स्वाभाविक ही है । उस समय की ताहिरा की मनोव्यथा का चित्रण अत्यंत करुणाजनक है । यहाँ उसकी मानसिकता प्रथम पति की स्मृति को भुलाने असमर्थ हो जाती है ।

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 129
2. वही - पृ. 130
3. वही - पृ. 130-131

"लिखूँ" की प्रिया एक अपूर्व पात्र है । प्रिया माँ-बाप के एक ही संतान है । वह बहुत सुन्दरी है जिसे देखकर उसके सहपाठी लोग आश्चर्य चकित हो जाते हैं । लगता था -"मधुमय में जन्मी किसी कलिका-सी उस किशोरी को सौकुमार्य, चापल्य, मार्दव से मंडित करने में विधाता ने, उन वनस्पतिजन्य रंगों का प्रयोग किया था जिनका प्रयोग इन दिनों आश्रम के कलागुरु नंदलाल बोस कर रहे थे ।"[1]

वह अहंकारी स्वभाववाली है । आश्रम के एक एक नियम को वह दुःसाहस से रौंदे जा रही है । वह सचमुच अद्भुत लडकी है । आकाश को भी लांघ जाने का उसका अदम्य उत्साह, बाधाओं से जूझने को उसका सदा गर्वोन्नत सिर, कठोर कशाघात को सहकर भी किसी को कुछ न समझनेवाली मुद्रा, उसके रंगीले-रसीले भाव।उसे लडकियों में उठना-बैठना अच्छा नहीं लगता है । काम मन का मूल है किन्तु प्रिया में वह काम शायद कुंठित होकर ही तीव्रतर हो उठा है । उसके लिए सुनर्य का महत्व था, नारी का नहीं । एक तो उसके शरीर का गढ़न भी ऐसी है कि लगता है कि खजुराहो की भित्ति की ही कोई मूर्ति जीवंत हो उठी है । उसके पृथुल नितंब, मांसल अंग-प्रत्यंग, वर्तुल वक्ष स्थल तिर्यक दृष्टि, सब ही विलास एवं उद्दाम काम के प्रबल संकेत देते हैं ।

गणित में उसे स्वयं सरस्वती का वरदान प्राप्त है । कठिन-से कठिन सवाल भी वह चुटकियों में हल कर देती है । स्मरणशक्ति ऐसी अद्भुत है कि एक बार किसी पाठ पर आँखें फेरती और दूसरे ही क्षण विराम-अर्द्धविराम सहित पूरा पाठ दनादन उगल देती । उसका बंगला उच्चारण एकदम त्रुटिहीन था, साहित्य सभाओं में वह रवीन्द्रनाथ, जीवनानंददास, विष्णु दे की

---

1. पुतोंवाली - शिवानी - पृ. 101

कविताओं की आवृत्ति करती तो लोग आश्चर्य से मंत्रमुग्ध कर साँस रोके उसे देखते रहते हैं । उसका सिगरेट पीने के बारे में लेखिका उससे पूछती हैं तो प्रिया कहती है -"क्यों, क्या बुराई है इसमें ? स्त्रियाँ तंबाकू, जर्दा खा सकती हैं तो सिगरेट क्यों नहीं पी सकती भला ? और फिर मुझे पकड़नेवाला आज तक पैदा नहीं हुआ - तू क्यों घबड़ाती है ?"[1]

एक दिन वह आश्रम विद्यालय छोड़कर विदेश चली जाती है और वर्षों बाद प्रिया का विवाह होता है और एक बच्ची की माँ भी बनती है । लेकिन बच्ची को जन्म देने के बाद उसके शरीर में और स्वभाव में पुरुष का लक्षण दिखाई पड़ने लगता है और एक छोटी-सी सर्जरी करके वह पुरुष बन जाती है और पति और पुत्री को छोड़कर भारत चली आती है । भारत में आकर प्रिया जो पुरुष है मारग्रेट से शादी करती है बाद में संतानों का पितृत्व भी उसे प्राप्त होता है । अंत में लंग कैंसर के कारण उसकी मृत्यु भी हो जाती है ।

प्रिया एक विचित्र पात्र है । मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों में वह सामान्य लड़की से भिन्न है । यहाँ उसके मानसिक परिवर्तन और शारीरिक परिवर्तन के बीच में संतुलन बना रहता है । वह समाज के अपूर्व पात्रों में एक है । प्रिया जैसे पात्रों की सृष्टि करके लेखिका ने चारित्रिकता में अत्यंत अविश्वसनीय तत्वों को प्रश्रय दिया है । प्रिया जैसे पात्र को कहीं भी देखा नहीं जा सकता । क्योंकि जिस प्रिया में स्त्रैणता संपूर्ण बनकर खजुराहों की मूर्तियों का आकार स्वीकार करती है उसमें एकदम पुरुष लक्षणों का आविर्भाव होना विज्ञान के अनुकूल नहीं है । क्योंकि जिस महिला में पुरुष होरमोणों की अधिकता होती है । उसमें स्त्रैणता बहुत कम होती है फिर लेखिका ने प्रिया को संपूर्ण पुरुषत्व प्रदान करके उसको दो बच्चों का पिता भी जादुई ढंग से बना दिया है ।

---

1. पूतोंवाली - शिवानी - पृ. 105

अधिकतर यह देखा जाता है कि लैंगिग परिवर्तन के बाद साधारण पुरूष जैसी स्वाभाविकता बहुत कम ही प्राप्त होती है । वैज्ञानिक सत्यों के प्रकाश में लेखिका की कल्पना उटपटांग लगती है । इसलिए प्रिया की मानसिकता, चारित्रिकता और उसके कारनामे अनुवाचक के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता । तिलस्मी और जादुई कहानियों की याद फिर से उभरती है ।

"दादी" की दादी परंपरागत संस्कार को अपनानेवाली है । आधुनिक विचार और रीति को स्वीकारने को उसका मन तैयार नहीं होता । इसलिए दादी और उसके बहुओं के बीच झगडा होता है । दादी बहुओं से अपेक्षा करती है कि वे उसके कहे अनुसार जीवन बिताए । "अम्माजी के चौके में सर्वदा 144 धारा लागू रहती थी कोयले की लक्ष्मण रेखा खींचकर सास अपनी सीमा स्वयं निर्धारित कर लेती थी ।"[1] परंपरागत संस्कारों के कारण दादी को पढ़ी लिखी छोटी बहू के आचार-विचारहीन घर में रहना अच्छा नहीं लगता और इसी कारण बहू के घर में उनका आना क्षणिक होता है । एक बार दादी अपनी बड़ी बहू और बच्चों के साथ छोटी बहू के घर में आती है उस समय घर का काम संभालने के लिए एक नौकर को रखा जाता है । वह नौकर वास्तव में मुस्लिम है लेकिन वह घरवालों से झूठ बोलता है कि वह ब्राह्मण है । पहले दादी किसी भी तरह उस नये नौकर के हाथ की चाय पीने को राज़ी नहीं होती, पर बहू बार-बार उसके कन्याकुब्ज ब्राह्मण होने की पुष्टि करती है तो उन्हें मानना पड़ता है । लेकिन जब वह नौकर मुसलमान है यह वह जानती है तब दादी के हृदय उस साँप को क्षमा करती है पर संस्कार अभी भी घुटने नहीं टेकता । वह बहू से कहती है "मुझे तो डंस ही गया बहू । पितृपक्ष की एकादशी के दिन मुआ गिलास भर चाय पिला तार गया मेरे पुरखों को । अब आज ही रात की

---

1. रतिविलाप - शिवानी - पृ. 128

गाडी से काशी चल दूँगी ।"[1] झर झरकर उसकी आँखें बरस पडती हैं । उस रात की गाडी से दादी पुण्यसलिला भागीरथी में तिलापात्र और गोदान के साथ एक सौ बीस डुबकियाँ लगाने का पावन संकल्प कर काशी चली जाती है ।

परंपरागत संस्कार और धार्मिक अन्धविश्वास से बचना मुश्किल कार्य ही है । यहाँ दादी की भी स्थिति यही है । पुराने रीतिरिवाजों को अपनानेवाली दादी नयी पीढी के संस्कारों को मानने के लिए तैयार नहीं होती । पीढियों के बीच का मानसिक अंतर यहाँ देखा जा सकता है ।

"जिलाधीश" की सुमन एक मध्यवर्गीय परिवार की लडकी है । वह एक असाधारण लडकी है । लोग सुमन के बारे में हमेशा पूछा करते हैं "एम.ए कर लिया है ना तुम्हारी बिटिया ने, अब क्या कर रही है । क्या कहीं बात-वात पक्की हुई ?"[2] नारी समाज की यही मीठी सहानुभूति उसे कडवी लगने लगती । उसके रिश्ते की बात कहीं पक्की हुई हो या नहीं, उनके सिर में भला क्यों दर्द हो रहा था । वह बुरी तरह बौखला जाती । यही रिश्तेवाली बात तो उसकी दुखती रग थी । कौन-सा घर-वर ऐसा बचा था, जहाँ उसके रिश्ते की बात नहीं चली ? किन्तु किसी लडके को उसका निम्न मध्यवर्गीय परिवार नहीं रूचता, तो कोई इसकी असाधारण प्रतिभा से सहम जाता । लेकिन पाँच वर्ष के बाद उसके लिए एक से एक समृद्ध गृहों से प्रस्ताव आने लगते हैं लेकिन अब वह पाँच वर्ष पूर्व की सुमन नहीं है । वह तो माँ के गर्भ से ही राजदंड लेकर जन्मी है । वह जिलाधीश बन जाती है । मौसी जब उससे शादी की बात कहती है तब वह कहती है -"क्या कहती हो मौसी, अब ?

---

1. रतिविलाप - शिवानी - पृ. 136
2. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 26

बूढ़े तोते को राम-राम पढ़वाओगी क्या ? जानती हो, मैं कितने साल की हूँ ?"[1] मौसी कहती है "कौन कहता है, तू बूढ़ी है ? कोई उन्नीस से ज़्यादा की बता दे तुझे तो अपनी नाक कटा लूँ ।"[2] सुमन कहती है "और मौसी, मेरी कलक्टरी ?"[3] वह हँसती-हँसती जानबूझकर उन्हें छेड़ने लगती है । वह शादी करने तैयार नहीं होती । सचिवालय का वेदाध्ययन कर अब वह जिस जिले की बागडोर संभालने पहुँचती है वह कुख्यात जिला एक नहीं, अनेक जिलाधीशों का सिरदर्द रह चुका था । उसके अनेक सहकर्मियों के एक साथ कई पत्र आते हैं जो कभी स्वयं उस जिले का कठिन शासन-भार संभाल चुके थे । एक खत में लिखा है -"यह जिला तो हमारे प्रदेश का "प्रॉबलम चाइल्ड" है । देख लेना, साल-भर से पहले ही तुम्हें लंबी छुट्टी पर जाना होगा ।"[4] लेकिन गर्वीली सुमन तीर-सा उत्तर भेजती है -"निश्चिंत रहे, मुझे छुट्टी नहीं लेनी पड़ेगी ।"[5] विरोधी दल का एक विरोधी नेता रणधीरसिंह सुमन का गांभीर्य, तटस्थता और असाधारण प्रतिभा देखकर दंग रह जाता है । "न वह कहीं जाती थी, न किसी से उसकी मैत्री का क्षीण आभास ही वह पा सका था । यह सचमुच ही बड़े आश्चर्य की बात थी कि ऐसी आकर्षक लड़की का कोई पुरुष मित्र था ही नहीं । मीटिंग होती तो वह अपने मातहतों के बीच ऐसे तनकर कुर्सी पर बैठी रहती, जैसे कैबिनेट के मंत्री गणों से घिरी गरिमामयी प्रधानमंत्री हो । कभी भी उसे लजाते, सकुचाते या झेंपते उसने नहीं देखा था ।"[6] एक दिन जब वह स्वयं जीप चलाकर जाती है तब जीप खराब हो जाती है । उस समय रणधीरसिंह वहाँ आता है और सुमन को घर पहुँचाने के बहाने घने जंगल में ले जाकर उसका नारीत्व पर कलंक लगाता है । अगले दिन सुमन को घर पहुँचाता है । उस दिन से अपमानित सुमन की मन:शांति नष्ट हो जाती है । नींद को

---

1. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 29
2. वही - पृ. 29
3. वही - पृ. 29
4. वही - पृ. 38
5. वही - पृ. 38
6. वही - पृ. 27-28

गोलियाँ खाकर सो जाने पर भी स्वप्न में रणधीरसिंह और अपने प्रेम व्यापारों को देखकर वह चौंक पडती है । "और नित्य के उन दुःस्वप्नों की सबसे अविश्वसनीय घटना थी, स्वयं सुमन के स्वभाव के विपरीत निर्लज्ज आचरण । वह बाहें फैलाता तो वह उनमें स्वेच्छा से सिमटने को व्याकुल हो उठती । वह उसका चिबुक स्पर्श करता, तो वह अपने जन्म-जन्मांतर के तृषार्त अधरों की याचना स्पष्ट कर देती । यहाँ तक कि वह विदा मांगकर, जाने को तत्पर होता, तो वह घुटने टेककर, चेरी बन, अपनी दीन-हीन विनती-चिरौरी से उसका मार्ग अवरुद्ध कर देती । हड़बड़ाकर, वह पसीने से तरबर, बिसरे पर बैठी कांपती रहती । छिः छिः, क्या हो गया था उसे । जिस व्यक्ति ने किसी गुहा मानव के- से ही अपने प्रणय-निवेदन से उसे झकझोर दिया था, उसका सर्वनाश करने में जो रंचमात्र भी नहीं झिझका था, उसी के प्रति उसकी छलनामयी अमूर्त चेतना पुष्प के किस परागकण में उसके प्रणय का कीट छिपा रह गया ।"[1]

एक हफ्ते के बाद रणधीरसिंह उसके घर में आता है । सुमन उससे बचने का प्रयत्न करती है । फिर भी एक दिन रात में अपने प्रणयी के सम्मुख वह अपना पराजय स्वीकार करती है । वह संबंध प्रेम संबंध में बदल जाता है और आखिर, वह उससे शादी करती है ।

मन को कामवासना से मुक्त रखना मुश्किल कार्य ही है । अपने मन को घोर नियंत्रण में रखने पर भी मन का सच्चा रूप एक न एक दिन बाहर आता है । सुमन के जीवन में भी ऐसा ही घटित होता है । नारी शरीर और मन की जो विशिष्टता है उसको पूर्ण रूप से अनदेखा करना किसी भी स्त्री के लिए असंभव है । रुका हुआ पानी जैसे बांध को तोडकर तेज़ी से

---

1. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 36-37

बह जाता है उसी तरह नारी की अतृप्त वासना कभी सीमाओं को तोड देती है । ऐसे समय पुरूष केवल एक पुरूष होता है और स्त्री एक स्त्री । यहाँ पद, धन, जात-पाँत आदि का कोई महत्व नहीं रह जाता । लेखिका ने सुमन के चरित्र के माध्यम से यह स्पष्ट किया है । सुमन अफ्सरानी बननेवाली नारियों के प्रतीक है जो जीना भूल जाना चाहती है परंतु भूल नहीं पाती ।

"जोकर" की तिलोत्तमा का जीवन अत्यंत करूणाजनक है । वह राजा सतीशदेव वर्मन की इकलौती सुन्दरी दुलारी राजकन्या है । आकाशवाणी कलकत्ता की बहुचर्चित कलाकार है । वह बचपन से ही गायन में अभूतपूर्व क्षमता रखती है । तिलोत्तमा को रूई के फाहे में धरकर पालने लगता है । लाड-दुलार का यही गरिष्ठ ग्रास उसके आभिजात्य के नील रक्तवर्ण को और प्रगाढ बनाता चला जाता है । जो चाहती, वह न मिलता तो पैर पटक-पटककर आसमान सिर पर उठा लेती । मनचाहा ओढना-पहनना, मनचाही पढाई अर्थात् कभी घर पढाने आई मिशनरी मेम की अकारण ही छुट्टी, कभी असमय मेले जाने की जिद कभी मौसी की ससुराल जाकर कभी घर न लौटने की धमकी । आखिर मेम के प्रस्ताव को स्वीकारकर राजा देववर्मन तिलोत्तमा को पढाने के लिए आश्रम भेजता है । आश्रम के नियमानुसार तिलोत्तमा की पूरी राजसी फौज तत्काल वापस भेज जाती है । आखिर वह वहाँ का वातावरण पसन्द करती है । सचमुच ही उसमें देवदत्त प्रतिभा है । वह गाने के लिए रंगमंच पर आती है तो सब श्रोताओं की साँसें रूक जाती है । इसी बीच बंगाल के सबसे समृद्ध जोतदार स्वयं घुटने टेककर उसका रिश्ता मांगते हैं । विलायत से बैरिस्टरी पास कर आनेवाले प्रशान्त नामक लडके से उसकी शादी होती है । शादी के बाद सास ससुर के लाड दुलार में तिलोत्तमा कुछ मोटी होती जाती है । तब जोर जबरदस्ती कर पति विदेश से कौर्सेट मंगवाकर उसके अनुशासन में पत्नी को जकड

देता है । कभी वह साँस भी नहीं ले पाती । साहस कर उस बन्धन ढीला करने को वह चाहती है लेकिन पति सहमत नहीं होता । तीसरे महीने ही वह जान पाती है कि वह माँ बननेवाली है । तभी सास घबराकर तिलोत्तमा को कौर्सेट के बन्धन से मुक्त कर देती है । तब तक उसकी सोने की लंका जलकर राख हो जाती है । वह एक विकृत रूप के बच्चे को जन्म देती है । जब पुत्र दोनों बाँहें फैलाकर उसकी ओर भागता है तब वह पत्थर हो जाती है । बेटे का विचित्र रूप देखकर उसको कमरे में बन्दी बनाकर रखता है । बेटे के जन्म के बाद दुःखी प्रशान्त पत्नी से बहुत दूर चला जाता है । वह अलग कमरे में रहने लगता है । तिलोत्तमा रोकर कहती है "यह कैसा दण्ड दे रहे हो मुझे । पुत्र के कमरे में भी नहीं सो सकती और पति के कमरे में भी नहीं ।"[1] प्रशान्त अपने पुत्र को तिलोत्तमा को देखने का अवसर भी नहीं देता । जब तिलोत्तमा मायके जाती है तब प्रशान्त बेटे को एक सर्कस कंपनी में भर्ती कराता है । यह जानकर तिलोत्तमा प्राण लेने की दुर्बल चेष्टा करती है । "माँ-बाप को जीवन भर रुला-रुलाकर समग्र संसार को हंसाएगा मेरा बेटा । इससे बडी विडंबना और क्या हो सकती ।"[2] वह झुंझलाहट और विवशता से पागल सी हो जाती है और तभी प्रशान्त अंगुली पकडकर पत्नी को संगीत के दिव्य लोक ले जाता है । उसको ख्याति मिलती है, यश मिलता है । उसको वैभव की कामना नहीं थी, फिर भी लक्ष्मी ज़िद कर उसको कीर्ति को रससिक्त करने लगती है । उसको सब कुछ मिलता है पर बेटा नहीं मिलता । इसी से जहाँ भी सर्कस कंपनी के आने की बात सुनती है वह अपने बेटे को पाने के लिए वहाँ भागती है । वर्षों बाद एक दिन रवीन्द्रालय में संगीतानुष्ठान में वह गायन के लिए जाती है तो वहाँ अपनी पुरानी सखी लेखिका से मिलती है और उसके साथ वहाँ के सर्कस कंपनी में जाती है । उस सर्कस के देखते वक्त तीन जोकरों में से वह अपने बेटे को पहचान लेती है ।

---

1. उपहार - शिवानी - पृ. 142

2. वही - पृ. 144

वह सर्कस मैनेजर के पास जाकर उस जोकर को बुलवाती है और पागलों के समान उस जोकर को गोदी में बिठाकर चूमने लगती है और कहती है "मैं तुझे अभी ले जाऊँगी रे खोका तेरा बाप अब चाहने पर भी कुछ नहीं कह पाएगा - चलेगा न अभी ?"[1] लेकिन मैनेजर लपककर जोकर को छीनकर नीचे उतारता है और कहता है कि यह तिलोत्तमा का बेटा नहीं है सर्कस कंपनी के किसी दंपति का बेटा है । तब तिलोत्तमा कहती है "तुम झूठ बोलते हो । मेरा बेटा है यह दाग, इसकी ठुड्डी पर यह कटे का दाग ? एक बार देहरी पर ठोकर खाकर गिरा था ।"[2] तिलोत्तमा का गला रूँध जाता है और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें उसके कपोलों पर ढुलक आती हैं । लेकिन मैनेजर सहमत नहीं होता । तिलोत्तमा रोने लगती है । तिलोत्तमा को हिस्टिरिकल होते ही लेखिका उसे जबरदस्ती बाहर खींच लाती है । लौट जाने तक वह फिर बिस्तर पर ही चुपचाप ऐसी लेटी रहती है जैसे किसी भयानक दिल के दौरे ने लगभग प्राण ही ले लिए हो ।

मानसिक व्यथा से पीड़ित तिलोत्तमा का अत्यंत करूण चित्रण लेखिका ने प्रस्तुत किया है । अपने खोक से पैदा होनेवाला कितना विरूप क्यों न हो माँ के लिए प्यारा होता है । तिलोत्तमा उस मानवीय दया-भाव का उदाहरण है ।

"जा रे एकाकी" की जेठानी ईर्ष्या, विद्वेष आदि दुर्गुणों से युक्त नारी है । देवरानी के पति की संपत्ति का वैभव और उसका देवरानी का उन्मुक्त प्रदर्शन से जेठानी के मन में ईर्ष्या और विद्वेष उत्पन्न होता है और एक दिन वह देवरानी की हत्या करती है । उसको प्राणदंड की सजा मिलती है

---

1. उपहार - शिवानी - पृ. 146
2. वही - पृ. 147

किन्तु गोद के दूध पीते शिशु को देखकर फाँसी का फँदा खींच लिया जाता है और वह अपने शिशुपुत्र के साथ आजन्म कारावास भुगतने लगती है । छः वर्ष के बाद पुत्र को घर भेजा जाता है और तब से पता चलता है कि देवर की शादी साली से हो गई है । वह देवरानी बड़ी बहन की हत्यारिणी जेठानी के अपराध को बड़े सरल औदार्य से भुलाकर उस बच्चे को बड़े लाड-दुलार से पालती है । सहसा अग्नि गर्भा जेठानी पैरोल पर छूटकर फिर घर पहुँच जाती है । लाख बुलाने पर भी जेल से छूटी माँ के पास पुत्र नहीं जाता । चाची का आंचल पकड़ छिप गए पुत्र को देखकर जेठानी की मज्जा भस्म हो उठती है । जाते समय जेठानी देवरानी को खूब जली-कटी सुनाती है । वह कहती है -"जैसे तेरी बहन को साफ किया ऐसे ही एक दिन आकर तुझे भी साफ कर जाऊँगी, समझी ? खबरदार ये मेरे ननकू को फुसलाया । मैं क्या नहीं समझती कि तू उसे दूध-जलेबी खिला खिलाकर क्यों फुसला रही है ? चुपचाप किसी दिन कत्ल कर देगी उसका ।"[1] यह सुनते ही उसके नन्हे पुत्र स्नेही चाची से कन्नी काट लेता है । चाची का क्रोध उतरता है नन्हे भतीजे पर । जेठानी वापस जेल पहुँची नहीं थी कि बेटे का कत्ल हो जाता है और दोनों को एक साथ एक ही कारागार में आजन्म कारावास का दंड मिलता है ।

स्त्री सहज ईर्ष्या, विद्वेष आदि का चित्रण जेठानी द्वारा लेखिका ने व्यक्त किया है । स्त्री के मन में ईर्ष्या या विद्वेष के जन्म लेने पर वह मानसिक संतुलन खो बैठती है । उस अवस्था में वह क्या करती है यह वह नहीं जानती । क्रूरता का परिचय देनेवाली यह कहानी नारी के अपराध के प्रति आसक्ति दिखाती है । वैसे इस प्रकार के कार्य समाज में अपवाद के रूप में ही दिखाई पड़ते हैं । देवरानी की हत्या का कारण जो दिखाया गया है

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 28

वह अविश्वसनीय है । हत्या जैसे अपराध के लिए इसको प्रेरक माना उचित नहीं लगता । लेखिका कभी-कभी इस प्रकार की कथा बिन्दुओं को चुनकर पाठक को भ्रम में डालती हैं ।

"मरण सागर पारे" की बसंती दीदी अपने वैधव्य जीवन में भी अनाथों का संरक्षण कर, दूसरों की सहायता कर, स्नेह और वात्सल्य की धारा मरण तक बहाती अपने जीवन को पावन बनाती है । देखिए -

एक बार जब उनके आश्रितों में से एक पढ़-लिख, योग्य बन विदेश हो आया और बैरिस्ट बन गया तो बहुत वर्षों बाद लेखिका किसी से उसके अतीत की कहानी सुनकर बसंती दीदी से पूछती हैं - "क्यों, बसंतीदी एक नौकर को तुमने पढ़ा-लिखाकर इतना योग्य बनाया, उसने तुम्हें कभी कुछ भेजा ?"[1] तब बसंती दीदी कहती है -"अरी चल हट, मैं ने क्या उसे इसलिए पढ़ाया था कि वह मुझे कुछ भेजे । पर जब कभी भी आया, कुर्सी देने पर भी नहीं बैठा, खड़ा ही रहा ।"[2] उनका चेहरा कृतज्ञ भृत्य की नम्रता की स्मृति से स्निग्ध हो उठता है । तब लेखिका कहती हैं -"मैं उसकी जगह होती, तो तुम्हें सोने से मढ़ देती ।"[3] तब बसंती दीदी कहती है -"अरी, सोने से तो मैं तब ही मढ़ गई, जब सुना कि वह "बारिस्टर" बन गया । देख, एक बात मेरी गांठ बांध ले - किसी का भला करती है, तो कभी मुँह मत खोल, और न कभी यह आशा रख कि तुझे वह सोने से मढ़ेगा ।"[4]

यहाँ बसंती दीदी दया, ममता, करुणा, स्नेह आदि की प्रतिमूर्ति बनकर हमारे सामने आती है । निस्वार्थ भावना से किसी की सहायता

---

1. रथ्या - शिवानी - पृ. 103
2. वही - पृ. 103
3. वही - पृ. 103
4. वही - पृ. 104

करना सबसे श्रेष्ठ कर्म है । बदले में कोई चीज़ की प्रतीक्षा किये बिना जो कर्म किया जाता है वह निष्काम कर्म होता है । बसन्ती दीदी अपने नौकर को बारिस्टर बनाकर इस निष्काम कर्म का परिचय देती है ।

'गूँगा' की कृष्णा सर्जन की एकमात्र कन्या है । "रंग था गेहुँआ, पर मुखश्री अनुपम थी, सघन कृष्ण वेणी को वह ढीली-ढाली गूँथकर पीठ पर डाल देती । माँ को पिता के स्नेह ने कभी खटकने नहीं दिया था । देखरेख की लगाम तो नहीं थी, पर पिता का शासन कड़ा था ।"[1] कृष्णा पढ़ाई के साथ संगीत और नृत्य की शिक्षा प्राप्त करती है । पैरों में घुँघरी बाँधते ही वह स्वर्ग की अप्सरा बन जाती है । बड़े-से-बड़ा कला-मर्मज्ञ हो या नृत्य संगीत से एकदम ही अनभिज्ञ कोई अरसिक, सब उसके नृत्य को रस-माधुरी में डूबकर रह जाते हैं यही उसके नृत्य की विशेषता है । वह डीसूजा को चाहती है उससे प्रेम करती है । इसलिए जब पिता कृष्णा से शादी की बात कहता है तब कृष्णा कहती है -"आपको मेरे लिए वर नहीं ढूँढना होगा - मैं ने वर ढूँढ लिया है ।"[2] पिता पूछता है "क्या बात कर रही है पागली, कैसा वर ?"[3] कृष्णा कहती है "हाँ पापा, मैं विकी {डिसूज़ा} से ही ब्याह करूँगी ।"[4] कृष्णा को पिता के कठोर शासन में रहना पड़ता है । किन्तु इन सबको धोखा देकर कृष्णा और डिसूजा लुक-छिपकर मिलते हैं और पिता के आने के पहले वे दोनों सेटपाले के बूढे पादरी की खुशामद कर शादी कर लेते हैं । तीसरे दिन डिसूजा चला जाता है लेकिन एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो जाती है । कृष्णा दुःख में पड जाती है और पिता से शादी की बात करती है । साथ ही माँ बनने की बात भी । डॉक्टर अपने पुराने मरीज़ एक बडे महिला आश्रम की संचालिका काशीबाई के पास जाकर उसकी सहायता से पुत्र का जन्म

---

1. चिर स्वयंवरा - शिवानी - पृ. 47
2. वही - पृ. 49
3. वही - पृ. 49
4. वही - पृ. 49

होते ही चार महीने बाद पुत्री को लेकर घर लौट आता है और कृष्णा की शादी दूसरे युवक से कराता है । वह एक पुत्र की माता भी बनती है । किन्तु अभी भी उसके सौंदर्य में वही अल्हड़-सा भोलापन है । वह नृत्य का निरन्तर अभ्यास करती है । उसके ओडिसी और भरतनाट्यम की ख्याति राजधानी तक पहुँचती है और महारानी के स्वागत-समारोह में उसे आग्रहपूर्वक आमंत्रित किया जाता है । लौट आते समय वह आश्रम देखती है और मन विगलित होने लगता है । जब घर से पति बाहर जाता है उस समय वह आश्रम जाकर अपने बेटे से मिलती है और उसको खिलाडियाँ देकर और चूम-चूम कर दुःखी मन से लौट आती है । उस गूँगे पुत्र की स्मृति उसके मन में बीच-बीच में आकर उसको दुःखी बनाती है ।

कृष्णा का व्यक्तित्व अटल है वह किसी के सामने झुकना नहीं चाहती । किसी भी हालत में वह अपनी इच्छाओं का तिरस्कार सहन नहीं कर सकती । आधुनिक नारी के एक और रूप को वह प्रस्तुत करती है ।

"चिरस्वयंवरा" की रजनी दी प्राध्यापिका है, अविवाहिता है । अट्ठाईस वर्ष में ही रजनी दी चालीस की लगने लगती है । दाँत ऐसे हो गये थे कि तेज हवा का झोंका भी इन्हें इधर-उधर हिलाने लगता है । एक बार लेखिका दाँत विशेषज्ञ से उन्हें नया डंचर बनवाती है । उसे लगाते ही रजनी दी का चेहरा एकदम बदल जाता है । उससे भी छोटी उम्रवाला डॉ॰प्रद्युम्न रजनी दी की काली केशराशि और दाँत को देखकर रजनी दी से आकर्षित हो जाता है और दोनों प्रेमसंबंध में डूब जाते हैं । रजनी दी का कथन देखिए - "सच कह रही हूँ, अनजाने में ठोकर खाकर गिर रही थी, तुम सबकी रजनी दी, विधाता ने बाँह पकड़कर उबार लिया प्रेम ने मुझे अंधी बना दिया था बच्ची ।"[1]

---

1. चिरस्वयंवरा - शिवानी - पृ. 13

वे दोनों विवाह करने का निश्चय करते हैं । तिथि भी निश्चित करते हैं । उसके पहले एक दिन वे घूमने का निश्चय करते हैं । तैयारी करते समय रजनी दी डेंचर साफ करती है तब डेंचर हाथ से फिसलकर चकनाचूर हो जाता है । उस समय प्रद्युम्न उसे लेने के लिए वहाँ आता है । दंतविहीन रमा दी को देखकर प्रद्युम्न का चेहरा फक पड जाता है । वह एक शब्द भी नहीं बोलता है तब रजनी दी कहती है - "प्रद्युम्न ; जिस दंतपंक्ति को देखकर तुम मुग्ध हुए थे, वह मरीचिका मात्र थी । मेरे बाल भी सफेद है, प्रद्युम्न । इसी अप्रैल में मैं पूरे पच्चास वर्ष की हो जाऊँगी । मेरी अंगुलियाँ गठिया से टेढ़ी है । मेरी कमर में हमेशा दर्द रहता है । मेरी छात्राओं में से अधिकांश दादी-नानी बन चुकी है.... और...."[1] यह कहकर रजनी दी रोने के बदले ज़ोर से हँसने लगती है । चेष्टा करने पर भी वह अपनी हँसी नहीं रोक पाती । फिर उसकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं । पेट में बल पड जाता है । जब वह पागलपन के दौरे से अधमरी होकर चैतन्य होती है तो समझ जाती है कि प्रद्युम्न उसे छोडकर चला गया है ।

इस कहानी में रजनी दी का चरित्र बहुत ही सहानुभूतिजनक बनता है । उम्र के बीत जाने पर, यौवन के ढल जाने पर स्त्री को कोई नहीं चाहता । उस उम्र में विवाह की कल्पना करना भी नारी के लिए त्रासजनक है । ऐसी हालत में सत्य को छिपाकर पल दो पल की खुशियों के लिए की जानेवाली कोशिश कभी सफल नहीं हो पाती । इसी का त्रासदायक अंत इस पात्र को असाधारण बना देता है ।

"शपथ" की नायिका शुभ्रा में साधारण कन्याओं के जीवन में होनेवाली एक भूल होती है । वह विवाह के पूर्व गर्भवती हो जाती है लेकिन

---

1. चिरस्वयंवरा - शिवानी - पृ. 15-16

दूसरे लोग यह न जानने के लिए सन्निपात ज्वर के नाम पर मौसी के पास जाकर वहाँ वह समय से पूर्व ही बच्चे को जन्म देती है । उसके बाद विवाह के समय जब भाभी उससे मुख के पीलेपन के बारे में पूछती है तब शुभ्रा झूठ बोलती है कि उसको सन्निपात ज्वर था । यहाँ शुभ्रा अपने को कलंकित मानकर यह घटना किसी से कहे बिना अपने ही अन्दर छिपा रखती है । आखिर एक दिन शुभ्रा अपनी गलती को शिवलिंग को साक्षी बनाकर कालिन्दी भाभी के सामने कहकर पाप स्वीकार करती है -"ठीक कह रही हूँ भाभी, आपको याद होगा, विवाह से सात माहपूर्व मैं अचानक मौसी के पास बरेली चली गयी थी................ मौसी मिशन अस्पताल में डाक्टरनी थीं और मेरे पीले चेहरे के पीलेपन में कुछ मामी-भभियों द्वारा पोती गई हल्दी का कला कौशल था ।"[1] कालिन्दी भाभी को जब पता चलता है कि शुभ्रा के बच्चे के पिता अपना पति है तब वह असीम पीडा का अनुभव करती है । अंत में जब कालिन्दी भाभी की मृत्यु होती है तब शुभ्रा को ऐसा लगा कि उसके कारण ही भाभी की मृत्यु हुई तब उसकी मानसिक स्थिति शिथिल हो जाती है । यहाँ अपराध पाप से तडपनेवाली शुभ्रा के मानसिक द्वन्द्व का चित्रण किया गया है ।

यहाँ लेखिका ने एक उच्च कुल की नारी में होनेवाली गलती और उसके बाद की मानसिक संत्रास को शुभ्रा के द्वारा हमारे सामने व्यक्त किया है । शारीरिक सुख की कामना में नारी की ज़िन्दगी को उजाडना पुरुष के लिए चाहे खेल हो सकता है परंतु स्त्री के लिए वह अभिशाप है ।

"चाँद की मानवी अपने पति पर और नौकरानी पर अतिविश्वास के कारण छली जाती है । मानवी पिता की मुँहलगी इकलौती

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 119

सन्तान थी । मातृहीना पुत्री को साहबी शिक्षा दिलाकर जब साहब ने भावी जामाता जैसे सुनहले सपने देखे थे, उन्हें स्वयं चूर-चूरकर मानवी स्वेच्छा से ही विधुर प्रौढ़ जे. के के कण्ठ में वरमाला डालती है । जिस व्यक्ति के कठोर व्यक्तित्व पर वह रीझी थी, वही धीरे-धीरे उसके लिए अभिशाप बन बैठता है । वह अपने पति से भी अधिक ज्ञानी थी और सभी दिन दोनों के बीच झगडा चल रहा था । शिक्षित होने पर भी वह अपने पति की प्रथम पत्नी के प्रेत के उपद्रव से बचने का निमित्त पूजा आदि अनाचार भी करती है और एक वेश्या को अपने घर मे काम के लिए रखती है । उसे अपने पति पर इतना विश्वास था कि वह अन्य स्त्री के जाल में कभी नहीं फसेगा । इस विश्वास के कारण जब मानो अपने पिता की शुश्रूषा के लिए विदेश जाती है तब वह चाँद को अपने घर संभालने का काम सौंप देती है लेकिन महीनों के बाद वह लौटती है तब अपने पति और चाँद के अविहित संबंध वह जान पाती है और वह उसी रात पति को छोडकर विदेश चली जाती है ।

मानवी का चरित्र एक ओर विश्वास और भोलेपन से भरपूर है तो दूसरी ओर आत्मविश्वास से भी सजा हुआ है । अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए ही वह विधुर से विवाह करती है और पति दूसरे स्त्री के साथ संबंध जोडने पर वह हमेशा के लिए पति को छोड चली जाती है । नारी के चरित्र के दो पहलू इसमें प्रतिबिंबित होते हैं । एक ओर भोलापन है तो दूसरी ओर आत्मविश्वास का मन ।

शिवानी की कहानियों में इतने अधिक स्त्री पात्र हैं कि उनका वर्गीकरण किसी निश्चित नियम के आधार पर नहीं किया जा सकता । वर्ग के अंतर आनेवाले पात्रों के साथ-साथ वर्ग के बाहर रहनेवाली नारियों का चित्रण भी शिवानी ने प्रस्तुत किया है । ये महिलाएँ एक सीमा तक अपनी

अस्मिता की खोज करनेवाली हैं । व्यक्तित्व की विशिष्टता को बनाए रखनेवाले महिला पात्र अपने असाधारण कारनामों से हमारे ध्यान को आकर्षित करती हैं । उदाहरण के लिए माई, तिलोत्तमा, सुमन, ताहिरा आदि पात्र अलग-अलग भूमिकाएँ अदा करती हैं । उनकी चारित्रिकता भी एक दूसरे से भिन्न है । पारिवारिक और सामाजिक पृष्ठभूमि भी अलग-अलग है । अतः इन पात्रों की प्रतिक्रियाएँ भी साधारण से भिन्न हैं । शिवानी के इन स्त्री पात्रों को समझने के लिए समीक्षक को विशेष दृष्टिकोण को भी स्वीकारना पडता है तभी उनके साथ न्याय किया जा सकता है । ये नारी पात्र बहुत कुछ सहते हैं, भोली-भाली हैं, आत्मविश्वास पर निर्भर करते हैं, आत्मसम्मान को महत्त्व देते हैं और ज़रूरत पडने पर प्रतिशोध भी करते हैं । दूसरे शब्दों में नारी के समस्त व्यक्तित्व के अनेक पहलू इनमें दृष्टिगत होता है । इस दृष्टि से अलग-अलग व्यक्तित्व रखनेवाली इन महिलाओं को समझना और परखना शिवानी की कहानियों की अंतरदृष्टि को समझना और परखना है ।

भारतीय परंपरा के अनुसार नारी को शक्ति माना गया है । नारी का स्थान वैसे परंपरागत रूप में सर्वोच्च स्वीकारा गया है । परंतु व्यावहारिक दृष्टि से देखने पर सभी दृष्टियों से उपेक्षिता होती गई है । शोषण, उत्पीडन, बलात्कार और दमन आदि की शिकार बनकर उसको जीवन बिताना पड रहा है । अशिक्षित नारी पर किये जानेवाले ये अत्याचार शिक्षित नारी को भी सहने पडते हैं । शिक्षित नारी उसकी प्रतिक्रिया जल्दी ज़ाहिर करती है । शिवानी के स्त्री पात्रों की मानसिकता का विश्लेषण करते समय पता चलता है कि शिवानी ने अपने पात्रों को सभी वर्गों से, सभी परिस्थितियों से चुना है । ये पात्र वर्ग के प्रतिनिधि होते हुए भी व्यक्ति के अंधे के पहलुओं के भी प्रतीक हैं । समूचा समाज जब स्त्री के प्रति न्याय नहीं कर पाता तब आक्रोश और प्रतिसंहार का भी बोध अपनाती हुई आगे बढने के लिए ये प्रतिबद्ध हो जाती हैं ।

समूची कहानियों में आनेवाले नारी पात्र आज के यथार्थ से पूरी तरह कहीं-कहीं जुडती हैं तो कहीं-कहीं अलग खडी होती हैं । यथार्थ के कालानुगत पहलू को लेखिका ने उच्च और निम्नवर्गों के दायरों के अंतर खडे होकर देखा है । इस कारण अशिक्षित नारी की मनोवृत्ति और शिक्षित नारी की मनोवृत्ति थोडी बहुत भिन्नता रखती है फिर भी नारीत्व के समूचे सवाल के सामने उनके जवाब एक जैसे ही है ।

दूसरे शब्दों में शिवानी ने इन महिलाओं को और उनकी मनोव्यथाओं को और उनकी प्रतिक्रियाओं को बडी ही सूक्ष्मता से देखने का प्रयास किया है । यद्यपि घटनाओं के विधान में और चयन में अंतर दिखाई पडता है फिर भी सत्य की रूप रेखा को प्रस्तुत करने की कोशिश में शिवानी ~~की लेखनी~~ की लेखनी असफल नहीं होती । वैसे शिवानी के नारी पात्र गाँवों से और शहरों से आनेवाले हैं । गाँवों की ज़िन्दगी को प्रस्तुत करते समय पीडा की शिकार बननेवाली नारियाँ और उनके प्रति पति और ससुर द्वारा किये जानेवाले अत्याचार किसी भी व्यक्ति के हृदय पर चोट करनेवाले हैं । इन बेज़ुबान नारियों की कहानी शिवानी की कथ्यात्मकता का मुख्य अंग बन जाती है । उधर शहर की नारियों के साथ जो अत्याचार होता है उसी को भी लेखिका ने नहीं छिपाया है । इनके साथ-साथ नारी की स्वतंत्र मनोवृत्ति, उसकी अहंवादिता, अस्मिता की तलाश, आक्रोश, प्रतिहिंसा का भाव आदि भी कहानियों को नारी को अत्यधिक जीवन्त बना देता है । इस दृष्टि से शिवानी के नारी पात्र सफल हुए हैं ।

अध्याय - 4

पुरुष पात्रों की मानसिकता

शिवानी के पुरुष पात्र साधारण से अलग दृष्टिकोण को अपनानेवाले लगते हैं । पुरुष की आम मनोवृत्ति के अतिरिक्त उसके असहिष्णुता के भी पहलू कहानियों में उभारे गये हैं । ये पुरुष अधिकतर स्त्रियों के प्रति अत्याचार करनेवाले लगते हैं । शिवानी के पुरुष पात्र स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकारने में असमर्थ हैं । परंपरागत रूढ़िवादी दृष्टि को अपनानेवाले ये पुरुष पात्र आधुनिक परिवेश में अप्रासंगिक होते हुए भी उनकी क्रूरता का अवश्य परिचय देते हैं । कहानियों में बहुत ही कम ऐसे पुरुष पात्र होते हैं जो नारी के प्रति स्नेह, श्रद्धा और करुणा का भाव रखते हैं । एक तरह से पुरुषों का चरित्र चित्रण असंतुलित-सा लगता है । लेखिका ने इस दृष्टि से पुरुषों के प्रति अन्याय किया है क्योंकि समाज के सारे पुरुष न तो क्रूर होते हैं, न दयाहीन और न ही प्रेमहीन ।

पुरुषों की कायरता और असंतुलित मनोवृत्ति

पुरुषों की कायरता को शिवानी ने परंपरा और परिवार के परिप्रेक्ष्य में आंकने का प्रयास किया है । संयुक्त परिवार में जीनेवाले, माँ-बाप के आदेशों का पालन करनेवाले, पत्नी के व्यक्तित्व को नकारनेवाले कई पात्रों का परिचय शिवानी ने दिया है ।

"अनाथ" शीर्षक कहानी का बेनर्जी साधारण युवकों की भाँति रेनी के सौंदर्य पर आकृष्ट होकर उससे विवाह करता है लेकिन पिता के

कहने पर वह उसे छोडकर चला जाता है । उसके प्रेम में पवित्रता नहीं है । बाद में वह दूसरा विवाह करके आंडबरपूर्ण जीवन बिताता है ।

बेनर्जी के प्रेम में कोई एकनिष्ठता नहीं है । उसके मन में दया नामक कोई चीज़ भी नहीं है । आज के समाज में ऐसे स्वार्थी पुरुष कहीं भी देखे जा सकते हैं । बेनर्जी का अपना व्यक्तित्व नहीं है । पिता के कहने पर अपनी पत्नी को छोडनेवाला उसका स्थिर मन नहीं है । सौंदर्य पर आधारित प्रेम का बना रहना भी मुश्किल कार्य है और वह प्रेम सफल नहीं होता ।

"मास्टरनी" का डॉ. सुबोध मेडिकल कॉलेज में सुन्दर लडकियों के सान्निध्य में सात वर्ष बिताकर निकलने पर भी किसी लडकी के मोहपाश में नहीं पडता, क्योंकि सुबोध अपने पिता के दबंग स्वभाव को जानता था । उसका पिता मध्यवर्गीय एकाउण्टेण्ट है । नौकरी सामान्य होने पर भी महत्वाकांक्षा गगन चूमती है । वह संपत्ति के मोह में पुत्र की शादी अपनी बहू की बहन से करने का निश्चय करता है । सुबोध अपनी भावी पत्नी के स्वप्न में खो जाता है । ऐसे अवसर पर एक दिन सुबोध को एक मास्टरनी राजेश्वरी की चिकित्सा के लिए उसके पास जाना पडता है । आखिर सुबोध उससे प्रेम करता है, दोनों रोज़ अवैध संबंध जोडते रहते हैं । एक दिन अचानक उसे अपने पिता का पत्र मिलता है कि शादी के लिए जल्दी आ जाना । पत्र पाकर वह मास्टरनी से अपनी विवशता के बारे में कहकर उसे छोडकर दूसरे ही दिन सुबोध सामान बटोरकर चला जाता है । बडी धूम से विवाह होता है । समृद्ध ससुर पुत्र और जामाता को हनीमून के लिए कश्मीर भेज देता है । कभी-कभी हनीमून के

मधुर क्षणों में भी राजेश्वरी की याद उसके मन में आती है, तब वह व्याकुल हो उठता है, उसकी याद में खो जाता है, पर दूसरे ही क्षण पार्श्व में लेटी नई नवेली उसे खींचकर लिटा देती है । अब वह नई फियट में घूमता, नये फ्रिज का ठण्डा पानी पीता और नई पत्नी के पीछे-पीछे हाथ बाँध घूमता रहता है । विवाह के एक वर्ष बाद उसे मामा के पुत्र के विवाह में नैनीताल में जाना पडता है । गाडी में बैठकर सामने की सीट पर दृष्टि डालता है तो राजेश्वरी अपनी परिचित मुद्रा में बैठी थी । अपनी पुरानी प्रेमिका के देखते ही वह गाडी से उतरकर चला जाता है ।

युवावस्था में मन को कितने संयम से दबाकर रखने पर भी एक न एक दिन नियंत्रण टूट जाता है । यह सुबोध द्वारा लेखिका ने व्यक्त किया है । यहाँ सुबोध एक कायर पुरुष के रूप में आता है । कुछ पुरुष ऐसे होते हैं जो स्वभाव से कायर होते हैं और अंदर से स्वार्थी । ये पुरुष मौके का फायदा उठाते हैं, फैसलों को टाल देते हैं और किसी न किसी प्रकार पाबन्दियों से बचकर निकल जाते हैं । वैसे जीवन की सफलता इनका लक्ष्य होता है । इसे पाने के लिए अपने नैतिक आस्थाओं को भी वे तोड देते हैं ।

"गजदन्त" का डॉ. गिरीन्द्र अपनी सुन्दरी मरीज़ के सौंदर्य में डूबकर उससे प्रेम करता है लेकिन अपने आप एक निर्णय लेने में असमर्थ हो जाता है । जब माँ संपत्ति के लोभ में एक अतिविरूपवाली लडकी से शादी करने को कहती है तब वह निम्मी को छोडकर उस कुरूप लडकी से शादी करता है । संपत्ति के सामने वह निम्मी के निष्कलंक प्रेम और सौंदर्य को भूल जाता है । उसका अपना

कोई व्यक्तित्व नहीं है । माँ के कहने पर अपनी प्रेमिका को छोड देना और संपत्ति के ही मोह में कुरूप लडकी से शादी करना उसका कायर ढोंगी व्यक्तित्व की ओर संकेत करते हैं ।

"दंड" का डॉक्टर एक विचित्र स्वभाववाला है । वह अपनी पढाई के दिन में एक गाँव की लडकी चन्दमनी से अविहित संबंध स्थापित करता है । जब उसे पता चलता है कि वह गर्भवती हो गयी है तब उस लडकी को छोडकर उसके पिता को उस लडकी की शादी के लिए पैसा देकर जल्दी उसकी शादी करने को कहकर भाग जाता है और तीसरे ही महीने डॉ॰ सिंह पिता को अपने विवाह की स्वीकृति देता है । अपने वैभव और प्रभुता के मद मे अंधा बना वह जान-बूझकर ही अतीत को सशक्त भुजाओं से पीछे ढकेलता रहता है । इसी बीच ब्रस्ट कैंसर से डाक्टर की पत्नी की मृत्यु होती है । लेकिन वह पिता के लाख कहने पर भी विवाह नहीं करता । अपनी अधूरी डाक्टरी पूरा कर वह कुछ दिनों विदेश में ही बसता है । फिर स्वदेश लौटकर दिल्ली में ही अपना क्लिनिक खोलता है । वहाँ उसके पास समृद्ध गृहों की सुन्दरी किशोरियाँ स्वेच्छा से नकली रोगों का वरण कर आने लगती हैं और डाक्टर भी उनके साथ मन बहलाव के लिए रसिकता का परिचय देता है । इसी बीच उसके पुत्र की मृत्यु होती है । इस गहरे चोट को वह सह नहीं पाता । इस घटना के बाद वह पुरानी प्रेमिका की खोज में गाँव जाता है । संयोगवश जब वह गाँव पहुँचता है तो देखता है कि चन्दमनी से जन्मा हुआ पुत्र भी दम तोड रहा है । अपनी मानसिक अवस्था खोकर वह भेड-बकरियों की गाडी में घुस जाता है ।

यहाँ यौवन की उन्मत्तता में अंधा होकर आगे बढ़नेवाला डाक्टर अंत में मानसिक संतुलन खो बैठता है । यह स्वाभाविक ही है ।

यौवनकाल में अनैतिक जीवन बितानेवाले नारी पुरुष कहीं न कहीं दंड के शिकार बनते हैं । यह दंड नियति के द्वारा दिया जाता है ।

"गहरी नींद" का विधुर पुलिस अफसर रवीन्द्र पण्डित एक आश्रम की संचालिका उमा से विवाह करता है । वह क्रूर स्वभाववाला है, पीना उसका स्वभाव था, हृदयहीनता उसके रक्तमांस में बस गई थी । कोई ऐसा दुर्व्यसन नहीं था जो उसे नहीं हो, घूस लेने में कोई पार नहीं पा सकता था । बड़े-बड़े नेताओं, विद्रोही दल के कीमती यजमानों का वह एकमात्र पुरोहित था । तीसरी पत्नी उमा पर पहले तो वह भूखे व्याघ्र की भाँति टूट पड़ा, धीरे-धीरे वह भी बासी लगने लगी । "कोई बात न होती तो आज तक कुंआरी कैसे रहती ?" पूछकर कई बार छल-बल से अपनी सुन्दरी पत्नी के विगत जीवन का परदा उठाकर झांकने की चेष्टा भी करता है । आखिर एक दिन आश्रम की एक अख्तरी नामक लड़की जो घर में ही रहती थी उससे उमा के बाहर जाने पर वह अवैध संबंध जोड़ता है -"अख्तरी उसके पलंग पर उसके पति के पार्श्व का आसन ग्रहण कर न जाने कब से सोती आ रही थी । पति की किंग-कांग सी बाँहें पलंग से नीचे झूल रही थीं । वह नशे की बेहोशी में पूरी तरह डूबा नहीं था, लड़खड़ाती ज़बान से अपने जघन्य अपराध के लिए "सॉरी" कहकर वह करवट बदल सो गया ।"[1] पत्नी यह देखकर आत्महत्या करती है ।

कामी पुरुष वासनापूर्ण हर कार्य को साधारण दृष्टि से देखता है । उसके लिए पत्नी का कोई अस्तित्व नहीं होता । पत्नी के होते हुए

---

1. चिरस्वयंवरा - शिवानी - पृ. 92

दूसरी औरतों से संबंध जोडना एक साधारण कार्य लगता है । इस पुरुष पात्र का पत्नी के प्रति व्यवहार क्रूरतापूर्ण है । वह उसे मानवीय दृष्टि से देखता तक नहीं । लेखिका ने ऐसे पुरुषों का परिचय देकर स्त्रियों को सावधान किया है ।

"के" कहानी का शेखर मुंशीजी का पुत्र है । उसके पिता रोगी हैं । उसकी परिस्थितियाँ भी बहुत कठिन हैं । इसलिए पिता शेखर को डॉक्टरनी के के पास उसको छोटा भाई समझ कर उसका भार संभालने के लिए भेजता है । आखिर शेखर डाक्टरनी के का पति बन जाता है । वह पत्नी के लिए भोजन बनाता है, कार में उसे ले चलता है, पत्नी के इष्टानुसार सब कार्य करता है, इसके साथ रिसर्च भी कर रहा है । लेकिन जब डाक्टरनी रायज़ादा साहब की डिलिवरी के लिए गोरखपुर जाती है तब पडोसिन किशोरी शेखर को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश करती है । लेकिन शेखर उससे बचने के लिए मित्र रमण के साथ बोर्डिंग में दिन-भर रहने के लिए सोचता है और उसके लिए तैयारी करता है । लेकिन किशोरी उस समय वहाँ आती है और शेखर उस नारी के जाल में फँस जाता है, उसके साथ घूमने के लिए भी निकलता है, आखिर किशोरी के बिना रहना असह्य लगता है । जब अपनी पत्नी लौट आती है तब वह उससे नाखुश रहता है । जब प्रेमिका किशोरी की मृत्यु होती है तब वह उसकी हत्यारिणी अपनी पत्नी को मारता है, पीटता है और उसका संपूर्ण क्रोध उस पर प्रकट करने के बाद उसको धक्का देकर अर्धमूर्च्छित अपनी पत्नी को छोडकर चला जाता है ।

पहले अपने से अधिक उम्रवाली पत्नी से वह बहुत अधिक प्यार करता था, लेकिन आखिर वह साधारण पुरुष की ही भाँति अन्य युवती

के जाल में फँस जाता है । प्रेम में मानव अंधा हो जाता है । यही स्थिति यहाँ भी आती है । शेखर किशोरी से मिलने के बाद अपनी पत्नी के प्रति नफ़रत की भावना दिखाता है । वह उस समय अपनी पत्नी की करूणापूर्ण व्यवहार को भूल जाता है । यहाँ परिस्थितिवश शेखर को अपने से अधिक उम्रवाली स्त्री से विवाह करना पडता है, लेकिन अनमेल विवाह में दांपत्य का संतोष बनाए रखना मुश्किल कार्य है । शेखर का अपने से छोटी उम्रवाली किशोरी की ओर प्रेम पैदा होना स्वाभाविक ही है । शेखर अविहित प्रेम में इतना डूब जाता है कि वह अपनी स्नेहमयी पत्नी को भूल जाता है, उसका शत्रु बन जाता है । अपनी प्रेयसी की मृत्यु वह सह नहीं सकता और उससे कुपित होकर हत्यारिणी पत्नी को पीटता है ।

"सौत" कहानी में नीरा का पति अपनी सीधी-सादी पत्नी को छोडकर विवाहिता राज्यम के साथ भाग जाता है । नीरा का पति भी विचित्र मानसिकता रखनेवाला आदमी है । अपनी स्नेहमयी पत्नी के रहने पर भी विवाहिता राज्यम के साथ भाग जाना अस्थिर चित्त की ओर संकेत करता है ।

"शायद" कहानी के कुसुम के पिता जल्लाद पाण्डे का चरित्र एक और उदाहरण प्रस्तुत करता है । वे अपनी पत्नी के साथ बहुत दुर्व्यवहार करते हैं । उनकी क्रूरता को सह न पाने के कारण वह बेचारी चल बसती है ।

"बिट्टो, अपनी हरामजादी अम्मा से कह हुक्का भर लाए ।" "बिट्टो, क्या आज तेरी नानी को श्मशान घाट ले गए हैं, जो अब तक चूल्हा नहीं जला ?"[1]

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 148

जेल जीवन के अभ्यस्त जेलर पाण्डे अब सारे दिन अपनी पत्नी और बच्ची के पीछे पड़े रहते थे, "जिस कर्कश जिह्वा के चाबुक कई कैदियों की पीठ पर पड़कर उन्हें तिलमिला देते थे, अब एक ही निरीह पीठ पर दिन-रात ताबड़ तोड़ पड़ते, उसकी चमड़ी उधेड़ने लगे ।"[1] इसके अतिरिक्त अपनी मुँह बोली भाभी और सगी साली से उनके रहस्यात्मक संबंध भी उनकी पत्नी की अकाल मृत्यु में सहायक बने । इतना ही नहीं वे अपनी बेटी के प्रेम संबंध के बारे में जानकर बेटी को कारागृह का ही दण्ड देते हैं और दूसरे युवक से शादी कराते हैं ।

यहाँ वे एक पत्थर के समान कठोर हृदयवाले के रूप में हमारे सामने आते हैं । अविहित संबंध करनेवाले उनकी मानसिकता अपनी बेटी के प्रेम-विवाह को मानने के लिए तैयार नहीं होती । वे एक स्वार्थी और क्रूर पुरुष हैं ।

"छिः मम्मी, तुम गंदी हो" का पति रत्नपारखी आजन्म कुंआरा रहने की दर्पपूर्ण मूर्ख घोषणा करता है और कुंआरा जीवन बिताता है । लेकिन अपने अड़तालीस उम्र में वह अपने छोटे भाई के लिए कन्यारत्न देखने जाता है और देखते ही चुन लेता है, किन्तु अपने छोटे भाई के लिए नहीं स्वयं अपने लिए । लड़की उसे पसंद नहीं करती फिर भी विवाह होता है । वह अपनी भोली नवेली के लिए आकाश के चाँद-सितारे तोड़ लाने को व्याकुल हो उठता है किन्तु प्रेमकला में पटु प्रणयी पति का एक और रूप भी था, कठोर प्रस्तर

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 148

हृदय एवं निर्मम । उसकी पत्नी किसी दूसरे पुरुष से, चाहे वह उसीका छोटा भाई क्यों न हो, हँसती बोलती, तो वह मुँह फुला लेता है । कभी देवर-भाभी की निष्कपट ठिठोली भी उसे सिर से पैर तक सुलगा देती । धीरे-धीरे ईर्ष्यालु पति के शक्की स्वभाव प्रेम की जड़ को कुतरना आरंभ कर देता है । पत्नी से वह दिन रात झगडा करता है, उसे मारता है, पीटता है । आखिर विवश होकर पत्नी अपने ट्यूषन छात्र से प्रेम करती है । पत्नी और प्रेमी के द्वारा उसकी मृत्यु होती है ।

पुरुष का संयम और अपने ऊपर अधिकार रखने की इच्छा कभी-भी टूट सकती है । सुन्दर स्त्री को देखकर ब्रह्मचर्य का व्रत टूट जाता है परन्तु पुरुष में यदि ईर्ष्या का भाव प्रबल हो जाता है तो उसका दाम्पत्य जीवन असफल हो जाता है । पत्नी को शंका की दृष्टि से देखना और उस पर अविश्वास करना कई पुरुषों के स्वभाव है । ऐसे पुरुष अपने पारिवारिक जीवन को सफल नहीं बना पाते, बदले अपनी पत्नी के प्रति भी क्रूर व्यवहार करते हैं । पुरुष के इस विशेष स्वभाव की सशक्त अभिव्यक्ति करनेवाला पात्र है रत्नपारखी ।

"बंद घडी" का गिरीशचन्द्र शर्मा अपने विभाग का सबसे सम्मानित एवं ख्यातिप्राप्त इंजीनियर है । दुर्गम पहाडों के वक्ष चीरकर नयी-नयी मोटर रोड बनाने का भार इसीसे उसे सौंपा जाता है किन्तु कोहे का पुल और बडे-बडे पहाड डायनामइट से उडाकर चौडी सुगम सडक बनाने की प्रणाली वह अपने व्यक्तिगत जीवन में भी खींचकर लाना चाहता है । वह कठोर अनुशासनवाला व्यक्ति था । इसी से वह दौरे पर जाता तो घर में शाहनाइयाँ बजने लगतीं । निरंकुश स्वेच्छाचारी सम्राट की भाँति गिरीश शासन की

बागडोर अव्यवस्था के भय से और कडा कर देता है । इसी से पत्नी आत्महत्या करने तक सोचती है ।

कठोर अनुशासनवाले पुरुषों की कमी समाज में नहीं है । ये पुरुष अपने अन्दर विशेष दृष्टि रखनेवाले होते हैं । अपने व्यवहार से वे कठोर व्यवस्था को बनाए रखने की इच्छुक होते हैं । अपने आश्रितों की आज़ादी और उनकी खुशी ऐसे पुरुषों के लिए निरर्थक वस्तु है । जीवन की सफलता उनके लिए धन प्राप्ति तक सीमित हो जाती है ।

"मणिमाला की हँसी" का दीनबन्धु उस पुरुष पात्र का प्रतीक है जो अपने सुख और शांति के लिए किसी भी हद तक अपराध कर सकता है । हेडमास्टर की दी गयी ज़िन्दगी को और उनकी कृपा को वह भुला देता है । पगली पत्नी को छोडकर नयी ज़िन्दगी बितानेवाला दीनबंधु पुरुष के स्वार्थ मनोवृत्ति का परिचय देता है । अंत में पगली पत्नी स्वस्थ बनकर जब लौटती है तब उसे पहाडी से गिराकर मार डालता है ।शांति और चैन को बनाये रखने के लिए किया जानेवाला यह अपराध उसके लिए अशांत का अध्याय बन जाता है । पुरुष कभी-कभी विवेकहीन व्यवहार से अपनी बरबादी खुद करता है और दूसरों को भी बरबाद कर देता है ।

उपर्युक्त कहानियों में आनेवाले पुरुष पात्र कई दृष्टियों से कायर और असंतुलित मनोवृत्ति रखनेवाले हैं । माँ-बाप की बात को अस्वीकार करने में वे असमर्थ हैं तो दूसरी ओर अपनी विवाहिता पत्नियों के प्रति या

अपने द्वारा शिकार बनायी गयी स्त्रियों के प्रति अत्यंत अमानवीय व्यवहार करते हैं । समाज में ऐसे पुरुषों की कमी नहीं है । ये पुरुष कभी-कभी इतने क्रूर हो जाते हैं कि उनमें मानवीयता नहीं के बराबर है । उनके सारे अत्याचारों को सहने के लिए बेचारी स्त्रियाँ बाध्यस्थ हो जाती हैं । पुरुष वर्ग के ही प्रति नफरत की भावना पैदा करनेवाले उपर्युक्त पात्र-चित्रण के द्वारा शिवानी ने एक सवाल खडा कर दिया है । कहीं-कहीं अतिरंजित होते हुए भी पुरुष की निर्दयता का परिचय देने में ये कथा प्रसंग सहायक होते हैं ।

स्नेहवान पुरुष - पति - प्रेमी

शिवानी ने जहाँ क्रूर, निर्दयी, कायर और स्वार्थी पुरुषों की तस्वीर एक ओर प्रस्तुत की है वहाँ दूसरी ओर स्नेहवान और प्रेमी पुरुषों का भी रूप अंकित किया है ।

ज्यूडिथ से जयन्ती का अशोक एक ऐसा युवक है जो अपनी पत्नी के कहे अनुसार चलता है जिसके लिए अपनी स्नेहमयी माता को छोडता है । रमा दी अपने पुत्र को अपना जीवन समझकर पालन पोषण करती है, उसे पढाकर इंजीनियर बनाती है और और भी उच्च शिक्षा के लिए उसे अमेरिका भेजती है । लेकिन वह विदेश से एक ईसाई विदेशी लडकी से प्रेम करता है और उसे लेकर विवाह के लिए भारत आता है । विवाह के पहले ही उसके द्वारा वह गर्भवती हो जाती है । वह फिर पत्नी के साथ विदेश चलता है और एक पुत्र होने पर दुबारा घर आता है । लेकिन घर आते ही पत्नी अपने सास से अकारण झगडा करती है । इस अवसर पर माँ के प्रति अनुदारता का परिचय देते हुए वह अपनी पत्नी को लेकर विदेश चला जाता है ।

यहाँ वास्तव में अशोक को अपनी माँ से प्यार है लेकिन वह पत्नी से भी बहुत प्यार करता है । फिर भी जब अपनी पत्नी अकारण ही माँ से झगडा करती है तब वह पत्नी को कार्य समझाने का प्रयत्न करता है । लेकिन जब पत्नी उसे स्वीकारने को तैयार नहीं होती तब वह अपना दांपत्य जीवन का संतोष न नष्ट करने के उद्देश्य से पत्नी के कहे अनुसार चलता है । वहाँ वह अपनी भोली माँ को कोई स्थान नहीं दे पाता ।

आज के समाज में सबको अपना सुख ही प्रधान है यानी स्वार्थता उनके स्वभाव में विद्यमान रहती है । भारतीय परंपरा के अनुसार माँ का स्थान सबसे ऊँचा है, लेकिन यहाँ अशोक की मानसिकता उन परंपरागत विचारों को नकारने की है । वह उन सारी बातों को नहीं स्वीकारता जो मातृत्व की महत्ता से जुडी हुई हैं । माँ को छोडकर चले जाना और पत्नी से प्राप्त सुख को तुलना में माँ के ममत्व को तिरस्कृत करना इसका उदाहरण है । युवा पीढी के लोगों में यह मानसिकता देखी जा सकती है ।

"लाटी" का कप्तान एक स्नेहशील पति के रूप में हमारे सामने आता है । कप्तान अपने माँ-बाप के द्वारा चुने गए बानो से विवाह करता है और तीसरे ही दिन कप्तान को पत्नी को छोडकर काम के लिए जाना पडता है । दो वर्ष के बाद कप्तान लौट आता है तो देखता है कि अपने घरवालों के क्रूर व्यवहार से बानो क्षयरोग की शिकार बन जाती है । अपने माँ-बाप और डाक्टर के विरोध करने पर भी वह अत्यधिक स्नेह और लाड से शुश्रूषा कर अपनी पत्नी के पास ही पूरा समय बिताता है । लेकिन एक दिन बानो अप्रत्यक्ष हो जाती है । सब लोग यह समझते हैं कि बानो ने

आत्महत्या कर ली है । बहुत दिनों तक कप्तान दुःख में पड़ता है । आखिर एक वर्ष बाद वह एक बड़े घर की बेटी से विवाह करता है और दो पुत्र और एक पुत्री का पिता बनता है । सोलह साल बाद वह बानो को वैष्णवियों के साथ घूमते देखता है । लेकिन वह समझता है कि आज उसके जीवन में बानो का आना असंभव है । वह अपनी पत्नी और बच्चे के साथ वहाँ से लौट जाता है ।

यहाँ वह अपनी बानो से निष्कलंक प्रेम करता है और अंत तक वह अपनी पत्नी की शुश्रूषा करता है । लेकिन सोलह साल बाद बानो को पुनः स्वीकार करने से उसका दांपत्य संबंध बिगड जाएगा यह वह जानता है इसलिए वह बानो को नहीं स्वीकारता । यहाँ वह बहुत विवेक से काम करता है । अपने माँ-बाप के क्रूर मन को स्वीकार न करके अपनी निरपराधी पत्नी की शुश्रूषा करनेवाला वह एक सच्चा पति का प्रतीक बनकर आता है ।

गूँगा का वी॰डीसूज़ा कृष्णा के पडोसी डॉ॰ डिसूजा का पुत्र था । उसके पिता सर्जन के क्लिनिक में ही काम करते थे और सर्जरी में ही हाथ में छुरी लग जाने से टिटेनस में उनकी मृत्यु हो जाती है । पिता की मृत्यु के बाद मातृहीना वी॰डीसूजा, सर्जन के साथ ही छुट्टियाँ बिताता था । स्वभाव से ही लजीले उस सौम्य गोवानी युवक पर सर्जन का अत्यंत स्नेह था । "उसके लंबोतरे चेहरे पर साँवले रंग की चमक थी, पतली मूँछों के नीचे उसके पतले होंठों पर सदा संयम की चाबी लगी रहती । वह बडे नम्र स्वर में बोलता और बडे ही सलीके से कपडे पहनता । उसके जूते ऐसे चमकते कि कोई चाहे तो अपना मुँह देख ले । सर्जन, उसके जूतों की इसी चमक पर फिदा थे । "शब्बास बेटे,

तुम्हारे जूतों की चमक देखकर हमारी तबीयत खुश हो जाती है । जो शख्स अपने जूते चमकाकर रखता है, उसका दिल भी हमेशा चमकता रहता है ।"[1] वी.डीसूज़ा का दिल सचमुच ही एकदम साफ था । वह जितना ही कृष्णा से बचकर निकलता, वह उसे उतना ही घेर लेती है और दोनों का प्रेम इतना पवित्र था कि जब कृष्णा की शादी की बात वह सुनता है तब वहाँ आकर अपनी प्रेयसी को लेकर वह किसी पादरी के पास जाता है और शादी करता है ।

यहाँ एक ओर उसका पवित्र प्रेम व्यक्त होता है । वह प्रेयसी के पिता के विरोध करने पर भी अपनी प्रेयसी को लेकर पादरी के पास जाकर विवाह करता है । प्रेम अंधा होता है । प्रेम में प्रेम करनेवाला धर्म का परवाह नहीं करता और अपने माँ-बाप की इच्छा और विरोध को भी नहीं मानता । वी.डीसूज़ा की मानसिकता धार्मिक नियमों को स्वीकारने को तैयार नहीं होती ।

शिवानी ने धर्म के दायरों को भी तोडकर प्रेम की सफलता के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करनेवाले वी.डीसूज़ा जैसे पात्र को प्रस्तुत करके पुरुष का एक और चेहरा प्रस्तुत किया है जो आत्मीयता का परिचय देता है ।

"लाल्हवेली" में विवाहिता सुधा को मुसलमान गुण्डों के द्वारा आक्रमण करते देखकर रहमान अली उसकी रक्षा करता है, उससे विवाह करता है और उससे अपने प्राणों के समान प्रेम करता है । वह एक स्नेही पति के रूप में

---

1. चिरस्वयंवरा - शिवानी - पृ.48

हमारे सामने आता है । अपनी पत्नी को हिन्दू गुण्डों के आक्रमण के कारण नष्ट होने पर भी वह हिन्दू धर्मवाली सुधा को मुसलमान गुण्डों के द्वारा आक्रमण करते देखकर सह नहीं सकता और उसकी रक्षा करता है । यहाँ स्त्री के प्रति रहमान अली के मन में कितनी दया, स्नेह और ममता है यह व्यक्त होता है । यहाँ वह प्रतिशोध की भावना नहीं रखता । अन्य धर्मवाली होने से वह सुधा को शत्रु नहीं मानता बल्कि उसको अपनी पत्नी बनाकर अपने प्राणों के समान उससे प्यार करता है । वह है सच्चा पति । रहमान अली जैसे सच्चरित्रवाला पुरुष समाज में अपूर्व है ।

पुरुष एक ओर निर्दयता का परिचय देता है तो दूसरी ओर प्रेम और करुणा का भी प्रतिमूर्ति बन जाता है । पुरुष पात्रों में कई प्रकार की मनोवृत्तियाँ अंकित होती रहती हैं । इसलिए सभी पुरुषों को किसी एक वर्ग विशेष के अंतर्गत रखना ठीक नहीं है । चारित्रिक विविधता पात्र की परिस्थितियों में उभरती है और इसको पात्र संरचना के विशेष धरातल पर भी आँका जा सकता है ।

रूप सौंदर्य की ओर आसक्ति रखनेवाले पुरुष

रूप सौंदर्य की ओर आसक्ति से कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं । रूप सौंदर्य की ओर उन्मुख प्रेम का बना रखना भी मुश्किल कार्य है । रूप सौंदर्य की ओर आसक्ति रखनेवाले पुरुषों का चित्रण भी शिवानी ने यहाँ किया है । ऐसे पुरुष सौंदर्य के नष्ट होने पर अपनी पत्नी और प्रेमिकाओं को छोड़कर चले जाते हैं । इनका दृष्टिकोण नारी के शरीर तक ही

सीमित रहता है । वे उसकी आत्मा को कभी नहीं पहचानते और नारी के अस्मिता को भी स्वीकारते नहीं ।

"चलोगी चन्द्रिका" में चन्द्रवल्लभ चन्द्रिका के रूप सौंदर्य की ओर आकृष्ट होकर उससे विवाह करना चाहता है लेकिन घरवाले चन्द्रिका का विवाह सदानन्द के साथ तय करते हैं । फिर भी चन्द्रवल्लभ अपने मन को नियंत्रित न कर सकने के कारण कभी-कभीअवसर पाकर चन्द्रिका को बाहों में भरता है और एक पागल प्रेमी की भाँति उससे निष्कपट निवेदन करता है । उसका चन्द्रिका से इतना अटूट प्रेम है कि जब चन्द्रिका का विवाह सदानन्द के साथ हो जाता है तब वह कई दिन खाना-पीना भी छोड़ देता है और बहुत दु:खी बन जाता है । लेकिन अंत में वह राजनीतिक क्षेत्र को प्रेयसी के रूप में चुनकर आगे बढ़ता है और माधवी से विवाह करता है ।

वह एक ऐसा पति है जो अपनी पत्नी को पूरी स्वतंत्रता देता है । यहाँ तक कि माधवी जब चाहे जहाँ चाहे घूम-फिर सकती है । क्लब में ताश का ताशा का रतजगा हो या रेसकोर्स के अश्वों का सुदीर्घ प्रदर्शन, वह अपने पुरुष मित्रों के साथ मन-मानी उड़ान भर सकती है । अपनी इस सहिष्णुता पर चन्द्रवल्लभ को स्वयं आश्चर्य होता है । अपनी पत्नी के ऐसे उन्मुक्त विचरण उसे कभी ईर्ष्या-दग्ध युक्त नहीं करता ।

वर्षों बाद भी वह अपनी प्रेमिका को भूल नहीं पाता । एक दिन प्रेमिका से उसका मिलन होता है । वह अपने मन को नियंत्रण में न रख

पाता और वह उसे बाँहों में भरता है, "चलोगी चन्द्रिका ?" कहकर वह उसके कानों के पास होंठ सटाता है और फिर कहता है -"कल इलाहाबाद जा रहा हूँ । छुट्टियों का तो अब झमेला ही नहीं है । ईद, दशहरा, दीवाली, सब मिलाकर मेरे सौभाग्य से ये सुअवसर एक साथ जुटा गई हैं । चलो, इसी बहाने तुम्हें कहीं दूर भगा चलूँ । किसी के बाप को भी पता नहीं चलेगा । नेपाल में मेरा एक रईस मित्र है, वहीं शरण लेंगे । चटपट अपनी मौसी को दही खिलाकर सुला आओ । मैं यहीं रुका रहूँगा । आज ही रात भाग चलेंगे । चलोगी चन्द्रिका ?"[1] लेकिन चन्द्रिका उसके साथ नहीं जाती । फिर भी वर्षों के बाद जब वह विधुर बन जाता है तब वह विधवा चन्द्रिका को अपने साथ जीवन बिताने के लिए निमंत्रण पत्र भेजता है और अमुक स्थान पर विधवा चन्द्रिका पहुँचती है लेकिन उसका ढला हुआ यौवन देखकर वह उससे मुँह मोड लेता है । यहाँ रूप सौंदर्य की ओर आकर्षित कामुक पुरुष का सुन्दर दृष्टांत चन्द्रवल्लभ के द्वारा लेखिका प्रस्तुत करती हैं ।

"चाचरी" का श्रीनाथ अपने माता, पिता, बहन सब विरोध करने पर भी बिन्दी के सौंदर्य पर रीझकर उससे विवाह करता है । लेकिन काम के प्रति बिन्दी का शीतल मनोभाव श्रीनाथ को पागल बनाता है । दो ही दिनों में उसे लगता है कि बिन्दी के रहस्यमय व्यक्तित्व में ऐसा कुछ अवश्य है जो सामान्य नारी से भिन्न है । बिन्दी की चुप्पी श्रीनाथ के प्रेम को और उत्कट बना देती है । वह रात भर पिंजरे में बन्द खूँखार शेर-सा ही कमरे में चक्कर लगाते काटता है । कभी-कभी तो अपनी विवशता पर उसे ऐसा क्रोध आता है कि उठाकर उसे खिड़की से नीचे फेंक देने को सोचता है ।

---

1. गैंडा - शिवानी - पृ. 92

एक दिन श्रीनाथ अपनी बहन के झूठी गवाह को लेकर उस पर चोरी का लांछन लगाकर उसे घर से बाहर निकालता है। बहन प्रेमा तो एक बार अपनी एक कन्वेंट शिक्षित सहेली की चचेरी बहन से श्रीनाथ का रिश्ता लगभग पक्का कर देती है पर श्रीनाथ विवाह नहीं करता। कहीं न कहीं उसके शंकित चित्त में छिपा संशय भुजंग बीच-बीच में उसे डसता रहता है - क्या वह सीधी-भोली लड़की उसकी बहन का गहना चुरा सकती थी? उसकी बहन को झूठी चुगली खाने की तो बचपन से ही आदत थी। यह श्रीनाथ जानता था। अंत तक श्रीनाथ को यही उम्मीद है कि एक न एक दिन बिन्दी स्वयं लौट आएगी। अपने पौरुष, पिता के वैभव और अपनी योग्यता पर उसे शायद आवश्यकता से कुछ अधिक ही भरोसा था। पढ़ाई समाप्त करते ही, एक प्रख्यात कंपनी में काम मिलता है, वहीं उसका स्वयंवरी चयन कर लेता है और फिर तो आज तक पीछे मुड़कर नहीं देखता। भारत की समृद्धि से जी ऊबने लगा तो वह अमरीका चला जाता है, सात वर्ष के प्रवास उसे ऐश्वर्यमंडित ही नहीं करता अनुभव समृद्ध भी कर देता है। इसी बीच एक करोड़पति पति-परित्यक्ता प्रौढ़ा से उसका परिचय होता है और देखते-ही-देखते वह परिचय प्रगाढ़ साहचर्य की डोर में बाँध, उसे उसके विशाल कासल में खींच ले जाता है। वयस में उसकी स्वामिनी उससे दुनी थी, किन्तु उस गतयौवना के अस्ताचलगामी प्रखर रौद्र सौंदर्य की मरीचिका में बेचारा भटककर रह जाता है। भले ही विवाह न हुआ हो, उसकी गृहस्वामी तो वह बन ही चुका है। लेकिन एक दिन आधी रात को वह बिना प्रेयसी को सूचित किए लौटता है तब डेंचरविहीना और जी भर कर चढ़ाई अपनी पत्नी की कुरूपता को देखकर विरक्ति से श्रीनाथ का रोम-रोम सिहर उठता है। श्रीनाथ जानता है कि उस समृद्ध सिंहिका के लिए, कभी-भी गबरू जवानों का अभाव नहीं हो सकता। श्रीनाथ फिर एक पल भी वहाँ नहीं रुकता। चिंता तो उसे उसकी थी, जिसे उसने अकारण ही दण्डित कर एक ही झूठे साक्षी की गवाही

- '

सुन तीस वर्ष का वनवास दे दिया था, पश्चाताप की अदृश्य आग्नेय लपटें तो उसे अब उसके लिए पल-पल झुलसा रही है । वह सब छोड़कर सीधे मंझले दद्दा के पास आता है बम्बई में, बिन्दी का पता लगाने के लिए, बिन्दी के चरणों में पछाड़ खाकर क्षमा माँगने के लिए कुबेर का छत्र त्याग, वह इतनी दूर चला आता है । वह बिन्दी के पास जाता है लेकिन बिन्दी जो सन्यासिनी जीवन बिताती है वह श्रीनाथ से अप्रभावित होती है और वह श्रीनाथ के साथ जीने को तैयार नहीं होती । श्रीनाथ निराश होकर चला जाता है ।

यहाँ श्रीनाथ साधारण पुरुष की भाँति बिन्दी के सौंदर्य पर रीझकर उससे विवाह करता है । वह बिन्दी से बहुत अधिक प्यार करता है । लेकिन जब पत्नी उसकी कामासक्ति को तृप्त करने में असफल हो जाती है तब उसका पागल बनना स्वाभाविक है क्योंकि यौवनावस्था में यौन-भावना को नियंत्रण में रखना मुश्किल कार्य है । श्रीनाथ के मन में अपनी पत्नी का शीतल मनोभाव के कारण पत्नी के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न होती है और उस समय बहन की झूठी गवाह सुनकर उसका और भी क्रुद्ध होना स्वाभाविक है । साधारण पुरुष की भाँति वह भी पत्नी के सामने सिर झुकाने को तैयार नहीं है इसलिए उसका मन पत्नी को चोर मानने को तैयार न होने पर भी उसको वापस नहीं बुलाता ।

"चिरस्वयंवरा" का प्रद्युम्न मेहता रजनी दी के सौंदर्य देखकर उसकी ओर आकृष्ट हो जाता है । उसका कथन देखिए -"तुम्हारा चेहरा न देखकर भी यदि तुम्हारे दाँत ही देखता, तब भी मैं तुम्हारे चरणों का दास बन जाता, रजनी ।"..... एकदम बंगाल की सुन्दरियों की-सी सुचिक्कन

केशराशि है तुम्हारी ।"[1] वह रजनी दी को अपनी पत्नी बनाना चाहता है । विवाह की तिथि भी तय करता है । तब अचानक एक दिन दंतविहीन रजनी दी को देखता है और रजनी दी से वह जान पाता है कि वह पच्चास वर्ष की है और दंतपंक्ति और बाल का रंग नकली है तब वह उसे छोडकर चला जाता है ।

यहाँ प्रद्युम्न रजनी दी के सौंदर्य पर रीझकर उससे प्रेम करता है । उसका मन वह देख नहीं पाता इसलिए सौंदर्य के नष्ट होने पर उसे छोडकर चला जाना स्वाभाविक ही है । उसके मन में प्रेम की कोई पवित्र भावना नहीं है ।

"जोकर" का प्रशान्त विलायत से बैरिस्टरी पास कर लौट आता है । वह एक ऐसी लडकी से विवाह करना चाहता है जिसमें सौंदर्य और प्रतिभा हो । वह अनेक लडकियों को नापसंद कर आखिर सुन्दरी गायिका तिलोत्तमा को पसन्द करता है और उससे उसकी शादी होती है । वह पत्नी के सौंदर्य नष्ट न होने के उद्देश्य से ज़ोर-ज़बरदस्ती कर विदेश से कौर्सेट मंगवाकर अपने अनुशासन में पत्नी को जकड देता है । पत्नी साँस भी नहीं ले पाती, लेकिन प्रशान्त कहता है "मैं अपने सोने की प्रतिमा की साँचे में ढली देह की एक रेखा भी विकृत नहीं होने दूँगा ।"[2] लेकिन इस कौर्सेट के बन्धन के कारण गर्भस्थ शिशु का रूप विकृत हो जाता है और पत्नी विकृत रूप के बच्चे को जन्म देती है । उसके बाद वह पत्नी से विरक्त हो जाता है । वह अलग कमरे में सोने लगता है । तब पत्नी रोती है तब प्रशान्त कहता है -"बुलबुल, अलग कमरे में

---

1. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 75

2. उपहार - शिवानी - पृ. 140

नहीं सोया तो तुमसे नहीं बच पाऊँगा - हाड़-मांस का बना हूँ तिलोत्तमा, पत्थर का नहीं - एक बार ठगा गया हूँ, अविवेक के किस क्षण में पता नहीं फिर कब ठगा जाऊँ, अब अनर्थ नहीं होने दूँगा ।"[1] वह अपने विकलांग पुत्र को कोई देखना पसंद नहीं करता । वह एक दिन अपने पुत्र को किसी सर्कस कंपनी में डाल देता है और वर्षों बाद प्रशांत को स्ट्राक होता है, वाणी चली जाती है, दाहिना अंग भी अवश हो जाता है तब भी उसका मन पत्नी से विरक्त रहता है ।

प्रशान्त का चरित्र असाधारण-सा लगता है । उसके सारे व्यवहार आम पुरुष के नहीं लगते । विकृत संतान के जन्म होने के बाद पत्नी से दूर रहना उसकी मानसिक अपक्वता का परिचायक है । विकृत पुत्र को सर्कस कंपनी में छोड आना भी साधारण पिता के लिए स्वीकार्य नहीं लगता । लेखिका ने परिस्थिति की विशिष्टता के आधार पर उसके कारनामों को न्याययुक्त ठहराने की कोशिश की है फिर भी पाठक के मन में कई संदेह बाकी रह जाते हैं ।

"भीलनी" का जीजाजी विरूपिणी सुहासिनी से विवाह करता है लेकिन वह सुहासिनी की बहन सुन्दरी विलासिनी के प्रति आकृष्ट होता है । सुहासिनी के प्रसवकाल में सहायतार्थ विलासिनी उसके घर में आती है । जीजाजी विलासिनी से शारीरिक संबंध जोडता है । विलासिनी और अपने पति की इस संबंध विच्छृंखलता पर क्रुद्ध होकर सुहासिनी विलासिनी को

---

1. उपहार - शिवानी - पृ. 142

गोली का निशान बनाती है लेकिन निशाना चूक जाता है और गोली जीजाजी को लगती है और उसकी मृत्यु होती है ।

जीजाजी के माध्यम से नारी सौंदर्य की ओर पुरुष का आकर्षण और उससे उत्पन्न दुर्घटनाओं के बारे में लेखिका बताती हैं । पुरुष जब कभी-भी नारी के सौंदर्य को देखता है तब उसके मन में निश्चय ही एक आकर्षण पैदा होता है । यह आकर्षण रिश्ते-नातों को नहीं मानता और किसी भी प्रकार के बन्धन को भी नहीं स्वीकारता । नारी सौंदर्य के पीछे बेतहाशा दौड़नेवाले पुरुष का अंत त्रासदायक ही होता है ।

रूप सौंदर्य पर मोहित होना पुरुष की कमज़ोरी है । इस कमज़ोरी के कई पहलू हैं जिनके विविध पक्ष लेखिका ने उभारे हैं । स्त्री सौंदर्य नश्वर है परन्तु पुरुष इस नश्वरता को स्वीकारना नहीं चाहता । हमेशा सौंदर्य की प्रतिमा बनकर उसके मन को लुभानेवाली स्त्री की कल्पना ही पुरुष के अंदर हरी भरी रहती है । समय के थपेड़ों के साथ स्त्री में आनेवाले परिवर्तन नारी के प्रति उसे उदास बना लेते हैं । लेखिका ने इस मनोवृत्ति का भली भाँति उद्घाटन किया है । पुरुष इस समूची प्रक्रिया में कहाँ तक दोषी है और कहाँ तक मजबूर है, इसका अनुमान पाठक को ही लगाना पड़ता है ।

<u>दांपत्य संबंध में पराजित होनेवाले पुरुष</u>

दांपत्य संबंध में पराजित होनेवाले पुरुष पात्रों की मानसिकता का और उनके कार्यकलापों का चित्रण शिवानी ने कई कहानियों में प्रस्तुत किया है । ये पात्र क्यों और कैसे पराजित होते हैं, इसका विवेचन वे समीक्षक पर छोड़ देती हैं ।

"उपहार" का रघुनाथ अपने रिसर्च के बीच डॉ. नलिनी से प्रेम करता है और वह अपना शोधकार्य अधूरा छोडकर पत्नी के पास ही आकर रहता है । वह पत्नी की कमाई खाकर पत्नी से बहुत अधिक प्रेम करता है लेकिन जब एक यात्रा में पत्नी का आभूषण और रूपया डाकू के द्वारा चुराया जाता है, उस घटना से रघुनाथ पत्नी पर अविश्वास करने लगता है । उसका विश्वास है नलिनी के गर्भ में डाकू का बच्चा है और वह नलिनी से इस बात को लेकर झगडा करता है । वह कहता है -"डाकू की सन्तान मेरे घर में नहीं पलेगी ।"[1] तब नलिनी कहती है - "घर मेरा है, निकल जाओ बाहर, तुम कमीने पशु हो ।"[2] तब वह सिर झुकाये चुपचाप चला जाता है और बाद में वह पागल होकर सडकों पर घूमता है ।

उसका कोई व्यक्तित्व नहीं । पत्नी की कमाई खाकर जीनेवाले रघुनाथ को आत्माभिमानी नहीं कह सकते । घर पर उसका कोई अधिकार नहीं है जिससे पत्नी के कहने पर उसे घर छोडकर जाना पडता है । अंत में पागल बना रघुनाथ समाज के लिए एक बोझ ही बन जाता है । यहाँ वह एक निकम्मा व्यक्ति के रूप में हमारे सामने आता है । अपनी पत्नी पर संदेह रखनेवाली उसकी मानसिकता, पत्नी के कहने पर घर छोड जाना और पागल बन जाना सब उसकी मानसिक स्थिति की विकृति को सूचित करते हैं ।

"प्रतिशोध" का शंकर एक दरिद्र परिवार से आनेवाला है

---

1. शिवानी के श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी - पृ. 45
2. वही - पृ. 46

लेकिन शंकर की ऊँची शिक्षा और ऊँची नौकरी से प्रसन्न होकर सौदामिनी का पिता शंकर को अपने दामाद के रूप में स्वीकारता है लेकिन उसको अपनी पत्नी का गुलाम बनकर रहना पडता है । किसी प्रकार की आज़ादी उसे नहीं मिलती । अंत में वह संयमशील पुरुष रौबदार पत्नी से ऊबकर, उसके शासन से ऊबकर प्रौढावस्था में एक किशोरी लडकी के साथ महीनों तक अविहित संबंध जोडता रहता है और उस लडकी से बहुत अधिक प्यार करती है, लेकिन जब वह लडकी उसके बच्चे की माँ बननेवाली है, यह वह जानता है तब वह उसकी उपेक्षा करता है और जब वह लडकी आत्महत्या करती है तब उसका मन बहुत अशांत हो जाता है ।

साधारणतः पुरुष में काम-वासना संवर्धित रूप में विद्यमान रहती है । प्रौढावस्था को प्राप्त होने पर भी वह इस वासना से मुक्त नहीं हो पाता । प्रौढावस्था में प्रायः यह विकृत रूप ले लेती है । वह युवती की आयु एवं परिस्थिति की उपेक्षा कर कामतुष्टि का आकांक्षी बन जाता है । लेकिन उसके द्वारा वह गर्भवती होती है तो उसको स्वीकारने को तैयार नहीं होता और उसकी उपेक्षा करता है । यहाँ परिस्थिति ही शंकर को अविहित संबंध के लिए प्रेरित करती है । लेकिन अवैध संबंध गलत न माननेवाले पुरुष अपने बच्चे को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं । यहाँ शंकर की जैसी विचित्र मानसिकता रखनेवाले समाज में ज़्यादा हैं ।

"अपराजिता" का भजन अपनी पत्नी के इष्टानुसार चलनेवाला है । उसकी पत्नी आरती एक लोकप्रिय वरिष्ठ अफसर है । भजन के कमनीय चेहरे पर रीझकर आरती का पिता उसे दामाद के रूप में स्वीकारता है । नाम का तो वह ग्रेजुएट था, किन्तु सभ्य शिष्टाचार की वर्णमाला से उसका

सामान्य-सा भी परिचय नहीं था, उसी देहाती भजन का कायाकल्प कर देती है आरती । "आरती की दृष्टि में, उसके पति का सबसे बड़ा आकर्षण था नारी मात्र के प्रति उसकी उदासीनता । उसकी मित्र पत्नियाँ, मिलनेवालियों में एक से एक आकर्षक मुखरा-चपला उर्वशियाँ थीं, किन्तु मजाल थी कि कभी भजन उनसे हंसी-चुहल तो कर ले । नारी-रूप की प्रेरणाशक्ति उसके भोले महादेव का कभी स्पर्श भी नहीं कर पाती थी । उसका संसार, उसका प्रणय निवेदन केवल अपनी रोबदार पत्नी तक ही सीमित था, वही उसकी एकमात्र उपास्य थी और वह उसका एकमात्र उपासक ।"[1] भजन की नाममात्र की नौकरी पत्नी छुड़वाकर उसे साथ लेकर अपनी नौकरी के लिए चलती है । भजन का वास्तविक कायाकल्प, उसके इसी निरंकुश राज्यकाल से आरंभ होता है । उसको अप्रतिम खिसियाई हँसी को, बरबस धारण कर गए मौनव्रत मिटा देता है । अकारण की गुनगुनाहट और बीच-बीच में कन्धे उचकाने के बद-अभ्यास को भी, रोबदार पत्नी की कनखियों की मार सदा के लिए मुक्ति दिलाती है, यही नहीं रात-रात पढ़ाकर आरती उसे एम.ए. की परीक्षा भी ठेल-ठालकर उत्तीर्ण कराती है । बेचारे भजन को पत्नी रिसर्च के नाम पर कोने में बैठाता है । पत्नी के मनाने पर भी वह रसोई का काम भी बड़ी निपुणता से करता फिरता है । घर का नेपाली नौकर बहादुर ही उसका एकमात्र मित्र था । दिन-भर की क्लान्ति के पश्चात् कभी-कभी जब भजन अपने लजीले प्रणय-निवेदन के साथ, डरते-डरते उसे बाँहों में खींचने की चेष्टा करता तो आरती बुरी तरह उसे डपट देती कि बेचारा सहम कर पत्थर बन जाता है । अनेक बार उसकी कामवासना की पूर्ति पत्नी नहीं करती । आखिर भजन अमुख बन जाता है । वह एक सन्यासी के जाल में फँस जाता है और एक दिन घर से भागकर सन्यासी के साथ रहने लगता है । दुःखी आरती भजन के पास जाकर उसे अपने साथ खींचकर लाती है ।

---

1. स्वयंसिद्ध - शिवानी - पृ. 42-43

अफसर पत्नी का रौब, प्रणय निवेदन को कठोरता से ठुकरा देना और अपने स्वाभाविक गुणों से हटकर पत्नी की इज़्ज़त के लिए किया गया अभिनय उसे गृह त्याग के लिए बाध्य करता है । दांपत्य संबंधों की दरारें पति को कभी-कभी निष्क्रिय बना देती हैं । आर्थिक दुरवस्था पुरुषों को "जोरू का गुलाम" बना देती है । ऐसी हालत में पति सिर्फ एक नौकर की भूमिका अदा करता है । रौबीली पत्नी की हर आज्ञा का उसे पालन करना पड़ता है और उसके लिए ज़िन्दगी एक सवाल बन जाती है ।

"तोमार जे दोक्खिन मुख" का राघवन पढ़नकाल में अपनी सहपाठिनी {लेखिका} से प्रेम करता है लेकिन लेखिका उसे पसन्द नहीं करतीं । सत्रह-सत्रह पृष्ठों के सुदीर्घ प्रेम-पत्र वह उसे भेजता है । वह निरंतर छाया की भाँति उसका पीछा करता, उसके छात्र जीवन में पूरे पाँच वर्ष तक विष घोलता रहता है । आखिर लेखिका "आज अंतिम बार तुम्हें चेतावनी देती हूँ, राघवन । ऐसे मेरा पीछा किया तो फिर मेरे इस ब्रह्मास्त्र को देख लो ।"[1] कह अपनी चप्पल दिखाती हैं । सार्वजनिक सभा में दी गयी उसकी वह मुँहफट फटकार पाकर उसी दिन से राघवन उसका पीछा करना छोड़ देता है । बाद में वह बैंक में नौकरी करता है फिर अपने पिता के विरोध करने पर भी वेश्यापुत्री विशालाक्ष्मी से विवाह करता है । पत्नी के चेहरे की लुनाई देखकर ही वह रीझा था । अन्दर का चेहरा कितना कुत्सित है, यह वह देख नहीं पाता । उसकी नित्य-नवीन फरमाइशें पूरा करने में कब उसकी निष्ठा का आसन डिग गया वह जान भी नहीं पाता । वह शराबी बन जाता है । अपनी पत्नी का सौंदर्य उसे विवेकहीन बनाता है । एक न एक दिन उसके हाथ की सफाई

---

1. स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ. 119

ही उसका काल बन, उसके काले मुँह को और काला कर देगी, यह वह जानता है फिर भी अपनी पत्नी से उसे अनंत प्रेम, अकपट सेवा, कार्पण्य-रहित अनुराग और साहचर्य मिलता है । वह बीमार पड़ता तो वह दिन-रात उसके सिरहाने बैठी रहती है । चिड़चिड़ाने लगता तो वह धरती-सी सहिष्णु बनी उसके पैरों में लोटने लगती है । लेकिन वह अभिनय कुशला नटिनी एक भद्दे नाटक का मंचन मात्र कर रही है । यह वह नहीं जान पाता । जब अपने मित्र अखिलन और अपनी पत्नी का अविहित संबंध देखता है तब दोनों की हत्या करता है । उस समय पत्नी गर्भवती थी और यह घटना सुनकर अखिलन की पत्नी भी आत्महत्या कर लेती है । इन तीनों हत्या के अपराध में राघवन को फाँसी की सजा मिलती है ।

यहाँ राघवन का पौरुष अपनी पत्नी का अविहित संबंध सह नहीं पाता और वह अपना क्रोध जल्दी ही प्रकट करता है । उन दोनों की हत्या करके अपना प्रतिशोध व्यक्त करता है । कोई भी अपनी पत्नी का अविहित संबंध सह नहीं पाता । माफी भी नहीं देता । यहाँ उपहार के रघुनाथ की भाँति राघवन पौरुषहीन व्यक्ति नहीं है । वह धैर्यपूर्वक अपना क्रोध व्यक्त करता है । क्रोध आने पर मनुष्य अंधा बन जाता है या भावी दुष्परिणामों की चिंता नहीं करता । पुरुष हमेशा स्त्री को अपनी ही संपत्ति मानता है और पूरी तरह उस पर अपना अधिकार जमाना चाहता है । जब इस प्रक्रिया में बाहर का आदमी घुसपैट करता है तब उसका पौरुष किसी भी घृणात्मक कार्य करने से नहीं हिचकता । पुरुष के स्वभाव का एक और पहलू लेखिका ने यहाँ प्रस्तुत किया है ।

"मन का प्रहरी" का प्रियतम महंतो पढ़ने में निपुण है । वह अपने से अधिक उम्रवाली युवती अनुराधा जो अपनी अध्यापिका है, उससे विवाह

करता है और हनीमून के बीच जब अनुराधा पुराने प्रेमी मधुकर से लुक-छिपकर मिलती है तब अनुराधा और महंती के बीच झगडा होता है और अनुराधा महंती को छोडकर चली जाती है । महंती उसके वियोग में खूब निराश होकर वैरागी का वेष धारण करता है ।

यहाँ महंती का प्रेम पवित्र है । वह अपनी पत्नी के पुराने प्रेमी से मिलना सह नहीं सकता । वह उसका विरोध भी करता है । उसमें पौरुष है लेकिन पत्नी के छोड जाने से वह असहाय होता है । स्नेह के लिए तडपनेवाले पुरुष का चित्र देखा जा सकता है । उपहार के राघवन की भाँति वह भी मानसिक संतुलन खो बैठता है ।

लेखिका ने यहाँ प्रेम के प्यासे पुरुष को प्रस्तुत किया है जो अधिक भावुक है । अपनी भावुकता में पत्नी से बेहद प्यार करनेवाला पुरुष अवैध संबंध को देखकर विक्षिप्त हो जाता है । यह एक स्वाभाविक परिणाम है । पुरुष का मन अगर कमज़ोर है तो उसे त्रासदायक परिस्थितियों का शिकार बनना पडता है ।

"चाँद" का जे.के. अपनी पहली पत्नी के मर जाने पर प्रखर बुद्धिवाली मानदी से विवाह करता है । एक ही महीने में वह जानता है कि मानो के ज्ञान के भण्डार की तुलना में उसका ज्ञानकोष एक प्रकार से रिक्त ही है, पहली भोली अल्हड पत्नी को वह जैसे तर्जनी पर नचा सकता था, इसे नहीं नचा पाएगा । यही नहीं उसने ज़रा भी ढील दी तो यह विलक्षण युवती

उसे चट अपने ही अंगूठे तले दबा देगी । इसीसे वह आरंभ से ही सावधान हो जाता है । अपने कठोर अनुशासन, गांभीर्य एवं अनुकरणीय आदर्श की अमिट लक्ष्मण रेखा में अपनी दूसरी पत्नी को बाँधकर वह स्वयं घेरे से दूर छिटक जाता है । "मानवी को शोक रंगों में लगाव था, और जे के लाल रंग देखते ही सांड-सा भड़क उठता, मानवी को तला भुना, मिर्च मसालेदार खाना रूचता था, जे के ने शायद पत्नी को ही और चिढ़ाने के लिए, अपनी अपूर्व इच्छाशक्ति से पेट में अल्सर की छोटी-मोटी नर्सरी बना ली थी, अब वह केवल मूँग की दाल और उबली लौकी खाता था । कभी कोई जल्सा होता तो मानवी बड़ा-सा जूड़ा बनाकर बेले का गजरा लगा लेती, और फौरन ही जे के तुरूप लगा देता- "क्यों, कोठे में बैठने जा रही हो क्या ?"[1] इस प्रकार दोनों के बीच झगड़ा होता है, इस तरह पाँच वर्ष बीत जाते हैं और जब पत्नी अपने पिता की शुश्रूषा के लिए विदेश जाती है तब जे के अपने घर की नौकरानी के साथ अवैध संबंध जोड़ता रहता है जिसके कारण पत्नी उसकी उपेक्षा करके चली जाती है ।

पुरूष पत्नी को अपने अधीन में रखना चाहता है, उस पर शासन करना चाहता है । पुरूष पति रूप में, पितृकुल के वैभव में, व्यक्तित्व में पत्नी का लोहा मान सकता है, किन्तु बुद्धि में यदि पत्नी का पलड़ा भारी हो तो वह तिलमिला उठता है । यहाँ जे.के. के विषय में भी ऐसी बात होती है । पुरूष स्वभाव के एक और पक्ष को लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से उभारा है ।

दांपत्य संबंधों में पराजित होनेवाले उपर्युक्त पुरूष पात्र समाज के प्रत्येक वर्ग में दिखाई पड़ते हैं । पुरूष की असहाय स्थिति कई सीमा रेखाओं

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 106

से जुडकर चलती है । आर्थिक विपन्नता, भौतिक न्यूनता, कायर मनोवृत्ति, अधिक भावुकता, आज्ञाशक्ति का अभाव आदि कुछ कारण हैं जो पुरुष को पराजित करते हैं और पति पत्नी संबंधों में दरारें ले आते हैं । लेखिका ने इन दरारों के बीच से झाँकने का प्रयास किया है ।

अनैतिक संबंध रखनेवाले पुरुष

विवाह के बाद अवैध संबंध में डूबे हुए पुरुषों का चित्रण भी शिवानी ने किया है । आधुनिककाल के लोगों की सेक्स के प्रति बदलती हुई मानसिकता का अर्थपूर्ण चित्रण इन पात्रों के द्वारा शिवानी ने प्रस्तुत किया है ।

"भैरवी" का ब्रिगेडियर वेदी बड़े घर का बेटा है । वह तिला से प्रेम विवाह करता है लेकिन वह एकनिष्ठ प्रेमी या पति नहीं है । जब वेदी छुट्टियों पर घर आता है तब अपनी पत्नी के साथ सोता है केवल एक दिन, बाकी छः दिन वह छः विभिन्न नारियों के संसर्ग में हंस खेलकर गुज़ार देता है, जिनमें से एक उसकी अठारह वर्ष की नौकरानी भी थी ।

यहाँ ब्रिगेडियर वेदी की मानसिकता दांपत्य संबंध की पवित्रता को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं है । नैतिकता को वह भूल जाता है । अनैतिक मार्ग में चलनेवाले इस पुरुष के लिए मूल्यों की कोई महत्ता नहीं होती । स्त्री-पुरुष के शारीरिक संबंधों को वह एक मामूली प्रक्रिया मानता है । इसे पाप और पुण्य की दृष्टि से वह नहीं देखता । आधुनिक पुरुषों में वेदी के उदाहरण काफी मात्रा में मिलते हैं ।

"गजदन्त" कहानी को निम्मी के पिता को सात-आठ थान गाय-भैंस, मकान-दुकान सब कुछ हैं लेकिन उसके विलासी स्वभाव के कारण निम्मी की माँ और बच्ची पथ की भिखारिणी बन जाती है । जब पिता पुत्र को गतिविधि देखता है, तो उसे बाँधने सुन्दरी तारा से फेरे फिरवा, चाय की दुकान खोल देता है किन्तु दुकान पर भी रसप्रिया ग्राहिकाओं की ही भीड़ जुटने लगती है । बिना पैसों के ही, ग्राम की तरुणी विधवाओं और अनब्याही किशोरियों के कण्ठ सिक्त होने लगते हैं और एक दिन तारा के वृद्ध श्वसुर के पीड़ित हृदय के साथ-साथ उसका दुकान भी बंद हो जाता है । फिर वह मनचले पुरुष डेली पैसेंजरी का सर्वथा मौलिक धन्धा अपनाता है । नित्य अल्मोड़ा जाता गुड़, चाय, साबुन, मिश्री थैलों में लाता और घर पहुँचाता । पर कुछ ही महीनों में फिर नारी की नित्य नवीन फरमाइश, उसके दुर्बल चित्त को पराजित कर देती है । टिकुली, रंगीन फुंदे और सुवासित केश तैल पुनः महाऔदार्य से निःशुल्क वितरित होने लगता है । दो पुत्रियों के पिता बन जाने पर भी, उसके निरंकुश स्वेच्छाचारी जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आता ।

एक बार बुरे मार्ग में पड़ने पर फिर उस मार्ग से बच निकलना कठिन कार्य है । रसिक स्वभाववाले पुरुष को उस स्वभाव की उपेक्षा करना मुश्किल कार्य ही है ।

"केया" की डॉ. नलिनी का पति, क्रूर और शक्की स्वभाववाला है । देखने में डेविल जैसा लगता है, अपने घर में ही पत्नी के सम्मुख अवैध संबंध जोड़ता रहता है, हमेशा पत्नी को डांटता रहता है । देखिए - "यह कैसी डबल रोटी आ रही है जी आजकल, एकदम खट्टी । और यह कम्बख्त कुबेर

क्या स्क्रैम्बल बनाना अभी तक नहीं सीख पाया । इससे तो मैं ऐरोड्रोम में ही ब्रेकफास्ट ले लेता । ठीक भी तो है," वह बडबडाता जा रहा था, "नौकर भी क्या करे, जब मालकिन को ही घर के मालिक की कोई चिंता नहीं है । हमारी डाक्टरनी साहबा को सड़ी बच्चेदानियाँ और ट्यूमर निकालने से इतनी भी फुर्सत नहीं मिल पाती कि महीने भर के लिए बाहर जा रहे मालिक को अण्डे-टोस्ट की ओर देख ले । आज तो शायद तुम्हारा आपरेशन डे नहीं था, इतना तो कर ही सकती थी ।"[1] रात में पत्नी के अस्पताल जाने या आने की खबर पटर सुनकर पति बुरी तरह झल्लाने लगता है "क्या रात, आधी रात को नींद खराब करती रहती हो । कल से अपना कमरा अलग कर लो, समझीं ?"[2] पति अपनी कंपनी की नाना उदार सुविधाओं के बीच देश-विदेश के सौंदर्य तीर्थों में मनचाही गंगा नहा सकता था । यही नहीं, एक से एक सुदर्शन क्षीण कटि की गंगाजली के झलकते गंगाजल से उसका घर आए-दिन पवित्र होता रहता । कभी पति की कंपनी की रिसेप्शनिस्ट आकर सात आठ दिन बिता जाती, कभी एकाध विदेशी नकली दंपति की मरीचिका के चमकते निर्मल सैकता को वह हाथ पर चल रही जूँ-सा पकड लेती, कभी पाकिस्तान की किसी तस्कर सुन्दरी का उससे परिचय कराकर वह कहता, "हाजी साहब की बेटी है । ज़ोहरा हसन । बाबूजी के प्रिय मित्र थे हाजी साहब । बड़ी धार्मिक है । इस छोटी उम्र में ही मक्का-मदीना जा रही है, आठ दिन हमारे पास ठहरेंगी.....".[3] वास्तव में वह सिन्धुरागामिनी पूरे आठ दिनों तक उसकी छाती पर मूंग दलती रही थी ।

कुछ पुरुष ऐसे होते हैं जो घर पर अपनी पत्नियों के सामने ही दूसरी स्त्रियों से अवैध संबंध जोडते रहते हैं । इनके सामने पत्नी हताश

---

1. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 94

2. वही - पृ. 100

3. वही - पृ. 99

और असहाय हो जाती है । ये पुरुष वास्तव में सेक्स की दृष्टि से क्रूर व्यवहार का परिचय देनेवाले हैं । यद्यपि ऐसे पुरुषों के उदाहरण कम ही मिलते हैं फिर भी उनके अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता । समाज के लिए ये काम पुरुष अभिशाप हैं ।

अनैतिक संबंधों से जुडे हुए ये पुरुष पात्र कई प्रकार की कमज़ोरियों के शिकार हैं । इनके लिए स्त्री एक दुर्बलता है । स्त्री शरीर को प्राप्त करने के लिए उनका कोई भी काम करने के लिए वे तैयार होते हैं । ऐसे पुरुषों को उँगली पर नचाकर लाभ उठानेवाली स्त्रियाँ भी कम नहीं है । रसिकता जब पुरुष पर छा जाती है तब उम्र की पाबंदी या परिवार की पाबंदी उस पर लागू नहीं होती । वह सारी पाबन्दियों को टुकराकर अपनी चाल चलने लगता है ।

पुरानी पीढ़ी के पुरुष पात्र

ऐसे पात्रों का चित्रण शिवानी ने किया है जो नयी पीढ़ी के संस्कारों को, अपनी संतान के अंतर्जातीय और मनपसन्द विवाहों को मान्यता देने के लिए तैयार नहीं होते ।

"तोमार जे दोक्खिन मुख" कहानी में राघवन के पिता राघवन को वेश्यापुत्री से विवाह करने के अपराध में घर और संपत्ति से बेदखल कर देते हैं । उनका संस्कारी मन वेश्यापुत्री को बहू के रूप में स्वीकार करने को

तैयार नहीं होता । इसलिए जब अपना पुत्र राघवन पत्नी की हत्या करता है तब राघवन के पिता वारंगल के प्रसिद्ध महाजन होने पर भी दिन-रात लाखों का लेन-देन होने पर भी, अपने पुत्र को कानून के घेरे से निश्चय ही छुडा सकने का वैभव होने पर भी अपने पुत्र की रक्षा नहीं करते हैं ।

यहाँ पुत्र के जीवन से भी बडा है उनके लिए अपना अभिमान । पुत्र के वेश्यापुत्री से विवाह करने के अपराध को वे क्षम्य नहीं मानते । वे माफ़ देने को तैयार नहीं होते । उनके मन का प्रतिशोध यहाँ व्यक्त होता है ।

"दो स्मृतिचिह्न" में बिन्दु के पिता प्रेमविवाह करने के कारण ज़िन्दगी भर अपनी बेटी का मुँह नहीं देखते हैं । बिन्दु की छोटी बहन इन्दु की शादी में जब उसे बुलाने की बात होती है तो पिता कहते हैं - खबरदार, जो उस कुलबोरनी को बुलाया । हमारे लिए तो वह मर-खप गई । ब्राह्मण की बेटी बनिले की बहू बनने गई तो कहो, वहीं बनी रहे ।"[1]

यहाँ पिता संस्कारों से बंधे रहने के कारण अपनी पुत्री के विजातीय प्रेम विवाह को मान्यता नहीं देते । राघवन के पिता और बिन्दु के पिता एक ही मनोवृत्ति के हैं । उनकी मानसिकता परंपरागत, धार्मिक संस्कारों को नकारने को तैयार नहीं होती ।

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 47

"गूँगा" का सर्जन पाड्या को दूर से देखने पर लगता, कोई अंग्रेज़ चला आ रहा है । सुर्ख गालों पर सुख, सन्तोष और स्वास्थ्य की चमक थी । पांडे के पास कुछ ऐसी जादुई शक्ति थी कि उसके स्पर्श पाते ही मुरझाए मरीज़ भी ठीक हो जाते थे । उसकी फीस सुनते ही लोगों का चेहरा पीला पड जाता है । उसको देखकर भी पांडे के चेहरे पर करुणा नहीं उभरती । मरीज सुन्दरी हो या मरीज़ किसी मौलिक बीमारी का नमूना हो तो कभी-कभी वह अपनी विकट फीस में थोडा-सा अन्तर भी कर देता है । पर असंख्य रोगियों को जीवन-दान देनेवाला यह अनोखा मसीहा अपनी पत्नी का इलाज नहीं कर सकता । एक ही पुत्री को जन्म देकर सौर में ही पगला गयी अपनी पत्नी को सर्जन ठीक नहीं कर पाता । सोलह वर्ष से वह आगरा के पागलखाने में पडी थी और बीच-बीच में सर्जन उसे देखने जाता है । कुछ लोग तो कहता है कि वह इतनी पागल नहीं है कि उसे घर न लाया जा सके, पर सर्जन कभी लौटकर पत्नी के उन्माद का प्रसंग भी पुत्री के सामने नहीं छेडता । प्रगतिशील विचारों के रखते हुए भी सर्जन घोर सनातनी है । अपने राजप्रसाद के गुसलखाने में लघुशंका से निवृत्त होने भी जाता, तो जनेऊ कान पर चढ़ा लेता । जब वह बेटी की शादी की बात सुनता है नाराज़ हो जाता है । पादरी को पैसा देकर उसका मुँह बंद करता है और रिकार्ड जला देना चाहता है । जब पुत्री गर्भवती होती है तब वह काशी के महिला आश्रम की संचालिका की सहायता से गर्भपात कराता है और बाद में उसकी शादी भी करा देता है ।

संस्कारों में जुडे रहनेवाला डॉ. पाण्डे अपने अभिमान के लिए अपनी बेटी के ख़ुशी का भी परवाह नहीं करता । अपनी बेटी की ख़ुशी से भी अधिक वह अपने अभिमान को महत्व देता है । अन्तर्जातीय विवाह को मान्यता देने के लिए तैयार नहीं होता ।

"विप्रलब्धा" का सुरेश नम्र, सुशील और सुदर्शन युवक है । वह किसी विवाह में निम्मी को देखकर पसन्द करता है और रिश्ता पक्का करता है । उन दिनों कैसा ही प्रगतिशील परिवार क्यों न हो पहाड में दामाद के विवाह से पूर्व ससुराल आना अनहोनी घटना थी, पर सुशील हफ्ते में एक बार ससुराल जाने लगता है । भावी पत्नी निम्मी के पूछने पर कि "पढाई क्या शादी के बाद नहीं हो सकती ?"[1] उस अधीर प्रश्न के उत्तर में एक नीलम की अंगूठी पहनाकर वह छुट्टी में पहाड चला जाता है । विवाह के आठ दिन पहले सुरेश के ताऊ की मृत्यु होती है इसलिए विवाह एक वर्ष के बाद करने का निश्चय करता है । दूसरे वर्ष उसके मंझला चचिया ससुर की मृत्यु होती है और विवाह एक वर्ष के लिए टल जाता है । छठे महीने उसके तीसरे ससुर को मृत्यु होती है, तीसरे वर्ष उसके पिता की मृत्यु होती है, विवाह भी टल जाता है । सुरेश की पहली नियुक्ति बिहार में होती है । तीन अदद विधवा ताई-चाचियों को लेकर वह अपनी नयी डिप्टी कलेक्टरी संभालने के लिए चलता है और भावी सुनहले भविष्य को रूपरेखा संजोकर एक सात पृष्ठ का पत्र निम्मी को भेजता है । दूसरे वर्ष विवाह की तिथि निश्चित करने के लिए सुरेश नम्रतापूर्ण पत्र लिखता है, लेकिन निम्मी के अहंकारपूर्ण उत्तर पाकर सुरेश भटक जाता है । वैसे शायद उसका भडकना भी उचित था । इस लंबे अर्से में वह समझ जाता है कि उसकी तटस्थता एवं औदात्य को समझने की शक्ति उसकी रूपगर्विता भावी पत्नी में नहीं है, उसकी आवश्यकता से अधिक स्वतंत्रता-प्रेमी व्यक्तित्व, एक न एक दिन अवश्य ही उसकी अनुशासित दलीलों को अवहेलना कर विद्रोह कर बैठेगा और वह दिन सुरेश के लिए बडे सुख का नहीं रहेगा । वह चाचा से कहता है वह गाँव की अनपढ़ कन्या भले ही ले आये, पर अब उस घमण्डी लडकी से रिश्ता नहीं जोड़ेगा - जिसने उसके मृत गुरूजनों का अपमान किया था । इस प्रकार सगाई टूट जाती है । वह दूसरा विवाह करता है ।

---

1. पुष्पहार - शिवानी - पृ. 118-119

सुरेश का व्यवहार परिस्थितियों से बंधा हुआ लगता है । सगाई वह तोडना नहीं चाहता, लेकिन जोडने में होनेवाला विलंब होनेवाली पत्नी के दिल को तोड देता है । यहाँ दोनों के बीच के संबंध परिस्थितियों के कारण ही जुट नहीं पाते । होनेवाली पत्नी का इन्तज़ार करना और निराश होकर तिरस्कार करना एक स्वाभाविक परिणति है, जिसके लिए सुरेश ही जिम्मेदारी है । सुरेश जैसे पुरुष पात्र रीति-रिवाज़ों को और अनचाहे जिम्मेदारियों को निभाते-निभाते अपने जीवन को असफल कर देते हैं । उनके जीवन का दुःख एक तरह से परिस्थितियों का दिया हुआ है ।

"श्राप" के वर के पिता पुराने अनावश्यक आचारों के पीछे चलनेवाले हैं, अहंकारी हैं, धनलोभी हैं । जब अपने पुत्र के वधू के घर में विवाह के पहले दहेज में मिलनेवाले चीज़ों को देखने के लिए वर के पिता आते हैं उस समय की स्थिति देखिए -

"हाथ में छडी लिए, पगडी बांधे ससुर, ऐसे चले आ रहे थे जैसे कोई राजप्रमुख प्रजा के बीच से गुज़र रहा हो । "देखिए समधीजी" साडियों के स्तूप की ओर वर के पिता ने छडी घुमाई "हमारे घर की रुचि ज़रा सोफियानी है, वे ये सब तड़क-भड़क की बनारसी कभी नहीं पहनेंगी - ये सब हटाकर कांजीवरम और चंदेरी गढ़वाल रखवा दें । यही फरमाइश मेरी लडकियों ने भी की है ।" छडी से उन्होंने साडियों को ऐसे उथल-पुथल दिया जैसे कोई स्वास्थ्य निरीक्षक, सडक की पटरी पर सड़ी-गली सब्जी या खुले-कटे तरबूज का ठेला उलट देता है । चलते चलते सहसा वर के पिता मुड़े "हम ने तो आपसे कह ही दिया है हम कुछ नहीं लेंगे । द्वाराचार में हमारा और हमारे अतिथियों का स्वागत ठीक-ठाक रहे, बस इसी का ध्यान रखिएगा ।"[1]

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 90

कन्या के पिता जब यह कहते हैं कि आप लोगों के स्वागत में कोई त्रुटि हुई तो क्षमा करें । तब वर के पिता एक ही आनन को, दशानन की अहंकारी मुद्रा में हिलाते बोलते हैं -"क्या त्रुटि रह गई है, यह भला हम अपने मुंह से क्या कहें, हम तो आपके मेहमान हैं । पर हाँ, यह जो 500 आपने द्वाराचार में रखे हैं, यह लीजिएगा, इन्हें आप हमारी ओर से नाई, धोबी, महरी और मालियों को बांट दे ।"[1] इस प्रकार वे वधु के पिता का अपमान करते हैं ।

विवाह के साथ जुडे हुए आचार और वर पक्ष के लोगों के घमण्डी व्यवहार उत्तर भारत में यत्र-तत्र देखे जाते हैं । वर का पिता बनकर रौब दिखानेवाले पुरुष पात्रों की कमी नहीं है । हर मौके पर वह लडकी के पिता को नीचे दिखाना उचित समझता है । स्त्री के प्रति पुरुष की मनोवृत्ति का भी प्रतिफलन ऐसे पात्रों के व्यवहार में दिखाई पडता है ।

पुरानी पीढी के उपर्युक्त पुरुष पात्र स्वार्थी और ढोंगी हैं । रूढिगत मनःस्थिति और संस्कारगत विकृतियाँ उनकी आँखों को अंधा कर देती हैं । सत्य को देखने में और पहचानने में वे हमेशा असमर्थ होते हैं । ऐसे पुरुष पात्र रिश्ते-नातों के प्रति भी कोई ध्यान नहीं देते ।

अन्य पुरुष पात्र

अन्य पुरुष पात्रों के अंतर्गत उन सभी पुरुष पात्रों का चयन किया गया है जो वैयक्तिकता रखते हैं और वर्ग-विशेष के अंतर नहीं आ पाते ।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 84

प्रस्तुत पुरुष पात्र किसी न किसी पहलू को उभारते हैं जो पुरुष के अपने ही पहलू है । उन पहलुओं को पहचानने के लिए कथ्यात्मक स्थितियों की अच्छी-सी जानकारी आवश्यक हो जाती है । दूसरे शब्दों में लेखिका की पंक्तियों के बीच छिपे हुए अर्थ को परखना आवश्यक हो जाता है ।

"तीन कन्या" का प्रतुल आधुनिक विचारों से प्रभावित लडका है । उसका विवाह बेबी के साथ तय होता है और विवाह के पहले वह बेबी के घर में आता है और बेबी को साथ लेकर घूमने की इच्छा प्रकट करता है । लेकिन बेबी की माँ उससे सहमत नहीं होती । इस बात से क्रुद्ध होकर वह बेबी का रिश्ता छोडकर चला जाता है और और एक लडकी से विवाह करता है ।

प्रतुल आधुनिक पीढी के नौजवानों का प्रतीक है जो अपना मनमानापन करने के लिए तैयार रहते हैं । वे समाज की मानमर्यादा को ठुकरा देते हैं । परंपराओं से कटे हुए नयी पीढी के युवा समाज के लिए हितकारी नहीं हो सकते । नयी पीढी के प्रति लेखिका की चेतावनी ध्यान देने योग्य है ।

मसीहा का शिशु वारेसी को न अपने माँ का स्नेह मिलता है न पिता का अनुशासन । बचपन से ही वारेसी को गांभीर्य घेर लेता है । दिन-रात अध्ययन में डूबकर वारेसी सांसारिक बन्धनों से दूर हट जाता है । अगम्य और तात्त्विक ग्रन्थों की ग्रन्थि उसे सामान्य मानव से ऊँचा उठाती है ।

अनेक लोगों की सेवा शुश्रूषा कर उनके जीवन रक्षा कर अंत में एक कुष्ठारोगाश्रम में रोगियों को शुश्रूषा में, उनको बैबिल सिखाने में अपना जीवन समर्पित करता है । इस प्रकार अपनी सेवा शुश्रूषा के कारण मसीहा के स्तर तक पहुँच जाता है ।

"मसीहा" का वारेसी सेवाव्रत युवा-पीढ़ी के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है । समाज में कई ऐसे युवा मिलते हैं जो दूसरों के सुख के लिए, उनकी सेवा के लिए, अपना सब कुछ जुटाने के लिए तैयार होते हैं । परंतु ऐसे युवा बहुत ही कम संख्या में ही मिलते हैं । वारेसी के माध्यम से लेखिका ने युवकों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

"करिए छिमा" के श्रीधर की माता और पिता की मृत्यु उसके बचपन में ही होती है । लोकलाज के भय से ताऊ उसे अपने पास बुलाता है लेकिन ताई के दुर्व्यवहार से ऊबकर वह अपने ग्राम की सीमांतवासिनी एक मिशनरी मेम के साथ रहने लगता है । मृत्यु से पूर्व उस निस्वार्थ वृद्ध श्रीनाथ को विश्वविद्यालय की उच्चतम परीक्षा उत्तीर्ण कराती है । श्रीधर को नम्रता, मिष्टभाषण एवं निष्कपट व्यवहार के कारण ग्रामवासी उसे पसंद करते हैं । केवल उसी के नहीं, दूर-दूर तक के ग्रामों में अनोखी सूझ-बूझ के उस न्यायप्रिय युवक की धाक जम जाती है । जहाँ पहले छोटी मोटी ज़मीन जायदाद और जर जेवर को समस्याएँ लेकर ग्रामवासी अलमोडा की कचहरी अदालत की धूल फांकते थे वहाँ चुटकियों में श्रीधर अपने विलक्षण कानूनी नश्तर से उनके विकट से विकट घाव चीरकर रख देता है । सर्व सम्मति से वह ग्राम का नेता चुन लिया जाता है । कई बार ग्रामवासी उससे स्थायी रूप से ग्राम में न्यायाधीश का पद ग्रहण करने का अनुरोध करते हैं किन्तु श्रीनाथ तो रमता जोगी था । आज कालीपार अघोरी बाबा के आश्रम

में तो कल साबरमती । जब कभी वह ग्राम में आता विविध प्रकार के मुकदमों की पोटलियाँ उसके प्रांगण में खुलने लगती हैं । प्रत्येक मुकदमे में वह दूध का दूध पानी का पानी कर देता है । उसका अद्वितीय फैसला पक्ष विपक्ष दोनों दलों को सदा मान्य रहता है । एक बार हीरावती नामक एक वेश्या को वह गाँव छोडकर चले जाने का दंड देता है । बाद में कभी-कभी ऐसे संयम पुरुष के मन में उसे पाने की इच्छा जागती है । श्रीधर शिवलिंग के सम्मुख औंधा होकर सुबकने लगता है "कैसा दंड दे रहे हो, भोलानाथ ? ऐसी नीच स्त्री को पाने को मैं स्वप्नों के शून्याकाश में भी बाह क्यों फैलाता हूँ ।"[1] आखिर हीरावती की याद से बचने के लिए वह ग्राम छोडकर जाने का निश्चय करता है । जाते वक्त अकस्मात् रास्ते में हीरावती से मिलता है । आखिर एक दिन वे अवैध संबंध जोडते हैं । बाद में श्रीधर वहाँ से भाग जाता है । एक लंबे अरसे तक वह देशप्रेम का अनोखा दुःसाहसी दीवाना बना फिरता है । विवाह करके चार पुत्रियाँ और एक पुत्र का पिता भी बन जाता है । उसका पारिवारिक जीवन संतुष्ट नहीं था । इसी बीच एक दिन हीरावती का समाचार उसे मिलता है कि वह एक बच्चे की हत्या कर जेल में है । वर्षों बाद एक दिन हीरावती श्रीधर के पास एक बार देखने मात्र आती है और हीरावती से वह समझता है कि अपने अभिमान की रक्षा के लिए हीरावती ने उस बच्चे की हत्या की । यह जानकर श्रीधर पत्थर की मूरत-सा बन जाता है । उसका मन अशांत बन जाता है ।

श्रीधर के माध्यम से शिवानी ने स्त्री और पुरुष के परिस्थिति-जनित शारीरिक संबंध और इसके परिणाम की कथा प्रस्तुत की है । पुरुष

---

1. करिए छिमा - शिवानी - 21

कितना भी अनुशासन रखनेवाला क्यों न हो परिस्थितियों के कारण उसका संयम टूट सकता है । अकेलापन और स्त्री का सामीप्य पुरुष को कभी अपने संयम से मुक्त कर देता है और इसके परिणाम वास्तव में स्त्री को ही भोगने पड़ते हैं । शिवानी की इस कथा में श्रीधर का चरित्र सशक्त होते हुए भी दुर्बलता का शिकार बन जाता है । जैसे यह स्वाभाविक भी है ।

"मधुयामिनी" का मुख्य पात्र है तिवारीजी । तिवारीजी को अपने जन्मस्थान में वर्षों बाद आने पर भी वहाँ के आचार विचारों को न माननेवाले, अमितव्ययी, अन्य देशों के आचार विचारों से मिलनेवाले, दुर्भागी और कपट व्यक्तित्व के रूप में लेखिका ने यहाँ प्रस्तुत किया है ।

तिवारी थाइलैंड के एक प्रसिद्ध हिन्दू मठ का मठाधीश है, वह स्वर्गपति है । उसकी छः बेटियाँ हैं । सबकी शादी हो जाती है और आखिरी बिटिया की शादी के लिए वह थाईलैंड से स्वदेश आता है । उसकी आखिरी कन्या गूँगी और बहरी है । इसलिए वह अपनी कन्या को एक बार भी घर के बाहर नहीं जाने देता । यहाँ लेखिका ने तिवारीजी के बुद्धिमान और छलपूर्ण रूप को हमारे सामने प्रस्तुत किया है । तिवारीजी समाज में रहकर भी अपना व्यक्तित्व समाज से अछूता रखना चाहता है । तिवारी अपने वैभव का चुग्गा डालकर शहर के पूरे व्यापारी वर्ग को फँसा लेता है । अपनी दासी से भी वह श्रृंगार की बातें करता रहता है और आसपास की स्त्रियों से भी वह बुरा व्यवहार करता है । देश के साधारण लोग जहाँ एक बेटी की शादी के लिए अनेक कष्टताएँ सहते हैं वहाँ वह अपनी बेटियों का विवाह करोड़ों रूपये खर्च करके

कराता है । बारातियों को रहने का प्रबन्ध बड़ी रकम देकर होटल में कराता है । इस प्रकार दिखावे के लिए तिवारी धन पानी जैसा बहाता है ।

तिवारी उस प्रवासी धनिक समाज का प्रतीक है जो भारत से बाहर रहकर रौबीला जीवन बिताता है और हमेशा अपने चारों तरफ रहस्य का पर्दा डालते घूमता है ।

"भामाजी" का नन्दन साधारण ब्राह्मण-वृत्ति करनेवाले परमानन्द पाण्डे का पुत्र है । पाण्डे की मृत्यु के बाद अपनी जुड़वाँ बहन की शादी हो जाती है और समधी आग्रह कर स्वयं नन्दन को भी साथ ले जाता है । नन्दन में अपने वयस के अनुसार बुद्धि नहीं है । ससुराल के सदस्यों से नन्दन हाथों ही हाथों में नचाया जाता है । स्कूल से भागकर वह दिन-भर सड़क के आवार छोकरों के साथ गुल्ली-डण्डा खेलता है, कभी घर-भर की औरतों के पेटीकोट और ब्लाउज़ सुखाने छत पर चढ़ जाता है, कभी एक-एक आने के पान के लिए तीन मील दूर बाज़ार भगाया जाता है । नन्दन में आत्मसम्मान नाम की कोई वस्तु नहीं है । इसी बीच श्वसुर की मृत्यु हो जाने से नन्दन अपनी बहन, पति और बच्चों के साथ दूसरे घर में रहने लगता है । बहन तो नन्दन के लिए दो दो मास्टर भी लगवा देती है ट्यूषन के लिए । पर वह हाईस्कूल में लगातार पांच वर्ष फेल होकर एक पंचवर्षीय योजना पूर्ण कर चुका है । कभी रोहिणी की नज़र बचाकर वह बच्चों की भाँति नन्ही नीलू के हाथ से बिस्कुट छीनकर खा लेता, कभी उसके मुँह से दूध की बोतल खींचकर खूब बड़ी-बड़ी घूँटें ले लेता । जीजा के अर्दली अली मर्दान से उसकी प्रगाढ़ मैत्री थी । वही नन्दन को अफीम कुटेव डाल देता है । पहले-पहले अली अपने किशोर मित्र का

शौक स्वयं पूरा करता रहता है फिर वह नन्दन को घर की छोटी-मोटी चीज़ें पार करना सिखाता है और उसे अपने पैरों पर खडा करता है । जिस दीदी की थाली में नन्दन खा रहा था, अब वह उसी में छेद करने लगता है । एक दिन जीजा के हाथ की 250 रुपये की घडी चुराकर 25 रुपये को बेचता है । इसी से क्रुद्ध होकर जीजा से उसको मार सहनी पडती है और अपनी जुडवाँ बहन के द्वारा घर से निष्कासित होना पडता है । बाद में वह याचक जीवन बिताने लगता है ।

यहाँ साधारण मानव से भिन्न बुद्धिहीन मनुष्य का चरित्र नन्दन के द्वारा लेखिका ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है । ऐसे लोगों के मन में अपना स्थान-मान और अपनी प्रवृत्ति की चिन्ता नहीं होती । वह अपनी अल्पबुद्धि से दूसरों के परिहास का पात्र बनता है और बुरे काम में लग जाता है । समाज उसकी उपेक्षा करता है । समाज के लिए वह एक बोझ बन जाता है ।

"मेरा भाई" का प्रमुख पात्र सुबय्या गिरिजा बाई का अनाथ भतीजा है । बाद में मर्डर, रेप, बैंक रोबरी आदि जुल्मों के कारण कर्नाटक गवर्मेंट उसके सर की दस हज़ार कीमत रख देती है । वह बचपन में लेखिका का मित्र था । वर्षों बाद सुबय्या धन चुराने के लिए ट्रेन में एक स्त्री को छुरी दिखाकर घबराता है । लेकिन वह लेखिका को पहचानता है तब वह अपनी मित्रता और स्नेह की याद में उसे बिना किसी उपद्रव किये छोडता है ।

क्रूर मनुष्य के मन में भी स्नेह का अंश कहीं -कहीं छिपा रहता है । यहाँ भी सुबय्या अपनी पुरानी सखी को जब पहचानता तब उसके प्रति स्नेह दिखाता है ।

"पिटि हुई गोट" का गुरुदास कौडी-कौडी कर जोडी गयी आठ हज़ार की पूँजी ही नहीं बाप-दादों की धरोहर, अपनी प्यारी दूकान भी दाँव पर लगाकर हार चुका था । महीने की रसद लाने के लिए एक पाँच का नोट भी तो नहीं रहा जेब में । दिन भर वह अपनी छोटी-सी दूकान में चेस्टनट स्ट्रोबरी और अखरोट बेचता था । उसकी दूकानदारी सीज़न तक ही सीमित थी, भारी-भारी बटुए लटकाए टूरिस्ट ही आकर मेवे खरीदते । डंडी मार कर बडी ही सूक्ष्म बुद्धि से वह दस हज़ार जोड पाया था, दो हज़ार शादी में उठ गये । तिरसठ वर्ष की उम्र में वह एक बार भी जुआ नहीं खेला था, किन्तु आज लाल के बहकावे में आ गया । साठ वर्ष के गुरुदास अठारह वर्ष की अनाथा युवती से विवाह करता है । वह उसकी तीसरी पत्नी थी । इसी से उनका जी करता है कि उसे भी चूल्हे के नीचे अपने दस हज़ार की संपत्ति के साथ गाडकर रख दें पर धीरे-धीरे उस सौम्य सन्त बालिका के साधु आचरण उसके शक्की स्वभाव को जीत लेता है । वह अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता है और जब उसको जुआ खेल से सब नष्ट हो जाता है तब वह अपनी पत्नी को दाँव पर रखकर खेलता है जरूर विजय की प्रतीक्षा से । लेकिन जब पराजित होता है तब वह कुए में कूदकर आत्महत्या करता है ।

गुरुदास विवेकहीन पुरुष का प्रतीक है जो अपनी स्थिति को समझे बिना एक न एक समस्या को अपने ऊपर उठा लेता है । छोटी उम्रवाली

लड़की से तीसरा विवाह करना और जुए में उसको लगा देना यद्यपि साधारण पुरुषों का स्वभाव नहीं है फिर भी ऐसे पुरुषों की कमी समाज में नहीं है । पुरुष की मानसिक दु:स्थिति कभी-कभी उसे गलत फैसला देने के लिए बाध्य करती हैं । ये गलत फैसले बड़े ही महंगे पड़ते हैं । यहाँ तक कि पुरुष को अपनी जान से ही हाथ धोना पड़ता है ।

"साधो, ई मुर्दन कै गांव" का पति डाका-डकैती करनेवाला आदमी है । एक-एक क्रूर डाका और हत्या के बाद वह अपनी पत्नी के पास आता है, दोनों ऐश करता है । फिर वह एक और डकैती करने के लिए जाता है और पकड़ा जाता है । बाद में सात डकैतियों और कत्ल के इल्जाम उसके सर पर होता है और दंड भोगने के लिए वह बाध्य हो जाता है ।

डाकू बननेवाला पुरुष कभी यह नहीं सोचता कि जिस परिवार पर डाका डाला जाता है वहाँ भी कोई माँ, बहन और पत्नी होती है और किसी के कत्ल से उनका अनाथ होना अपराध है । प्रकृति की दंडसंहिता से डाकू पुरुष हमेशा के लिए नहीं बच सकता ।

वर्ग विशेष के अंतर जो पुरुष पात्र नहीं आते उनका अध्ययन अन्य पुरुष पात्रों के अंतर्गत किया गया है । ये पात्र विशेष आचरण रखनेवाले हैं । उनके कार्य हर दृष्टि से विशिष्ट लगते हैं । साधारण मनोवृत्ति से भिन्न मनोवृत्ति रखनेवाले ये पुरुष पात्र पुरुष के कई चेहरों में से कुछ एक चेहरे को

प्रस्तुत करते हैं । इसलिए उनकी चारित्रिक विशेषता को परिवेशजन्य स्थितियों के अंतर्गत ही आँका जा सकता है । शिवानी की पैनी दृष्टि ने पुरुषों के स्वभाव की विशिष्ट पक्षों को छूने का प्रयास सफल रूप में किया है ।

शिवानी ने अपनी कहानियों में पुरुष पात्रों के अनेक पहलुओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । चारित्रिक दृष्टि से शिवानी के पुरुष पात्र कई सीमा रेखाओं से जुड़े हुए हैं । परंपरा, रूढ़ियाँ, स्वार्थ, निर्दयता, अविवेक और अत्याचार की दुर्बलताओं से जहाँ एक ओर वे बंधे हुए हैं तो दूसरी ओर स्नेह दया और शिष्टता के गुणों से भी वे अपरिचित नहीं है । शिवानी ने अधिकतर बहुसंख्यक पुरुषों की मनोवृत्ति पर ही ज़्यादा ज़ोर दिया है । शिक्षित हो या अशिक्षित पुरुष हमेशा स्त्री पर अपना आधिपत्य जमाना चाहता है । उसके रूप और सौंदर्य का वह उपभोग करना चाहता है, उस पर आसक्त होता है । परंतु आसक्ति का यह दौरे स्त्री के शरीर तक सीमित हो जाता है और वह कभी-भी नारी के मन को पहचान नहीं पाता । शिवानी के पुरुष पात्र नारी की अस्मिता को पहचानने में असमर्थ रहे हैं, क्योंकि उनमें से बहुत कम लोग ही नारी को समान अधिकारिणी मानते हैं । इस दृष्टि का कारण एक सीमा तक सामाजिक प्रथाएँ, परंपराएँ, आचार और शोषण-नीति ही है ।

पुरुष पात्रों के चरित्र-चित्रण के माध्यम से लेखिका ने पुरुष समाज के सामने उनके कुकर्मों का और दुर्व्यवहार का पर्दाफाश करना चाहा है । अतिरंजित होते हुए भी पुरुषों के दुर्व्यवहार सभ्य समाज की आँखें खोलनेवाले हैं । अपने चेहरे को देखकर पुरुष खुद परेशान हो सकता है । समाज भी उसे

चेतावनी दे सकता है । लेखिका का उद्देश्य यहाँ पर सफल हो जाता है । अन्यतः व्यक्ति वैचित्र्य या मानसिक विश्लेषण की दृष्टि से पुरुषों की चारित्रिकता का उद्घाटन नहीं हुआ है, ऐसा नहीं कहा जा सकता । शिवानी के कथा जगत में पूर्वनिर्धारित घटनाएँ हैं, चुनी हुई स्थितियाँ हैं और लेखिका की इच्छा पर नाचनेवाले पात्र हैं । इस कारण इन सभी चारित्रिक प्रस्तुतियों का अंत वैसे ही होता है जैसे लेखिका चाहती हैं ।

अध्याय - 5

संरचना के आयाम

शैली पक्ष

किसी भी कलाकृति को आयामित करनेवाली रचना धर्मिता उसके आंतरिक बाह्य पक्षों से जुड़कर उभरती है । आंतरिक पक्ष संवेदनाओं की गहराई से जुड़ता है तो बाह्य पक्ष शैल्पिक प्रयोग और अभिव्यक्ति के अन्य प्रकरणों से जुड़कर रूपायित होता है । कथ्यात्मक रचनाओं में कथा की आंतरिक शक्ति का एहसास उसकी भाषा शक्ति है एवं प्रयोगात्मक सार्थकता पर आधारित होकर उभरता है । वस्तुतः रचना प्रक्रिया की सही स्थिति का अनुमान करने के लिए कथ्य के साथ-साथ शैल्पिक एवं भाषाई प्रयोग का विश्लेषण आवश्यक हो जाता है ।

अधिकतर यह देखा जाता है कि रचनाकार अभिव्यक्ति के कई आधार ढूँढता है । शैली की विशिष्टता के साथ-साथ बिंब और प्रयोगों की सशक्तता के आधार पर शैल्पिक प्रयोगात्मकता को वह प्रस्तुत करता है । वस्तुतः रचना की सार्थकता को समझने के लिए शैल्पिक प्रयोग और बिंबों की अर्थवत्ता दोनों को समझना आवश्यक है । इसलिए शैली और शिल्प अध्ययन के प्रमुख अंग बन जाता है ।

वैसे शिवानी ने अपनी कहानियों में बोध एवं शिल्प दोनों को एकसाथ पकडने की कोशिश की है । परन्तु कहीं-कहीं आंतरिक तथ्य की अपेक्षा कथ्य की भाषाई एवं शैल्पिक प्रखरता अधिक सशक्त हो गई है । शिवानी

की भाषाशैली एवं शैल्पिक प्रयोग कई दृष्टियों से आंतरिक तथ्यों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण बन गये हैं । इस दृष्टि से उनकी भाषा शैली पर और शैल्पिक प्रयोग पर विचार करना आवश्यक है ।

उन्होंने कथा की प्रस्तुति में उन सारी शैलियों का सहारा लिया है जिससे कि अभिव्यक्ति सक्षम हो जाती है । वर्णनात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, स्मृतिपरक शैली आदि उनमें से प्रमुख शैलियाँ हैं । कथ्यात्मक स्थितियों की अभिव्यक्ति को प्रभावात्मक बनाने के उद्देश्य से इन विविध शैलियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग लेखिका ने किया है । विषय के अनुरूप परिवर्तित होनेवाली ये शैलियाँ लेखिका की संवेदनाओं को अधिक प्रखर और तीक्ष्ण बना देती हैं । पाठकीय संवेदना लेखकीय संवेदना से तादात्म्य प्राप्त करने में किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं करती ।

वर्णनात्मक शैली

कथानक को संगठित व विकसित करने की यह सर्वाधिक पुरातन शैली है । कथन के साथ-साथ चित्रण में पात्रों की बाह्य हरकतों का वर्णन इस शैली का प्रकार्य है । इस शैली में वर्णन की प्रधानता होती है । इसमें लेखक की प्रवृत्ति, रुचि व योग्यता को लक्षित किया जा सकता है क्योंकि इसमें बिना किसी शास्त्रीय बंधन के एकदम खुलकर लिखने की स्वच्छन्दता होती है । यहाँ लेखक अपनी अनुभव समृद्धि के आधार पर वर्णनों में विश्वसनीयता और कथा में यथार्थिकता लाने के लिए अपनी कलात्मकता का निर्द्वन्द्व उपयोग कर सकते हैं । बीच-बीच में प्रकृति, गाँव व परिवार की स्थितियों, लोगों के आपसी संबंधों आदि के चित्रणों में वर्णनात्मकता का प्रचुर प्रयोग हुआ है । शिवानी ने पात्रों के चरित्रांकन तथा उनकी विचारधारा को उजागर करने के लिए प्रायः इस शैली

का प्रयोग किया है साथ ही प्रकृति के चित्रण में तो शुद्ध वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है । शिवानी की वर्णनात्मक शैली द्वारा प्रत्येक पात्र, वातावरण और घटना हमारी आँखों के सामने घूमता है और हम उनकी कहानी में पूर्ण रूप से डूबकर आस्वादन कर सकते हैं ।

लेखिका ने पात्रों के स्वरूप, अंत:बाह्य चारित्रिक तत्वों का उद्घाटन विशेषत: वर्णनात्मक शैली में किया है - जैसे -

"वैसे तो वह राजनीति का सिद्धांत कौमुदी माँ के गर्भ से ही रटकर आया था, पर सबसे प्रमुख सूत्र का एक पृष्ठ शायद उसने बिना पढ़े ही उलट दिया, लोकप्रियता की अमर बूटी खाकर आए घाघ से घाघ राजनीतिज्ञ को भी निर्दोष पुष्प में छिपे सर्प की भांति नारी का सौंदर्य-विषधर डसने पर पल-भर में ही अपने घातक विष से निर्जीव बना, धरा पर लुढ़का सकता है, यह वह जानता था । उसका जन्म पहाड़ के एक निम्न-मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था, पर उसकी अकड़-बांकपन, बोल-चाल, उठक-बैठक, नम्रता, किसी में रंगरूट का नयापन नहीं था । उसका डीलडौल लंबा, रंग आकर्षक रूप से गेहुआं और आँखें बड़ी-बड़ी थीं । पतली मूँछों से मेल खाती तीखी नासिका के बीच-बीच में फड़कते पतले नथुने उसके क्रोधी स्वभाव के परिचायक थे, पर विलासी मोटे अधरों पर बात-बात में थिरकनेवाली उज्ज्वल हंसी, चेहरा देखकर मानव स्वभाव की गुत्थियाँ सुलझानेवाले को भी उलझन में डाल देती थी । यह व्यक्ति क्रोधी भी हो सकता था और शिशु-सा सरल आनन्दी भी । चेहरे का मुख्य आकर्षण था उसका कौशोर्य और कंठ का आश्चर्यजनक कच्चापन ।"[1]

यहाँ पात्र का अंत: और बाह्य दोनों रूप का सजीव चित्रण लेखिका ने वर्णनात्मक शैली द्वारा प्रस्तुत किया है ।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 45-46

"मामी के गुलाब वास्तव में सवा लाख के थे, ऐसे हृष्ट-पुष्ट गुलाब मैं ने बहुत कम देखे थे, किन्तु उनके गुलाब से ही सुन्दर उनकी तीसरी कन्या बैठी थी, इसमें कोई सन्देह नहीं । या तो दो सांवली बहनों के बीच में खडी रहने से या गुलाबी, पीले गुलाबों की मद्धिम आभा से बेबी का रंग गहरा गुलाबी लग रहा था, ऐसा रंग बंगाली लडकियों में देखने को कम मिलता है । आँखें बहुत बड़ी नहीं थीं, किन्तु प्रत्यंचा-सी भवों के बीच लापरवाही से खींची गई तिलकनुमा काजल की बिन्दी बड़ी प्यारी लग रही थी । नाक बहुत पतली होने के कारण अधरपुट खुल-खुल जाते थे ।लम्बे बालों का ढीला जूडा बार-बार खुलकर उसके कंधों पर ढुलका जा रहा था और मामी की वह जूडा बांधनेवाली अनूठी कन्या उतनी ही गांठों में मेरा मन बांधती जा रही थी ।"[1]

नारी सौंदर्य का वर्णन, व्यक्ति के रूप-रंग और उसके स्वभाव को उपर्युक्त वर्णन के माध्यम से शिवानी ने अमरत्व प्रदान किया है ।

"उनकी सलवार, कमीज़, दुपट्टा, यहाँ तक कि रूमाल भी खद्दर का था और शायद उसी के संघर्ष से उनकी लाल नाक का सिरा और भी अबीरी लग रहा था । उनके चेहरे पर रोब था, किन्तु लावण्य नहीं । रंग गोरा था, किन्तु खाल में हाथ की बुनी खादी का-सा ही खुरदरापन था, ठुड्डी पर एक बड़े-से तिल पर दो-तीन लम्बे बाल लटक रहे थे, जिन्हें वे अंगुली में लपेटती छल्ले-सा घुमा रही थीं ।"[2]

व्यक्ति का एक और चित्र देखिए -

"सदा की रोबीली नलिनी और भी रोबदार हो गई थी, गालों पर सुर्खी थी, चेहरा भर जाने से बडी आँखें कुछ छोटी लग रही थीं और एक प्यारी नन्ही-सी दूसरी ठुड्डी भी निकल आई थी ।"[3]

---

1. स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ. 89-90
2. कैंजा - शिवानी - पृ. 123
3. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 58

प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णनात्मक शैली द्वारा सजीव और जीवन्त चित्र शिवानी ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है - जैसे -

"मई का महीना था, नैनीताल अपने पूर्ण यौवन पर था। संध्या होते ही असंख्य डोंगियां ताल के शुभ्र नीलाभ जल में तैरने लगीं और जूही-बेला के गजरों की गमक से नैनीताल के ओर-छोर सुवासित हो उठे।"[1]

"सुपारी के पेड़ और पानों के झुरमुट के बीच, एक विराट् अग्निस्तूप की लाल-लाल लपटें आकाश को चूम रही थीं। विचित्र परिधान में अंगों को मोड़ता-मरोड़ता एक नागा तरुण हमारे स्वागत में अपनी रणसिंही को आकाश की ओर उठा-उठाकर फूँकने लगा था, "तू...तू...तू"।[2]

लेखिका ने देश-काल वातावरण और परिस्थितियों के स्वरूपोद्घाटन के लिए भी प्रमुखतः वर्णनात्मक शैली का ही आश्रय लिया है।

"पूरे शहर में विवाह-लग्नों की बाढ़-सी आ गयी थी। इस वर्ष भाद्रमास में देवगुरु सिंहस्थ हो जाने से दो जून का विवाह-लग्न ही अंतिम लग्न है, ऐसी ही कुछ घोषणा कर कुमांचल के गण्यमान्य पंडितों ने कन्यादायग्रस्त पिताओं की नींद हराम कर दी थी।

परंपरा से कूर्मांचल में सिंहस्थ गुरु लग्नादि के लिए वर्जित रहा है, फिर "पुत्र भ्रातृ कलत्राणि हन्याच्छीघ्रं न संशयः" सुनकर अधिकांश धर्मपरायण सरल कुमाऊंवासियों को जैसे सांप सूँघ गया था। एक तो वैसे ही महंगाई ने सबका जीना दूभर कर दिया था, उस पर विवाह की इस महामारी ने तो

---

1. कैंजा - शिवानी - पृ. 132
2. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 92

देखते ही देखते एक से एक समृद्ध परिवारों को मिट्टी में मिला दिया । लग रहा था कि सन् अठारह वाली वही इन्फ्लुएंजा महामारी फिर से फैल गयी है, जिसने कभी नैनीताल की आधी जनसंख्या को चुटकियों में साफ कर धुन दिया था । गेहूँ के गगनचुम्बी भाव का यह हाल था कि एक क्विंटल गेहूँ का बोरा गृह तक पहुँचाने के पश्चात् हृष्टपुष्ट गृहस्वामी की वयस के भी चार वर्ष अनायास ही घटकर रह जा रहे थे । अनाज, विवाह के मुकुट, बन्ना घोड़ी, गानेवाली पेशेवर नचनारियों की फीस, सबमें आश्चर्यजनक रूप की तेजी का मूल कारण पंडितों द्वारा उद्घोषित यह नवीन विवाह-बजट ही था, इसमें कोई सन्देह नहीं ।..................

शहर के कई मध्यवर्गीय मुरदे बिना फूलमालाओं के ही सूनी गरदन लिए बड़ी विवशता से महाप्रस्थान के पथ पर चले जा रहे थे ।.....

?

लगता था, पूरा शहर ही विषम विवाह-ज्वर से ग्रस्त हो गया है । दाएं-बाएं, जहाँ से देखो, वहीं से टेढ़ा-बांका मोटा-ठिगना, काला-गोरा, एक न एक नौशा सेहरा बाँधे मस्ती से झूमता चला जा रहा था । स्वयं परमपुरुष ही शायद भरतार बन पूरे शहर को इस विवाह-महोत्सव में आकण्ठ डुबो रहा था कि अचानक पूरे शहर में खलबली मच गयी । खल-बली मचने जैसे बात भी थी - एक तो वैसे ही दुकानदार परिस्थितियों का लाभ उठाकर उपभोक्ता-वर्ग को पीसे दे रहा था, उस पर एक सर्वथा अपरिचित, ऐसे प्रवासी परिवार ने उस कोठी को मुंहमांगे दाम पर अपनी कन्या के विवाह के लिए ले लिया, जिसकी शहर से दूरी, पानी का अभाव, सर्वोपरि ऊँचा किराया देख आज तक किसी को उसे लेने की हिम्मत नहीं पड़ी थी ।"[1]

यहाँ समाज के धार्मिक और विवाह से संबंधित रीतिरिवाज़ और उससे आर्थिक स्थिति से उत्पन्न विषमताएँ और उसके कारण जनजीवन में

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 146-147

आया परिवर्तन आदि को वर्णनात्मक शैली द्वारा लेखिका ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है जिससे वह घटना और परिस्थिति एक चित्रपट दृश्य के समान हमारे आँखों के सामने घूमता है या घटित प्रतीत होता है ।

एक प्राचीन गुहा के अन्दर का वर्णन देखिए -

"उसी तीव्र शिखा से आलोकित गुहा की चित्र प्रदर्शिनी देखकर श्रीधर स्तब्ध रह गया । क्या वह कोढ़ी साहब की एक ही दिव्य तूलिका का चमत्कार था, कहीं कांगड़ा-गढ़वाल शैली की कृष्णवधू, वर्षा-मुखरित रात्रि के अभेद्य अंधकार की कुण्डलियाँ कुचलती, अभिसार के पथ पर चली जा रही थी, कहीं एड़ियाँ टिकाए प्रियतम की प्रतीक्षा में द्वार पर खड़ी चौखट में मढ़ी सुप्रिया । कहीं गुजरात की सोलंकी मूर्तिकला को लज्जित करती, दोनों हाथों की चम्पक उंगलियों से नग्न वक्षस्थल ढांपती अप्सरा और अजन्ता के भित्ति-चित्रों के गांभीर्य का जाल बुनती शैव द्वारपाल की अविकल प्रतिमूर्ति । खजुराहो और कोणार्क के शार्दूल, सुर सुन्दरियाँ, शालभंजिकाएँ और अपूर्व सुन्दरी नाग कन्याओं के जाल में भटकता, कला-पारखी मुग्ध श्रीधर......।"[1]

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि वर्णनात्मक शैली को प्रस्तुत करने में शिवानी किसी के पीछे नहीं हैं । शब्दों को चुन-चुनकर रखती हुई चित्रोपम स्थितियों को उभारने में उनकी क्षमता अद्वितीय है । वे इस तरह से शब्द चयन करती हैं कि विषयगत प्रतिपादन के अनुरूप समुचित आख्यान प्रणाली बदलने लगती है । व्यक्ति का चित्र खींचते समय जिस वर्णनात्मक शैली का सहारा वे लेती हैं प्रकृति चित्रण करते समय उससे भिन्न शैली अपनाती हैं । यद्यपि दोनों वर्णनात्मक शैलियाँ हैं फिर भी उनमें काफी अंतर देखा जा सकता है । इसी भाषाई और शैलीगत चारुता उनके आख्यान पक्ष का महत्वपूर्ण अंग बन जाती है ।

---

1. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 18

विवरणात्मक शैली

कभी-कभी लेखिका कहानी के आरंभ में ऐसे विवरण प्रस्तुत करती हैं जो समूची भूमिका को बाँधने में अत्यंत सहायक होता है । ऐसा विवरण प्रस्तुत करते समय बड़ी ही सावधानी के साथ दृश्यबोध को बनाये रखने की कोशिश लेखिका करती हैं । पाठक को यह आभास होने लगता है कि वह भी लेखिका का हमसफर बन गया है । "तोमार जे दोक्खिन मुख" कहानी का एक दृश्य यहाँ उल्लेखनीय है ।

"गंभीर रात्रि की गहन शून्यता में तमिलनाडु एक्सप्रेस तेज़ी से वन अरण्यों को चीरती चली जा रही थी । उस सुदीर्घ यात्रा में अपने डिब्बे का एकांत सहसा मुझे भयावह लगने लगा । एक बार कण्डक्टर आकर, बड़ी नम्रता से पूछ भी गया था "मैडम, यदि आप को अकेले में सफर करने में आपत्ति हो तो बगल के डिब्बे में ऊपर की एक बर्थ खाली है ।...."

"नहीं, मैं यहीं ठीक हूँ । "कह, मैं ने उसका विनम्र प्रस्ताव फेर दिया था । अटपटे अनचीन्हे यात्रियों के साहचर्य से मुझे एकांत ही अच्छा लगता है । किन्तु अंधेरा होते ही वही एकांत मुझे सहमा गया । बत्ती जलाकर मैं ने एक बार पढ़ी पत्रिकाओं को फिर उलटा-पलटा चिटखनी ठीक से लगी है या नहीं - यह देखा । सिरहाने की खिड़की के दोनों शटर चढ़ा लिए फिर भी न जाने कैसा भय लग रहा था.............।"[1] इस प्रकार की कहानियों की संख्या अधिक है ।

आत्मपरक शैली

स्वयं को एक पात्र के रूप में रखकर "मैं" शैली को अपनाकर लिखी गई कहानियाँ आत्मपदीय शैली के अंतर्गत आती हैं । "चीलगाडी" पूर्ण रूप

---

1. तोमार जे दोक्खिन मुख - शिवानी - पृ. 113

से आत्मपरक शैली में लिखी गई है । "चीलगाड़ी" में लेखिका स्वयं अपनी कथा कहती हैं जो अत्यंत स्वाभाविक बन पड़ी है । कहानी के आरंभ में ही नायिका के रूप में स्वयं लेखिका प्रस्तुत होती हैं । देखिए :-

"काश, मैं अपने विदेशी अतिथिदल के साथ असम के उस गहन वन में आयोजित नागा सहभोज में न गई होती

उस रणसिंहा की मीठी स्वर-लहरी ने मुझे फिर बेचैन कर दिया । एक बार मेरे जीवन में ऐसी ही रणसिंही और बजी थी,..

मैं ने अमानवीय दुःसाहस से कुचल दिया था, वे आज फिर जीवन्त हो उठी है ।"[1]

"मेरे श्वसुर के वैभव का अन्त नहीं था । यह ठीक था कि मेरी दो विधवा जिठानियाँ और एक विधवा ननद, मेरी ससुराल की स्थायी सदस्याएँ थीं, किन्तु उस बीच कमरे के विराट् महल में तीन क्या तीस आश्रिताएँ भी रहतीं, तो भी मेरा उनसे टकराने का कोई प्रश्न नहीं उठता था.........।"[2]

"तोमार जे दोक्खिन मुख" में शिवानी ने आत्मपरक कथन के साथ-साथ दूसरे पात्र को भी सामने प्रस्तुत करके एक सुखद प्रयोग को अपनाया है । इसमें दोनों पात्र अपने अपने अनुभवों का ब्योरा प्रस्तुत करते हैं और मानसिक स्थितियों का भी परिचय देते हैं ।

---

1. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 92
2. वही - पृ. 93

"आज अन्तिम बार तुम्हें चेतावनी देती हूँ, राघवन । ऐसे मेरा पीछा किया तो फिर मेरे इस ब्रह्मास्त्र को देख लो ।"कह मैं ने अपनी चप्पल दिखा दी थी । सार्वजनिक सभा में दी गयी मेरी वह मुँहफट फटकार पाकर उसी दिन से उसने मेरा पीछा करना छोड़ दिया था, और मुझे यों उस घिनौने व्यक्ति से मुक्ति मिल गई । इतने वर्षों में वह फिर मुझे आज तक कभी नहीं दिखा, जब कि प्रायः ही इधर-उधर जाने पर, मेरे सहपाठी मिलते रहते और आज पूरे पैंतीस वर्षों के पश्चात् वह अचानक फिर मुझसे टकरा गया । मेरेलिए टकराहट निश्चय ही सुखद नहीं थी ।"[1]

राघवन अपनी कथा लेखिका से कहता है -"नशा उतरा तो मुझे सहसा अपने भयंकर अपराध का बोध हुआ । मेरे पिता वारंगल के प्रसिद्ध महाजन थे । दिन-रात लाखों का लेन-देन होता था । उनका वैभव मुझे कानून के घेरे से निश्चय ही छुड़ा सकता था । फिर मेरा पक्ष भी इतना दुर्बल नहीं था । दुराचारिणी पत्नी को मैं ने रंगे हाथों उसके प्रेमी के साथ पकड़ा था । अपराधी मैं नहीं था, अपराधी था पति का आहत पौरुष और उसे अदालत निश्चय ही क्षमा कर सकती थी । किन्तु एक तो बचपन से ही मैं विधाता की आँखों का काँटा था, उस पर विशालाक्षी वेश्या की दत्तक पुत्री थी, उससे विवाह कर मैं ने बहुत पहले ही पिता को शत्रु बना लिया था ।"[2]

"छिः मम्मी, तुम गंदी हो" में एक भिन्न शैली को लेखिका प्रस्तुत करती हैं । पात्र स्वयं अपनी कथा लेखिका से कहती है -

"उस दिन गोश्त लाए थे जो..................

"मुझे गुस्सा आ गया, कहने लगे थे गोश्त बना । रात के नौ बज रहे थे,

---

1. स्वयं सिद्धा - शिवानी - पृ. 19

2. वही - पृ. 123

कब मसाल पिसेंगे, कब हंडिया चढ़ेगी और कब पकेगी, मैं ने कहा, "जी, खाना बन गया है, कल बना दूँगी । बच्चे तो सो भी गए हैं ।" वह फिर अड़ गए बोले, "आज पकेगा । मैं कहती, "कल । वे कहते "आज" और फिर इसी कल-आज की चिनगारी ने पूरे गृह को भस्म कर दिया । गोश्त बना, उन्होंने खूब खाया, पर मैं मारे गुस्से के ठीक से खा भी नहीं पाई । रोते-रोते फिर ऐसी नींद आई कि आँखें ही नहीं खुली । अचानक उन्होंने मुझे झकझोर कर उठा दिया । "क्या है ।" मैं ने झुंझलाकर पूछा । यहाँ आओ "उन्होंने कड़ककर कहा । मैं चुपचाप उठकर चली गई ।"[1]

आत्मपरक शैली को अपनाते हुए जब कथा का विस्तार किया जाता है तब शिवानी किसी न किसी पात्र के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होती हैं । उधर अन्य पात्रों के प्रस्तुतीकरण के माध्यम से कथा शैली को मनचाहा मोड देती हैं । इस प्रक्रिया में वैयक्तिक स्पर्श के साथ साथ ऐसी विश्वसनीयता का भी आयोजन होता है कि अनुवाचक समूह को स्थितियों के साथ तादात्म्य जोड देता है । वैसे आत्मपरक शैली की यही एक विशिष्टता होती है कि लेखकीय संवेदना पाठकीय संवेदनाओं को छूने में सफल बनी रहती है । शिवानी ने इस तरह के कथा प्रसंगों को और विशेष शैली को अपनाकर कथ्यात्मकता को अधिक बोधगम्य बना दिया है ।

स्मृतिपरक शैली

इस शैली में कथासूत्र अतीतोन्मुख होता है लेकिन यहाँ लेखक अतीत को इन घटनाओं के क्रम की सीधी रेखा न खींचकर उन्हें पात्र की स्थिर तरंगों में प्रस्तुत करता है । इसमें वर्तमान अतीत को जगाने का निमित्त बनकर

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 54

आता है, पर अतीत से ही वर्तमान प्रकाशित भी होता है । इस प्रकार घटनाक्रम की जड़ अतीत में है, यह पद्धति गहराई से गोता लगाने की प्रक्रिया है । अमूर्त अवचेतन को कथाकार इस शैली के माध्यम से मूर्त्त कर देता है । अवचेतन में छिपा अतीत का यह अमूर्त्त खण्ड वर्तमान को किसी समान घटना से कौंधता है और स्मृति के सहारे पात्र उसे व्यक्त करता जाता है । इस तरह समय की लघुतम परिधि में जीवन के विस्मृत परिवेश को समेट लेने की इसमें अपूर्व शक्ति है । "चन्नी" कहानी में इसकी झलक देखी जा सकती है ।

"कुछ बुर्के की रेशमी खसखस और कुछ अंगुली में पड़ी हीरे की अंगूठी की दमक ने मेरा ध्यान आकर्षित किया । कैसी लम्बी सुडौल अंगुलियाँ थीं । और दूसरे ही क्षण मुझे एक अजब घुटन ने व्याकुल कर दिया, ऐसी ही लम्बी और सिरे से टेपरिंग अंगुलियाँ मैं ने कहाँ देखी हैं - कहाँ देखी हैं ?

"आज ट्रेन में किसी अपरिचिता की लम्बी अंगुलियाँ देखकर अभागिनी चन्नी की स्मृति फिर ताजी हो उठी थी ।"[1]

स्मृतिपरक शैली के अंतर्गत उन्होंने ऐसी शैली का आयोजन किया है जो किसी न किसी अनुभव के अचानक होनेवाले धक्के से जन्म लेता है । ऐसी हालत में स्मृतियाँ जागरूक हो जाती हैं और पूर्वकथा पंखुड़ियाँ फैला लेती है । "उपहार" कहानी में इस तरह की एक स्थिति की झलक मिलती है ।

"नलिनी क्या इतनी बड़ी दुर्घटना मुझसे छिपा गई या इस अभागे की दुर्दशा से वह अनभिज्ञ थी ? तीन वर्ष पूर्व, नैनीताल में नलिनी का कान्वेंट की सधी लिखावट का पत्र देख मैं चौंक पड़ी थी । मोम्बासा से उसने एक सुनहरे छपे कागज़ में आठ-दस पंक्तियाँ ही लिखी थीं, पर मुझे लगा था,

---

1. स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ. 110

कई वर्ष पहले बिछुड गई मेरी प्रिय प्रतिवेशिनी अपनी बड़ी-बड़ी आँखें मटकाती मेरे सामने आकर बैठ गई है । बोलता, जीता-जागता सजीव पत्र लिखना बिरले ही जानते हैं । नलिनी का पत्र खुलते ही बोलने लगा था ।"[1]

भाषा और आलंकारिकता

शिवानी ने लच्छेदार भाषा और मंजी हुई शैली में अपनी कथाओं का ताना बाना बुना है । इससे पाठक को दिलचस्प कथाएँ मिल जाती हैं और परिपक्व शिल्प उन्हें मनोरम बना देता है । कल्पना को सत्य का रूप देना शिवानी की कहानी की मुख्य कला है । शैली का महत्व इसलिए अधिक है कि इसी के माध्यम से ही कहानीकार अपनी कृति में प्रभावात्मकता उत्पन्न करता है तथा आकर्षक बनाता है ।

शिवानी अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के साथ विशिष्ट भाषाओं को लेकर हिन्दी साहित्य में अवतरित हुई हैं । वास्तव में वे एक ऐसी लेखिका हैं जिन्हें बंगला, पहाड़ी, अंग्रेज़ी, हिन्दी और संस्कृत का विशेष ज्ञान है और इन सभी भाषाओं पर उनका समान अधिकार है । बंगाली, अंग्रेज़ी तथा पहाड़ी भाषा के अधिक प्रयोग के कारण आलोचकों ने उनकी शैली पर दुहराव का आरोप लगाया है । इस दुहराव के संबंध में स्वयं शिवानी का कथन है :-

"अपने उसी परिवेश का सही चित्र प्रस्तुत करने में जो शैली, बड़ी स्वाभाविकता के साथ स्याही की भाँति मेरी लेखनी ने सोख ली है, उसे मेरे आलोचकों ने मेरा दुहराव कहा है किन्तु मैं डॉ. जोनसन की पंक्तियों में अटूट विश्वास रखती हूँ, "वन्स अ मेन हैज़ डवलप्ड अ स्टाइल, ही कैन सेल्डम राइट इन ऐनी अदर वे ।" लेखक जिस शैली को एक बार अपना लेता है उसे छोडकर फिर किसी नई शैली में लिखना उसके लिए असंभव नहीं तो कठिन अवश्य होता है ।"[2]

---

1. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 58
2. रेखाचित्रों की भूमिका में - शिवानी - पृ. 12

शिवानी अपनी भाषा के लिए शब्द चयन में यथेष्ट उदार हैं । उनकी भाषा का शब्द भण्डार व्यापक और समृद्ध है । उन्होंने अभिव्यंजना को सशक्त करनेवाले समस्त शब्दों का चाहे अंग्रेज़ी, पहाड़ी, बंगाली, उर्दू हो या हिन्दी के ठेठे शब्द उनका यथास्थान प्रयोग किया है । भाषा की स्वाभाविकता बढ़ाने के लिए शिवानी ने अनेक लोकप्रचलित ठेठ शब्दों का प्रयोग किया है :- पिठ्या {तिलक}, चरयो {मंगलसूत्र}, डाम {जले का चिह्न}, गाढ {नदी}, म्योला {घाटी}, कुस {कुश}, विट्टोरी {विक्टोरिया} ।

पहाड़ी

सुआमी गंगानाथ, सबूक भल करिया परभू ।
{हे भगवान, स्वामी गंगानाथ, सबका भला करना प्रभु }[1]
"ओहे खेपा-दूरे थाक आमी एक्खुनी स्नान कोरेछी" {अरे पगले, दूर हट, मैं अभी नहाती हूँ ।}[2]
"अरे बाबा, माथाय दोष ना की रे तोर ?" {पागल है क्या रे तू ?}[3]
"छोकरी, तू शूं गांडी थई छे ?" {लड़की, क्या तू पागल हो गई है । }[4]

इन शब्दों को कहानी लेखिका ने स्वयं प्रयुक्त किया है और पात्रों के कथोपकथन में भी इनका प्रयोग देखा जा सकता है । पहाड़ी समाज के चित्रण में ठेठ शब्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है ।
"गुरु महाराज ने दीच्छा दिया और कहा""भाई जा, दिन रात चिमटा बजाकर भिच्छा मांगकर खा और भिच्छा मांगकर पहन ओढ़ । तू ने जीव हत्या किया है यही तेरा पिराजित है, अब परभू तेरा मालिक और परभू सहारा है ।"[5]

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 94
2. एक थी रामरथी - शिवानी - पृ. 37
3. वही - पृ. 37
4. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 59
5. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 87

हिन्दी भाषा के शब्दों को चुन-चुनकर विदेशी शब्दों को बहिष्कृत करने की मनोवृत्ति उनके उदार एवं व्यापक दृष्टिकोण को ग्राह्य न थी उन्होंने कृत्रिमतापूर्ण शब्दों की योजना की अपेक्षा स्वाभाविक भाषा दिखलाने का परिश्रम किया है । ग्रामीण पात्रों के चरित्र-चित्रण में उन्हीं की सामाजिकता और संस्कारों को मूर्त करनेवाले ग्राम्य शब्दों का बहुत प्रयोग किया है और इससे अंचल विशेष को एक सशक्त "व्यक्तित्व" प्रदान करने में वे अत्यन्त सफल रही हैं ।

कहानी में अंग्रेज़ी शब्दों का शिवानी ने भरपूर प्रयोग किया है । जैसे :-

स्टोव, गिलास, सर्चलाईट, ट्रंजिस्टर, डायनामाइट, फ्रेम, लॉकेट, चार्ट, नोटिस, फोन, नैपाकन, सीट, स्वेटर, पाउडर, टार्च, फर्नीचर, गेट, क्लास, फ्रिज, फ्लाइट, पासपोर्ट, स्टील, सूटकेस, चेन, हाई ब्लड प्रेशर, इण्टर का रिज़ल्ट, ड्यूटी-रूम, हाईकोर्ट, रिसेप्शनिस्ट, सीनियर, स्मार्ट, डॉक्टर, मिनिस्ट्री, डिप्टी पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट, एकाउण्टेंट, हिस्टीरिया, हिस्टिरिकल, क्लोरोफार्म, मेडिकल कॉलिज, स्कार्फ, लेन्स, कैमोन, हनीमून, बटन, नम्बर, पेटीकोट, डार्लिंग, पब्लिक सर्विस कमीशन, प्रिन्सिपल, हाउ स्वीट, सिविल सर्जन, ट्रक, कार, वार्ड-बाय, स्कूल, शेयर, इंच, बैंक, मर्डर, रेप, रौबरी, गवर्मेण्ट, फ्लैशबैक, बर्थ, कैप आदि ।

अंग्रेज़ी शब्दों के साथ-साथ अंग्रेज़ी का पूर्ण वाक्य के प्रयोग करने में भी वे नहीं हिचकतीं । जैसे -

"यू आर शेमलेस पिरी.....।"[1]

"हाउ कैन यू से दैड ममी ।"[2]

"गुड मार्निंग चिल्ड्रन ।"[3]

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 112

2. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 83

3. वही - पृ. 82

हिन्दी वाक्यों के बीच अंग्रेज़ी वाक्यों को भी मिलाकर वाक्य को और भी सुन्दर बना दिया है -

"ख़ैर, हटाइए भी, पता नहीं । आइ शुड नाट हैव टोल्ड यू, मुझे आपसे नहीं कहना चाहिए था । "[1]

"मामी पहचाना नहीं क्या? देयर वाज ए क्रुकेड मैन ।"[2]

कभी शिवानी हिन्दी के बीच अंग्रेज़ी की लिपि में ही अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग करती हैं - "ओह, मूर्ख लडकी - I am sure there is something wrong with you - 'अधैर्य" से डाक्टर दारुवाला ने उसे कन्धे से पकडकर झकझोर दिया था ।'[3]

शिवानी की भाषा का आदर्श उनके पात्रों के सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर के आधार पर बना है । नगर निवासी पात्रों की भाषा के दो रूप प्राप्त हैं एक तो शिक्षित व्यक्तियों की भाषा, जिसमें संस्कृत और अंग्रेजी शब्द आये हैं और दूसरी अशिक्षित पात्रों की भाषा जो प्रचलित शब्द प्रधान है । यहाँ भी अंग्रेज़ी का प्रयोग अभिजात वर्ग के पात्रों में विशेष हुआ है जिसमें वर्ग विशेष के पात्रों की मनस्थिति और वातावरण का निर्माण करने में अत्यंत सहायता प्राप्त होती है । यह ठीक भी है कि जैसा पात्र वैसा रंगमंच होता है और उसी के अनुरुप उसकी भाषा होती है । "के" नामक कहानी में "के" और "शेखर" शिक्षित है इसलिए उनकी भाषा में अंग्रेज़ी की छाप दिखाई पडती है - जैसे -

"जी इसी वर्ष फिज़िक्स में एम.एस.सी का फाइनल दे रहा हूँ ।"[4]

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 98
2. स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ. 87
3. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 85
4. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 66

कहानी की भाषा में लेखिका भी स्वयं इस तरह का प्रयोग करती हैं ।

"गिलास भरा हिसार को भैंस का दूध साथ में मल्टी विटैमिन की सतरंगी गोलियाँ ।"[1]

"क्यों, किसी इंटोरियर डेकोरेशन का कोर्स किया है इसने ?"[2]

"फिर न जाने कितनी टिकटहीन यात्राएँ कीं, ट्रक ड्राइवरों से दया की भीख माँगी ।"[3]

उर्दू शब्दों के प्रयोग से शिवानी ने अपनी कहानी की भाषा को और भी मधुर बना दिया है । जैसे-

"खुदा, कत्ल, जिद, हाफ़िज़, अलमस्त, गवाह, तकलीफ, परहेज, मुहब्बत, शरीफ़, मज़ाल, ख्याल, सफर, सुबह, ज़ोरदार, फुर्सत, हज़ामत, बदबू, खून, माफ, गुलज़ार, रकम, इन्तज़ाम, रिवाज़, मेज़बान, कैफियत, खुशबू, आदि अनेक शब्दों का प्रयोग देखा जा सकता है ।

"खबरदार जो मेरे ननकू को फुसलाया । मैं क्या नहीं समझती कि तू उसे दूध-जलेबी खिलाखिलाकर क्यों फुसला रही है ? चुपचाप किसी दिन कत्ल कर देगी उसका ।"[4]

"तली-भुनी चीज़ों का परहेज करना होगा ।"[5]

संस्कृत

अनाथ, ज्येष्ठा, उपहार, दंड, गजदन्त, विप्रलब्धा आदि ।

शैली की प्रभावात्मकता बढ़ाने के लिए शिवानी ने उपमा,

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 67
2. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 114
3. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 48
4. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 28
5. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 142-143

उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का अच्छा प्रयोग किया है । शिवानी की उपमाएँ नवीन एवं अनूठी हैं । जिस प्रकार शिवानी - साहित्य में जीवन की ताज़गी है उसी प्रकार उनका आलंकारिक विधान जीवन के अनुभव और पर्यवेक्षण की नवीनता से अनुप्राणित है । शिवानी की उपमाएँ नवीन हैं, मौलिक हैं और वर्तमान समाज से ली गयी हैं । शिवानी ने उपमाओं का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है - जैसे -

"वह रात-भर पिंजरे में बन्द खूँखार शेर-सा ही कमरे में चक्कर लगाते-लगाते देखता - दोनों हाथ छाती पर धरे उसकी प्राणप्रिया, दंतहीन भोले शिशु की-सी गहन निद्रा में निमग्न है ।"[1]

"अप्सरा सी सुन्दरी मामी और डाकू के से भयानक चेहरेवाला वह बूढ़ा ।"[2]

"उस मोटी औरत की हँसी बच्चे-सी लुभानी थी, और उसके स्वस्थ दाँतों की झलक किसी शिशुमुख में उभरी नयी दूधिया दंतपंक्ति-सी ही मनोहारी लग रही थी ।"[3]

"हाथ पैर सिकोड़े बिल्ली-सी मास्टरनी सो रही है ।"[4]

"तिलमिलाकर, क्रुद्ध सिंहनी-सी रजुला, बेनज़ीर पर टूट पड़ी ।"[5]

"उमा यादव ने अपनी दोनों पुष्ट बाँहें मेज़ के आसपास रखकर पान का पत्ता-सा बना लिया था ।"[6]

---

1. एक थी रामरथी - शिवानी - पृ. 25
2. स्वयंसिद्धा - शिवानी - पृ. 85
3. लाल हवेली - शिवानी - पृ. 74
4. वही - पृ. 82
5. वही - पृ. 100
6. वही - पृ. 6

"तमाल तरु-सी श्यामल कान्ति का वह बंगाली तरुण कभी मेरे पति का परम मित्र था ।"[1]

"चलती तो लगता, पानी में फिसलती चिकनी मछली तैर रही है ।"[2]

"दाडिम सी दंतपंक्ति ।"[3]

"तीखी उस्तरे-सी धार ।"[4]

"कृष्ण नाग का सा फन ।"[5]

"तगडा-सा चेक" ।[6]

"कौए की-सी टेढी नज़र ।"[7]

आँख केलिए कितनी उपमाओं का प्रयोग शिवानी ने किया है - देखिए -

"अपनी बड़ी-बड़ी गाय की-सी निरीह आँखों से बनर्जी की गिन्नी मुझे विचित्र संदेह की दृष्टि से देख रही थी ।"[8]

"काले चेहरे पर आरक्त आँखें, इंजन के अग्निस्तूप-सी चमक रही थी ।"[9]

"उसकी दोनों आँखें शायद रोग के आधिक्य से काले अँगारे-सी दहक रही थीं ।"[10]

---

1. लाल हवेली - शिवानी - पृ. 104
2. वही - पृ. 106
3. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 17
4. वही - पृ. 17
5. वही - पृ. 46
6. वही - पृ. 121
7. पूतोंवाली - शिवानी - पृ. 123
8. लाल हवेली - शिवानी - पृ. 107
9. पूतोंवाली - शिवानी - पृ. 94
10. वही - पृ. 94

"पन्द्रह वर्ष के उस विचित्र जीव की आँखें किसी भूखे वन्य पशु की-सी थी ।"[1]

उपमा अलंकार का अत्यंत सजीव-सार्थक प्रयोग देखिए -

"जैसे खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकडता है, ऐसे ही एक यात्री को खाते देख दूसरे सहयात्री को भी भूख लग आती है ।"[2]

नारी के सौंदर्य की उपमा प्रकृति के साथ कितना सहज ढंग से किया है देखिए -

"जैसे कूर्मांचल का अस्ताचलगामी प्रौढ़ सूर्य, जाल बिछाता पर्वत श्रेणियों के अनोखी आभा से आलोकित कर जाता है, वैसे ही उससे विदा लेता यौवन बड़ी हठीली धृष्टता से उड़ता, उसे लुभावना बनता चला गया था ।"[3]

अन्य आलंकारिक प्रयोगों की भी उनकी भाषा में कमी नहीं है । उपमा की भाँति ही उत्प्रेक्षा के प्रयोग द्वारा शिवानी ने शैली में प्रभाववृद्धि की है । उनकी उत्प्रेक्षाएँ भी जीवन से ली गई हैं और वर्तमान समाज से संयुक्त हैं । लेकिन उपमाओं की तुलना में उत्प्रेक्षा का कम प्रयोग हुआ है और उनका बड़ा ही सूक्ष्म प्रयोग हुआ है ।

मानवीकरण

मानवीकरण के प्रयोग से भाषा की कलात्मकता और भी बढ़ती है । प्रकृति को मानवी रूप देकर उसका वर्णन करने में शिवानी सिद्धहस्त हैं ।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 87
2. वही - पृ. 99
3. वही - पृ. 103

"तब से प्रतिवर्ष सेब और नासपाती के वैभव से गदराए, कोठी साहब के बाग का व्यर्थ-यौवन अनाह्लाद पुष्प की भाँति झरझरकर मुरझा जाता ।"[1]

"मई का महीना था, नैनीताल अपने पूर्ण यौवन पर था । संध्या होते ही असंख्य डोंगियाँ ताल के शुभ्र नीलाभ जल में तैरने लगीं और जुही-बेला के गजरों की गमक से नैनीताल के ओर-छोर सुवासित हो उठे ।"[2]

"नैनीताल की वर्षा, बिना किसी पूर्व सूचना के आ गये अतिथि की भाँति, कभी भी आकर सहमा देती है । कहीं ऐसा न हो कि तीव्र वर्षा का वेग मुझे बीच में ही दबोच ले और मैं अपने घर तक की कठिन चढ़ाई भी न चढ़ पाऊँ ।"[3]

"ताल की कगार पर खड़े विलोवृक्ष मणिपुरी नर्तकियों की सी अलस मादक लास्यपूर्ण मुद्रा में झूम रहे थे ।"[4]

भाषाई शब्दों द्वारा वर्ण्य-विषय या व्यक्ति का चित्र-सा प्रस्तुत कर देना भाषा की एक बहुत बड़ी विशेषता मानी जाती है । इस प्रकार की भाषा को ही सजीव एवं प्राणवान कहा जाता है । यह वर्ण्य-विषय को भी सजीव एवं प्राणवान बना दिया करती है । शिवानी इस प्रकार की भाषा के प्रयोग में भी पूर्णतया सिद्धहस्त हैं ।

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 26
2. कैंजा - शिवानी - पृ. 132
3. पुतोंवाली - शिवानी - पृ. 110
4. वही - पृ. 110

चित्रात्मकता

शिवानी की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता उसकी चित्रात्मकता है । वे चरित्रों के परिवेश, वातावरण, रहन-सहन और वेशभूषा आदि सभी का ऐसा सूक्ष्म चित्रण करती हैं कि पाठक के सम्मुख पात्र, वातावरण, आदि का चित्र सजीव हो उठता है "सती" नामक कहानी का एक चित्रण देखिए -

"उनकी सलवार, कमीज़, दुपट्टा, यहाँ तक कि रूमाल भी खद्दर का था और शायद उसी के संघर्ष से उनकी लाल नाक का सिरा और भी अबीरी लग रहा था । उनके चेहरे पर रोब न था, किन्तु लावण्य नहीं । रंग गोरा था, किन्तु खाल में हाथ-की बुनी खादी का सा ही खुरदरापन था ।"[1]

"लाखों में एक न होने पर भी उस चेहरे की लुनाई में एक अनुपम आकर्षण था, लम्बी छरहरी देह, गेहुआ रंग, सुतवाँ नाक और ऊँचे उठे कपोलें । आँखें बड़ी न होने पर भी चौबीसों घण्टे उज्ज्वल हंसी से चमकती रहतीं ।"[2]

चित्रात्मक भाषा के द्वारा प्रकृति सौंदर्य का चित्रण शिवानी ने बहुत सुन्दर ढंग से किया है । जैसे -

"नीले समुद्र-सा उदार नीलाकाश, दोनों ओर से प्राचीर-सी उठी घाटियों के बीच किसी तन्वंगी सुन्दरी किशोरी-सी थिरकती नदी, आसपास फैली चौड़ी हरीतिमा - जैसे डबल अर्ज की हरी इटैलियन का पूरा थान खुला पड़ा हो ।"[3]

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 95
2. वही - पृ. 106
3. वही - पृ. 44

चित्रात्मक भाषा के द्वारा वातावरण का चित्रण जैसे सजीव बन उठता है । देखिए -

"सुपारी के पेड़ और पानों के झुरमुट के बीच, एक विराट् अग्निस्तूप की लाल-लाल लपटें को मोड़ना-मरोड़ना एक नागा तरूण हमारे स्वागत में अपनी रणसिंही को आकाश की ओर उठा-उठाकर फूँकने लगा था, तू...तू... तू... तू... तू....।"[1]

"अमला बार-बार बाहर आती और अपने सजे बंगले की अनूठी सज्जा देखकर स्वयं मुग्ध हो जाती । रंगीन नीली मद्धिम रोशनी के लट्टू, पेड़ की हर पत्ती पर, जुगनू बने चमक रहे थे । शामियाने की रंगीन छांह में कई सोफे और कुर्सियाँ मंडलाकार घेरे में रखवाते श्यामबिहारी एक साथ कई निर्देशन देते किसी कुशल बैण्ड-मास्टर की भाँति हवा में दोनों हाथ उठा-उठाकर गिरा रहे थे ।"[2]

मुहावरे और कहावतें

सरल सहज मुहावरों और कहावतों से युक्त भाषा कहानी को व्यावहारिक विश्वसनीयता प्रदान करती है । शिवानी की भाषा शैली में मुहावरों और कहावतों का भी सुन्दर प्रयोग देखा जा सकता है । इस प्रयोग से शैली में प्रवाह एवं स्वाभाविकता की प्रतिष्ठा हुई है । शिवानी की चलती हुई मुहावरेदार शैली हिन्दी में बेजोड़ है ।

---

1. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 13।
2. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 123

मुहावरा का प्रयोग देखिए -

"क्षण भर पूर्व की हंसी, जो मेरी लेखनी से हाथ मिलाने चली आई थी, अब उसे अंगूठा दिखा रही थी ।"[1]

"तेरा ससुर बड़ा चार सौ बीस ।"[2]

"मेरे जी में आया उससे पूछ लूँ । 'कुछ नहीं किया है, बहन, तो क्यों यहाँ गंगा नहाने आई हो ?"[3]

"उस दिन भी वह उसी का मीठा-सा सपना देख रहा था कि मास्टरनी के चौकीदार ने आकर सब गुड़-गोबर कर दिया ।"[4]

"प्रत्येक मुकदमे में वह दूध का दूध पानी का पानी कर देता ।"[5]

"चाँद का टुकड़ा है हमारा पड़ोसी ।"[6]

"बीस वर्ष के पहले भाभी ने उसकी गर्दन पर छुरी फेरी थी ।"[7]

"सचमुच ही एक ही वर्ष में उनकी नम्रता और शालीनता देखकर उनकी नानी ने भी दाँतों तले अंगुली दबा ली ।"[8]

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 45
2. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 64
3. वही - पृ. 46
4. लाल हवेली - शिवानी - पृ. 77
5. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 21
6. वही - पृ. 63
7. वही - पृ. 32
8. लाल हवेली - शिवानी - पृ. 78

"मैं नहीं गई । किसी को मैं जानती थी । ज़िद चढ़ने पर वह स्वयं अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारने में क्या हिचकिचा सकती थी ।"[1]

"फिर, एक दिन अचानक सुना, अपनी समृद्ध गृहस्थी को स्वयं लात मारकर किसी अपने कैशोर्य के प्रेमी के साथ मुँह काला कर भाग गई है ।"[2]

कहावत

"खून स्वयं बोलता है ।"[3]

"साँप का पैर आखिर साँप ही पहचानता है ।"[4]

"जल में रहकर मगर से वैर नहीं हो सकता, फिर मगर क्यों एक ही था ।"[5]

सूक्तियाँ

शिवानी की शैली में अनुभवसिक्त सूक्तियों का प्रयोग भी देखा जा सकता है । इन सूक्तियों में कल्पना और अनुभव के साथ चिन्तन का योग भी है । सूक्ति-प्रयोग से शिवानी की शैली की रमणीयता और प्रभावात्मकता में अभिवृद्धि हुई है । उदा:-

"पुण्यो वैपुण्येन कर्मणा भवति, पाप: पापेनेति" - मनुष्य पुण्यकर्म से पुण्यवान एवं पापकर्म से पापी होता है । ऐसा हमारे धर्म-ग्रंथ कहते हैं ।"[6]

---

1. कैंजा - शिवानी - पृ. 87
2. वही - पृ. 87-88
3. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 57
4. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 131
5. करिए छिमा - शिवानी - पृ. 99
6. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 43

गांधीजी ने कहा है -"अपराधी का अपराध उसके चेहरे पर लिखा रहता है ।"[1]

"कहा जाता है कि संवत्सर का पहला दिन जैसा कटे, वर्ष-भर फिर वैसा ही कटता है ।"[2]

"नारी ही नारी के लिए एक जटिल पहेली बन उठती है ।"[3]

"पर मेरी सास ने कहा था - "ना बाबा, ना । गस्सा दे दे पर बस्सा मत देना । कुछ धेला-पैसा थमा दे, पर खबरदार, यह इल्लत मत पालना ।"[4]

"बेचारे शायद इस कटु सत्य से अनभिज्ञ थे कि मुँह से कुछ न मांगनेवाले ही कभी-कभी मुंह खोलकर सब कुछ मांगनेवालों से भी अधिक खतरनाक होते हैं ।"[5]

"बड़े अफसर की पत्नी बनना भी कांटों का ताज पहनना है ।"[6]

शैल्पिक विशेषताएँ

आज का कहानीकार शिल्प के प्रति अधिक सचेत है । सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता और बिंबों का प्रचुर प्रयोग, कहानीकार की इस मनोवृत्ति को सूचित करता है । शिवानी भी उन लेखकों की कोटि में आती हैं । शिवानी ने अपनी कहानियों को शैल्पिक सुन्दरता से भरपूर करने का प्रयास किया है । वैसे उनकी कहानियाँ शैलीगत एवं शिल्पगत प्रयोगों की दृष्टि से काफी मशहूर हैं ।

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ.42
2. वही - पृ.43
3. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 103
4. लाल हवेली - शिवानी - पृ. 107
5. पुतोंवाली - शिवानी - पृ.91
6. कैंजा - शिवानी - पृ.92

स्थितियों और पात्रों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करते समय लेखिका ने बिम्बों का और प्रतीकों का, अलंकारों का और भाषाई विशिष्टता का परिचय दिया है । ये बिम्ब कहीं-कहीं काव्यात्मक हो जाते हैं तो कहीं वस्तुपरक स्थितिबोध का सही परिचय देने में सार्थक निकलते हैं । चाक्षुष स्पर्श और घ्राणबिम्बों की एक ओर सहायता लेखिका ने ली है तो दूसरी ओर प्रतीकात्मक प्रयोगों का भी लाभ उठाया है । कहानियों में आये हुए बिम्बात्मक स्थितियों के उदाहरण द्रष्टव्य हैं ।

शिवानी ने अपनी भाषा में प्रकृति के बिम्बों और प्रतीकों का बड़ा ही सफल प्रयोग किया है जिससे प्रकृति मानवीय भावनाओं की उत्प्रेरक बन गयी है । भाषा की सूक्ष्मता को प्रकट करने के लिए शिवानी ने प्राकृतिक उपादानों तथा बिम्ब प्रतीकों का प्रयोग एक सिद्धहस्त शैलीकार के रूप में किया है । इस प्रकार उन्होंने इनके माध्यम से एक नवीन भाव आलोक और समसामयिक चेतना का मर्म उद्घाटित किया है ।

"पोस्टमार्टम के लिए आयी गयी लाश की भाँति उसका पेट रामढोल-सा बीच में बेहद फूला-फूला लग रहा था ।"[1]

"नाशपाती के वैभव के गदराए कोठी साहब के बाग का व्यर्थ यौवन अनाघ्रात पुष्प की भाँति झर-झरकर मुरझा जाता है ।"[2]

"रात को खाने की मेज़ पर, उसे देखते ही तिप्पी का चेहरा बीरबहूटी बन गया ।"[3]

---

1. दृश्य बिंब - मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी - पृ. 143
2. दृश्य बिंब - करिए छिमा - शिवानी - पृ. 13
3. दृश्य बिंब - कैंजा - शिवानी - पृ. 119

"एक-एक कर कितनी ही रस-भरी स्मृतियाँ, वर्षों से किसी जंग लगे बक्से में से निकल रही भव्य बनारसी साडियों की नेपथलीनी गंध से हमें विभोर कर गई ।"[1]

"जहाँ बडे-बडे डंडों में मदमस्त मसालों में पक रहे गोश्त की सुगन्ध से दिशाएँ महकती थीं ।"[2]

"सस्ती सुगन्ध से मेरा माथा चकरा गया । लग रहा था बंगलौरी अगरबत्ती का पूरा बंडल ही सुलगाकर किसी ने मेरी नाक के नीचे रख दिया है ।"[3]

"रंगामाटी के बीच सर्पिणी-सी बल खाती कोपाय नदी या वर्षा से भीगी संथाल झोंपडियों की खस के भीगे पंखे-सी सुगंध या कच्ची संथाल ताडी की मादक स्मृति ? जीवन के रस से छलकती गागर, जब रीती होकर ढुलक गई, तब इस ग्राम की स्मृति ने उन्हें क्यों पुकारा ?"[4]

"काले चेहरे पर आरक्त आँखें, इंजन के अग्निस्तूप-सी चमक रही थी ।"[5]

पूर्वस्थितियों को उजागर करनेवाला एक सुन्दर वर्णन "किकी" नामक कहानी में लेखिका ने प्रस्तुत किया है । समूची स्थिति की गहराई को अभिव्यक्त करने का लेखिका का कौशल देखिए -

---

1. घ्राण बिम्ब - पूतोंवाली - शिवानी - पृ. 62
2. घ्राण बिंब - अपराधिनी - शिवानी - पृ. 72
3. घ्राण बिम्ब - अपराधिनी - शिवानी - पृ. 122
4. चाक्षुष बिंब - गैंडा - शिवानी - पृ. 105
5. चाक्षुष बिंब - पूतोंवाली - शिवानी - पृ. 94

"विस्मृत अतीत को मधुर स्मृतियाँ, किसी मज़ार पर जल रही लोबान की मदिर धूमरेखा-सी मुझसे लिपटती चली गई ।"[1]

"अलसाई बिल्लियों-सी बदन तोडती, पेचदार गुडगुडी में अंबरी तम्बाकू के सुवासित छल्ले उड़ाती रोहिल्ला पठानियों के सतरंगी अबरकी दुपट्टे की स्मृति मुझे विह्वल कर जाती है ।"[2]

शिवानी की कहानी में जहाँ जहाँ भी मनोगोचर संवेदनाओं और अनुभूतियों को बिम्बों के माध्यम से इन्द्रियगोचर बनाने का प्रयास है वहाँ कहानी में स्पष्टता ही आती है । साथ ही कहानियों का सौंदर्य ही बढती है । बिम्बों के निर्माण में शिवानी की ऐन्द्रिय संवेदना चेतना के कोमल और सूक्ष्म स्तरों द्वारा रूपाकार को अत्यंत मार्मिक प्रभाव द्वारा उद्घाटित करती चलती है । उन्होंने आधुनिकतम बिंब प्रतीकों को लिया है । उनके बिम्ब अपने सुपरिचित होने के कारण एक सहज और स्वाभाविक छाप छोडते हैं । नव संस्कृति के अभिव्यंजक बिंब प्रतीक तथा रूढ भावाभिव्यंजक शब्दों का नवीनतम प्रयोग वातावरण को सजीव करता चलता है । यह शिवानी के शिल्प की मौलिक उद्भावना है ।

प्रतीक

बात को अधिक संगत और उपयुक्त ढंग से कहने की अभिरुचि ही विविध शैलियों को जन्म देती है । प्रतीक का आधार भावना है । वैसे भाषा हमारी संपूर्ण अनुभूतियों की प्रस्तुति करती है । भाषा जहाँ अभिव्यक्ति

---

1. स्मृति बिंब - कैंजा - शिवानी - पृ. 82
2. स्मृति बिंब - रथ्या - शिवानी - पृ. 103

को पूर्ण ढंग से उपस्थित नहीं कर पाती वहाँ प्रतीक अपनी भूमिका अदा करते हैं । प्रतीक से अभिप्राय है अभिधेय अर्थ के अतिरिक्त किसी अन्य अर्थ को ढूँढना ।

"उस निरीह किशोरी का विवाहाकाश गहन मेघखंडों से आच्छन्न था, पर तब ही उस धूमकेतु क्षणिक प्रकाशपुंज ने उस दुर्भेद्य अन्धकार को चीर मुझे चौंधिया दिया था ।"[1]

"न जाने कितनी व्यर्थ औषधियों, शल्य क्रिया, गंडे-ताबीजों से लदा उनका फलहीन प्रौढ़ तरुवर सूखी और मुरझाई पीली पत्तियों के साथ-साथ स्वयं भी सूखने लगा था, किन्तु अपनी वयस के पैंतालीसवें वर्ष में भी उन्होंने फल की आशा नहीं त्यागी थी ।"[2]

"मेरी हृदय वाटिका में न अब कभी गुलाब झूमेगा, न चन्द्र मल्लिका ।"[3]

भाषा को संवारने में और उसके सौंदर्य को निखारने में शिवानी बहुत आगे निकल जाती हैं । शब्द चयन की सुन्दरता निम्न लिखित उदाहरणों में द्रष्टव्य है ।

"मुझे कभी किसी की मैत्री के कौतूहल ने नहीं झकझोरा ।"[4]

"सच, यह कहने में मुझे आज तनिक भी संकोच नहीं हो रहा है कि अतीत की वे रोमांचकारी कुश्तियाँ, जो हमने यौवन-काल के प्रारंभ में

---

1. रतिविलाप - शिवानी - पृ. 123
2. विषकन्या - शिवानी - पृ. 84
3. गैंडा - शिवानी - पृ. 124
4. विशिष्ट प्रयोग - कैंजा - शिवानी - पृ. 40

लड़ी है, शायद हमारे दांपत्य दुर्ग को इतना ठोस बना गई हैं कि आज तक दुर्भाग्य का एक भी भूकम्पी धक्का उसकी सुदृढ़ प्राचीरों को नहीं डिगा सका। गृह कलह के क्या-क्या मौलिक दाव-पेंच होते थे और कैसी-कैसी पछाड़ें। एक-दूसरे के माता-पिता, पितामह-पितामही, सबको काल्पनिक चरित्रहीनता के कीचड़-भरे गड्ढों में डुबोया जाता। पति के साथ छात्र-जीवन की सहचरियों के गड़े मुर्दे मैं ढूँढ-ढूँढकर खड़े करती, उधर पल-भर में मेरे पति, मेरे एक सौ बीस काल्पनिक प्रेमियों की सिविल लिस्ट तैयार कर देते। कई प्लेटों का संहार होता, बीसियों बार थाली पटकी जाती, यदा-कदा बच्चियों को भी पटका जाता, पर जैसे गर्जन-तर्जन भरी शिलावृष्टि के पश्चात् निर्मल धूप की मुस्कान से आकाश खिल उठता है, हमारी गृहस्थी धुलकर फिर उजली झकझक चमकने लगती। पर नलिनी की गृहस्थी, अजीब थी। न वहाँ घटा घिरती थी, न बरसती थी। उन दोनों के भविष्य के लिए हम शंकित थे और हमारी शंका निर्मूल नहीं थी।"[1]

लयात्मकता और प्रवाहपूर्णता

प्रवाहपूर्णता शैली की विशेषता है। कहानी प्रवाहपूर्ण शैली में है तो उस कहानी पढ़ने से रसास्वादन के ऊँचे स्तर पर हम पहुँचते हैं। शिवानी ने प्रवाहपूर्ण शैली के निर्माण में अपनी विशिष्ट प्रतिभा का परिचय दिया है। जैसे -

"पत्ते-सी ठक-ठक कांपती वह क्षण-भर उसकी बांहों में सिमटकर खो गई, फिर एक झटके से हाथ छुड़ाकर तीर-सी छुटक गई।"[2]

"वह अब भी वैसी ही इकहरे शरीर की छरहरी बनी रह

---

1. विशिष्ट प्रस्तुति - करिए छिमा - शिवानी - पृ. 60
2. प्रवाहात्मकता - कैंजा - शिवानी - पृ. 118.

गई थी, जैसी बीस वर्ष पूर्व थी और उसी बीस वर्ष का बीता अतीत, फटाफट उल्टी लपेटी जा रही किसी फिल्म की भाँति स्वयं फड़फड़ाता उसे पीछे खींच रहा था ।"[1]

"मैं ने सब गहने उतार दिए । मेरी अंगुलियाँ, जो कठिन से कठिन शल्यक्रिया में संलग्न रहकर भी कभी नहीं कांपी, तेज हवा में कांपती इमली की पत्तियों-सी थरथरा रही थी ।"[2]

शिवानी ने भावुकतापूर्ण गद्य शैली का अत्यंत सफल प्रयोग किया है । कवित्वपूर्ण, अलंकृत और सरसशैली का मार्मिक रूप विधान हुआ है । शिवानी की शैली मनोभावों के अनुरूप अपना वेशविधान करती है । जहाँ कोमल और मधुर भावों की व्यंजना है, वहाँ शैली उसी के अनुरूप कोमल और मधुर हो गई है । जहाँ उग्र भावों को व्यंजना है, वहाँ शैली का ओज देखने योग्य हैं । अभिव्यंजना संपन्न शैली के प्रयोग से भाव मूर्तिमान-सा हो जाता है । शैली का रूप परिवर्तन समस्त कहानियों में दृष्टिगत होता है ।

नये प्रयोग

शिवानी ने नये प्रयोगों को भी अपनाया है । कहानियों के बीच गीत और चौपाइयों का विधान इसका उदाहरण है ।

"मैं ने एक अनोखी तृप्ति का अनुभव किया । एक न एक दिन तो उस चौपाई को उसके पश्चाताप का अश्रु-जल रिक्त कर ही देगा

---

1. लयात्मकता - करिए छिमा - शिवानी - पृ. 67
2. काव्यात्मकता - करिए छिमा - शिवानी - पृ. 61

"पतिवंचक परपति रति करई,
रौरव नरक कल्प शत परई ।"

वह क्या अब सीखचों को छू आघात से टक-टह बजाता अपने कर्मों को रोता होगा या प्रकृति नटी ने अब उस मिट्टू को यह मीठी वाणी रटा दी होगी

"सुन्दरी तैं सूली भली
विरला बचेई कोय ।
लोह निहाला अगिनी में
जलि बलि कोयला होय.... ।"[1]

"और न जाने कब की पढ़ी पंक्तियों का कोई मेरे कानों में सस्वर पाठ-सा करने लगा

तिरिया जल महं आग अगावे,
तिरिया सूखे नाव चलावे ।"[2]

"आज से तीस वर्ष पूर्व, जब उससे पहली बार

"बेड़ पाको बारोमासा
आहा काफल पाको चेत्ता
मेरी छैला ।"

सुना था तो मुझे लगा था, सिर के ऊपर, छतरी-सा तना अखरोट-तरु भी, जैसे लाल-लाल रसीले काफलों से लद गया है ।"[3]

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 61
2. वही - पृ. 57-58
3. वही - पृ. 91-92

"मेरो कह्यो नीकह्यो
करिया नीकरिया
मेरो सुणिया नीसुणिया
करियै छिमा
छिमा मेरा परभु ।"

मेरा कहा-अनकहा, मेरा किया न-किया, मेरा सुना-अनसुना, सब क्षमा करो, क्षमा करो मेरे प्रभु ।[1]

"वह कुछ झिझकी फिर पहाड़ी दुनाली मुरली-सी ही मीठी पतली आवाज़ कारागार के कठिन कपाटों से टकराकर गूँज उठी
"पल्टनो को बाजो बाजन लागो,
झोला तमलोटा साजन लागो
ओ मेरी इजा, पकै दे खीर
लड़ना सुं जांछ - कुमय्यांबीरा ।"[2]

शिवानी ने लच्छीदार भाषा और मंजी हुई शैली में अपनी कथाओं का ताना बाना बुना है । इससे पाठक को दिलचस्प कथाएँ मिल जाती हैं और परिपक्व शिल्प उन्हें मनोरम बना देता है । कल्पना को सत्य का रूप देना शिवानी की कहानी को मुख्य कला है । शिवानी की कहानी पढ़कर हमें यह सत्य ही प्रतीत होते हैं । शैलीगत मर्मस्पर्शिता का चरमोत्कर्ष रूप शिवानी की कहानी में देखा जा सकता है, भाषा की संरचना में वे सिद्धहस्त हैं । रचना की

---

1. अपराधिनी - शिवानी - पृ. 92
2. वही - पृ. 40

वर्णन शैली इतनी सक्षम होती है कि पाठक निरन्तर उत्सुकता की ओर अग्रसर होता है । शिवानी की शैलीगत विशेषता के संबंध में ठाकुर प्रसाद सिंह ने कहा है -"संपूर्ण संस्कृत वाङ्मय में बाणभट्ट की "कादम्बरी" का छोटे-से छोटा अंश भी अलग से पहचाना जा सकता है, वैसे ही जैसे आप हिन्दी का गद्य लेखकों की भीड़ में श्री हज़ारी प्रसाद द्विवेदी या उनके स्तर के शैलीकारों को अलग से पहचान लेते हैं । शिवानी के संबंध में भी यह बात बिना हिचक से कही जा सकती है ।"[1]

प्रत्येक लेखक अभिव्यक्ति के लिए अपनी विशिष्ट शैली का आयोजन करता है । उसकी सारी रचनाओं में इस शैली का प्रतिबिंबन भी देखा जा सकता है । शिवानी में भी यह विशेषता दिखाई पड़ती है । उनकी अभिव्यक्ति शैली कई कहानियों में समान-सी लगती है । इसलिए उनकी कहानियाँ पढ़ते ही पाठक को ज्ञात हो जाता है कि वह शिवानी की कहानी पढ़ रहा है । शैली लेखक को या उसकी कृति को पहचानने का एक माध्यम है । इस लिए कहा गया है "स्टाइल इज़ द मैन हिमसेल्फ" और शिवानी के विषय में भी यह उक्ति पूर्णतः चरितार्थ होती है । आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने स्वयं शिवानी की भाषा-शैली के बारे में कहा है कि उनमें अद्भुत सूक्ष्म दृष्टि है, भाषा में सहज विचित्र भाव है । उन्हीं के शब्दों में, "तुम में छोटी-छोटी किन्तु महत्वपूर्ण आत्मीयता व्यंजक बातों के द्वारा संपूर्ण को जीवन बनाने की बड़ी क्षमता है ।"[2]

शिवानी की लेखनी अपने एक विशिष्ट आदर्श पर टिकी रहती है और वह भाषा की ऊँचाई पर आकर पूर्णतः अभिव्यक्त हो जाती है ।

---

1. मेरी प्रिय कहानियों की भूमिका - ठाकुर प्रसाद सिंह - पृ. 7
2. शान्तिनिकेतन से शिवालिक - सं. शिवप्रसाद सिंह - पृ. 21

भावनाओं को नये मूल्यों के साथ प्रस्तुत करके शिवानी का भाषा व्यक्तित्व अपने निखार के साथ प्रस्तुत हो सका है ।

सुप्रसिद्ध आलोचक ब्लेक मूलर का निम्नलिखित कथन शिवानी की भाषा-शैली के संदर्भ में शत-प्रतिशत खरा उतरता है -

"भाषा केवल हमारे भावों तथा विचारों का वाहज नहीं है, जिसे ठोक-पीटकर हर समय काम में लाया जा सके । उसका एक स्वतंत्र व्यक्तित्व और वातावरण होता है, जो सूक्ष्म दृष्टि से देखा जा सकता है । हमारी ही तरह उसकी भी शक्ति, इच्छा होती है और उसके भी संस्कार होते हैं ।"[1]

शिवानी की भाषा-शैली पर समीक्षात्मक विचार करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शिवानी की शैल्पिक प्रस्तुति की क्षमता, शैलीगत प्रयोगात्मकता और भाषाई प्रवाहात्मकता हिन्दी साहित्य में अत्यंत दुर्लभ है । विषय की अपेक्षा कथ्य की विशिष्टता को शैली की सुन्दरता के साथ जोडकर भाषा का ऐन्द्रजालिक प्रभाव बनाये रखने की शक्ति सिर्फ शिवानी की लेखनी में ही प्रखर हुई है ।

---

1. शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान - कु. शशिबाला पंजाबी - {आर्ली ब्लेड मूलर की "लेंग्वेज एण्ड जैस्टर" से उद्धृत} - पृ.१२

उपसंहार

साहित्यिक क्षेत्र में महिलाओं का योगदान इस तथ्य का समर्थन करता है कि नारी ही अपनी अनुभूतियों की प्रवाहिनी को अपने ढंग से प्रस्तुत कर सकती है । स्त्रैण भावनाओं को और कोमल मनोवृत्तियों को तथा उनसे जन्मी हुई प्रतिक्रियाओं को जितनी सूक्ष्मता से नारी प्रस्तुत कर सकती है उतना पुरुष नहीं कर सकता । अनुभूतियों की गहराई, संवेदनाओं की तीक्ष्णता, उद्वेलित मन की तरंगों की हल्की-सी आवाज़ सुनाने में नारी जितनी सक्षम होती है उतनी सक्षमता लेखक नहीं दिखा पाते । नारी मन को पहचानने में लेखकों की अपेक्षा लेखिकाएँ एक सीमा तक आगे बढ़ जाती हैं ।

शिवानी की कहानियों का अध्ययन करने के उपरांत जो तथ्य उभरकर आते हैं उन पर नज़र डालने से यह स्पष्ट होने लगता है कि शिवानी एक ईमानदार और प्रतिबद्ध लेखिका हैं । समाज की विद्रूपताओं को, उसकी विडंबनाओं को, जीवन की आँख मिचौनी को, नियति के प्रहारों को बड़ी सहानुभूति के साथ शिवानी ने देखा है, परखा है और प्रस्तुत किया है । वैसे इस लेखिका की मनोवृत्ति अधिकतर नारी की समस्याओं के उद्घाटन के प्रति झुकी हुई है । पुरुष प्रधान समाज में नारी के अस्तित्व, व्यक्तित्व और अस्मिता की तलाश लेखिका के लिए एक प्रिय विषय रहा है । मूल्यच्युति से युक्त समाज में नारी के निर्दोष व्यक्तित्व का क्या परिणाम हो सकता है इस पर भी बड़ी गंभीरता से शिवानी ने विचार किया है ।

समानान्तर रूप में रूढ़िग्रस्त अंधविश्वासों से युक्त परंपरा के शिकार समाज में कायर पुरुषों की क्रूरता का शिकार बननेवाली नारी का

हाहाकार यत्रतत्र सुनाई पड़ता है । परिस्थितियों के घात-प्रतिघात से जन्मी हुई प्रतिक्रियाएँ आधुनिक नारी के सामने विशिष्ट मार्गों की सूचना देती हैं । शिक्षित होकर अपने पैरों पर खड़े होकर संघर्ष के पथ को अपनाए बिना नारी की मुक्ति की संभावना नहीं है । वैसे नारी की स्वतंत्रता और नारी मुक्ति के आन्दोलन की समूची संभावनाएँ शिवानी की कथा की अंतर्धारा में कहीं न कहीं गुप्तरूप से मिलती है । परोक्ष रूप से लेखिका ने नारी जागरण के संदेश को प्रसारित किया है ।

मानवीय संवेदनाओं के धरातल पर लेखन की विशिष्टता इस तरह आयामित होती है कि समीक्षक को यह कहना पड़ता है कि शिवानी मनोरंजन के लिए नहीं लिखती परंतु अपने लक्ष्यबोध की तुष्टि के लिए लिखती हैं । घटनाचक्र के विधान में भले ही कमियाँ रह गई हो । परंतु कथन के विधान में और भाषा के महकते फूलों को आयामित करने के प्रयास में लेखिका को कहीं भी हार नहीं माननी पड़ती ।

पन्द्रह कहानी संकलनों में शिवानी ने सभी प्रकार के विषयों को प्रस्तुत किया है । कहानी के विषय अधिकतर नारी के जीवन से जुड़े हुए हैं नारी की प्रत्येक समस्या के प्रत्येक पहलू को शिवानी ने अपनी दृष्टि से देखा है । विवाहिता स्त्री की समस्याएँ, अनमेल विवाह की समस्याएँ, नारी का पुरुष द्वारा शोषण, अशिक्षित नारी की दुर्गति, नारी का प्रतिशोध, नारी की चरित्रहीनता आदि विषयों पर केन्द्रित कहानियों की संख्या अधिक है । अपनी दृष्टि से कथा का विस्तार करते समय स्वाभाविकता और अस्वाभाविकता के बारे में शिवानी एक सीमा तक निश्चिंत हो जाती है ।

नारी समस्या में भारतीय नारी के जीवन की दुर्दशा का और समाज के कटु व्यवहार का प्रभावात्मक चित्रण प्रस्तुत किया गया है । नारी जीवन की स्थितियाँ प्रत्येक कहानी को एक नया मोड देती हैं । शोषण और पीडन की शिकार भारतीय नारी को अपने पैरों पर खडे होने के लिए बहुत आगे बढना पडेगा । शिवानी ने इस सत्य की ओर संकेत किया है ।

दाम्पत्य संबंधों के विघटन का कारण पति का क्रूर व्यवहार, अविश्वास, भावनाओं में सामंजस्य का न होना, आर्थिक विषमता आदि बताया गया है । पति-पत्नी के संबंधों का और उनकी संकीर्णता का स्वरूप प्रस्तुत करनेवाली उपर्युक्त कहानियाँ यथार्थ की भूमिका से जुडी हुई हैं । यद्यपि कथ्यात्मकता की बारीकियों में काल्पनिकता और अविश्वसनीयता का पुट है फिर भी लेखिका की उद्देश्य की विशिष्टता स्वीकार्य हो जाती है । ये कहानियाँ नयी पीढी के अनुभव रहित युवा-युवतियों के लिए सबक प्रस्तुत कर सकती हैं । इस दृष्टि से इनका महत्व स्वीकारा जा सकता है ।

अपनी यौवनावस्था में सब बन्धन भूलकर स्त्री और पुरुष प्रेम करते हैं और कुछ समय के बाद पुरुष स्त्री को छोडकर चला जाता है । अपने पिता और माता से डरकर, धन के लोभ में और अपने पिता की क्रूरता के कारण पुरुष किस प्रकार प्रेमिका को छोडकर दूसरा विवाह करता है और किस प्रकार स्त्री को असहाय होकर दुःखपूर्ण जीवन बिताना पडता है आदि की तस्वीर लेखिका ने प्रस्तुत की है । इन कहानियों के माध्यम से लेखिका यह सूचित करना चाहती हैं कि माता-पिताओं को अपनी संतान के प्रति उदारता दिखानी है और विवाह की समस्या को और प्रेम की समस्याओं को पुत्र और पुत्रियों की इच्छा पर छोडना ही अधिक समीचीन है क्योंकि ज़िन्दगी जीनेवाले बूढे माँ-बाप नहीं परंतु उनकी संतान है ।

सामाजिक मूल्यच्युति के कई आयाम हैं जिनमें वेश्यावृत्ति और अनैतिक संबंध प्रमुख हैं । इन्हीं दोनों तत्वों पर शिवानी ने प्रकाश डालने की कोशिश की है । अवैध संबंधों के कारण अनेक लोगों का पारिवारिक व दांपत्य जीवन किस प्रकार नष्ट हो जाता है और किस प्रकार परिस्थितिवश नारी वेश्या बनती है, इसका दुःखदायक चित्रण लेखिका ने सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है । वेश्यावृत्ति एक पेशा है तो शराफत की चादर ओढ़कर उसी पेशे को करनेवाले लोग समाज की आँखों में ऊँचे लोग हैं । इस विडंबना को लेखिका ने भली-भाँति प्रस्तुत किया है । छात्रावासों में रहनेवाली लडकियों का शोषण और प्रौढ़ पुरुषों की वासना कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनको भी लेखिका ने उभारा है ।

अंधविश्वास, रूढ़ियाँ और धार्मिक कपटता की बुराइयाँ समाज को किस तरह पीडित करती हैं इसका चित्रण भी शिवानी ने किया है । अंधविश्वास के साथ-साथ संत महंतों की धोखाधडी का सारा शाप स्त्री को ही सहना पडता है । धर्म के नाम पर योगी स्त्री का शोषण करते हैं और जन्मकुण्डली के आधार पर समाज के लोग भी स्त्री को ही दोषित ठहराते हैं । पुत्रियों के पिताओं को जो पीडा सहनी पडती है उसका दर्दनाक चित्र शिवानी ने सफलतापूर्वक खींचा है ।

अन्य कहानियों के माध्यम से जीवन की कई झाँकियाँ प्रस्तुत की गयी हैं जिनके अंतर्गत स्त्री-पुरुष संबंधों की विशिष्ट परिस्थितियाँ उभरती हैं । यहाँ भी कई कहानियाँ अविश्वसनीयता की सीमा रेखाओं को छू जाती हैं फिर भी विशिष्ट मानसिकता के परिवेश से जुडकर कहानियाँ सत्य की रंगीन

रूपरेखा प्रस्तुत करती हैं । कथ्यात्मकता की विशेषता कहीं-कहीं समस्याओं को उभारने के उद्देश्य से आयोजित की गयी है ।

शिवानी ने कुछ ऐसी कहानियों की रचना की है जिनमें स्त्री की आचरण विशेषताओं को और उनकी प्रतिक्रियाओं को आँकने का प्रयास किया गया है । पीड़ित नारियों का चित्रण मुख्य रूप में हुआ है । साथ ही साथ नारी की स्वतंत्र मनोवृत्ति, उसकी अहंवादिता, अस्मिता की तलाश, आक्रोश, प्रतिहिंसा का भाव आदि भी कहानियों की नारी को अत्यधिक जीवन्त बना देते हैं । इस दृष्टि से शिवानी के नारी पात्र सफल हुए हैं ।

शिवानी के पुरुष पात्र एक ओर परंपरा, रूढ़ियाँ, स्वार्थ, निर्दयता, अविवेक और अत्याचार की दुर्बलताओं से बंधे हुए हैं तो दूसरी ओर स्नेह, दया और शिष्टता के गुणों से भी वे अपरिचित नहीं हैं । शिवानी के पुरुष पात्र नारी की अस्मिता को पहचानने में असमर्थ रहे हैं क्योंकि उनमें से बहुत कम लोग ही नारी को समान अधिकारिणी के रूप में मान्यता देते हैं । पुरुष पात्रों के चरित्र-चित्रण के माध्यम से लेखिका ने समाज के सामने पुरुषों के कुकर्मों का और दुर्व्यवहार का पर्दाफाश करना चाहा है । व्यक्ति वैचित्र्य या मानसिक विश्लेषण की दृष्टि से पुरुषों की चारित्रकता का उद्घाटन नहीं हुआ है ।

कहानी की अंतरात्मा को प्रकट करने का कलात्मक सामर्थ्य शैली में ही होता है । इस दृष्टि से शिवानी की शैली सर्वगुण संपन्न है।

उसमें प्रसाद, ओज, माधुर्य आदि गुण विद्यमान हैं । शिवानी की सजीव और सशक्त गद्यशैली उनके शिल्पविधान की और कलात्मक महत्ता की दृष्टि से कम महत्वपूर्ण नहीं । वह भावना और विचार से परिपूर्ण हैं । "शैली ही व्यक्ति है" यह उक्ति शिवानी की भाषा-शैली के संबंध में खरी उतरती है ।

भाषा की संपुष्टता, चारुता, लचीलापन और लयात्मकता ही शिवानी के व्यक्तित्व को एक महान लेखिका के रूप में उभारते हैं । भाषा शैली की दृष्टि से जादुई प्रभाव की सृष्टि करनेवाली लेखिका वास्तव में हिन्दी कहानी के लिए एक नये मार्ग की तलाश करनेवाली प्रतिभा बन जाती हैं । कहानी का सौंदर्य शैलीगत विशिष्टताओं के साथ-साथ बिंबात्मक प्रस्तुति पर आधारित होकर अनोखा बन जाता है ।

हर एक रचनाकार का अनुभव उसके लेखन को भी प्रभावित करता है । प्रेमचंद को ग्राम्य जीवन का इतना अधिक अनुभव है कि अपनी रचनाओं में उसका जो चित्रण किया गया है वह विश्वसनीय प्रतीत होता है । उसी प्रकार शिवानी ने भी जीवन के बदलते हुए मूल्यों को खुली आँखों से देखा और भोगा है और अपनी लेखन यात्रा का क्रम इन जीवन संघर्षों के बीच बनाये रखा है । यही कारण है कि उनकी कहानियाँ काल्पनिक होते हुए भी सत्य के बहुत निकट हैं । जब शिवानी आत्मकथात्मक शैली में लिखती हैं तो पाठक उसको लेखिका की आपबीती समझ लेता है ।

हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वस्तु, शिल्प और दृष्टि से ये कहानियाँ कहानी साहित्य के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं ।

नारी के विभिन्न रूप, नारी की विभिन्न समस्याएँ, उसकी आह और कराह एक ओर है तो गाँव की सुन्दरता और पर्वतांचलों की मोहकता कहानी की भूमिका को उर्वर बना देती हैं । इन कहानियों को एक बार पढ़ने से उनकी विशिष्टताओं को भूल जाना असंभव है । कहानी संग्रहों पर दृष्टिपात करने से यह सिद्ध होता है कि नयी कहानी की भूमिका बाँधने में शिवानी का योगदान मौलिक एवं विशिष्ट है ।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि शिवानी उन लेखिकाओं में से एक हैं जो साहित्यकार के दायित्व को जानती हैं, मानती हैं और उसके अनुसार अपनी रचना की सृष्टि करती हैं । सस्ती लोकप्रियता के लिए उन्होंने कभी शालीनता की तिलांजली नहीं दी । वे अपनी लेखनी के प्रति सदैव ईमानदार रही । इसलिए आधुनिक लेखिकाओं की भीड़ में वे अलग दिखाई देती हैं । रचना-विधान की दृष्टि से शिवानी की कहानियों का एक विशेष ढाँचा मिलता है । उसमें कहानी कला की नवीनता, घटनाओं की नाटकीयता, वातावरण की सजीवता, भाषा-शैली की काव्यात्मकता है । स्पष्ट उद्देश्य के साथ उसमें युगीन समस्याओं का संवेदनापूर्ण चित्रण भी मिलता है । ये विशेषताएँ शिवानी को एक सफल कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित करती हैं । इसलिए शिवानी आधुनिक युग में कहानी के क्षेत्र में एक ईमानदार, सफल तथा सर्वाधिक लोकप्रिय कहानी लेखिका हैं । विशेषतः नारी जीवन के नये-नये रूपों को अंकित करने में और उनके जीवन की विविध स्थितियों को रूपायित करने में शिवानी का योगदान आधुनिक कहानी साहित्य के लिए एक वरदान है ।

सहायक ग्रंथ सूची

क्रम.सं.	ग्रन्थ का नाम	लेखक व प्रकाशक का नाम
1	2	3

अ. मूलग्रन्थ

1. अपराधिनी - शिवानी
हिन्दी पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
जी.टी.रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110032.
संस्करण - 1986.

2. उपहार - शिवानी
नेशनल पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली

3. उपप्रेती - शिवानी
सरस्वती विहार
जी.टी.रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110032
प्रथम संस्करण - 1971.

4. एक थी रामरथी - शिवानी
हिंद पाकेट बुक्स प्रा.लि.
जी.टी.रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110032
प्रथम संस्करण - 1991.

5. करिए छिमा - शिवानी
हिंद पाकेट बुक्स प्रा.लि.
जी.टी.रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110032
नवीन संस्करण - 1993.

6. कृष्णवेणी — शिवानी
सरस्वती विहार
जी.टी. रोड, दिलशाद गार्डन
दिल्ली - 110095
प्रथम संस्करण - 1994.

7. कैंजा — शिवानी
हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा. लि.
जी.टी. रोड, दिलशाद गार्डन
दिल्ली - 110095
संस्करण - 1993.

8. गैंडा — शिवानी
हिन्दी पॉकेट बुक्स (प्रा.) लिमिटेड
जी.टी. रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110032
संस्करण - 1987.

9. चरैवेति — शिवानी
सरस्वती विहार
जी.टी. रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110032
द्वितीय संस्करण - 1989.

10. चिरस्वयंवरा — शिवानी
हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लिमिटेड
दिलशाह गार्डन, जी.टी. रोड
दिल्ली - 110095
नवीन संस्करण - 1995.

11. चौदह फेरे — शिवानी
विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक
वाराणसी - 221001
संस्करण - 1992 ई.

12. पुष्पहार - शिवानी
नेशनल पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली

13. पूतोंवाली - शिवानी
हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लिमिटेड
जी.टी. रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110032
संस्करण - 1993.

14. मणिमाला की हँसी - शिवानी
हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लिमिटेड
दिलशाह गार्डन, जी.टी. रोड
शाहदरा, दिल्ली - 110095
प्रथम संस्करण - 1994.

15. माणिक - शिवानी
हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
जी.टी. रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110032
संस्करण - 1991.

16. मेरी प्रिय कहानियाँ - शिवानी
राजपाल एण्ड सन्स
दिल्ली - 6
पहला संस्करण

17. रतिविलाप - शिवानी
सरस्वती विहार
जी.टी. रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110032
द्वितीय संस्करण - 1986.

18. रथ्या - शिवानी
हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लिमिटेड
जी.टी. रोड, दिलशाद गार्डन
दिल्ली - 110095
संस्करण - 1993.

19. लाल हवेली - शिवानी
विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी
तृतीय संस्करण - 1988.

20. विषकन्या - शिवानी
हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
जी.टी. रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110032
नवीन संस्करण - 1992.

21. शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ - शिवानी
हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लिमिटेड
दिलशाद गार्डन, जी.टी. रोड(शाहदरा)
दिल्ली - 110095
प्रथम संस्करण - 1995.

22. सुनहु तात यह अकथ कहानी - शिवानी
हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
दिलशाद गार्डन
जी.टी. रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110095
प्रथम संस्करण - 1996.

23. स्मृतिकलश - शिवानी
हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
जी.टी. रोड, दिलशाह गार्डन
दिल्ली - 110095
प्रथम संस्करण - 1993.

24. स्वयंसिद्धा - शिवानी
सरस्वती विहार
जी.टी.रोड, शाहदरा
दिल्ली - 110032
नवीन सरस्वती सीरीज़ संस्करण

25. हे दत्तात्रेय - शिवानी
हिन्द पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
जी.टी.रोड, दिलशाह गार्डन
दिल्ली - 110095
प्रथम संस्करण - 1996.

आ. संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अपराध समस्या और समाधान - रूप सिंह चंदेल
किताब घर
गाँधीनगर, दिल्ली - 110031.

2. आज की हिन्दी कहानी - विचार और प्रतिक्रिया - मधुरेश
ग्रन्थ निकेतन
रानीघाट, पटना-6
प्रथम संस्करण - 1971.

3. आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य - डॉ. रमेश देशमुख
वीरेन्द्र शुक्ल
विद्याप्रकाशन
125/64 के. (एन.टी.सी)
गोविन्द नगर, कानपुर - 6
प्र.सं. 1994.

4. आधुनिक हिन्दी कहानी - लक्ष्मीनारायण लाल
वाणी प्रकाशन
नई दिल्ली - 110002
प्रथम संस्करण - 1994.

5. आधुनिक हिन्दी निबन्ध - डॉ. भुवनेश्वरी चरण सक्सेना
प्रकाशन केन्द्र रेलवे क्रॉसिंग
सीतापुर रोड, लखनऊ

6. आधुनिक हिन्दी कहानी में नारी की भूमिकाएँ - डॉ. सुशील मित्तल
अभिव्यंजना
पंजाबी बाग
नई दिल्ली - 110026.

7. आधुनिक हिन्दी कहानियों में युवा मानसिकता - डॉ. पद्मा पाटिल
समता प्रकाशन
6, शास्त्री नगर, रूरा, कानपुर
देहात - 209303
संस्करण - 1996.

8. कहानी का रचनाविधान - डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
ओम प्रकाश. बे. री
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
वाराणसी - 1

9. कहानी नयी कहानी - नामवरसिंह
लोकभारती प्रकाशन
महात्मागाँधी मार्ग
इलाहाबाद - 1
संस्करण - 1994.

10. कहानीकार प्रसाद - डॉ. शोभा विसारिया
कल्पकार प्रकाशन
लखनऊ - 6, प्र. सं. 1977.

11. नई कहानी - मीरा सीकरी
पराग प्रकाशन
दिल्ली - 32.

12. नई कहानी कथ्य और शिल्प - सिंहसंत बरवा
अभिनव भारती प्रकाशन
इलाहाबाद

13. नई कहानी प्रतिनिधि हस्ताक्षर - डॉ. देवप्रकाश अमिताभ
डॉ. रंजना शर्मा
जवाहर पुस्तकालय
सदर बाज़ार, मथुरा
प्र. सं. 1988.

14. नई कहानी के विविध प्रयोग - पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु
लोकभारती प्रकाशन
इलाहाबाद ।

15. नई कहानी विघटन और विसंगति - रामकली सरफ
संजय बुकसेंटर गोलघर
वाराणसी - 1
प्रथम संस्करण - 1988.

16. नई कहानी संदर्भ और प्रकृति - डॉ. देवीशंकर अवस्थी
राजकमल प्रकाशन
दिल्ली - 6.

17. प्रेमचन्द और ग्राम समस्या - प्रेमनारायण टंडन
रामप्रसाद एण्ड सन्स
प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता
आगरा

18. प्रेमचन्द की कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन - डॉ. एन. एस. रामसुब्रह्मण्यम
श्रीप्रकाशन
विजय निवास
राष्ट्रपति रोड
नजनगूड - 571301
प्रथम संस्करण

19. शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान - कु. शशिबाला पंजाबी
देवनगर प्रकाशन
चौडा रास्ता, जयपुर
संस्करण - 1981.

20. समकालीन हिन्दी कहानी और समाजवादी चेतना - डा. किरणबाला
अनुभव प्रकाशन
श्रीनगर, कानपुर - 1
प्रथम संस्करण - 1988.

21. साठोत्तरी महिला कहानीकार - डॉ. मंजुशर्मा
राधा पब्लिकेशन्स
4378/4 बी. अन्सारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली - 110002.

22. साठोत्तरी हिन्दी कहानी मूल्यों की तलाश - डॉ. वासुदेव शर्मा
सहयोग प्रकाशन
41/सहयोग अपार्टमेंट
मयूर विहार, फेज - 1
दिल्ली - 110091
प्र. सं. 1990.

23. साठोत्तरी हिन्दी कहानी में पात्र और चरित्र चित्रण - डॉ. रामप्रसाद
जयभारती प्रकाशन
लालजी मार्केट माया प्रेसरोड
258/365 मुट्ठी गंज
प्र. सं. 1995.

24. साठोत्तरी हिन्दी कहानी और राजनीतिक चेतना - डॉ. जितेन्द्र वत्स
साहित्य रत्नाकर
104 ए/118 रामबाग
कानपुर - 12, प्र.सं. 1989.

25. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में ग्राम्य जीवन और संस्कृति - डॉ. राजेन्द्र कुमार
परिमल पब्लिकेशन्स
27/28 शक्ति नगर
दिल्ली - 110007
प्र.सं. 1988.

26. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप - डॉ. गणेश दास
अक्षय प्रकाशन
आन्हाखेड़ा, भाऊपुर
कानपुर - 209307, सं. 1992.

27. हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान - रामदरश मिश्र
नाशनल पब्लिशिंग हाउस
नई दिल्ली - 110002, प्र.सं. 1977.

28. हिन्दी कहानी आठवाँ दशक - मधुर उप्रेती
इन्द्र प्रकाशन
14/112 अचल तालाब
अलीगढ़ - 202001
प्र.सं. 1984.

29. हिन्दी लेखिकाओं में स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में पुरुष-कल्पना - डॉ. (श्रीमती) उर्मिला प्रकाश
चिन्ता प्रकाशन
622, गणेश नगर
नं. 2, शकरपुर, दिल्ली - 110009.
प्रथम संस्करण - 1991.